੧ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

जीवन
दस गुरू साहिबान

सम्मपूर्ण इतिहास

लेखक:— सोढी तेजा सिंह जी
प्रसिद्ध गुरवाणी टीकाकार

-:-

प्रकाशक :-
भाई चतर सिंह जीवन सिंह
पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर

भेटा 16/- रुपये

वचित्र जीवन

प्रकाशक :-
भाई चतर सिंह जीवन सिंह पुस्तकां वाले,
बाज़ार माई सेवां, अमृतसर

सोधक---गिआनी महिन्द्र सिंह 'रतन'

रामा आर्ट प्रैस, टऊन हाल, अमृतसर
फोन नं : 47434

विशेष बात

इस समय गुरु साहिबों के जीवन चरित्र लिखने किसी लेखक के पूछ ताछ का काम नहीं है। इस को केवल प्राचीन पुस्तकों को पढ़ कर अपनी सूझ बूझ के अनुसार लिखा जा सकता है। गुरु साहिबों, पीरों, अवतारों तथा महा पुरुषों के पूर्ण जीवन चरित्र वही लिख सकता है जो उनके बराबर की शक्ति वाला हो। जपुजी में फरमाया है- "गावै को ताणू, होवै किसै ताणू ॥"

उसके कौतकों को वही कथन कर सकता है यदि किसी के पास उसकी शक्ति हो। कोई भी साधारण पुरुष ऐसी शक्ति वाला नहीं हो सकता। जो गुरु साहिब जी के जीवन चरित्र का पूर्ण वर्णन कर सके। फिर भी श्रद्धा और प्रेम से जितना हो सके लेखक के लिए यत्न करना की उच्चित बनता है।

इस यत्न अनुसार ही निम्नलिखित विषय तीन पहलुयों को मुख रखकर यह पुस्तक पाठकों को भेंट की गई।

1. गुरु साहिब जी ने अपनी रचना द्वारा क्या कहा, शरीर के लिए गुरु जी ने लोक भलाई का क्या काम किया। गुरु साहिबों के कहने और करने से जनता को

क्या लाभ हुआ। अर्थात गुरु साहिबों ने प्राणी मात्र की भलाई के लिए क्या उपदेश किया। अपने शरीर पर कैसे २ कष्ट सहारे और उनके फल स्वरुप देश कौम और साधारण धर्म को क्या लाभ हुआ।

इन पहलुयों को सपष्ट करने के लिए हर एक गुरु साहिब जी के जीवन में तीन सरलेख दिए गए हैं।

1. गुरु जी का मुख्य उपदेश 2. गुरु जी के प्रसिद्ध यात्रा स्थान। 3. गुरु जी के परोपकार। इन सरलेखों में वर्णन किए गए पहलुओं से यह सपष्ट हो जाता है कि -

1. गुरु साहिब के वचनों से जनता को नेक कमाई करना, प्रमात्मा को सदा याद रखना और बुराईयों को त्याग कर नेक कर्म करने का उपदेश दिया।

2. शरीर के लिए देश प्रदेशों के सफर किए। राज कर्मचारीयों के कष्ट सहारे, शहीद हुए। अपने धन दौलत तथा परिवार का ध्यान न करते हुए देश कौम तथा धर्म की भारी सेवा की।

3. ऊपर लिखी दो बातों के फल स्वरुप जनता को इस प्रकार लाभ हुए। (क) स्त्री जाति जिसको नीच कहा जाता था उसको मनुष्य मात्र के बराबर का दर्जा प्राप्त हुआ। (ख) अशूत जातियों को उच्च जातियों की

संगति पंक्ति में वैठने का मान प्राप्त हुआ। (ग) श्री गुरु ग्रंथ साहिव जी की उपदेश वाणी से पढ़ने सुनने का ऊंच नीच सव को अपने उद्धार के लिए वरावर के अधिकार प्राप्त हुए। (घ) अनेक कुएं वावलीयां धर्म स्थान तथा सरोवरों की रचना करके ऊंच नीच को उनके प्रयोग के लिए वरावर के अधिकार मिले। (ङ) देश कौम तथा धर्म की रक्षा के लिए खालसा पंथ की स्थापना हुई। (च) हिन्दू धर्म को नष्ट करने वाली मुगल शाही से देश तथा कौम को छुटकारा मिला आदि।

लेखकों ने इन ऊपर लिखे विषयों से विना गुरु साहिवों की लम्बी शाखी का और करामाते लिखने का यत्न नहीं किया। हां पाठकों की जानकारी के लिए श्री गुरु गोविंद सिंह जी के वाद वंदा सिंह वहादुर, खालसा दल वारह मिसले तथा महाराजा रणजीत सिंह की क्रमशः को बड़े संक्षिप्त शब्दों में सन् 1947 देश के आजाद होने तक जोड़ दिया है। इस के उपरन्त सिक्ख धार्मिक, राजसी संस्थाओं तथा पंजावी सूवे का वजूद में आना आदि किस तरह भूत काल से वर्तमान तक आया समझना सरल हो जाएगा।

इस से पहले देहली के उन वादशाहों तथा लाहौर, सरहिंद के सूवों के नाम जिन्हों के समय गुरु साहिवों के पीछे खालसा पंथ को मुसीवते तथा जुल्म सहारने पड़े।

दिल्ली के बादशाह

औरंगजेब के वाद (1) वहादुर शाह 1712 तक।
2) वहादुरशाह केवल एक साल (3)फरुखसीअर सम्वत् 1713 से 1719 तक (4) मुहम्मद शाह रंगीला सम्वत् 1719 से 1748 तक (5) अहमदशाह सम्वत् 1748 से 1754 तक (6) आलमगीर दूजा सम्वत् 1754 से 1759 तक 7) शाह आलम सम्वत् 1760 से 1806 तक (8) अकबरशाह दूजा सम्वत् 1806 से 1837 तक केवल नाम मात्र (9) वहादुरशाह दूजा सम्वत् 1837 से 1857 तक। उपरन्त गद्धर के कारग अंग्रेजों की कैद में रंगून सम्वत् 1862 में मरा।

लाहौर के सूबे

अबदुल समद्ध खां (इसने सम्वत 1772 में वावा वंदा वहादुर को गुरदासपुर से धोखे के साथ पकड़ कर दिल्ली भेंजा था) जकरीआ खां, यहीआ खां मीरमनु (इसकी मौत सम्वत 1810 में हुई। यह सिक्खों का बड़ा दुश्मन था)।

जहान खां, अदीना बेग तथा अबेंद खां जिस से सिक्खों ने सम्वत 1818 (सम्बत 1761 को लाहौर पर कब्जा कर के सरदार जस्सा सिंह आहलू वालीए को इसका हुक्मरान नियत किया था)।

सरहिन्द के सूबे

वजीर खां (इसने 13 पोप सम्वत 1761 में छोटे साहिब

जादों को दीवारो में चिन कर शहीद किए थे) इस को बंदा बहादुर ने 1 आषाढ़ सम्वत 1767 में मारकर सरहिंद फतह की थी। अबदुल समद्ध खां, सदीक बेग तथा जैन खां जिसको खालसा दल ने सम्वत 1820 में मार कर सरहिंद की ईंट से ईंट बजाई। और इस इलाके पर अपना राज प्रबन्ध किया।

इस पुस्तक को तैयार करने के लिए निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता ली है।

(1) नानक प्रकाश तथा सूर्य प्रकाश (2) सिक्ख धर्म, मैकालिफ साहिब (3) श्री गुरु नानक चमत्कार (4) अष्टगुरु चमत्कार (कृत भाई साहिब वीर सिंह जी) (5) गुरप्रणालीयां सिक्ख हिसटरी सुसाईटी (शरोमणी गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी (6) महान कोश (7) तवारीख खालसा (ज्ञानी ज्ञान सिंह

गुरु की अरदास

सिक्ख इतहास में वर्णन है कि हर एक काम करते समय गुरु साहिब जी अपने से पहले गुरु साहिबां का नाम लेकर अरदास किया करते थे। इस मर्यादा अनुसार ही श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने "वार भगौती जी की" रचना करते समय जो अरदास की गई उस में इस प्रकार दसम ग्रन्थ में शामिल है।

१ ओं श्री वाहिगुरु जी की फतह ॥
श्री भगौती जी सहाय ॥

वार श्री भगौती जी की पातशाही 10 ॥

प्रिथम भगौती सिमर कै गुरु नानक लई ध्याए फिर अंगद गुरु ते अमरदास रामदासै होई सहाय ॥ अर्जन हरगोबिन्द नूं सिमरौ श्री हरिराय श्री हरिक्रिष्ण ध्याईए जिस डिठे सभ दुख जाइ ॥ तेग बहादर सिमरीए घट नउ निध आवै धाइ ॥ सभ थाईं होय सहाय ॥ 1 ॥

इस के पश्चात माननीय विद्वान गुर सिक्खों के श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का नाम इस के साथ जोड़ा और समय समय पर पंथ के साथ बीती घटनावों की याद कायम रखने के लिए उस का हवाला देकर इस में वाधा किया । यह अरदास सिक्ख पंथ की एक प्रसिद्ध प्रार्थना है । इस की पूरी वारता दास लिखत पुस्तक कथा सागर अर्थात जपुंजी साहिब सटीक में पढ़ें ।

लेखक:—दास
तेजा सिंह 'सोढी'

१ ओं श्री वाहिगुरु जी की फतह ॥
श्री भगौती जी सहाय ॥

वार श्री भगौती जी की पातशाही 10 ॥

प्रिथम भगौती सिमर कै गुरु नानक लई ध्याए फिर अंगद गुरु ते अमरदास रामदासै होईं सहाय ॥ अर्जन हरगोबिन्द नूं सिमरौ श्री हरिराय श्री हरिकृष्ण ध्याईए जिस डिठे सभ दुख जाइ ॥ तेग बहादर सिमरीए घट नउ निध आवै धाइ ॥ सभ थांई होय सहाय ॥ 1 ॥

इस के पश्चात माननीय विद्वान गुर सिक्खों के श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का नाम इस के साथ जोड़ा और समय समय पर पंथ के साथ बीती घटनावों की याद कायम रखने के लिए उस का हवाला देकर इस में वाधा किया । यह अरदास सिक्ख पंथ की एक प्रसिद्ध प्रार्थना है । इस की पूरी वारता दास लिखत पुस्तक कथा सागर अर्थात जपुजी साहिब सटीक में पढ़ें ।

लेखक:—दास
तेजा सिंह 'सोढी'

0 सूची बचित्र जीवन 0

श्री गुरु नानक देव जी

—:—

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु नानक देव जी

सिख धर्म के प्रथम सतिगुरु

प्रथम कांड

देश की दशा

—भावार्थ—

कलियुग का दृश्य

भाई गुरदास जी अपनी पहली वार में वर्णन करते हैं :—

कलिजुगु चउथा थापिआ, सूद्र विरति जुग महि वरताई ॥
करम सु रिगि जुजर सिआम के करे जगतु रिदि वहु सुकचाई ॥

अर्थात् :—प्रमेश्वर ने चौथा युग कलियुग बनाया, इसमें जगत जीवों की वृत्ति शूद्रों (नीच कर्मों) वाली हो गई। ऋगवेद सतयुग में प्रधान था, यजुर वेद त्रेता युग में और सामवेद द्वापर में प्रधान था। इनके अनुसार सतयुग में लोग तप करते थे, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में दान कर्म करते थे परन्तु कलियुग में इन कर्मों के करने से लोग संकोच करते थे और नीच कर्मों में संलग्न हो रहे थे। इस कलियुग में :—

माया मोही मेदनी, कलि कलिवाली सभि भरमाई ॥
उठी गिलानि जगत विचि हउमै अंदरि जलै लुकाई ॥

अर्थात्—सृष्टि को माया ने मोह लिया, कलियुग की झगड़े वाली क्रिया ने सारी सृष्टि को भरमा दिया, जिससे जगत में नफरत पैदा हो गई और लोग अहंकार में सड़ने लगे।

इसका परिणाम यह हुआ कि—

कोइ न किसै पूजदा ऊच नीच सभि गति विसराई ॥
भए विग्रदली पातिसाह कलि काती उमराइ कसाई ॥
रहिग्रा तपावसु त्रिहु जुगी चउथे जुगि जो देइ सु पाई ॥
करम भ्रिष्टि सभि भई लोकाई ॥७॥

अर्थात्—कोई किसी दूसरे को नहीं मानता (अहंकार के प्रभाव के कारण सब अपने आप को ही मानते हैं) ऊंचे-नीचे की कोई विचार नहीं रही। देश के बादशाह बे-इंसाफ हो गए हैं, इसलिए (कलियुग) बे-इसाफी की कैंची के साथ बादशाह के अहलकार कसाई हो गए हैं, जालिम होकर प्रजा पर जुल्म कर रहे हैं। तीनों युगों सतयुग, त्रेता और द्वापर का इंसाफ वाला धर्म दूर हो गया और चौथे युग कलियुग में जो कोई किसी को देता है अथवा जो कर्म करे उसका फल वह ही पाए। इस तरह सारी सृष्टि शुभ कर्मों से विहीन हो गई।

जब ऐसे युग बदलता है तो फिर क्या होता है? भाई साहिब आप ही प्रश्न करके आप ही उत्तर देते हैं।

प्रश्न—जुग गरदी जब होवए उल्टे जुग किग्रा होइ वरतारा ॥?
उत्तर—उठे गिलानि जगत विचि वरते पाप भ्रिष्टि संसारा ॥
वरनावरन न भावई, खहिखहि जलन बांस अंगिआरा ॥
निंदिया चले वेद की, समझहि नहि अगिग्रान गुबारा ॥

अर्थात्—प्रश्न यह है कि जब युग पल्ट जाता है फिर जगत में क्या वर्ताव होता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हैं कि जगत में एक दूसरे से नफ़रत हो जाती है, पाप कर्म होने लगते हैं और

लोग भ्रष्टाचारी असत्यवादी हो जाते हैं। एक को दूसरा अच्छा नहीं लगता और वांसों की भांति आपस में रगड़-रगड़ कर सड़ मरते हैं। अज्ञान के अंधेरे के कारण समझते नहीं और शुभ कर्मों की निंदा करते हैं। भाव है कि नेक कर्मों को अच्छा नहीं समझते।

परन्तु—

वेद ग्रन्थ गुर हटि है जिसु लगि भवजल पारि उतारा॥
सतिगुर बाझु न बुझीऐ जिचर धडे न प्रभु अवतारा॥
गुर प्रमेसरु इकु है सच्चा साहु जगतु वणजारा॥
चड़ै सूर मिटि जाइ अंधारा॥१७॥

अर्थात्—वेद आदि ज्ञान उपदेश के लिए ग्रन्थ गुरु की दुकान है जिनको ग्रहण करके भवसागर से पार हो सकता है। इस बात को तभी समझा जाता है जब सच्चा गुरु अवतार धारण करके प्रकट हो। गुरु परमेश्वर का रुप है, जो सच्चा शाह और जगत का बंजारा है। गुरु सूर्य के चढ़ने से अज्ञान का अंधेरा मिट जाता है।

गुरु की जरूरत

बाझु गुरु अंधेरु है खहि खहि मरदे बहु विधि लोआ॥
विरतिआ पापु जगत ते धउल उडीना निस दिनि रोआ॥
बाझु दइआ बलहीण होइ निघर चले रसातलि टोआ॥

अर्थात्—गुरु के बिना अज्ञान के अंधेरे के कारण लोग अनेक प्रकार से आपस में लड़ लड़ कर मर रहे हैं और संसार में पाप फैल गया है जिस कारण धर्म जिसके सहारे सृष्टि खड़ी है दु:खी हो कर रात दिन रो रहा है। दया के बिना धर्म कमज़ोर हो कर नर्क के गढ़े में गिर रहा है। क्यों ?

अर्थात्—सृष्टि को माया ने मोह लिया, कलियुग की झगड़े वाली क्रिया ने सारी सृष्टि को भरमा दिया, जिससे जगत में नफरत पैदा हो गई और लोग अहंकार में सड़ने लगे।

इसका परिणाम यह हुआ कि—

कोइ न किसै पूजदा ऊच नीच सभि गति विसराई ॥
भए विग्रदली पातिसाह कलि काती उमराइ कसाई ॥
रहिग्रा तपावसु त्रिहु जुगी चउथे जुगि जो देइ सु पाई ॥
करम भ्रिष्टि सभि भई लोकाई ॥७॥

अर्थात्—कोई किसी दूसरे को नहीं मानता (ग्रहंकार के प्रभाव के कारण सब अपने आप को ही मानते हैं) ऊंचे-नीचे की कोई विचार नहीं रही। देश के बादशाह बे-इंसाफ हो गए हैं, इसलिए (कलियुग) बे-इसाफी की कैंची के साथ बादशाह के अहलकार कसाई हो गए हैं, जालिम होकर प्रजा पर जुल्म कर रहे हैं। तीनों युगों सतयुग, त्रेता और द्वापर का इंसाफ वाला धर्म दूर हो गया और चौथे युग कलियुग में जो कोई किसी को देता है अथवा जो कर्म करे उसका फल वह ही पाए। इस तरह सारी सृष्टि शुभ कर्मों से विहीन हो गई।

जब ऐसे युग बदलता है तो फिर क्या होता है? भाई साहिब आप ही प्रश्न करके आप ही उत्तर देते हैं।

प्रश्न—जुग गरदी जब होवए उल्टे जुग किग्रा होइ वरतारा ॥?
उत्तर—उठे गिलानि जगत विचि वरते पाप भ्रिष्टि संसारा ॥
वरनावरन न भावई, खहिखहि जलन वांस अंगिग्रारा ॥
निंदिया चले वेद की, समझहि नहि ग्रगिग्रान गुवारा ॥

अर्थात्—प्रश्न यह है कि जब युग पल्ट जाता है फिर जगत में क्या वर्ताव होता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हैं कि जगत में एक दूसरे से नफरत हो जाती है, पाप कर्म होने लगते हैं और

लोग भ्रष्टाचारी असत्यवादी हो जाते हैं। एक को दूसरा अच्छा नहीं लगता और वांसों की भांति आपस में रगड़-रगड़ कर सड़ मरते हैं। अज्ञान के अंधेरे के कारण समझते नहीं और शुभ कर्मों की निंदा करते हैं। भाव है कि नेक कर्मों को अच्छा नहीं समझते।

परन्तु—

वेद ग्रन्थ गुर हटि है जिसु लगि भवजल पारि उतारा॥
सतिगुर बाझु न बुझीऐ जिचर धडे न प्रभु अवतारा॥
गुर प्रमेसरु इकु है सच्चा साहु जगतु वणजारा॥
चड़ै सूर मिटि जाइ अंधारा॥१७॥

अर्थात्—वेद आदि ज्ञान उपदेश के लिए ग्रन्थ गुरु की दुकान है जिनको ग्रहण करके भवसागर से पार हो सकता है। इस बात को तभी समझा जाता है जब सच्चा गुरु अवतार धारण करके प्रकट हो। गुरु परमेश्वर का रूप है, जो सच्चा शाह और जगत का वंजारा है। गुरु सूर्य के चढ़ने से अज्ञान का अंधेरा मिट जाता है।

गुरु की जरूरत

बाझु गुरु अंधेरु है खहि खहि मरदे बहु विधि लोआ॥
विरतिआ पापु जगत ते धउल उडीना निस दिनि रोआ॥
बाझु दइआ बलहीण होइ निघर चले रसातलि टोआ॥

अर्थात्—गुरु के बिना अज्ञान के अंधेरे के कारण लोग अनेक प्रकार से आपस में लड़ लड़ कर मर रहे हैं और संसार में पाप फैल गया है जिस कारण धर्म जिसके सहारे सृष्टि खड़ी है दु;खी हो कर रात दिन रो रहा है। दया के बिना धर्म कमजोर हो कर नर्क के गढ़े में गिर रहा है। क्यों ?

खड़ा इकते पैर ते पाप संगि वहु भारा होग्रा ॥
थम्मे कोइ न साधु विनु साधु न दिसे जग विचि कोआ ॥

अर्थात्—(धर्म इसलिए गिरने लगा है क्योंकि) एक पैर पर खड़ा हुआ पापों के भार से वहुत भारी हो गया है और उसको साधू (गुरु) के विना कोई सहारा नहीं दे सकता, पर आश्चर्य है कि इस समय संसार में ऐसा कोई संत नहीं मिलता और—

धर्म धउल पुकारे तलै खलोग्रा ॥22॥

धर्म का धौला बैल धरती के नीचे खड़ा चीख-पुकार रहा है।

गुरु आगमन

फिर जव धर्म रुपी बैल की—

सुणी पुकार दातार प्रभु
गुर नानक जग माहि पठाया।

जव परमात्मा ने धर्म की पुकार सुनी तो उसने गुरु नानक देव को जगत में भेजा, गुरु जी ने आकर क्या किया—

चरन धोइ रहरासि करि चरनामृत सिखा पिलाया ॥
पारब्रह्म पूरन ब्रह्म कलिजुग अंदरि इक दिखाइआ ॥
चारे पैर धरम दे चारि वरन इक वरनु कराया ॥
राणा रंक वरावरी पैरी पवणा जग वरताया ॥
उलटा खेलु पिरंम दा पैरां उपरि सीसु निवाइया ॥
कलिजुगु वावे तारिग्रा सतिनामु पढ़ि मंत्रु सुनाया ॥
कलि तारणि गुरु नानक ग्राया ॥23॥

अर्थात्—गुरु जी ने अपने सिखों को चरण पाहुल दी और एक पारब्रह्म परमेश्वर की मन्नत माननीं सिखाई। धर्म के चार (सत, तप, दया, दान अथवा नाम दान स्नान और ज्ञान)

कायम किये और जहां एक दूसरे से नफरत थी वहां चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को भाई चारा बताया और नीच-ऊंच के भ्रम को दूर करने के लिए बड़े छोटे को चरण वन्दना अर्थात् नम्रता के साथ मिलना और रहना सिखाया। गुरु जी ने उल्टी रीति चलाई कि ऊंचे सिर को नम्रता के लिए नीचे चरणों के ऊपर झुका दिया। इन नियमों से सतिगुरु जी ने सतिनाम का उपदेश दे कर कलियुग के लोगों को पार उतारा। इस तरह गुरु नानक जी कलियुग के लोगों को पार उतारने के लिए आए।

सतिगुरु नानक अवतार

हैं) में हुआ तो जगत में अज्ञान से जो पापों की घटा छाई हुई थी वह सूर्य रुपी गुरु अवतार के प्रकट होने से छंट गई और ज्ञान का उजाला सारे जगत में फैल गया। जिस तरह सूर्य के उदय होने से तारे छुप जाते हैं और अंधेरा दूर हो जाता है। जैसे शेर की गर्जना से मृगों की कतार तितर-वितर हो जाती है और धैर्य पूर्वक खड़े रहने का साहस नहीं रखती। इसी तरह ही गुरु जी की सतिनाम की गर्जना से पापों पर वज्रपात हुआ।

जहां वावा गुरु नानक जी चरण रखते हैं वहां ही वही स्थान पूजनीय स्थल वन जाता है। सारे जगत के प्रसिद्ध स्थान गुरु नानक जी के नाम से प्रसिद्ध हो गए जैसा कि गोरख मता से नानक मता आदि। हर जगह संगत के सतिसंग के लिए धर्मशाला वन गई जहां नित्य प्रतिदिन कीर्तन होते और खुशियां रहती। वावा गुरु नानक जी ने चारों कूटों और नौखंड पृथ्वी को अपने पवित्र उपदेशों से सच्चा मेल करके उद्धार किया। कलियुग में परमेश्वर का अवतार श्री गुरु नानक जी प्रकट हुए।

नोट—भाई वाले वाली जन्म साखी जो श्री गुरु अंगद साहिव जी ने भाई पैड़े मोखे से संवत् 1600 वि: में भाई वाले की जुवानी लिखवाई थी उसमें आप जी का अवतार दिन कत्तक सुदी पूर्णमाशी संवत् 1526 लिखा है। इसके अनुसार ही आप जी का अवतार गुरुपर्व कातिक शुदि पूर्णमाशी के दिन मनाया चला आ रहा है।

इस के उपरांत भाई मनी सिंह जी को जव माता सुन्दरी जी ने श्री दरवार साहिव अमृतसर का ग्रन्थी संवत् 1778 में नियत किया तो भाई जी ने अपने इस ग्रन्थी पद के समय संवत् 1778 से 1794 में, श्री गुरु नानक साहिव जी की जन्म

साखी लिखी। जिसमें भाई जी ने गुरु साहिब जी का अवतार दिन वैसाख वदी 3 (वैसाख 20) संवत् 1526 लिखा। वाद में इसी लिखित को लेकर ही कर्म सिंह जी हिस्टोरियन ने आज से लगभग पचास वर्ष पहले अपनी पुस्तक "कत्तक कि वैसाख" में अपनी दलीलों के उदाहरण देकर गुरु जी का अवतार दिन वैसाख सही वताया, जिससे पंथ में द्वन्द्व युद्ध छिड़ गया और गुरु जी की जन्म तिथि को धूमिल वना दिया गया। इस समय सिख पंथ की दो प्रमुख संस्थाए शिरोमणि गुरु प्रवन्धक कमेटी और चीफ खालसा दीवान का यही फैसला है कि श्री गुरु नानक देव जी का अवतार दिन कत्तक सुदी पूर्णमाशी को ही मनाया जाए।

गुरु जी के जन्म समय के लक्षण

वालक गुरु जी के जन्म के उपरांत जव पंडित हरदयाल आप जी की जन्म पत्री वनाने लगा तो उसके पूछने पर दौलतां दाई ने वताया कि इस वालक के जन्म समय मैंने दो आश्चर्य-जनक वातें देखी हैं। पहली यह कि और वालकों की भांति जन्म के समय रोने के स्थान पर यह वालक खिलखिला कर हंसा था और दूसरे इसके जन्म वाली कोठरी में इस तरह प्रकाश हो गया था कि जैसे चन्द्रमा का उदय हो गया हो। फिर पंडित ने वालक के सारे शरीर के अंग और चिन्ह चक्र देखकर मैहता जी को वताया, मैहता जी—

चौपाई—

इस सिसु, को मानहिगे दोऊ ॥ हिंदू तुरक सिख होइ कोऊ ॥
इसके चरन पोत की निआई ॥ पार परहि परमारथ पाई ॥1॥
संगत करहि तरहि भवसागर ॥ सकल जगत महि होइ उजागर ॥
वहुर नरन को करहि उधारा ॥ नाम भगति दे दान उदारा ॥2॥

[ना: प्र: अधि: 4]

है) में हुआ तो जगत में अज्ञान मे जो पापों की घटा छाई हुई थी वह सूर्य रुपी गुरु अवतार के प्रकट होने से छंट गई और ज्ञान का उजाला सारे जगत में फैल गया। जिस तरह सूर्य के उदय होने से तारे छुप जाते हैं और अंधेरा दूर हो जाता है। जैसे शेर की गर्जना से मृगों की कतार तितर-वितर हो जाती है और धैर्य पूर्वक खड़े रहने का साहस नहीं रखती। इसी तरह ही गुरु जी की सतिनाम की गर्जनां से पापों पर वज्रपात हुआ।

जहां वावा गुरु नानक जी चरण रखते हैं वहां ही वही स्थान पूजनीय स्थल वन जाता है। सारे जगत के प्रसिद्ध स्थान गुरु नानक जी के नाम से प्रसिद्ध हो गए जैसा कि गोरख मता से नानक मता आदि। हर जगह संगत के सतिसंग के लिए धर्मशाला वन गई जहां नित्य प्रतिदिन कीर्त्तन होते और खुशियां रहती। वावा गुरु नानक जी ने चारों कूटों और नौखंड पृथ्वी को अपने पवित्र उपदेशों से सच्चा मेल करके उद्धार किया। कलियुग में परमेश्वर का अवतार श्री गुरु नानक जी प्रकट हुए।

नोट—भाई वाले वाली जन्म साखी जो श्री गुरु अंगद साहिव जी ने भाई पैड़े मोखे से संवत् 1600 वि: में भाई वाले की जुवानी लिखवाई थी उसमें आप जी का अवतार दिन कत्तक सुदी पूर्णमाशी संवत् 1526 लिखा है। इसके अनुसार ही आप जी का अवतार गुरुपर्व कातिक शुदि पूर्णमाशी के दिन मनाया चला आ रहा है।

इस के उपरांत भाई मनी सिंह जी को जव माता सुन्दरी जी ने श्री दरवार साहिव अमृतसर का ग्रन्थी संवत् 1778 में नियत किया तो भाई जी ने अपने इस ग्रन्थी पद के समय संवत् 1778 से 1794 में, श्री गुरु नानक साहिव जी की जन्म

साखी लिखी। जिसमें भाई जी ने गुरु साहिब जी का अवतार दिन वैसाख वदी 3 (वैसाख 20) संवत् 1526 लिखा। बाद में इसी लिखित को लेकर ही कर्म सिंह जी हिस्टोरियन ने आज से लगभग पचास वर्ष पहले अपनी पुस्तक "कत्तक कि वैसाख" में अपनी दलीलों के उदाहरण देकर गुरु जी का अवतार दिन वैसाख सही वताया, जिससे पंथ में द्वन्द्व युद्ध छिड़ गया और गुरु जी की जन्म तिथि को धूमिल बना दिया गया। इस समय सिख पंथ की दो प्रमुख संस्थाएं शिरोमणि गुरु प्रबन्धक कमेटी और चीफ खालसा दीवान का यही फैसला है कि श्री गुरु नानक देव जी का अवतार दिन कत्तक सुदी पूर्णमाशी को ही मनाया जाए।

गुरु जी के जन्म समय के लक्षण

बालक गुरु जी के जन्म के उपरांत जब पंडित हरदयाल आप जी की जन्म पत्री बनाने लगा तो उसके पूछने पर दौलतां दाई ने बताया कि इस बालक के जन्म समय मैंने दो आश्चर्य-जनक बातें देखी हैं। पहली यह कि और बालकों की भांति जन्म के समय रोने के स्थान पर यह बालक खिलखिला कर हंसा था और दूसरे इसके जन्म वाली कोठरी में इस तरह प्रकाश हो गया था कि जैसे चन्द्रमा का उदय हो गया हो। फिर पंडित ने बालक के सारे शरीर के अंग और चिन्ह चक्र देखकर मैहता जी को बताया, मैहता जी—

चौपाई—

इस सिसु, को मानहिगे दोऊ ॥ हिंदू तुरक सिख होइ कोऊ ॥
इसके चरन पोत की निआई ॥ पार परहि परमारथ पाई ॥1॥
संगत करहि तरहि भवसागर ॥ सकल जगत महि होइ उजागर ॥
बहुर नरन को करहि उधारा ॥ नाम भगति दे दान उदारा ॥2॥
[ना: प्र: अधि: 4]

है) में हुआ तो जगत में अज्ञान से जो पापों की घटा छाई हुई थी वह सूर्य रुपी गुरु अवतार के प्रकट होने से छंट गई और ज्ञान का उजाला सारे जगत में फैल गया। जिस तरह सूर्य के उदय होने से तारे छुप जाते हैं और अंधेरा दूर हो जाता है। जैसे शेर की गर्जना से मृगों की कतार तितर-वितर हो जाती है और धैर्य पूर्वक खड़े रहने का साहस नहीं रखती। इसी तरह ही गुरु जी की सतिनाम की गर्जना से पापों पर वज्रपात हुआ।

जहां वावा गुरु नानक जी चरण रखते हैं वहां ही वही स्थान पूजनीय स्थल वन जाता है। सारे जगत के प्रसिद्ध स्थान गुरु नानक जी के नाम से प्रसिद्ध हो गए जैसा कि गोरख मता से नानक मता आदि। हर जगह संगत के सतिसंग के लिए धर्मशाला वन गई जहां नित्य प्रतिदिन कीर्त्तन होते और खुशियां रहती। वावा गुरु नानक जी ने चारों कूटों और नौखंड पृथ्वी को अपने पवित्र उपदेशों से सच्चा मेल करके उद्धार किया। कलियुग में परमेश्वर का अवतार श्री गुरु नानक जी प्रकट हुए।

नोट—भाई वाले वाली जन्म साखी जो श्री गुरु अंगद साहिव जी ने भाई पैड़े मोखे से संवत् 1600 वि: में भाई वाले की जुबानी लिखवाई थी उसमें आप जी का अवतार दिन कत्तक सुदी पूर्णमाशी संवत् 1526 लिखा है। इसके अनुसार ही आप जी का अवतार गुरुपर्व कार्तिक शुदि पूर्णमाशी के दिन मनाया चला आ रहा है।

इस के उपरांत भाई मनी सिंह जी को जव माता सुन्दरी जी ने श्री दरवार साहिव अमृतसर का ग्रन्थी संवत् 1778 में नियत किया तो भाई जी ने अपने इस ग्रन्थी पद के समय संवत् 1778 से 1794 में, श्री गुरु नानक साहिव जी की जन्म

गोपाल पांधे के पास पड़ना

इसके उपरांत जब गुरु जी ऐसे छोटे-छोटे करतब करते हुए छः वर्षों के हुए तो आप जी को पढ़ने योग्य समझ कर मेंहता कालू जी ने गोपाल पांधे के पास मुनीमी के काम के लिए लेखा जोखा सीखनें के लिए पढ़ने बिठा दिया। जब आप जी कुछ समय पांधे के पास मुनीमी पढ़ते रहे तो एक दिन पांधे ने कहा कि नानक जी पाती लिख कर दिखाएं। तब गुरु जी वे यह पाती लिख कर पांधे को दिखाई :—

आसा मः 1॥ पाती लिखी

ससा सोइ स्रिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥
सेवत रहे चित जिनका लागा आइआ तिनका सफलु भइआ ॥1॥
मन काहे भूले मूड़ मना ॥ जब लेखा देवहि बीरा तउ पढ़िया ॥1॥ रहाउ ॥

ननकाने साहिब गुरु जी की इस याद में गुरुद्वारा पट्टी साहिब प्रसिद्ध है।

(संपूर्ण पट्टी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना 432 से पढ़ें)

पांधे को उपदेश

जब पांधे ने यह पट्टी पढ़ी तो उसने हैरान होकर कहा बेटा! तुम्हारा यह लिखना तो ठीक है लेकिन तुम क्षत्रिय पुत्र हो, तुम्हें चाहिए कि लेखा पढ़ लिख कर अपने जीवन में प्रगति करो और सुखपूर्वक रहो। लेखा-जोखा सीख कर धन दौलत कमाकर अपने परिवार को सुखी रखोगे तो तुम्हारी इज्जत बढ़ेगी। रिश्तेदारों में मान सम्मान प्राप्त होगा। तब गुरु जी ने कहा पांधा जी! यह लेखा-जोखा सीख कर मैं धन दौलत तो कमा लूंगा लेकिन आगे भविष्य का क्या होगा? इस लि

वो लेखा सीखना चाहिए जो लोक परलोक में काम आए। पांधे ने पूछा नानक जी ! वह ऐसा कौन सा लेखा है जो लोक परलोक में काम आए ? तब गुरु जी ने यह शब्द का उच्चारण किया :—

जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥
भाउ कलम करि चितु लिखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥1॥
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सच्चा नीसाणु ॥1॥ रहाउ ॥
(पन्ना 16)

अर्थात्—पांधा जी ! दुनियाँ का मोह जला कर उसकी स्याही करें और उतम बुद्धि को कागज बना कर उसके ऊपर ईश्वर प्रेम की कलम से अपने मन को लिखने वाला करके गुरु के पवित्र उपदेश को लिखो। नाम की महिमा लिखो और लगातार बार-बार लिखते ही जाओ। हे पांधा जी ! यह लेखा लिखना सीखें, जहां आपको लेखा देने की जरूरत होगी वहीं पर ही यह सच्चा परवाना आपके साथ होगा।

आप जी के यह श्रेष्ट विचार सुन कर पांधे ने आप जी को नमस्कार किया और मैहता कालू जी से कहा, मैहता जी ! यह बालक तो कोई महापुरुष जन्मा है, जो कोई इससे ज्यादा विद्वान हो वही इसे पढ़ा सकता है। मेरे में इसको और पढ़ाने की शक्ति नहीं।

पंडित बृज लाल के पास पढ़ना

जब श्री नानक जी को पांधे से छुट्टी मिल गई तो मैहता कालू जी ने विचार किया कि इसकी ज्यादा धार्मिक रुची है इसलिए इसको किसी वेदों शास्त्रों के विद्या जानने वाले पंडित के

पास छोड़ना ही बेहतर होगा। वहाँ यह ध्यानपूर्वक पढ़ कर समझदारी से अपने कामों में सफलता प्राप्त करेगा।

यह विचारने के बाद मैहता जी ने श्री नानक जी को संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित बृज लाल के पास पढ़ने के लिए भेजा। पंडित आप जी को बड़े प्रेम से पढ़ाता रहा और आप जी बड़े प्यार से पढ़ते रहे। बाद में जब आप जी ने समझा कि यह काम भी पूरा हो गया है तो उससे छुट्टी करके और काम करने के लिए आप जी कभी घर में ही आंखें बन्द करके बैठे रहते और कभी बालकों के साथ खेलते समय बालकों को पास बिठा कर उनको गीता का पाठ करके सुनाते रहते।

सप्त श्लोकी गीता

एक दिन जब श्री नानक जी बालकों के बीच पंडित के समान बैठ कर गीता का पाठ करके अर्थ सुना रहे थे तो मैहता कालू जी उधर से गुज़रे। मैहता जी आपको ऐसा करते देख कर बहुत प्रसन्न हुए और जब घर आये तो पूछने लगे कि बेटा ! बाहर बालकों को क्या सुना रहे थे ? वह मुझे भी बताओ। तब गुरु जी ने कहा कि पिता जी मैं सप्त श्लोकी गीता पढ़ रहा था। फिर आप जी ने गीता के सात श्लोक पढ़कर सुनाए तथा उनके अर्थ करके बतलाए। आप जी ने बतलाया कि श्री कृष्ण भगवान ने अपने परम भक्त अर्जुन को इन सात श्लोकों द्वारा यह उपदेश दिया है—हे अर्जुन ! ओंकार जो वेद का प्रथम अक्षर है यह परम पुरुष पूर्ण ब्रह्म का नाम है। जो कोई इस ओंकार का जाप करेगा तथा मुझ परम ईश्वर का ध्यान करेगा वह शरीर त्याग कर मेरे परम धाम को प्राप्त होगा। सारे जगत में यह मेरा ही प्रकाश है। मेरा प्रकाश युगों के आदि, अंत तथा मध्य

सदैव समान रहता है। हे अर्जुन! जो मेरे भक्त मेरी कथा कीर्तन प्रेम से करते हैं तथा दूसरों को सुनाकर पवित्र करते हैं एवं जो उसको प्रेम से सुनते हैं—मैं उनकी सदा ही रक्षा करता हूं। जो मेरा भक्त दृढ़ निश्चय के साथ मुझे सतचित्, आनंद जानकर अपनी वासनाओं का दमन करके मेरा स्मरण करता है मैं उसके पीछे पीछे रक्षा करता रहता हूं।

मुल्लां के पास फारसी पढ़ना

जब यह अर्थ मैहता कालू जी तथा माता त्रिप्ता जी ने श्री नानक जी से सुने तो वह बहुत प्रसन्न हुए कि इसने पंडित बृज लाल से अच्छा गुण ग्रहण कर लिया है। परन्तु मैहता जी की प्रबल इच्छा यह थी कि नानक कुछ ऐसा काम सीख लें जिससे यह कुछ कमाई करने के योग्य हो जायें। अतः दूसरे दिन जब मैहता जी ने अपना विचार राय बुलार को बतलाया तो उसने बड़ी सहानुभूति के साथ कहा कि पटवारी जी श्री नानक जी को फ़ारसी पढ़ने के लिए मुल्लां (मौलवी) के पास भेज दीजिये। जब यह फ़ारसी पढ़ जावेंगे तो मैं इनको अपना मुंशी बना लूंगा। मुनीमी इन्होंने पांधा से सीख ली है और वेद शास्त्र इन्होंने पंडित से पढ़ लिए हैं। सरकारी नौकरी के लिए इनको फारसी पढ़नी ज़रूरी है। राय बुलार की सलाह से मैहता कालू जी ने श्री नानक जी को अच्छा दिन वार पूछ कर मौलवी के पास फारसी पढ़ने के लिए बिठा दिया। राय बुलार के पटवारी का सुपुत्र होने के नाते मौलवी ने जो कुछ भी श्री नानक जी को पढ़ाना था वो बड़े प्रेमपूर्वक पढ़ाता रहा। पर जब कुछ वक्त इसी तरह बीत गया तो गुरु जी यहाँ से भी छुट्टी करने के लिए नया कौतक रचानें लगे। जब मौलवी ने पूछा कि नानक जी आज पढ़ते क्यों नहीं ? तो गुरु नानक जी ने कहा :—

मरना मुला मरना ॥ भी करतारहु डरना ॥1॥ रहाउ ॥
ता तू मुला ता तू काजी जानहि नामु खुदाई ॥
जे बहुतेरा पढ़िया होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥2॥
(सिरीरागुम: 1॥ पन्ना 24)

अर्थात् :—हे मुल्ला जी ! मृत्यु अवश्य आनीं है, इसलिए उस सृजनहार ईश्वर से डरना और उसका नाम स्मरण करना चाहिए। सो मैं उसके डर में लगा हुआ हूं। आप भी मौलवी या काजी तभी कहला सकते हो अगर उस ईश्वर का नाम स्मरण करके उसे जाने। क्योंकि पढ़ा हुआ चाहे कोई जितना भी हो, जब उसके श्वासों का अंत हो जाता है तो उसे भी यह संसार त्यागना पड़ता है। इसलिए ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।

आप जी के यह विचार सुनकर मौलवी ने कहा यह कोई ईश्वरीय आत्मा है। इसको और बालकों की भांति जानकर पढ़ाना अज्ञानता है। यह ईश्वरीय बातें करता है, किसी दिन यह ज़रूर कोई महापुरुष होगा।

श्री नानक निरंकारी ने छः साल की उमर से अपनी 15 साल की आयु तक प्रथम तीन वर्ष पांधे से हिन्दी अक्षर और लेखा जोखा सीखा फिर तीन वर्ष पंडित से संस्कृत पढ़कर वेदों शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया। इसके पश्चात् तीन वर्ष मौलवी कुतुबदीन से उस समय की राज्य भाषा फ़ारसी सीखकर अपने आप को विद्या में निपुण कर लिया। इस व्यवहारिक शिक्षा और विद्या के साथ आप जी ने अपने निजी अध्यात्मिक विचार को भी जारी रखा। ईश्वर का स्मरण और निजी स्वरूप के ख्याल को आप जी कभी भी नहीं विसारते थे। पांधे, पंडित या मौलवी से जब भी कभी आप की कोई वार्ता होती तो आप जी सदा ही ईश्वर की स्मरण महिमा और बुराई का त्याग करना ही निश्चय कराते थे। इन तीनों गुरुओं से गुरु जी ने आप

व्यवहारिक विद्या सीखी और उन तीनों को अध्यात्मिक विद्या सिखाई।

सच्चा यज्ञोपवीत [जनेऊ]

मैहता कालू जी ने एक दिन नियत करके पंडित हरिदयाल को कहा कि श्री नानक जी को क्षत्रीय रीति के अनुसार जनेऊ पहना दें।

जब सारी तैयारी सम्पूर्ण करके नाते-रिश्तेदारों के सामने पंडित गुरु जी के गले में जनेऊ डालने लगा तो आप जी ने कहा, पंडित जी ! इस जनेऊ का क्या लाभ है ? यह क्यों पहना जाता है ? पंडित जी ने कहा, बेटा ! यह जनेऊ पहनना क्षत्रीय कुल की रीति है, जो परम्परागत चली आ रही है। इसके बिना क्षत्रीय ब्राह्मण को शूद्र माना जाता है। यह परलोक में सहायता करता है। गुरु जी ने कहा पंडित जी, यह सूत का धागा तो यहां शरीर के साथ हीजल कर भस्म हो जाता है, परलोक में यह कैसे सहायता कर सकता है ? इसके बाद गुरु जी ने यह श्लोक बोलना आरम्भ किया :—

आसा दी वार श्लोक भः 1॥ (पन्ना 471)
चडकड़ि मुलि अणाइआ वहि चउकै पाइआ ॥
सिखा कंनि चढ़ाईआ गुरु ब्राह्मण थिआ ॥
उहु मुआ उहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥1॥

अर्थात्—चार तारों का बना हुआ धागा चार कौड़ियों का मोल लाकर चौंके में बैठ कर प्राणी के गले में डालकर उसके कान में शिक्षा देने से उसका गुरु ब्राह्मण हो गया। लेकिन जब वह प्राणी मर जाता है तो वह सूत का जनेऊ उसके गले में से गिर पड़ता है तो प्राणी जनेऊ के बिना ही दरगाह में जाता है। फिर यह परलोक में कैसे सहायता कर सकता है ? गुरु जी ने

मस्त रहने लगे। आप जी की इस तरह की दीवानों वाली दशा देखकर मैहता जी ने सोचा कि इन की यह दशा खाली रहने के कारण और कुछ अधिक पढ़ाई की वजह से हुई प्रतीत होती है। इसलिए इनको किसी काम पर लगाना चाहिए, जहां इनको दिमागी कार्य भी न करना पड़े और सारा दिन रुझेवां भी वना रहे।

इस विचार के अनुसार मैहता कालू जी ने श्री नानक जी को कहा, वेटा ! तुम अपनी भैंसे चराने के लिए वाहर मैदान में ले जाया करो। इस तरह तुम्हारा दिल भी वहल जाया करेगा और उदासी हट जाएगी। पिता जी का कहा मान कर गुरु जी दूसरे दिन भैंसे लेकर वाहर मैदान में चरवाने चले गए।

जमींदार की खेती हरी करना

इसी तरह जव कुछ दिन भैंसे चारते हुए गुजर गए तो एक दिन भैंसों ने एक ज़मींदार की हरी भरी खेती चर डाली। जमींदार अपनी फसल का नुक्सान देखकर वहुत दुःखी हुआ और उसने राय वुलार के पास जाकर पुकार की कि आपके पटवारी के सपुत्र ने अपनी भैंसे छोड़ कर मेरा खेत उजाड़ दिया है। खेत के उजाड़े जाने का कारण जव राय वुलार ने गुरु से पूछा तो आप जी ने धीरे से कहा, राये जी ! आप अपना आदमी भेज कर पता लगवाएं कि इसका खेत उजड़ा भी है कि नहीं ? तव राये वुलार ने इन्साफ करने के लिए अपना आदमी जिमींदार का नुक्सान देखने के लिए भेजा। खेत देखकर उसने राये वुलार को आकर कहा कि जिमींदार झूठ वोल रहा है, इसके खेत का एक भी पत्ता किसी पशु द्वारा खाया हुआ प्रतीत नहीं होता, मैंने अच्छी तरह से घूम कर खेत को देखा है। अपने आदमी से यह वात सुन कर राये वुलार ने जिमींदार को झूठा किया कि उसने विना मतलव शिकायत की है।

सर्प छाया

एक दिन गुरु जी भैंसे चराने गए, गर्मियों के दिनों में एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे कि सूर्य के ढल जाने से वृक्ष की छाया भी ढल गई और गुरु जी के मुखमण्डल पर धूप आ गई। अचानक जब राये बुलार उधर आए तो उसने देखा कि गुरु जी को छाया करने के लिए एक सफेद सर्प आप जी के मुख पर अपने फ़न का साया करके सिर की तरफ बैठा हुआ है। बाद में राये ने देखा कि लोगों का शोर सुन कर सर्प वहीं लिप्त हो गया है और गुरु जी अपनी मौज में विराजे हैं तब राये बुलार ने आप जी को परमेश्वर का पूर्ण रुप जानकर नमस्कार किया। इसके बाद यह बात सब लोगों में फैल गई।

इस घटना की याद में यहां गुरुद्वारा माल जी साहिब प्रसिद्ध है।

सच्ची खेती और किसानी

गुरु जी तो अपनी मौज में मस्त रहते थे, पर मैंहता कालू जी इन शिकायतों और बातों से बहुत घबराते थे। कभी जिमींदार के खेत की शिकायत और कभी भैंसे छोड़कर सो जाना और कभी सर्प सिर की तरफ बैठे रहने की बातें लोग करते थे। इसलिए एक दिन पिता कालू जी ने कहा—बेटा ! अगर तुम्हारा मन भैंसे चराने को नहीं करता तो तुम अपनी खेती बोने का काम कर लिया करो। मैं तुम्हें इस काम के लिए जुताई का सारा सामान तैयार कर देता हूं। गुरु जी ने कहा—पिता जी ! मैं सच्ची खेती करना चाहता हूं, जिस की बोई हुई फ़सल आगे भी काम आए। मैंहता जी ने कहा, वह सच्ची खेती कौन सी है ? तब आप जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

सोरठि म: 1 ॥ (पन्ना 595)

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥1॥
बाबा माइआ साथि न होइ ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥

अर्थात्—पिता जी ! अपने मन को हाली (हल चलाने वाला) करके खेती करनी चाहिए । अपने शरीर को जोत करके उसको जप तप का पानी देना और उसमें ईश्वर के नाम का बीज बो कर उसके ऊपर संतोष का सुहागा फेरे और मन के अन्दर नम्रता धारण करें । अगर यह प्रेम से की हुई खेती उग पड़े तो फ़सल से घर सम्पन्न हो जाता है। हे पिता जी ! यह संसारी माया जो आप खेती करके इकट्ठी करना चाहते हो यह अन्त में साथ नहीं देती । इसने जगत को मोह लिया है कोई विरला ही इस बात को समझ सकता है ।

सच्ची दुकान व सौदागिरी

आपजी के यह विचार सुनकर मैहता कालू जी ने यह समझा कि यह टाल मटोल करके खेती का काम भी नहीं करना चाहते, इस लिए इनको एक स्थान पर बैठने का काम करने के लिए दुकान उत्तम रहेगी । यह विचार करने के बाद पिता जी ने कहा, बेटा ! अगर खेती का मुश्किल काम नहीं करना चाहते तो आसान काम दुकान कर लें । तब गुरु जी बोले, पिता जी !

सोरठि म: 1 ॥

हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥
सुरति सोच करि भांड साल तिसु विचि तिसनो रखु ॥
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥2॥
(पन्ना 595)

अर्थात्—अपनी आयु जो घटती जा रही है, इसकी दुकान करके उसमें सच्चे नाम का सौदा डाले और श्रेष्ट विचारों को सौदा रखने वाली जगह बनाकर उसमें नाम सौदे को रखे। इस सौदे का ग्राहकों से लेन-देन करके लाभ प्राप्त करें. जो आगे परलोक में भी साथी होता है।

इस संसार में आकर मनुष्य को दुकान किस तरह की करनी चाहिए। जब यह विचार आप जी के पिता जी ने सुने तो फिर सोच कर कहा, बेटा ! अगर यह सिर्फ बैठने का भी काम तुम नहीं करना चाहते तो फिर कुछ रुपए ले लो और घोड़ों की सौदागिरी का काम जो धनवान लोग करते हैं वह कर लो। इस का उत्तर आप जी ने इस तरह दिया—

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥
खरचु बन्नु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥
निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥3॥
(पन्ना 595)

अर्थात—पिता जी ! वेदों शास्त्रों का सुनना सौदागिरी है और वहां से सच्चाई की प्राप्ति के घोड़े हैं। नेकियों का खर्च साथ लेकर इन घोड़ों को खरीदें, यह न समझें कि यह सौदा कल करेंगे, क्या पता कल आए ही नहीं। इस तरह करके निरंकार के देश सच्चखण्ड में जाकर परम सुख की प्राप्ति होती है।

यह उत्तर सुन कर पिता जी ने समझ लिया कि यह इस लम्बे झंझट में घोड़े खरीद कर देश-विदेश में घूमते फिरना भी पसन्द नहीं करते। तब आप जी ने कहा, बेटा ! अगर यह काम भी पसन्द नहीं तो फिर किसी की नौकरी कर लो।

गुरु जी ने कहा—

लाइ चितु करि चाकरी मनि नामु करि कम्मु ॥
बन्नु वदीआ करि धावणी ताको आखै धन्नु ॥
नानक वेखै नदरि करि चढ़ै चवगण वन्नु ॥4॥2॥
(पन्ना 595)

अर्थात्—मन को परमात्मा के ध्यान में लगाना ही नौकरी है और नाम को मानना उस मालिक का काम है। बुराई को बांध कर जो नाम स्मरण के काम को फुर्ती से करता है, उस को हर एक धन्य-धन्य कहता है तो उसको नाम का चार गुणा ज्यादा रंग चढ़ता है।

इस तरह जब मैहता कालू जी ने देखा कि नानक जी ना खेती का काम करना चाहते हैं, ना दुकान का, ना सौदागिरी का और ना ही किसी नौकरी का, तो मैहता जी चुप कर के अपने पटवारी के काम में लग गए।

भोला वैद्य

गुरु जी फिर अपनी मौज में अन्तर्मुख वृत्ति करके एकांत, चुप-चाप घर में लेटे रहते। खाना-पीना भी बहुत कम कर दिया जिसके कारण आपका शरीर दुर्बल और कमज़ोर होने लगा। मैहता कालू जी ने वैद्य हरिदास को बुला कर कहा, वैद्य जी! नानक जी को देखो इनको क्या रोग है? यह अपने आप बताते कुछ नहीं पर दिन-प्रतिदिन कमजोर होते जा रहे हैं। वैद्य ने जब आप जी की नब्ज़ देखी तो उसको रोग का कोई पता न चला। जब वह फिर से बाज़ू पकड़ कर रोग देखने लगा तो गुरु जी ने उच्चारण किया—

सलोक मः 1॥ (पन्ना 1279)
वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह ॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥1॥

अर्थात्—गुरु जी ने वैद्य को सोच में डूबे हुए देखकर कहा—आप तो भोले वैद्य हो, जो बाजू को पकड़ कर रोग ढूंढ रहे हो। आप नहीं जानते कि रोगी को वह कौन सा रोग (दुःख) है जो उसके हृदय को पीड़ित कर रहा है। वैद्य ने कहा अगर आपको कोई अंदरूनी रोग है तो मैं आप को अन्दर खाने वाली दवा देता हूं, जिससे हृदय को शान्ति मिल जाएगी।

तब गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया—

मलार म: 1 ॥ (पंना 1256)

दुखु विछोड़ा इकु दुखु भूख ॥
इकु दुखु सकतवार जमदूत ॥
इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ ॥
वैद न भोले दारु लाइ ॥1॥
वैद न भोले दारु लाइ ॥
दरदु होवै दुखु रहै सरीर ॥
ऐसा दारु लगै न बीर ॥1॥ रहाउ ॥
खसमु विसारि कीए रस भोग ॥
तां तनि उठि खलोए रोग ॥
मन अन्धे कउ मिलै सजाइ ॥
वैद न भोले दारु लाइ ॥2॥
चन्दन का फलु चन्दनवासु ॥
माणस का फलु घटि महि सासु ॥
सासि गइऐ काइआ ढलि पाइ ॥
ताकै पाछै कोइ न खाइ ॥3॥
कंचन काइआ निरमल हंसु ॥
जिसु महि नामु निरंजन अंसु ॥
दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥
नानक छूटसि साचै नाइ ॥4॥2॥

अर्थात्—वैद्य जी! मुझे एक दुःख अपने प्रियतम से बिछुड़ने

का है, एक दु:ख उसके दर्शन की तृष्णा का है, एक दु:ख मुझे शक्तिशाली यमदूत का है, जो अचानक ही आदमी को पकड़ कर ले जाता है। एक दु:ख यह है कि पता नहीं कब रोग शरीर पर हावी हो जाए। इसलिए वैद्य जी, आप मुझे कोई दवाई न दें। हे भोले वैद्य ! मुझे कोई दवा न दें। क्योंकि जिस दवा से दर्द दूर न हो, उसके खाने से या शरीर पर प्रयोग करने से क्या लाभ ? जिन लोगों ने भगवान को भूल कर भोग विलास को अपनाया है उनके शरीर में कई रोग हो जाते हैं। इन रोगों द्वारा ईश्वर को भूले हुए लोगों को सजा मिलती है। इसलिए हे भोले वैद्य ! मुझे कोई दवा न दीजिए। जिस तरह चन्दन के वृक्ष का फल सुगन्धित है इसी प्रकार ही पुरुष का फल उसके अन्दर श्वास है। श्वासों के खत्म हो जाने से शरीर गिर जाता है और बाद में कोई कुछ नहीं खाता। अगर शरीर स्वर्ण की भान्ति तन्दरुस्त हो तो वह जीव भी अच्छा होता है जिसके हृदय में ईश्वर के नाम का स्थान है। ऐसा मनुष्य दु:ख-रोग सब कुछ खत्म करके ही आगे जाता है। इन कष्टों से, ईश्वर के स्मरण से ही छुटकारा मिलता है।

गुरु जी से अपने रोग का यह व्याख्यान सुन कर वैद्य चुप ही रह गया और जाता हुआ बतला गया कि इनका रोग मेरी समझ में नहीं आता, क्योंकि यह किसी और ही रोग की बातें करते हैं। वैद्य की यह बात सुन कर मैहता कालू जी बहुत परेशान हुए।

गुरु जी ने खरा सौदा करना

बाद में जब गुरु जी ने दो-तीन माह पश्चात् अपने आप ही खाना-पीना और बोलना आरम्भ कर दिया तो मैहता कालू जी ने आप जी को किसी काम में लगाने के विचार से बीस रुपए दिए और कहा कि इनसे कोई लाभदायक व्यापार करके अपना

काम चलाएं। इससे आपका दिल भी वहल जाएगा और कमाई का साधन वन जाएगा। गुरु जी के साथ जाने के लिए मैहता कालू जी ने भाई वाले को बुद्धिमान समझ कर तैयार कर दिया।

गुरु जी भाई वाले को साथ लेकर लाहौर की तरफ लाभ-दायक सौदा करने के लिए जा रहे थे कि आप को चूहड़कांणे गांव के वाहर जंगल में एक साधू मण्डली मिली। आप जी यह देख कर कि साधू जंगल में बैठे हैं और इनके पास भोजन का कोई प्रवन्ध नहीं है, भाई वाले द्वारा उन्होंने वीस रुपए की खाद्य सामग्री मंगवा दी तथा संतों को भोजन करने के लिए दे दिया और भाई वाले को कहा कि इस से ज्यादा कोई और "खरा सौदा" (अच्छा) नहीं है। इससे वहुत लाभ होगा। घाटा कभी नहीं पड़गा। भाई वाले को यह समझाते हुए गुरु जी खाली हाथ तलवंडी वापस आ गए।

आप जी के इस कारनामे के कारण चूहड़काने में गुरुद्वारा "खरा सौदा" शोभाएमान है।

पिता कालू जी की नाराज़गी

तलवंडी पहुंच कर जव भाई वाले ने मैहता जी को यह वताया कि श्री नानक जी ने वीस रुपए का आटा दालें ले कर संतों को भोजन करा दिया है तो मैहता जी श्री नानक जी को वहुत गुस्से हुए और ताड़ना की। जव इस वात का राये वुलार को पता चला तो उसने मैहता कालू जी को बुला कर कहा कि नानक जी पूर्ण भगवान् के नूर हैं; इनको कोई गलत वात न कहा करो। आगे से अगर यह आपका नुकसान भी करें तो आप मेरे से पूरा करना परन्तु इनको कुछ मत कहना। मैहता जी ने कहा राय जी ! मैं आप दुःखी होकर इनके भले के लिए ही कुछ

कहता हूं, मुझे इनसे और कौन अच्छा है ?

इसके बाद मैहता कालू जी ने लाचार होकर राये बुलार की सलाह से गुरु जी को श्रीमती नानकी और बहनोई जै राम जी के साथ सुल्तानपुर भेज दिया और कहा कि इनको अपने पास ही किसी काम में लगा देवें।

— - — —

दूसरा अध्याय

मोदी की कार

राय बुलार की प्रेरणा से बहन नानकी जी और भाईआ जै राम गुरु जी को बहुत खुशी से अपने पास सुलतान पुर ले गए।

भाईआ जै राम नवाब दौलत खान का दीवान था। आपजी ने दौलतखान को कह कर गुरु जी को सम्वत् 1542 में उसका मोदी (शाही लंगर और फौज को खाने-पहनने का सामान देने वाला) लगवा दिया।

गुरु जी जब सौदा तोल कर ग्राहकों को दे देते तब वह तेरा तेरा कहते जाते। चौदह कहने की याद ही भूल जाते थे। यदि कोई पूछता मोदी जी ! तेरा तेरा ही कहते जाते हो आगे की गिनती क्यों नहीं गिनते ?

तब आप जी कहते—

*नानकु तेरा वाणीआ तू साहिबु मैं रासि ॥
मन ते धोखा ता ल: जा सिफति करी अरदासि ॥4॥

भाव—हे भगवान् ! तू मेरी पूंजी है मैं तेरा वाणीआ (सौदा बेचने वाला) हूं। इन लोगों के मन में यह भ्रम है कि मैं तेरा तेरा ही करता रहता हूं चौदह नहीं कहता, यह तब ही दूर होगा जब यह तेरी भक्ति में लग जाएंगे।

गुरु जी का विवाह

जब दो साल के करीब गुरु जी को मोदी का काम चलाते हुए हो गए और आप जी की आयु भी 18 साल की हो गई तो

---

*सारा शब्द यह है :—

वडहंस म: 1 घरु 1 (पन्ना 557)

अमली अमलु न अंबड़ै मछी नीरु न होइ ॥
जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥1॥

हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥1॥रहाउ ॥

साहिबु सफलिउ रुखड़ा अमृतु जा का नाउ ॥
जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥2॥

मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि ॥
तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि॥3॥

नानकु तेरा वाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥
मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥4॥

आप जी को हर प्रकार योग्य समझ कर भाईआ जै राम तथा वहन नानकी जी ने बाबा कालू राम और माता तृप्ता के साथ सलाह कर, गुरु जी का विवाह मूल चन्द खतरी की बेटी श्री सुलखनी जी के साथ 24 जेठ सम्वत् 1544 को अपनी कुल रीति की मर्यादा अनुसार बड़ी धूमधाम के साथ कर दिया। विवाह करके आप जी फिर "मोदी की कार" में लग गए और तेरा तेरा का जाप करने लग पड़े।

मोदीखाने का हिसाब होना

इनकी तेरा तेरा की रट देख और सुन कर ईर्षा करने वालों ने नवाब के कान भर दिए कि आपका मोदी, मोदीखाना लुटाता जा रहा है। यदि आप ध्यान न देंगे तो सब कुछ लुटा कर किसी तरफ भाग जाएगा।

परन्तु जब नवाब ने पड़ताल कराई तो पता चला कि सरकारी हिसाब ठीक है और गुरु जी की कुछ रकम अधिक है। इस तरह ही दो बार फिर लोगों के कहने पर नवाब ने हिसाब कराया परन्तु हमेशा ही गुरु जी की रकम नवाब की तरफ निकलती ही रही।

वेईं नदी में प्रवेश

गुरु जी प्रत्येक प्रातः वेईं नदी में जो कि शहर सुलतानपुर के पास ही बहती है, स्नान करने के लिए जाते थे। एक दिन जब आपने पानी में डुबकी लगाई तो फिर बाहर न आए। कुछ समय उपरान्त आप जी के सेवक ने, जो कपड़े पकड़ कर नदी के

किनारे बैठा था, घर जाकर जै राम जी को खबर सुनाई कि नानक जी डूब गए हैं तो जै राम जी तैराकों को साथ लेकर नदी पर गए। आप जी को बहुत ढूंढा किन्तु आप नहीं मिले। बहुत देखने के पश्चात् सब लोग अपने अपने घर चले गए।

भाइआ जैराम जी के घर बहुत चिन्ता और दुःख प्रकट किया जा रहा था कि तीसरे दिन सवेरे ही एक स्नान करने वाले भक्त ने घर आकर बहिन जी को बताया कि आपका भाई नदी के किनारे बैठा है। यह सुन कर भाईआ जैराम जी वेईं की तरफ दौड़ पड़े और जब जब पता चलता गया और बहुत से लोग भी वहां पहुंच गए। जब इस तरह आपके चारों तरफ लोगों की भीड़ लग गई, आप जी चुपचाप अपनी दुकान पहुंच गए। आप जी के साथ स्त्री और पुरुषों की भीड़ दुकान पर आने लगी। लोगों की भीड़ को देख कर गुरु जी ने मोदीखाने का दरवाजा खोल दिया और कहा जिस को जिस चीज की जरूरत है वह उसे ले जाए। मोदीखाना लुटाने के पश्चात् गुरु जी फकीरी चोला पहन कर शमशानघाट में जा बैठे। मोदीखाना लुटाने और गुरु जी के चले जाने की खबर जब नवाब को लगी तो उसने मुंशी द्वारा मोदीखाने की किताबों का हिसाब जै राम जी को बुला कर पड़ताल करवाया। हिसाब देखने के पश्चात् मुंशी ने बताया कि गुरु जी के सात सौ साठ रुपये सरकार की तरफ अधिक हैं। इस बात को सुन कर नवाब बहुत खुश हुआ। उसने गुरु जी को बुला कर कहा कि उदास न हो। अपना फालतू पैसा और मेरे पास से पैसा ले कर मोदीखाने का काम जारी रखें। पर गुरु जी ने कहा अब हमने यह काम नहीं करना। हमें कुछ और काम करने का भगवान् की तरफ से आदेश हुआ है। नवाब ने पूछा क्या आदेश हुआ है? तब गुरु जी ने मूल-मन्त्र उच्चारण किया।

१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी संभ गुरप्रसादि।

माता-पिता और सास-ससुर का रोकना

आपजी की यह तैयारी सुन कर गुरु जी के माता-पिता और सास ससुर भी सुलतानपुर पहुंच गए। इन्होंने वहिन नानकी जी और वहनोई जै राम जी के साथ मिल कर अपने अपने ढंग से आपजी को घर वाहर और स्त्री, पुत्र छोड़ कर जाने से रोकने के यत्न किए पर गुरु जी ने योग्य उत्तर देकर अपने फैसले को अटल रखा और मरदाने मरासी को साथ लेकर लोक कल्याण के लिए दृढ़ संकल्प करके चल पड़े।

गुरु जी का प्रचार करने का ढंग

गुरु जी का प्रचार करने का ढंग आधुनिक प्रचार ढंगों से भिन्न था। अपने मिशन के प्रचार के लिए गुरु जी न कोई जलसा करते थे और न ही कोई इश्तहार छाप कर बाँटते थे। जहां प्रचार के सुधार की ज़रूरत होती, वहां पहुंच कर आप कोई नया ही करिश्मा करते थे, जिसको देख कर उस करिश्मे का विरोधी दल आप जी के साथ वार्ता करने आ जाता था और चर्चा करके असलीयत को समझ कर आप जी के सिद्धांतों को ग्रहण कर लेता था। गुरु जी की देशारटन फेरियों में से, जो आप जी की चार उदासीयों के नाम से प्रसिद्ध हैं, पाठक गण देखेंगे कि किस तरह गुरु जी ने देश की चार दिशाओं के कोने कोने में पहुंच कर नया ढंग प्रयोग करके अपने मिशन का प्रचार किया।

उस समय एक तरफ अपने आप को धार्मिक प्रवर्तक कहलाने वाले जोगिओं, पंडितों और मुल्लां मौलवीयों आदि श्रेणियों का जोर था और दूसरी तरफ दुनिया को लूट कर खाने वाले चोरों, ठगों, पाखंडियों और अत्याचारी राज्य-कर्मचारियों का वोलवाला था। गुरु जी ने इन दोनों श्रेणियों की मंज़िल पर पहुंच कर उनका सुधार करने के लिए यह उदासियां धारण कीं।

उस समय जन-साधारण के सफर करने के लिये न मोटरें न रेल गाड़ियां, न हवाई जहाज आदि साधन थे। गुरु जी ने अपने साथी मरदाने के साथ तिब्वत से लंका तक, उत्तर से दक्षिण और नागालैंड, तक सियाम से मिश्र आदि अरब देशों, पश्चिम से पूर्व, पहाड़ों, दरियाओं, समुन्द्रों, जंगलों तथा रेग-स्थानों को पार करके लगभग वीस इक्को साल पैदल सफर किया।

उस समय देश में जो घोर जुल्म हो रहा था। उसका वर्णन आप जी ने इन्हीं शब्दों में किया है-

राग माझ म: 1 (पन्ना 145)

कलि काती राजे कसाई धर्म पंखु करि उडरिया।
कूड़ अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िया॥
हउ भालि विकुन्नी होई।
आधेरै राह न कोई॥
विचि हउमै करि दुखु रोई।
कहु नानक किनि विधि गति होई॥1॥

भाव:-राजे लोग जालम हो कर लोगों पर जुल्म कर रहे थे सारे हनेर ही हनेर (जोर जुल्म) है सच्च कहीं नहीं मिलता। हनेर (जुल्म) से वचने के लिये लोग दु:खी हैं। लोगों का यह दु:ख किस तरह दूर किया जाये ?

—0—

गांव में आप जी को एक भाटड़े ‡नरीआ ने सेवा की, उसने गुरु जी को वड़े प्रेम के साथ अपने पास रखा और उपदेश लेकर आप जी का सिंह बना। यहां से गुरु जी चाहल गांव अपने ननिहाल जाते हुए रास्ते में एक रोड़ी पर वृक्षों की छांव के नीचे बैठे, जो गुरु की रोड़ी साहिब के नाम से प्रसिद्ध है। यहां से चल कर गुरु जी चाहल अपने ननिहाल जा पहुंचे।

चाहल कुछ दिन विश्राम करने के बाद आप लाहौर पहुंच गए, लाहौर में जो कुछ आपजी ने देखा उसका वर्णन आपजी ने इस तरह किया है:-

श्लोक वारां ते वधीक ॥महला 1॥

लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥27॥

अर्थात्:-लाहौर शहर में सवा पहर दिन चढ़े तक कहिर (जोर जुल्म) होता रहता है।

भाई लालो के पास

(सैदपुर)

लाहौर शहर के ऐसे घृणास्पद हालात देखकर गुरु जी रावी नदी पार करके गुजरां वाले के जिले में (ऐमनावाद) अपने एक सिंह भाई लालो के पास जा वसे। आप जी केवल भोजन करने के लिए ही भाई लालो के पास आते थे नहीं तो गांव से आधा मील

---

‡इस प्रेमी सिंह को मिलने के लिए महान् कोष के अनुसार गुरु जी दो वार फिर से आए थे। इसका कारण यह कहा गया है कि मैहता कालू जी पठे विंड(डेहरा साहिब)गांव जामाराए के नजदीक, के निवासी थे। गुरु जी अपने ननिहाल चाहल गांव से पठे विंड को जाहमन के रास्ते अपने सिंह भक्तों को मिल कर जाते-आते रहते थे।

वाहर एक रोड़ी के ऊपर पत्थरों का आसन करके सारा समय बैठ कर नाम स्मरण करते रहते थे। यहीं से ही आपका नाम नानक तपा प्रसिद्ध हुआ था।

दो-तीन दिन उपरान्त भाई मरदाना यहां से अपने परिवार को मिलने तलवंडी चला गया।

मलिक भागो को उपदेश

इन दिनों में ही सैदपुर के पठान राजा के दीवान मलिक भागो ने ब्रह्म भोज करके सवको भोजन करवाया। पर जब उसको पता चला कि नानक तथा भोजन ग्रहण करने नहीं आया तो उसने इसमें अपना निरादर अनुभव किया कि मेरे बुलाने पर कोई क्यों नहीं आया? मलक ने अपना आदमी भेजकर गुरु जी को बुला कर पूछा कि आप मेरे ब्रह्म भोज में शामिल क्यों नहीं हुए।

गुरु जी ने उसको उत्तर देने के लिए कहा कि आप अपना भोजन मंगवाएं, अगर ग्रहण करने योग्य होगा तो ग्रहण कर लेंगे। मलक ने अपने नौकर से हलवा, पूड़ी और अनेकों उत्तम पदार्थ मंगवाए और गुरु जी के आगे रख दिये। दूसरी तरफ गुरु जी ने भाई लालो से उसका वाजरे का सूखा टुकड़ा भी मंगवा लिया। मलिक जी का हलवा पूड़ी आप ने दाएं हाथ में पकड़ लिया और लालो की रोटी का टुकड़ा वाएं हाथ में।

देखने वाले हैरान थे कि यह क्या हो रहा है। गुरु जी ने सव के सामने दोनों हाथों की मुठियों को जोर से निचोड़ा। तव सभी ने देखा कि मलिक भागो के टुकड़े में से खून के कतरे गिर रहे थे और लालो के टुकड़े में से दूध की बूंदे टपक रही थी। एक तरफ से दूध और दूसरी तरफ से खून देखकर लोग हैरान रह गए। गुरु जी ने कहा, देखो, मलिक भागो! तेरे ब्रह्म भोज में से खून टपक

रहा है। यह ब्रह्म भोज तुम ने गरीबों के ऊपर जुल्म करके उनका खून निचोड़ कर तैयार किया है। पर उधर भाई लालो ने अपनी सच्ची सुच्ची कमाई लगाकर जो रोटी तैयार की है उसमें से ईमान दारी की कमाई का दूध टपक रहा है। इस लिए कोई सूझ बूझ वाला साधू दूध को ग्रहण करने के बाद रक्त ग्रहण नहीं करता। यही कारण है कि हम तुम्हारे भोज में शामिल नहीं हुए।

गुरु जी से यह बातें सुन कर मलिक बहुत परेशान हुआ उस ने अपनी भूल की माफी मांगी और आगे से गरीबों पर दया करने का प्रण किया। इसी तरह गुरु जी ने एक धनवान का अभिमान चूर करके उसको ईमानदारी की कमाई करने का उपदेश दिया और ईमानदारी की कमाई करने वाले भाई लालो को सम्मानित किया।

नीचों का सम्मान

फिर जब पंडितों ने शोर मचाना शुरु किया कि नानक दोषी है, जो उत्तम क्षत्रिय जाति में जन्म लेकर नीचों के घर खाना खाता है, तब गुरु जी ने यह शब्द उचारण किया:-

सिरी रागु म: 1 (पन्ना 15)
लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाऊ ॥
लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाऊ ॥
सभु को आखै बहुतु घटि आखै कोई ॥
कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होई ॥
साचा साहिबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ ॥3॥
नीचा अंदरि नीच जाति नीचीहू अति नीचु ॥
नानकु तिनकै संगि साथि वडिया सिउ कीआ रीस ॥
जिथै नीच समाली अनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥4॥3

अर्थात्:- परमेश्वर के लेखे में ही बोलना होता है और लेखे

में ही खाना खाते हैं। लेखे में ही चलना, सुनना और देखना होता है। अपने आप को हर कोई वड़ा कहता है पर अपने कहने से कोई वड़ा नहीं होता। एक सच्चा परमेश्वर ही वड़ा है वाकी सारे संसार के जीव उसके आगे छोटे हैं। मैं (नानक) संसार के उन छोटे जीवों में से एक हूं उनके साथ ही मेरा मेल-जोल है। वड़ों के साथ मेरी वरावरी नहीं है। क्योंकि जहां नीचों की देख-भाल होती है, वहीं परमेश्वर की कृपा दृष्टि होती है। आपजी के यह वचन सुन कर पंडित चुप हो गए, और गुरु जी अपने कंकड़ों के आसन पर जा बैठे।

सैयदपुर में गुरु जी की इस याद में भाई लालो के घर एक कुआं है। जिसके जल के साथ गुरु जी स्नान करते थे, और एक गुरुद्वारा रोड़ी साहिव जहां गुरु जी कंकडों के आसन पर वैठ कर आत्म चिंतन करते थे, प्रसिद्ध है।

तलवंडी मां-बाप के पास

मरदाना, जो कुछ दिनों से अपने परिवार को मिलने के लिए तलवंडी गया हुआ था वह वापिस आ गया। उसने गुरु जी को राये बुलार की तरफ से वेनती की कि एक वार तलवंडी आकर दर्शन दे जाएं। वह वृद्ध अवस्था के कारण अपने आप तुम्हें मिलने नहीं आ सकते। फिर मरदाने ने वताया कि माता तृप्ता जी और मैहता कालू जी तथा और श्रद्धालू लोग भी आप जी को वहुत याद करते हैं और मिलने के लिए व्याकुल हैं।

मरदाने से यह सन्देश गुरु जी सुन कर एक महीना सैयदपुर निवास करने के उपरान्त तलवंडी को चल दिए। तलवंडी पहुंच आपजी वाहर ही एक कुएं के पास ठहर गए।

जव मरदाने के द्वारा गुरु जी के वाहर आने का पता चला तो आप जी के माता पिता और चाचा लालूजी आपजी को मिलने

आए। परस्पर बातों के दौरान मैहता कालू जी और चाचा लालू जी ने आपजी को घर रहकर काम काज करना और अपनी स्त्री व पुत्रों की देखभाल, पालन पोषण हेतू बहुत जोर लगाया मगर आप जी ने कहा कि मैं अपना जीवन लोक कल्याण के लिए लगाना चाहता हूं। मैं इस लोक कल्याण के काम में ही कमाई करना और अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण समझता हूं।

फिर इतनी देर में राये बुलार का आदमी आपजी को लेने आ गया। आप जी राये बुलार का प्रेम और श्रद्धा देख कर उसके घर मिलने चले गए। राये बुलार ने भी बड़े सम्मान के साथ आप जी को घर रहने को प्रेरणा दी पर आप जी ने नम्रता के साथ उसको भी अस्वीकार कर दिया।

सज्जन ठग का उद्धार

कुछ दिनों के उपरान्त माता-पिता के पास घर रह कर और अपने श्रद्धालुओं को मिलकर गुरु जी मरदाने को साथ लेकर फिर चल पड़े और रावी को पार करके मुल्तान की तरफ चल दिए। रास्ते में एक दिन हड़प्पा ठहरे और फिर तुलंबे (जिला मुल्तान में) पहुंच गए। यहां एक बड़ा प्रसिद्ध ठग रहता था, जिसका नाम था सज्जन। इसने अपने घर में ही हिन्दुओं के लिए मन्दिर और मुस्लमानों के लिए मसजिद बनाई हुई थी और आने जाने वाले यात्रियों के लिए खाने पीने का और रिहारश का भी प्रबन्ध किया हुआ था। पर जब रात का समय होता तो यात्री को मार-काट कर उसके पास से सारा कुछ छीन लेता था। गुरु जी इसका सुधार करने के लिए मरदाने सहित उसके घर रात ठहरने के लिए चले गए। सज्जन ने इनका बहुत सत्कार किया, और जलपान की सेवा करके विश्राम करने के लिए एक अति सुन्दर कमरा दे

दिया। जब सज्जन गुरु जी के पास बैठ कर बातें कर रहा था तो अन्तर्यामी गुरु जी ने उसके तौर तरीके देख कर मरदाने को कहा, मरदाना! रबाब छेड़ो। जब मरदाने ने रबाब छेड़ी तो आप जी यह शब्द ऊंची और मीठी धुन में गाने लग गए:-

सूही महला 1।। (पन्ना 729)

ऊजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ।।
धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ।।1।।
सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंनि ।।
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ।।1।। रहाउ।।
कोठे मंडप माड़ीआं पासहु चितवीआहा ।।
ढठीआ कंमि न आवनी विचहु सखनीआहा ।।2।।
बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंनि ।।
घुटि घुटि जीआ खावणे बगे न कहीअनि ।।3।।
सिंमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलंनि ।।
से फल कंमि न आवनी ते गुण मै तनि हंनि ।।4।।
अंधुले भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु ।।
अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कितु ।।5।।
चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ।।
नानक नामु सभालि तू बधा छुटहि जितु ।।6।।

इस शब्द को ज्यों-ज्यों सज्जन सुनता रहा उसको हर एक अक्षर अपने ऊपर ही प्रयोग होता दिखाई दिया। अपने किए हुए पाप और अत्याचार उसकी आंखों के आगे घूमने लगे। उनके भयानक परिणामों का अनुमान लगा कर सज्जन सिहिर उठा और अपने ठिकाने से उठ कर गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा। क्षमा मांगी और पिछले गुनाह माफ करने के लिए विनती की। सज्जन की पश्चाताप वाली विनती सुन कर गुरु जी ने कहा, सज्जन अगर

तुम सच्चे हृदय से अपना कल्याण चाहते हो तो यह पापों के साथ इकट्ठी की हुई कमाई की दौलत सब जरुरतमन्द गरीबों को बांट दो और आगे से नेक ईमानदारी की कमाई करके आप खाओ और जरुरतमन्दों को खिलाने का प्रण कर लो। पापों की कमाई से घर-वार और तन-मन सभी अपवित्र हो जाते हैं, और ईमानदारी की कमाई खाने से सब कुछ पवित्र हो जाता है।

आगे से जीवन को साफ-सुथरा रखने के लिये गुरु जी ने सज्जन जी को कहा कि अपने घर में धर्मशाला बनवा कर सत्संग करवाया करो। नेक कमाई करके आने-जाने वाले यात्रियों की सेवा करना, और परमेश्वर को सदा याद रखना। गुरु जी की आज्ञा मान कर सज्जन ने अपनी पापों की सारी इकट्ठी की हुई कमाई गरीबों में बांट दी और गुरु जी से चरण पाहुल और नाम-दान का उपदेश लेकर सिंह बन गया। इसके उपरान्त घर में धर्मशाला बनाकर सत्संग और अतिथियों की सेवा करने लग गया। इस तरह सज्जन सच्च-मुच ही सज्जन बन गया और ठगी उससे कोसों दूर चली गई। यह पहली धर्मशाला है जो गुरु जी ने बनवाई थी।

पाक पटन

(शेख ब्रह्म फरीद सानी)

सज्जन को ठीक मार्ग पर लाने के बाद गुरु जी पाक पटन (जिसका नाम तब अजोधन था) शेख ब्रह्म को, जो उस समय का एक प्रसिद्ध महापुरुष फकीर था, जा मिले। उसका तपस्या करने का स्थान जो कि नगर से चार मील बाहर दक्षिण की तरफ था, वहां उसके पास चले गये।

शेख ब्रह्म जिसको फरीद सानी भी लिखा है, फरीद जी से दसवीं पीढ़ी में हुए थे। इनका देहान्त गुरु जी के पन्द्रह साल

वाद सम्वत् 1610 में हुआ। इनके साथ परमार्थ की चर्चा करके गुरु जी कुरुक्षेत्र को चल दिए।

गुरु जी की याद में इस स्थान पर गुरुद्वारा 'नानक सर' नाम प्रसिद्ध है।

कुरुक्षेत्र सूर्य ग्रहण

गुरु जी जब कुरुक्षेत्र पहुंचे तो उस समय सूर्य ग्रहण का बड़ा भारी मेला लगा हुआ था। आप जी मर्दाने के साथ सरोवर के एक किनारे डेरा डाल कर बैठ गए।

मेले में बहुत से लोग आए हुये थे, गुरु जी ने पन्डितों के साथ चर्चा करने के लिए एक देगची में मांस पकाना शुरु कर दिया, ग्रहण के समय हिन्दू लोग कुछ खाते-पीते नहीं हैं और न चूल्हे में आग जगाते हैं।

पर यहां आग पर देगची रखी हुई देखकर बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। जब गुरु जी से उन्होंने पूछा कि आप ने साधु का भेष धारण करके इस ग्रहण के समय आग जला कर यह क्या पकाने के लिए रखा हुआ है ? तो आप जी ने कहा यह मांस है। उन्होंने कहा, सूर्य ग्रहण के समय यह आप बड़ा अयोग्य काम कर रहे हैं, साधु भेष, सूर्य ग्रहण और मांस खाना यह महां पाप है। गुरु जी ने कहा कि हर-एक मांस के कारण ही जीवित है। मांस के विना किसी जीव का जीवित रहना ही असम्भव है।

ही सम्बन्ध रहता है, यह छोड़ा नहीं जा सकता।

वार मलार ।। सलोक म: 1।। (पन्ना 1289)
पहिला मासहु निमिआ मासै अंदरि वासु ।।
जीऊ पाई मासु मुहि मिलिआ हडु चमु तनु मासु ।।
मासहु वाहरि कढिआ ममा मासु गिरासु ।।
मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ।।
वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइआ मासु ।।
मासहु ही मासु ऊपजै मान्हु सभो साकु ।।
सतिगुरि मिलिऐ हुकमु वुझीऐ तां को आवै रासि ।।
आपि छुटै नत छुटीऐ *नानक वचनि विणासु ।।1।।

शब्द के अन्त में लिखा है:-

पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपंना ।।
तोइअहु अनु कमादु कपाहा तोइअहु त्रिभवणु गंना ।।
तोआ आखै हऊ वहु विधि हछा तोऐ वहुतु विकारा ।।
ऐसे रस छोडि होवै सनिआसी नानकु कहै विचारा ।।2।।

*मांस की यह परिभाषा और विचार सुनकर नानू पण्डित ने गुरु जी को नमस्कार किया और साथियों को वताया कि यह कलियुग में अवतार होकर आए हैं। इनके साथ हम चर्चा करने के अयोग्य हैं। नानू की यह वात सुन कर सव ने हाथ जोड़ कर गुरु जी को नमस्कार किया। इस स्थान पर एक गुरुद्वारा इस याद में वना हुआ है।

---

*इसका यह भाव नहीं कि गुरु जी ने मांस खाना ठीक या जरुरी वताया। भाव यह है, कि जो पुरुष दूसरों को लूट-लूट कर खाता है और अत्याचार करता है, उसका यह कहना कि मांस खाना जीव हत्या है, पाखन्ड और धोखा है। सच्चा वैष्णव वही है जो किसी प्रकार भी किसी का हृदय नहीं दुखाता।

करनाल शेख कलंदर अली के साथ चर्चा

करुक्षेत्र से गुरु जी करनाल आये। यहां आप की एक सूफी फकीर शेख कलंदर अली के साथ चर्चा हुई। कई विद्वानों का कथन है कि गुरु जी ने इस चर्चा के समय ही शेख कलंदर अली को उसके पूछने पर बताया था कि हम भी कलंदर ही हैं। शेख ने जब हैरान होकर पूछा कि आप कलंदर किस तरह हैं? आप की तो वेशभूषा और ही है? तब गुरु जी ने परमेश्वर को संबोधन करके इस शब्द का उच्चारण किया और अपना कलंदर होना शेख को बताया:-

बिलावलु महला 1॥ (पन्ना 795)

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥1॥
जीअ जंत सभि सरणि तुमारी सरब चिंत तुधु पासे ॥
जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥8॥

नोट:-कलंदर-मुसलमान फकीरों का एक भेष है, जो बे-परवाही की दशा में रहता है। बे-परवाह शब्द की श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इस तरह व्याख्या की है:-

संतन अवर न काहू जानी ॥
बे-परवाह सदा रंगि हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥
(टोडी म: 5 पन्ना 711)

बे-परवाह लोग और किसी को नहीं मानते, केवल एक हरि के नाम में ही रंगे रहते हैं।

गुरु जी की इस याद में यहां मुहल्ला ठठियारां में गुरुद्वारा बना हुआ है, जो मंजी साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।

पानीपत शेख टटीहरी

करनाल से गुरु जी पानीपत पहुंचे, यहां शेख शरफ के एक प्रसिद्ध चेले शेख ताहर अली, जो शेख टटीहरी करके प्रसिद्ध था, के साथ आप जी की चर्चा हुई।

शेख टटीहरी ने कहा-आप अपना सिर-मुँह क्यों नहीं मुँडवाते इतने लम्बे बाल क्यों रखे हुए हैं। गुरु जी ने कहा शेख जी ! सिर मुँह मुँडवाने का कोई लाभ नहीं मन मुँडाना चाहिये। शेख ने कहा महाराज ! मन कैसे मुँडाया जाता है ?

गुरु जी बोले, अपने मन की इच्छाओं (संकल्प विकल्प) रूपी बाल, जो बहुत लम्बे होते हैं, उनको गुरु उपदेश की कैंची से काट कर मन को इच्छा रहित करना ही मन को मुँडना होता है। गुरु जी के यह शब्द सुन कर शेख अत्यन्त प्रसन्न हुआ। और गुरु जी को कुछ दिन अपने पास रख कर बड़े प्रेम से परस्पर आध्यात्मिक बातें करके आनन्द मनाता रहा।

हरिद्वार पण्डितों के साथ चर्चा

पानीपत से गुरु जी हरिद्वार आए। यहां आप जी ने देखा कि हिन्दू लोग चढ़ते सूर्य की तरफ मुँह करके गंगा के पानी को बहा रहे हैं। उनको असलीयत समझाने के लिए गुरु जी सूर्य की तरफ पीठ करके पश्चिम दिशा में हाथों में भर-भर कर पानी फैंकने लगे।

गुरु जी को उल्टी तरफ पानी फैंकते देख कर लोग इकट्ठे हो गए और पूछने लगे। आप पानी उल्टी तरफ क्यों फैंक रहे हैं ? गुरु जी ने कहा आप सूर्य को पानी क्यों दे रहे हैं लोगों ने उत्तर कहा दिया कि हम सूर्य के द्वारा अपने पित्तरों को पितृ लोक में पानी पहुंचा रहे हैं। गुरु जी ने कहा हम अपनी खेती को मार्ग

जो इस्लाम कबूल नहीं करता था। उसको या तो मार देता था, या कैद करवा देता था। बादशाह को जब पता चला कि एक हिन्दू फकीर यहां आया है जो लोगों में अपने नए मत का प्रचार कर रहा है तो उसने आपजी के पास अपना काजी भेजा। काजी ने आपजी के साथ बातचीत करके बादशाह को बताया कि यह तो कोई परमात्मा का रुप लगता है, जिस की वाणी में तथा बोल चाल में एक आकर्षण है। यह बात सुन कर सिकंदर को भी बड़ी प्रेरणा मिली और काजी के साथ गुरु जी के दर्शन करने के लिए आया। गुरु जी ने काजी और बादशाह दोनों को कहा:-

जगत माया मोह से अंधा हो रहा है। इसको धर्म-अधर्म कुछ नहीं सूझ रहा। बादशाह का धर्म प्रजा से इंसाफ करना और उसकी देखभाल करना है। काजी का धर्म लोगों को सच्चा रास्ता दिखाना और बुराई के मार्ग से हटाना है। अपनी कमाई में से भगवान् के नाम दान देना, रिश्वत न लेनी और नेक कमाई करके खाना है।

इस तरह अपने-अपने कर्तव्यों को सच्चे दिल से पूरा करने से स्वर्ग प्राप्त होता है। गुरु जी से यह पक्षपात रहित उपदेश सुनकर सिकंदर और काजी दोनों ही प्रसन्न हो गए और नमस्कार करके चले गए।

नोट:-प्रो: करतार सिंह जी ने जीवन-कथा श्री गुरु नानक देव जी में सैय्यद मुहम्मद लतीफ की पुस्तक का हवाला देकर लिखा है कि जब गुरु जी दिल्ली पहुंचे तो बादशाह सिकंदर के सिपाहीयों ने सूचना दी कि एक फकीर जिसका उपदेश कुरान और वेदों से भिन्न है, लोगों में खुल्लम खुल्ला प्रचार कर रहा है और वह इतनी महानता प्राप्त कर रहा है कि अंत में हानिकारक साबित होगा। यह सूचना मिलने पर सिकंदर ने गुरु जी और

तुम सच्चे हृदय से अपना कल्याण चाहते हो तो यह पापो के साथ इकठ्ठी की हुई कमाई की दौलत सब जरुरतमन्द गरीवों को वांट दो और आगे से नेक ईमानदारी की कमाई करके आप खाओ और जरुरतमन्दों को खिलाने का प्रण कर लो। पापों की कमाई से घर-वार और तन-मन सभी अपवित्र हो जाते हैं, और ईमानदारी की कमाई खाने से सब कुछ पवित्र हो जाता है।

आगे से जीवन को साफ-सुथरा रखने के लिये गुरु जी ने सज्जन जी को कहा कि अपने घर में धर्मशाला वनवा कर सत्संग करवाया करो। नेक कमाई करके आने-जाने वाले यात्रियों की सेवा करना, और परमेश्वर को सदा याद रखना। गुरु जी की आज्ञा मान कर सज्जन ने अपनी पापों की सारी इकठ्ठी की हुई कमाई गरीवों में वांट दी और गुरु जी से चरण पाहुल और नाम-दान का उपदेश लेकर सिह वन गया। इसके उपरान्त घर में धर्मशाला वनाकर सत्संग और अतिथियों की सेवा करने लग गया। इस तरह सज्जन सच्च-मुच ही सज्जन वन गया और ठगी उससे कोसों दूर चली गई। यह पहली धर्मशाला है जो गुरु जी ने वनवाई थी।

पाक पटन

(शेख ब्रह्म फरीद सानी)

सज्जन को ठीक मार्ग पर लाने के वाद गुरु जी पाक पटन (जिसका नाम तव अजोधन था) शेख ब्रह्म को, जो उस सयय का एक प्रसिद्ध महापुरुष फकीर था, जा मिले। उसका तपस्या करने का स्थान जो कि नगर से चार मील वाहर दक्षिण की तरफ था, वहां उसके पास चले गये।

शेख ब्रह्म जिसको फरीद सानी भी लिखा है, फरीद जी से दसवीं पीढ़ी में हुए थे। इनका देहान्त गुरु जी के पन्द्रह साल

वाद सम्वत् 1610 में हुआ। इनके साथ परमार्थ की चर्चा करके गुरु जी कुरुक्षेत्र को चल दिए।

गुरु जी की याद में इस स्थान पर गुरुद्वारा 'नानक सर' नाम प्रसिद्ध है।

कुरुक्षेत्र सूर्य ग्रहण

गुरु जी जव कुरुक्षेत्र पहुंचे तो उस समय सूर्य ग्रहण का वड़ा भारी मेला लगा हुआ था। आप जी मरदाने के साथ सरोवर के एक किनारे डेरा डाल कर वैठ गए।

मेले में वहुत से लोग आए हुये थे, गुरु जी ने पन्डितों के साथ चर्चा करने के लिए एक देगची में मांस पकाना शुरु कर दिया, ग्रहण के समय हिन्दू लोग कुछ खाते-पीते नहीं हैं और न चूल्हे में आग जगाते हैं।

पर यहां आग पर देगची रखी हुई देखकर वहुत से लोग इकट्ठे हो गए। जव गुरु जी से उन्होंने पूछा कि आप ने साधु का भेष धारण करके इस ग्रहण के समय आग जला कर यह क्या पकाने के लिए रखा हुआ है? तो आप जी ने कहा यह मांस है। उन्होंने कहा, सूर्य ग्रहण के समय यह आप वड़ा अयोग्य काम कर रहे हैं, साधु भेष, सूर्य ग्रहण और मांस खाना यह महां पाप है। गुरु जी ने कहा कि हर-एक मांस के कारण ही जीवित है। मांस के विना किसी जीव का जीवित रहना ही असम्भव है।

इन में से एक नानू पण्डित था, जो अपने आप को वड़ा विद्वान और चर्चा करने में वड़ा माहिर समझता था। उस ने कहा, मांस खाना घोर पाप है। इसके खाने से लोक-परलोक विगड़ जाते हैं। तव गुरु जी ने मांस की परिभाषा देकर इस शब्द द्वारा उनको समझाया कि मां के गर्भ से लेकर मरने तक मांस के साथ

ही सम्बन्ध रहता है, यह छोड़ा नहीं जा सकता ।

वार मलार ।। सलोक म: 1।। (पन्ना 1289)
पहिला मासहु निमिश्रा मासै श्रंदरि वासु ।।
जीऊ पाई मासु मुहि मिलिश्रा हडु चमु तनु मासु ।।
मासहु बाहरि कढिश्रा ममा मासु गिरासु ।।
मुहु मासै का जीभ मासै की मासै श्रंदरि सासु ।।
वडा होश्रा वीश्राहिश्रा घरि लै श्राइश्रा मासु ।।
मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ।।
सतिगुरि मिलिऐ हुकमु बुझीऐ तां को श्रावै रासि ।।
श्रापि छुटै नत छुटीऐ 'नानक वचनि विणासु ।।1।।

शब्द के अन्त में लिखा है:-

पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपंना ।।
तोइश्रहु श्रनु कमादु कपाहा तोइश्रहु त्रिभवणु गंना ।।
तोश्रा श्राखै हऊ वहु विधि हछा तोऐ वहुतु विकारा ।।
ऐसे रस छोडि होवै सनिश्रासी नानकु कहै विचारा ।।2।।

*मांस की यह परिभाषा श्रौर विचार सुनकर नानू पण्डित ने गुरु जी को नमस्कार किया श्रौर साथियों को बताया कि यह कलियुग में श्रवतार होकर श्राए हैं । इनके साथ हम चर्चा करने के श्रयोग्य हैं । नानू की यह बात सुन कर सब ने हाथ जोड़ कर गुरु जी को नमस्कार किया । इस स्थान पर एक गुरुद्वारा इस याद में बना हुश्रा है ।

---

*इसका यह भाव नहीं कि गुरु जी ने मांस खाना ठीक या जरुरी बताया । भाव यह है, कि जो पुरुप दूसरों को लूट-लूट कर खाता है श्रौर श्रत्याचार करता है, उसका यह कहना कि मांस खाना जीव हत्या है, पाखन्ड श्रौर धोखा है । सच्चा वैष्णव वही है जो किसी प्रकार भी किसी का हृदय नहीं दुखाता ।

करनाल शेख कलंदर अली के साथ चर्चा

कुरुक्षेत्र से गुरु जी करनाल आये। यहां आप की एक सूफी फकीर शेख कलंदर अली के साथ चर्चा हुई। कई विद्वानों का कथन है कि गुरु जी ने इस चर्चा के समय ही शेख कलंदर अली को उसके पूछने पर बताया था कि हम भी कलंदर ही हैं। शेख ने जब हैरान होकर पूछा कि आप कलंदर किस तरह हैं? आप की तो वेशभूषा और ही है? तब गुरु जी ने परमेश्वर को संबोधन करके इस शब्द का उच्चारण किया और अपना कलंदर होना शेख को बताया:-

विलावलु महला 1॥ (पन्ना 795)

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घटि ही तीरथि नावा ॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥1॥
जीअ जंत सभि सरणि तुमारी सरब चिंत तुधु पासे ॥
जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥8॥

नोट:-कलंदर-मुसलमान फकीरों का एक भेष है, जो बे-परवाही की दशा में रहता है। बे-परवाह शब्द की श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इस तरह व्याख्या की है:-

संतन अवर न काहू जानी ॥
बे-परवाह सदा रंगि हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥
(टोडी म: 5 पन्ना 711)

बे-परवाह लोग और किसी को नहीं मानते, केवल एक हरि के नाम में ही रंगे रहते हैं।

गुरु जी की इस याद में यहां मुहल्ला ठठियारां में गुरुद्वारा बना हुआ है, जो मंजी साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।

पानीपत शेख टटीहरी

करनाल से गुरु जी पानीपत पहुंचे, यहां शेख शरफ के एक प्रसिद्ध चेले शेख ताहर अली, जो शेख टटीहरी करके प्रसिद्ध था, के साथ आप जी की चर्चा हुई।

शेख टटीहरी ने कहा-आप अपना सिर-मुँह क्यों नहीं मुँडवाते इतने लम्बे वाल क्यों रखे हुए हैं। गुरु जी ने कहा शेख जी! सिर मुँह मुंडवाने का कोई लाभ नहीं मन मुँडाना चाहिये। शेख ने कहा महाराज! मन कैसे मुँडाया जाता है?

गुरु जी बोले, अपने मन की इच्छाओं (संकल्प विकल्प) रूपी वाल, जो बहुत लम्बे होते हैं, उनको गुरु उपदेश की कैंची से काट कर मन को इच्छा रहित करना ही मन को मुँडना होता है। गुरु जी के यह शब्द सुन कर शेख अत्यन्त प्रसन्न हुआ। और गुरु जी को कुछ दिन अपने पास रख कर वड़े प्रेम से परस्पर आध्यात्मिक वातें करके आनन्द मनाता रहा।

हरिद्वार पण्डितों के साथ चर्चा

पानीपत से गुरु जी हरिद्वार आए। यहां आप जी ने देखा कि हिन्दू लोग चढ़ते सूर्य की तरफ मुँह करके गंगा के पानी को वहा रहे हैं। उनको असलीयत समझाने के लिए गुरु जी सूर्य की तरफ पीठ करके पश्चिम दिशा में हाथों से भर-भर कर पानी फैंकने लगे।

गुरु जी को उल्टी तरफ पानी फैंकते देख कर लोग इकठ्ठे हो गए और पूछने लगे। आप पानी उल्टी तरफ क्यों फैंक रहे हैं? गुरु जी ने कहा आप सूर्य को पानी क्यों दे रहे हैं लोगों ने उत्तर कहा दिया कि हम सूर्य के द्वारा अपने पितरों को पितृ लोक में पानी पहुंचा रहे हैं। गुरु जी ने कहा हम अपनी खेती को माझे

जो इस्लाम कबूल नहीं करता था। उसको या तो मार देता था, या कैद करवा देता था। बादशाह को जब पता चला कि एक हिन्दू फकीर यहां आया है जो लोगों में अपने नए मत का प्रचार कर रहा है तो उसने आपजी के पास अपना काजी भेजा। काजी ने आपजी के साथ बातचीत करके बादशाह को बताया कि यह तो कोई परमात्मा का रूप लगता है, जिस को वाणी में तथा बोल चाल में एक आकर्षण है। यह बात सुन कर सिकंदर को भी बड़ी प्रेरणा मिली और काजी के साथ गुरु जी के दर्शन करने के लिए आया। गुरु जी ने काजी और बादशाह दोनों को कहा:-

जगत माया मोह से अंधा हो रहा है। इसको धर्म-अधर्म कुछ नहीं सूझ रहा। बादशाह का धर्म प्रजा से इंसाफ करना और उसकी देखभाल करना है। काजी का धर्म लोगों को सच्चा रास्ता दिखाना और बुराई के मार्ग से हटाना है। अपनी कमाई में से भगवान् के नाम दान देना, रिश्वत न लेनी और नेक कमाई करके खाना है।

इस तरह अपने-अपने कर्तव्यों को सच्चे दिल से पूरा करने से स्वर्ग प्राप्त होता है। गुरु जी से यह पक्षपात रहित उपदेश सुनकर सिकंदर और काजी दोनों ही प्रसन्न हो गए और नमस्कार करके चले गए।

नोट:-प्रो: करतार सिह जी ने जीवन-कथा श्री गुरु नानक देव जी में सैय्यद मुहम्मद लतीफ की पुस्तक का हवाला देकर लिखा है कि जब गुरु जी दिल्ली पहुंचे तो बादशाह सिकंदर के सिपाहीयों ने सूचना दी कि एक फकीर जिसका उपदेश कुरान और वेदों से भिन्न है, लोगों में खुल्लम खुल्ला प्रचार कर रहा है और वह इतनी महानता प्राप्त कर रहा है कि अंत में हानिकारक ...बित होगा। यह सूचना मिलने पर सिकंदर ने गुरु जी और

मरदाने को और हिन्दु साधु सन्तों के साथ, जो उस समय सिकंदर ने जेलों में डाले हुए थे, पकड़कर जेल में डाल दिया। और कैदियों की तरह इन को भी चक्कियां पीसने के लिए दे दी गई, गुरु जी ने जव सभी साधु सन्तों को दुःखी देखा तो मरदाने को आदेश दिया कि मरदाने छेड़ो रवाव। मरदाने ने जव रबाव छेड़ा तो गुरु जी ने एक शान्त सा शब्द पढ़ा। सव कैदी शब्द की धुन सुन कर चक्कियां चलाना भूल गए। जेल के दारोगे अपना काम करना भूल गए। सिकंदर लोधी भी इत्तफाक से वहां आ निकला वह भी इस दृश्य को देखकर और शब्द सुनकर प्रभावित हो गया। जव शब्द समाप्त हो गया तो सिकंदर ने गुरु जी के आगे मस्तिष्क झुका कर विनती की कि मेरे पिछले गुनाहों को माफ कर दें। गरु जी ने कहा गुनाह तभी माफ किए जा सकते हैं। अगर आदमी सच्चे दिल से पश्चाताप करे और निर्दोषों पर जुल्म करना छोड़ दे। गरीव साधुओं ने क्या अपराध किया है जो इनके साथ घोर अपराधियों जैसा व्यवहार कर रहे हो ? सिकंदर ने गुरु जी के वचनों से प्रभावित होकर सारे निर्दोष कैदियों को छोड़ दिया, और आगे से ऐसा न करने का प्रण किया।

मथुरा वृन्दावन

दिल्ली से आगे गुरु जी मथुरा वृन्दावन गए। मथुरा में श्री कृष्ण जी ने श्री वासुदेव जी के घर माता देवकी जी के गर्भ से जन्म लिया था और वारह वर्षों तक गोकुल में वावा नंद जी ग्वाले के घर माता यशोधा जी ने पोषण किया था। वाद में वृन्दावन में सखियों के साथ रास लीला रचा कर अनेकों करतव किये थे। जव गुरु जी यहां पहुंचे तो आप ने देखा कि लोग राजा-रानियों के और श्री कृष्ण और गोपियों के स्वांग रचा कर रास रचा कर

काम नहीं है। जब गुरु जी जोगीयों के पास *निराला सा भेष बनाकर गए तो जोगीयों ने पूछा कि आपका कौन सा मत है? गुरु जी ने कहा हमारा मत निरंकारी है। जोगीयों ने कहा, यह निरंकारी मत आपका अजीव है, आप हमारा जोग मत धारण कर लें। आपको सच्चा मार्ग प्राप्त हो जाएगा। गुरु जी ने कहा कि सच्चा मार्ग किसी भेष में नहीं है। जो पुरुष भी अपने आप को संसार की बुराईयों से बचा कर रखेगा, उसी को ही सच्चा मार्ग प्राप्त हो जाएगा।

सिद्ध लोगों ने आप जी को कामल फकीर जानकर अपने जोगी भेष में लाने का बहुत प्रयास किया और कहा कि आप हमारे जोग मत के चिन्ह, डंडा, मुँदरां, खिथां आदि धारण कर लें और यह रंग विरंगे कपड़े उतार कर शरीर पर राख पोत लें। हमारे भेष में आने से आपको बहुत महानता हो जाएगी। गुरु जी ने कहा इन चिन्हों के धारण करने से जोग (ईश्वर के साथ जुड़ना) नहीं हो सकता। इसका उत्तर आप जी ने इस तरह दिया।

सूही महला 1।। घरु 7 (पन्ना 730)

जोगु न खिथा जोगु न डंडै जोगु न भस्म चढ़ाईऐं ।।
जोगु न मुँदी मूंडि मुँडाईऐ जोगु न सिङी वाईऐं ।।
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोगु जुगति इव पाईऐ ।।1।।
नानक जीव तिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐं ।।
वाजे वाझहु सिङी वाजै तऊ निरभऊ पदु पाईऐं ।।40।।

---

*गेरुए रंग का कुर्त्ता, ऊपर सफेद दुपट्टा, एक पांव में जूती, एक पांव नंगा, गले में कफन, सिर के ऊपर टोपी, गले में हड्डीयों की माला और माथे पर केसर का तिलक।

अर्थात्:-कि खिंथा और भस्म धारण करना, शरीर पर राख पोतनी, सिंगी बजाना और सिर मुंडाने से जोग नहीं होता। जोग धारण करने की युक्ति यह है कि माया के बीच रहते हुए भी उसमें निर्लेप रहे। इस तरह रहकर ऐसा जीवन व्यतीत करे कि संसार की तरफ से मृतक के समान चुपचाप बिना किसी इच्छा और निरविकार हो कर रहे। सिंगी को फूक मार कर बजाने के विनां ही ध्वनि होने लगे तो अलख निरंजन पद को पा लेते हैं।

गुरु जी के यह शब्द सुन कर सिद्ध पुरुषों ने आप जी को एक महान पुरुष मान कर नमस्कार किया और आदेश, आदेश करके अपनी शुभ इच्छा से पर्वतों को चल दिए।

नानक मता

सिद्धों के साथ आप जी की ज्ञान चर्चा करने से हुई विजय के कारण इस गोरख मता स्थान का नाम नानक मता प्रसिद्ध हो गया। यहां गुरुद्वारा वना हुआ है और वैसाखी को वड़ा भारी मेला लगता है।

मीठा रीठा

इस नानक मता स्थान से चल कर जव गुरु जी पूर्व दिशा वनारस को जा रहे थे तो रास्ते में †मरदाने ने कहा, महाराज! जंगलों पर्वतों में ही घूम रहे हैं, जहां खाने के लिए कुछ नहीं मिलता। मुझे भूख ने वहुत सताया है। अगर कुछ मिले तो खाऊं।

---

†कई लेखकों ने यहां मछंदर नाथ लिखा पर महान कोष में मरदाना लिखा है, क्योंकि योगी तो नानक मते से विछुड़ कर चले गए थे। पर मरदाना गुरु जी के साथ ही था।

उस समय जिस रीठे के वृक्ष के नीचे गुरु जी आराम कर रहे थे, उसकी तरफ देखकर मरदाने को कहा, इस वृक्ष की डाली हिला कर रीठे गिरा कर खा लो, तुम्हारी भूख मिट जाएगी। जब मरदाने ने रीठे गिरा कर खाए तो वह छुहारों की भान्ति मीठे थे। मरदाने ने वड़ा प्रसन्न होकर वहुत से खाए।

इस वृक्ष के रीठे आज भी छुहारों की भान्ति मीठे हैं, जो नानक मते जाने वाले प्रेमीयों को प्रसाद की तरह दिए जाते हैं। यह स्थान नानक मते से 45 मील दूर पूर्व दिशा में है।

बनारस पण्डितों से चर्चा

नानक मते से चल कर गुरु जी रास्ते में रीठे मीठे करके वनारस पहुंच गए। यह शहर हिन्दु मत के वड़े वड़े विद्वान पण्डितों का केन्द्र था। यहां आप जी का भिन्न पहरावा देखकर वहुत से लोग इकट्ठे हो गए और कई प्रकार के प्रश्न पूछने लगे। प्रश्नों के उत्तर गम्भीर रुप में मिलते देखकर पण्डितों ने अपने एक विद्वान पंडित चत्तर दास के नेतृत्व में गुरु जी के साथ चर्चा छेड़ दी। इस चर्चा के परिणाम स्वरुप गुरु जी ने दक्षिणी एक उंकार की वाणी की रचना की।

रामकली महला 1 दखणी ओंकार ।। (पन्ना 929)

उअंकारि ब्रह्मा उतपति ।।
उअंकारु कीआ जिनि चिति ।।
उअंकारि सैल जुग भए ।।
उअंकारि वेद निरमए ।।
उअंकारि सवदि ऊधरे ।।
उअंकारि गुरमुखि तरे ।।
उनम अखर सुणहु वीचारु ।।
उनम अखरु त्रिभवण सारु ।।1।।

इस वानी की 54 पौड़ीयां हैं। जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पन्ना 919 से आरम्भ होकर 938 पर समाप्त होती हैं।

इस वाणी में गुरु जी ने एक परमात्मा को सर्व व्यापकता और उसके फैलने का वर्णन करके उसकी महिमा बता कर पंडितों को बताया। इसका पंडितों के ऊपर वहुत प्रभाव पड़ा जिसके कारण विद्वान पंडित गुरु जी के सिह वन गए।

पटना शहर सालसराए जौहरी

वनारस से चल कर गुरु जी भाई मरदाने के साथ रास्ते में अनेकों लोगों को अच्छे मार्ग पर डालते हुए कुछ दिनों के वाद पटना शहर के वाहर आ कर वैठ गए।

पटना शहर का एक हीरों और लालों का वनज करने वाला सालसराए जौहरी गुरु जी की शोभा सुन कर अपने नौकर अधरका के साथ भोजन तथा और पदार्थ लेकर हाजिर हुआ। गुरु जी ने उसको पूछा, आप क्या काम करते हैं? उसने कहा, महाराज! मैं हीरों का काम करने वाला जौहरी हूं। गुरु जी ने कहा, असली लाल मनुष्य का जन्म है, अनमोल और दुर्लभ है, इसे व्यर्थ नहीं विताना चाहिए। ईश्वर के भजन स्मरण में लगा कर इसको सफल वनाना चाहिए। गुरु जी के इस उपदेश को सुनकर सालसराए और उस का नौकर अधरका दोनों गुरु जी की सिक्खी धारण करके निहाल हो गए।

राजा फतह चन्द मैनी जो गुरु गोविन्द सिह जी को वाल्यावस्था में अपने घर ले जाकर खिलाया करता था, इस सालसराए का ही पौत्र था, इनका घर पटना साहिव में गुरुद्वारा मैनी संगत के नाम से प्रसिद्ध है।

—

गया पितृ गति

पटना से चल कर गुरु जी गया गए। यह शहर गयासुर दैत्य का बसाया हुआ है, जिसके नाम पर इसका नाम (गया) प्रसिद्ध है। हिन्दुओं के विश्वास के अनुसार यहां प्राणियों के पिंड भराने से उनकी गति हो जाती है। पण्डितों ने गुरु जी को कहा जिस तरह लोग यहां आकर अपने पितरों के लिए पिंड भरवाते हैं और घी के दिए जलाते हैं, उसी तरह आप भी अपने पितरों की गति के लिए ऐसा ही करें, तब गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया:-

आसा महल्ला 1॥ (पन्ना 358)

दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥
उनि चानणि उहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥1॥
लोका मत को फकड़ि पाइ ॥
लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥1॥ रहाउ ॥
पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥
ऐथै उथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥2॥
गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥
सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ॥3॥
इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥
नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥4॥

सव पापों का नाश भगवान के स्मरण से हो जाता है। मेरा पिंड पत्तल सच्चे ईश्वर का एक नाम है। लोक परलोक में मेरा एक वही ईश्वर का स्मरण ही सहारा है। गंगा और काशी का स्नान ईश्वर का सम्मान करना है। जिसमें अत रंग स्नान होता है। तीर्थों का सच्चा स्नान तव होता है, अगर रात-दिन ईश्वर के नाम स्मरण का मोह लगा रहे।

एक पिंड पितरों को हलवा, पूड़ी, खीर आदि देना होता है, और दूसरा पिंड देवताओं के आगे चावल और जौं के आटे का होता है, जिनको वना कर ब्राह्मण पूजा करवाकर दक्षिणा लेते हैं। गुरु जी ने वताया कि अपने हाथों से दान किया हुआ कभी समाप्त नहीं होता। यदि तुम तो अगर गति चाहते हो तो जिंदा रहते हुए अपने हाथों से दान करो जो लोक-परलोक सहायता करे।

बोध गया

यहां पण्डितो को नाम स्मरण का उपदेश देकर गुरु जी वोध गया, जो यहां से नजदीक ही है, गए और वह स्थान देखा जहां महात्मा वुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। इस स्थान पर एक मन्दिर में वड़े विशाल आकार की सोने की एक प्रतिमा स्थापित की हुई है। जिसकी वड़े प्रेम और श्रद्धा से श्रद्धालू लोग महिमा गाते हैं।

कामरूप आसाम देश

यहां से गुरु जी मरदाने के साथ चल कर विहार-वंगाल में विहार करते हुए मुरशिदावाद के रास्ते आसाम के काम रुप इलाके के गोहाटी शहर के वाहर जा वैठे। वाद में जव मरदाना शहर में से कुछ अपने खाने के लिए लेने गया तो वहां की एक प्रसिद्ध जादूगरनी नूर शाह ने उसको भेड़ू वना दिया। कुछ

(3) आपीनै भोग भोगि कै होई भसमड़ि भऊरु सिधाया ॥
नदरि करहि जे आपनी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥
(4) नाऊ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥
(5) विनु सतिगुरु किनै न पाइउ विनु सतिगुरु किनै न पाइआ ॥
(6) सेव कीती संतोखई जिनी सचो सचु धिआइआ ॥
(7) सचा साहिब ऐकु तूं जिनी सचो सचु वरताया ॥
(8) भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥
(9)

इस स्थान पर जहां गुरु जी ने शेख के साथ चर्चा की थी गुरुद्वारा "नानक सर" प्रसिद्ध है। जो शहर की पश्चिम दिशा में तीन-चार मील पर है। पाकिस्तान बनने से पहले कार्तिक की पूर्णमाशी को यहां एक मेला लगता था।

दीपालपुर कोढ़ी का उद्धार

पाक-पटन से चलकर गुरु जी दीपालपुर शहर से बाहर एक कुटिया देखकर वहां चले गए। कुटिया में एक कोढ़ी रहता था, उसने कहा, संत जी! मुझे मेरे परिवार जनों ने यहां कुटिया डाल दी है, और मेरे रोग से डर कर मेरे नजदीक कोई नहीं आता, आपको शायद पता न हो, इस कारण मैं आपको बता रहा हूं, क्योंकि मुझे कुष्ट रोग है। आप मेरे नजदीक न आएं; कुटिया के बाहर ही रहें। उसकी बात मान कर गुरु जी कुटिया के पास ही बाहर एकपीपल के नीचे डेरा डाल कर बैठ गए। कोढ़ी का नाम महान कोष में नूरो (नौरंगा) लिखा हुआ है। गुरु जी ने अपनी कृपा दृष्टि से उसका रोग ठीक किया और उसको नाम स्मरण का उपदेश देकर आगे को चले गए। यहां गुरुद्वारा बना हुआ है। पाकिस्तान बनने से पहले यहां कार्तिक पूर्णमाशी को मेला लगता था।

फिर सुल्तान पुर

पाक-पटन से चलकर कसूर के रास्ते पट्टी आए और पट्टी से जिसका नाम तब पट्ठे पिंड था, तथा अब डेहरा साहिब (जामराए के पास) आए। यहां आपजी गांव से बाहर ही रात गुजार कर ब्यास पार करके बेबे नानकी जी के पास सुल्तान पुर पहुंच गए।

कीरतपुर-सांई बुडन शाह

कुछ दिन बेबे नानकी जी के पास दर्शन करके गुरु जी एक प्रसिद्ध मुसलमान महात्मा को मिलने के लिए कीरतपुर को चल दिए। सुल्तानपुर से पूर्व दिशा की तरफ सतलुज को पार करके सांई बुडन शाह के ठिकाने पहुंच गए।

सांई बुडन शाह एक अधेड़ उमर का प्रसिद्ध शक्तिशाली फकीर था। यह एक पहाड़ी के ऊपर रहता था और यहां पर शेर और बकरीयां एक साथ इकट्ठे रहते थे।

इस पहाड़ी के नीचे पांच-सात घरों का एक छोटा सा पाखोवाल गांव था जो श्री गुरु गोबिन्द साहिब जी ने अपने बड़े पुत्र बाबा गुरदित्ता जी से सम्मत् 1683 विक्रमी में बसाया था और नाम कीरतपुर रखा।

जब श्री गुरु नानक जी पहाड़ी के पास सांई को मिलने गए तो उसने कहा, दुनियां में घूम कर भगवान का नाम नहीं लिया जा सकता, इसलिए मैं एकान्त वासी होकर, ईश्वर के स्मरण में लगा हुआ हूं। गुरु जी ने कहा, सांई जी ! सब से बड़ा एकान्त यही है, कि पुरुष एकाग्रचित होकर सत्संग करे और सत्संग

रूपी सरोवर में से ईश्वर के स्नेह वाले श्रेष्ठ उपदेश रूपी मोती चुनकर अपना जीवन ऊंचा करें। बुडन शाह गुरु जी के यह शब्द सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ, और विनती की कि आप सदा ही मेरे पास टिके रहें। मैं आपका सतसंग प्रति दिन करता रहूंगा। गुरु जी ने कहा सांई जी ! शरीर के कारण संगत सदा स्थिर नहीं रह सकती। आप नाम स्मरण का हमारा उपदेश सदा अपने पास रखें। यह वचन सुन कर बुडन शाह बहुत प्रसन्न हुआ। यहां जिस जगह गुरु जी आकर विराजे थे गुरुद्वारा चरण-कमल विद्यमान है। यहां से आधा मील दूर बुडन शाह की कबर पहाड़ी के ऊपर बनी हुई है।

सयाल कोट हमजा गौस

सांई बुडन शाह से विदा होकर गुरु जी सुल्तानपुर, वैरोवाल जलालावाद, किड़ीयां पठानां से होते हुए सेयदपुर (ऐमनाबाद) लालो के पास पहुंच गए। भाई लालो को मिलकर गुरु जी पसरुर के रास्ते सयालकोट के एक फकीर हमजा गौस का अहंकार दूर करने के लिए गए। सयालकोट शहर के दक्षिण की तरफ हमजा गौस नामक एक फकीर रहता था। जो बहुत अभिमानी था और लोगों को वर अथवा श्राप का डरावा देकर अपनी महानता करवाता था। उस समय एक हिन्दु क्षत्रिय से गुस्सा होकर सारे शहर को नष्ट करने के लिए एक गुफा में बंद होकर चलीसा काट रहा था। कहता था कि यह शहर झूठों का है इसको मैं नष्ट कर दूंगा। गुरु जी शहर निवासियों को फकीर के इस कहर से बचाने के लिए गुफा के नजदीक एक बैरी के नीचे बैठ गए।

गुरु जी ने बाद में मरदाने को भेजा कि पीर के शागिरदों को कहना कि नानक तपा जी आप जो को मिलना चाहते हैं। जब

फिर सुल्तान पुर

पाक-पटन से चलकर कसूर के रास्ते पट्टी आए और पट्टी से जिसका नाम तब पठ्ठे पिंड था, तथा अब डेहरा साहिब (जामराए के पास) आए। यहां आपजी गांव से वाहर ही रात गुजार कर व्यास पार करके वेबे नानकी जी के पास सुल्तान पुर पहुंच गए।

कीरतपुर-सांईं बुडन शाह

कुछ दिन वेबे नानकी जी के पास दर्शन करके गुरु जी एक प्रसिद्ध मुसलमान महात्मा को मिलने के लिए कीरतपुर को चल दिए। सुल्तानपुर से पूर्व दिशा का तरफ सतलुज को पार करके सांईं बुडन शाह के ठिकाने पहुंच गए।

सांईं बुडन शाह एक अधेड़ उमर का प्रसिद्ध शक्तिशाली फकीर था। यह एक पहाड़ी के ऊपर रहता था और यहां पर शेर और वकरीयां एक साथ इकठ्ठे रहते थे।

इस पहाड़ी के नीचे पांच-सात घरों का एक छोटा सा पाखोवाल गांव था जो श्री गुरु गोविन्द साहिब जी ने अपने वड़े पुत्र वावा गुरदित्ता जी से सम्मत् 1683 विक्रमी में वसाया था और नाम कीरतपुर रखा।

जव श्री गुरु नानक जी पहाड़ी के पास सांईं को मिलने गए तो उसने कहा, दुनियां में घूम कर भगवान का नाम नहीं लिया जा सकता, इसलिए मैं एकान्त वासी होकर ईश्वर के स्मरण में लगा हुआ हूं। गुरु जी ने कहा, सांईं जी ! सब से वड़ा एकान्त यही है, कि पुरुप एकाग्रचित होकर सत्संग करे और सत्संग

रूपी सरोवर में से ईश्वर के स्नेह वाले श्रेष्ठ उपदेश रूपी मोती चुनकर अपना जीवन ऊंचा करें। बुडन शाह गुरु जी के यह शब्द सुन कर वहुत प्रसन्न हुआ, और विनती की कि आप सदा ही मेरे पास टिके रहें। मैं आपका सतसंग प्रति दिन करता रहूंगा। गुरु जी ने कहा सांई जी ! शरीर के कारण संगत सदा स्थिर नहीं रह सकती। आप नाम स्मरण का हमारा उपदेश सदा अपने पास रखें। यह वचन सुन कर बुडन शाह वहुत प्रसन्न हुआ। यहां जिस जगह गुरु जी आकर विराजे थे गुरुद्वारा चरण-कमल विद्यमान है। यहां से आधा मील दूर बुडन शाह की कवर पहाड़ी के ऊपर वनी हुई है।

सयाल कोट हमजा गौस

सांई बुडन शाह से विदा होकर गुरु जी सुल्तानपुर, वैरोवाल जलालावाद, किड़ीयां पठानां से होते हुए सेयदपुर (ऐमनावाद) लालो के पास पहुंच गए। भाई लालो को मिलकर गुरु जी पसरूर के रास्ते सयालकोट के एक फकीर हमजा गौस का अहंकार दूर करने के लिए गए। सयालकोट शहर के दक्षिण की तरफ हमजा गौस नामक एक फकीर रहता था। जो वहुत अभिमानी था और लोगों को वर अथवा श्राप का डरावा देकर अपनी महानता करवाता था। उस समय एक हिन्दु क्षत्रिय से गुस्सा होकर सारे शहर को नष्ट करने के लिए एक गुफा में बंद होकर चलोसा काट रहा था। कहता था कि यह शहर झूठों का है इसको मैं नष्ट कर दूंगा। गुरु जी शहर निवासियों को फकीर के इस कहर से वचाने के लिए गुफा के नजदीक एक वैरी के नीचे वैठ गए।

गुरु जी ने वाद में मरदाने को भेजा कि पीर के शागिरदों को कहना कि नानक तपा जी आप जो को मिलना चाहते हैं। जव

भाई मरदाने ने गुफा के पास जाकर उसके शागिरदों को यह वात वताई तो उन्हों ने कहा कि हमें पीर जी का हुक्म है कि चालीस दिनों के लिए न कोई उनको वुलाए और न ही अन्दर आए। हम ने चालीसें सूर्य नहीं देखना है। जव यह वात मरदाने ने आकर गुरु जी को वताई तो गुरु जी ने कहा मरदाना। पीर जी के श्रद्धालुओं को कह आओ कि आज दोपहर वह सूर्य भी देखेंगे और चालीसा भी टूट जाएगा। जव मरदाना यह वात कहकर वापिस गुरु जी के पास आया तो पीछे सो मुरीद और लोगों ने जो यह वात सुनकर दोपहर की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्होंने देखा कि ठीक ही जव सूर्य शिखर पर आया तो पीर के मन का गुंवद खरबूजे की टुकड़ी की तरह ऊपर से नीचे तक कट गया और सूर्य की किरणें पीर जी के ऊपर जा पड़ी। पीर ने जव यह कुछ देखा तो झट से दरवाजा खोल कर वाहर आ गया कि कहीं गुंवद उसके ऊपर ही न गिर पड़े और सव लोगों को नष्ट करते-करते खुद ही नष्ट न हो जाएं।

गुरु जी को शक्तिवान समझ कर पीर वड़े सत्कार से गुरु जी के पास आ बैठा। गुरु जी ने कहा, पीर जी! एक गुनाह के वदले सारे शहर को दुःख देना ठीक नहीं है। सव को क्षमा की दृष्टि से देखो, दरवेशों को कहर करना अच्छा नहीं लगता। इस तरह गुरु जी ने सारे शहर को पीर के कहर से वचा लिया। पीर ने अपनी भूल मान ली और आगे से लोगों के ऊपर कहर की जगह मेहरवानी करने का भरोसा दिया। यहां गुरु जी का गुरुद्वारा 'वेर साहिव' प्रसिद्ध है जहां गुरु जी ने पीर हमजा गौस को सुमार्ग दिखाया था।

मरना सच्च और जीना झूठ

(मूला किराड़)

इस बेरी स्थान से ही गुरु जी ने मरदाने को दो पैसे देकर शहर भेजा था कि एक पैसे का सच्च और एक पैसे का झूठ खरीद कर लाओ। मरदाना बहुत सी दुकानों पर घूमा और जब उसे किसी से भी सच्च-झूठ मूल्य न मिला तो अंत में एक मूले किराड़ ने एक कागज पर मरना सच्च और जीना झूठ लिख दिया। फिर मूला आप भी उठ कर मरदाने के साथ ही यह देखने के लिए चल पड़ा कि यह कौन सा व्यापारी है जो ऐसा व्यापार करना चाहता है। मूला गुरु जी के दर्शन करके अति प्रसन्न हुआ और नाम दान का उपदेश लेकर गुरु जी का सिंह बन गया।

मूले के घर की जगह सयालकोट शहर में गुरु जी की याद में एक बावली साहिब गुरुद्वारा बना हुआ है।

मिठन कोट मियां मिठे के पास

सयालकोट से वापिस पसरुर के रास्ते होते हुए गुरु जी गांव कोटला के निवासी मियां मिट्ठां के पास पहुंच गए। यह फकीर मियां मीठा भी बहुत अहंकारी था। इसको अपने चमत्कारी होने का बड़ा गर्व था। यह कहता था कि हिन्दु नरकों की आग में जलेंगे। और मुसलमान स्वर्ग के सुख भोगेंगे। इसी तरह ही इसने अनेकों हिन्दुओं को फुसला कर मुसलमान बनाया। गुरु जी ने इसके साथ विचार करके इसको बताया कि नेक कर्मों के बिना क्या हिन्दू क्या मुसलमान दोनों नरकों की आग में जलेंगे। पर मीयां मिठ्ठे ने अपनी बात की प्रोढ़ता में कहा-

अवल नाऊं खुदाईदा, दूजा नबी रसूल ॥

नानक ! कलमां जो पढ़हि दरगह पवे कबूल ॥

अर्थात:–जो कलमां पढ़ेंगे, दरगाह में उन्हीं की रसूल हामी भरेगा, दूसरे नरकों को जायेंगे। गुरु जी ने उत्तर दिया:-

अवल नाऊं खुदाई दा, दर परवान रसूल ॥

शेखा नीयत रास कर तां दरगाह पवे कबूल ॥

अर्थात:—जिसकी नीयत साफ होगी वही दरगाह में पहुंचेगा, दूसरा कोई नहीं पहुंच सकेगा। फिर गुरु जी ने बताया कि भगवान का नाम उसका नूर है, जो उसके नूर में हैं, वह उसको हजूरी में है और वही दरगाह में प्रवाण होता है। वहां किसी रसूल की जरुरत नहीं है।

इस तरह मियां मिठ्ठे को गुरु जी आदि अन्त एक परमात्मा ही निश्चय करवाया।

लाहौर शहर-दुनी चन्द का निस्तारा

लाहौर शहर में एक शाहूकार दुनीचन्द खत्री धनाड्य पुरुष रहता था, जब गुरु जी लाहौर आए तो दुनी चन्द के बाप का श्राद्ध था। उसने हिन्दू ब्राह्मणों और संत महात्माओं को भोजन करने को बुलावा भेजा। सभी भोजन करने के लिए दुनी चन्द के घर पहुंच गए। गुरु जी भी दुनी चन्द के विशेष बुलाने पर उसके घर चले गए और दुनी चन्द को समझाया कि जीवों की गति उनके मरने के बाद श्राद्ध करवाने से नहीं होती, बल्कि उनके अपने जीवन में कर्मों और वासनाओं अनुसार होती है जब तक अपने कर्मों और वासनाओं को जीव भोग न ले उसकी

मिटती। क्योंकि जब शरीर छूटता है तो धरती के पदार्थों के साथ प्यार करने वाले जो शरीर के रास रंग में ही समय व्यतीत कर देते हैं, वह मर कर धरती पर ही रह जाते हैं। मरने के समय ऐसे जीवों के सूक्ष्म शरीर इन मोटी वासनाओं के कारण इतने भारी होते हैं कि वह स्थूल शरीर में से निकल कर धरती पर ही रह जाते हैं और उन्हीं संस्कारों और स्थानों पर ही भटकते रहते हैं जिनके साथ वह सारी उमर मोह करते रहते थे। ऐसा जीव शरीर को छोड़ कर भी शरीर धारण किए हुओं की तरह घूमता रहता है। इनको ही प्रेत का नाम दिया जाता है।

प्रेत जून में यह सारे जीव दुःखी रहते हैं। परन्तु जो पुरुष नाम का जाप करते हैं, ईश्वर के भय और भाव में जीवन व्यतीत करते हैं, उनकी गति अवश्य होती है। इस लिए दुनी चन्द जी माया के अहंकार को त्याग कर नम्रता धारण करो और नाम स्मरण करो। नेक कमाई करके खाओ और जरूरतमन्दों को खिलाओ। यह सबसे उत्तम श्राद्ध है। इससे सभी प्राणी सद्-गति को प्राप्त होते हैं।

गुरु जी के यह प्रभावशाली वचन सुन कर दुनी चन्द ने आप जी की सिखी धारण कर ली और सतसंग करने के लिए अपने घर धर्मशाला बना दी। यह धर्मशाला चौहटा मुफती वाकर दिल्ली दरवाजे के अन्दर लाहौर शहर में प्रसिद्ध है।

पखों के रंधावे (अपने परिवार के साथ)

लाहौर से दुनी चन्द को सुमार्ग पर लाकर गुरु जी रावी के दाएँ किनारे के साथ-साथ कई नगरों सीड़ीयां भीलोवाल आदि में चरण डालते हुए पखों के रंधावे पहुंच कर गांव के बाहर

एक वट वृक्ष के नीचे वैठ गए। गुरु जी का ससुर मूला चौणा पटवारी पखों के रंधावे गांव रहता था और इस समय माता सुलखणी जी और दोनों साहिवजादे भी यहीं रहते थे।

जव मूले चौणे को पता लगा कि श्री नानक जी वाहर वट वृक्ष के नीचे फकीरी भेष में वैठा है तो वह गांव के चौधरी को साथ लेकर गुरु जी के पास आया और वहुत ऊंची-नीची वातें की कुछ दिनों के वाद अजिते रंधावे की प्रेम पूर्वक विनती स्वीकार करके गुरु जी रावी के वाएं किनारे पर डेरा डाल कर टिक गए।

करतारपुर की नींव (सम्वत् 1565)

गुरु जी के रहने के लिए चौधरी अजिते ने जल्दी ही कमरे वनवा दिए और वाकी भी जिस चीज की जरुरत थी, पहुंचा दी वाद में चौधरी दोदे की प्रेरणा से दुनो चन्द लाहौर निवासी खत्री ने जिसको करोड़ीया भी कहा गया है, गुरु जी के लिए धर्मशाला तथा और जरुरी मकान वनवा दिए। और फिर गुरु जी अपने परिवार सुलखणी जी तथा दोनों पुत्रों को भी वहीं ले आए।

वाद में गुरु जी अपने माता-पिता को भी तलवंडी से यहां ले आए और डेढ़ दो वर्ष यहीं ठहरे रहे। इसी समय के दौरान ही आप जी के पास भाई वुडा जी वूड़ा नाम से आए और उपदेश सुन कर घर वाहर त्याग कर आप जी के पक्के सिंह हो गए।

इसी समय ही गुरु जी ने भाई भागीरथ को मरदाने की लड़की के विवाह का सामान लेने के लिए लाहौर भेजा था और भाई भागीरथ की प्रेरणा से ही लाहौर का मनसुख साहूकार गुरु जी का सिंह वन गया था। इस अपने निवास स्थान का नाम गुरु जी ने करतारपुर रखा।

नेक पुरुष के लक्षण

यहां एक वार एक सतसंगी प्रेमी ने गुरु जी से पूछा कि नेक आदमी के क्या लक्षण होते हैं ? गुरु जी ने कहा नेक आदमी वो हैं:-

(1) जिसके विचार नेक हों। (2) जो दूसरों की प्रशंसा सुन कर प्रसन्न हो। (3) जो साधु सन्तों से प्रेम रखता हो। (4) जो अपने उपकार करने वाले का सम्मान करता हो। (5) जो अपने से वड़ों की सेवा और सत्कार करता हो। (6) जो गरीवों पर दया करता हो। (7) जो एका नारी सदा जती की पालना करता हो। (8) जो अच्छे पुरुषों की संगति में रहता है और खोटे पुरुषों की संगत का त्याग करता है।

इसी तरह ही यहां गुरु जी के सवेरे-शाम दीवान सजते थे। जिनमें दूर-दूर से आकर दर्शनाभिलाषी और श्रद्धावान प्रेमी अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करके प्रसन्न होते थे।

-पंचम कांड-

दूसरी उदासी दक्षिण दिशा

(सम्वत् 1567 से 1571)

यहां करतारपुर में भाई भागीरथ और भाई वुढा आदि कुछ सिखों को अपने माता-पिता और परिवार के पास छोड़ कर लगभग तीन वर्षों के वाद गुरु जी ने दूसरी उदासी चढ़ते वैसाख सम्मत् 1567 में आरम्भ कर दी। इस उदासी में आप जी के पांव में खड़ाऊं,हाथ में डंडा, कमर पर रस्से लपेटे हुए और माथे पर तिलक था।

सरसा के पीरों के साथ चर्चा

करतारपुर से चल कर गुरु जी सुलतानपुर, भठिंडा और भटनेर (हनुमानगढ़) आदि के रास्ते सरसा पहुंचे। उस समय सरसा मुसलमान पीरों का एक प्रसिद्ध ठिकाना था। पीरों ने पूछा, कि संत जी ! आप ने कौन सा तप किया है ? गुरु जी ने कहा कि जव मन विकार युक्त हो और शरीर की शक्ति के कारण विकार करता हो, तव शरीर को निर्बल करके मन को शुद्ध करने के लिए तप करना अच्छा है। अगर मन और शरीर शुद्ध हों तो नाम स्मरण करना चाहिए। यह तपों का भी तप है। और यही नाम हम स्मरण करके तप की साधना करते हैं।

पीरों ने गुरु जी की परीक्षा लेने के लिए आप जी को कहा कि आप हमारे साथ चालीस दिनों का चालीसा काटो फिर हम देखेंगे कि आपका नाम स्मरण तपों का तप है कि नहीं।

जव गुरु जी उनके साथ तप करना मान गए तो पीर अपने-अपने घरों में पानी और जौ रख कर वैठ गए और गुरु जी को अपने से अलग एक कोठड़ी में जौ पानी देकर विठा दिया। पीरों ने दिन-प्रतिदिन जौ का एक दाना खाकर और पानी का प्याला पीकर दिन काटे पर गुरु जी ने न जौ का दाना खाया और न ही पानी पिया, चालीस दिन निराहार ही नाम स्मरण में वैठ कर व्यतीत कर दिए। चालीस दिनों के वाद जव गुरु जी पीरों के साथ कोठरी से वाहर आए तो आप जी का चेहरा चढ़ती कलाओं में था और पीरों का मुरझाया हुआ था। यह देख कर पीरों ने गुरु जी को नमस्कार किया और मान लिया कि नाम का आधार सव तपों और पादर्थों से वलवान है। गुरु जी की इस याद में सरसा का गुरुद्वारा वना हुआ है और इसके पास ही पांच पीरों की

कोठरियां हैं। पीरों के नाम वहावल हक, जलालुद्दीन आदि लिखे हैं।

बीकानेर सरेवड़ा साधू

सरसा से विदा होकर गुरु जी बीकानेर के इलाके में से लांघ कर दक्षिण को जा रहे थे। कि आप जी की एक सरेवड़े साधू के साथ चर्चा हुई। जिसमें गुरु जी ने उनके धार्मिक नियमों के सम्बन्ध में एक शब्द का उच्चारण करके बताया कि इनके धारण करने से जीव हत्या के दोष की निवृति नहीं हो सकती। क्योंकि पानी से बिना किसी की गति नहीं है, और पानी ही सब जीवों का मूल है।

श्लोकु मः 1 (पन्ना 149)

सिरु खोहाइ पीअहि मल वाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥
फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पानी देखि सगाही ॥
भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥
माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥
उना पिंडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥
अठसठि तीरथि देनि न ढोई ब्राह्मण अन्नु न खाही ॥
सदा कुचील रहहि दिन राती मथै टिके नाही ॥
झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीवाणि न जाही ॥
लकी कासे हथी फुंमण अगो पिछो जाही ॥
ना उए जोगी ना उए जंगम ना उए काजी मुल्लां ॥
दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥
गुरु समुंद्र नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥
नानक जे सिर खुथे नावनि नाही ता सति चटे सिरि छाई ॥

है। पर आप हठ से मन को तंग करके बैठे रहते हैं। जिस से परम तत्व की प्राप्ति कठिन हो जाती है।

भर्तृहरि ने पूछा, फिर आपके सिख परम तत्व की प्राप्ति कैसे करते हैं? गुरु जी ने कहा हमारा योग यह है कि हम हमेशा करतार से जोड़े रहते हैं, जिसमे शरीर को कोई कष्ट नहीं होता, मन खिला और शरीर प्रफुलित रहता है।

परमात्मा का मान-सम्मान करना, नाम स्मरण करना और सुनना और उसकी विचार करने से वृति भगवान से जुड़ जाती है, इस अवस्था को हम सहज योग कहते हैं।

फिर भर्तृहरि ने कहा, हम अष्टांग योग धारण करके, राज योग कमाते हैं, आप राज योग किस तरह कमाते हैं? गुरु जी ने कहा, हम गृहस्थ में रहकर, भीतर से उससे निर्लेप रहते हैं। गृहस्थ के पदार्थों और भोगों में मन नहीं लगाते। मन को अपने ईश्वर से जोड़े रहते हैं। हम इस अवस्था को राज योग कहते हैं।

फिर भर्तृहरि ने कहा, हम शराब का प्याला पीकर अखंड घोर समाधि लगाते हैं, और महान परमात्मा के दर्शन करते हैं। आपको मदिरापान करने के बिना सहज योग में उसके दर्शन नहीं हो सकते। गुरु जी ने कहा, हम झूठी मदिरा नहीं पीते। हम ज्ञान ध्यान रुपी गुड़ और लकड़ों से तैयार किया हुआ प्रेम-रुपी अमृत का रस पीते हैं और सदा ही उसके दर्शन करते हैं। हमें समाधी लगाने की जरुरत नहीं पड़ती। भर्तृहरि के शब्दों का उत्तर गुरु जी ने इस शब्द द्वारा दिया:-

आसा म: 1।। (पन्ना 360)

गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करणी कसु पाईऐ।
भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिऊ चुआईऐ ।।1।।
बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ।।

अहिनिसि बनै प्रेम लिवलागी सबदु अनाहद गहिआ ॥1॥ रहाउ
पूरा साचु पियाला सहजे तिसही पीआए जाकउ नदरिकरे ॥
अंमृत का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥2॥
गुरु की साखी अंमृत बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥
दर दरशन का प्रीतमु होवै मुकति वैकुंठै करै किआ ॥3॥
सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै ॥
कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अंमृत धरै ॥4॥

अर्थात्:-नाम रस के पीने वाला सदा ही अपने प्रियतम के रंग में रंगा रहता है। रात-दिन उसके प्रेम की जोत जली रहती है। और बेअंत शब्द प्राप्त करता है, परमात्मा का गुण गाने वाला सदा ही बैरागी है, वह माया के मोह में पड़ कर जन्म निष्फल नहीं छोड़ता। हे भर्तृहरि जोगी। ऐसा मस्त हुआ पुरुष अपने आत्म-स्वरुप के दर्शन रुपी अमृत को प्राप्त करता है।

यह निर्णय सच्ची मदिरा का, सहज समाधि का और नित्य दर्शन का गुरु जी से सुन कर भर्तृहरि ने आप जी के आगे सिर झुका दिया। कुछ और योगी जो भर्तृहरि के साथ बैठे चर्चा सुन रहे थे, उन्होंने पूछा कि गृहस्थ में रह कर प्रभु की प्राप्ति कैसे हो सकती है। यह तो गृहस्थ को त्याग कर ही योग साधना से हो सकती है। गुरु जी ने फरमाया, जो पुरुप अपनी नेक कमाई करके खाए और जरुरतमन्दों को खिलाए, प्रेम भक्ति द्वारा ईश्वर के स्मरण में मन को लगाए, ईश्वर का मन में भय रख कर जीवन व्यतीत करे, उसको गृहस्थ में ही ईश्वर की प्राप्ति होगी।

इस तरह अनेको प्रश्नों का समाधान सुनकर सिद्धों ने गुरु जी के आगे सिर झुकाया और आप जी के वचनों को सच्च करके माना।

फिर सिद्धों ने पूछा कि मातृ-लोक का क्या वरतारा है? गुरु जी ने कहा मातृ-लोक में झूठ की काली रात्रि है। सच्चाई का चांद कहीं नजर नहीं आता। आप लोग पर्वतों में आकर छुप गए हैं, जगत का कल्याण कौन करे? भगत लोग रासों द्वारा नाच रंगों में व्यस्त हैं, धर्म की शिक्षा कौन दे? ब्राह्मण घर-घर दान-पूजा ले रहे हैं। काजी घूस ले कर अन्याय कर रहे हैं। इस तरह जगत के जीवों का बुरा हाल हो रहा है, उद्धार कौन करे?

भाई गुरदास जी ने गुरु साहिब जी के उत्तरों के अनुसार जगत में लोग वरतारे का इस तरह वर्णन किया है।

राजे पाप कमांवदे उलटी वाड़ खेत कऊ खाई ॥
परजा अंधी गिआन बिनु कूड़ कुसति मुखहु आलाई ॥
चेले साजि वजाइदे नचनि गुरु बहुतु विधि भाई ॥
सेवक बैठनि घरां विचि गुरु उठि घरीं तिनाड़े जाई ॥
काजी होऐ रिश्वती वढ़ी लैके हक गवाई ॥
वरतिआ पाप समझ जग माही ॥ 30॥ वार 1॥

मात लोक में यह कूड़ कुसति का वरतारा वरत रहा है। परन्तु गुरु जी ने कहा कि आपका सिद्ध लोगों का यह हाल है कि:-

सिधि छपि बैठे परवती, कऊणु जगति कऊ पारि ऊतार ॥
जोगी गिआन विहूणिआ, निसदिनि अंगि लगाइनि छारा ॥29॥

जिन्होंने नगर का कल्याण करना था, सच्चे रास्ते पर लाना था वह सिद्ध लोग और जोगी लोग पर्वतों के ऊपर आकर डेरे डालकर बैठे हो, फिर जगत के लोगों की कौन सहायता करे?

इस चर्चा के उपरान्त सिद्धों ने अपनी करामातों को दिखा कर गुरु जी को वश में करने के यत्न भी किए पर किसी तरह भी जब उनको सफलता न हुई तो उठ कर अलख-अलख कहते

हुए छिन्न-भिन्न हो गए।

सुमेर पर्वत से गुरु जी नेपाल, सिक्कम, भूटान से होते हुए तिब्बत और उसके आस पास चक्कर लगा कर तिब्बत के रास्ते ही वापिस कश्मीर और जम्मू पहुंच गए। जम्मू से जसरोटे, माधोपुर, सुजानपुर, पठानकोट और गुरदासपुर होते हुए व्यास पार करके बेबे नानकी जी के पास सुल्तानपुर पहुंच गए।

सुल्तानपुर से जब गुरु जी दो दिनों के बाद करतारपुर को जाने लगे तो बेबे जी ने कहा, वीर जी ! परसों मेरा शरीर छूट जाएगा, आप दो दिन और मेरे पास ठहर जाएं। बीबी जी की बात सुन कर जब गुरु जी ठहर गए तो दूसरे दिन के बाद ही बेबे जी परलोक सिधार गए और तीसरे दिन जैराम जी भी इसी तरह ही साधारण ज्वर से ही शरीर छोड़ कर स्वंग सिधार गए। गुरु जी इनका अंतिम संस्कार करके अजिते रंधावे के पास और वहां से करतारपुर अपने परिवार के पास आ गए। इस तरह सम्वत् 1575 में तीसरी उदासी समाप्त हुई।

-सप्त कांड-

चतुर्थ उदासी पश्चिम की

(सम्वत् 1575 से 1579)

कटास राज

उत्तर दिशा की यात्रा से आकर गुरु जी अपने दर्शन उपदेश के साथ प्रेमी संगतों को प्रसन्न करने के लिए कुछ समय करतार पुर टिके रहे और फिर सम्वत् 1575 के पिछले पक्ष में करतापुर

से चलकर तलवंडी गए और तलवंडी से वैसाखी 1576 का मेला कटासराज में जाकर किया। कटास राज गांव दादन खां के नजदीक जिला जेहलम में है। यहां गुरु जी ने योगियों और सन्यासियों को सच्चा वैराग और मन्द वैराग का निर्णय करके समझाया कि-जो लोग गृहस्थ के दुःखों तकलीफों से डर कर घर बार छोड़ कर अपनी जरुरतें पूरी करने के लिए, वैराग धारण कर लेते हैं, वह लोग मन्द वैरागी हैं। इस का फल बहुत थोड़ा होता है। दूसरे वह लोग जो परमात्मा के स्मरण की लग्न में लग कर पदार्थों की प्राप्ति और घर के सारे सुख होते हुए भी सब से नाता तोड़ लेते हैं, वह सच्चे वैरागी हैं। सन्यासी को सच्चा वैराग धारण करना चाहिए।

रुहतास टिल्ला बाल गुंदाई

(कान फटे जोगीयों का स्थान)

कटास से गांव दादन खां के रास्ते गुरु जी रोहतास कान फटे जोगीयों के पास टिल्ला बाल गुँदाई जा पहुंचे। यह स्थान दीना रेलवे स्टेशन जिला जेहलम से तीन मील दूर पश्चिम दिशा में है। उस समय जो योगी यहां रहता था। वह स्वयं तो भखड़े की रोटी खाता था, पर अपने डेरे पर आए अतिथि सन्तों को अच्छा भोजन करवाता तथा अच्छा कपड़ा पहनने को देता था। गुरु जी यह देखकर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि मन की वासनाओं और उठ रही रुचियों पर काबू पाने के लिए निरंकार का जाप करो, स्मरण करो और अपनी वृत्ति को जोड़ो तब ही आप सच्चे योगी बन सकते हैं।

चौहा साहिब

इस टिल्ले से उत्तर कर पहाड़ी के नीचे गुरु जी ने एक सिख भक्त की विनती करने पर एक पत्थर उठा कर जल प्रवाह किया, जो आज तक जारी है। इसके पास ही एक सरोवर और एक गुरुद्वारा है।

यहां से चल कर गुरु जी कई स्थानों पर चरण डालते हुए डेरा ईस्माईल खां, डेरा गाजी खां, जामपुर, मोरापुर, नोशहरे, राजनपुर और मिठनकोट, जहां पांच समुद्र इकट्ठे होते हैं, पहुंचे। यहां से सक्खर, भक्खर तथा रोहड़ी से साधू बेला जाकर एक बोढ़ के नीचे वैठकर विश्राम करके यहां से लाड़काना आदि सिंध देश के अमरकोट, टांडा, हैदरावाद उडयारे सिंध के किनारे गए। फिर ठट्टे, राजघाट से कराची। कराची में हाजियों से मिलकर जद्दे शहर (मक्के) पहुंचे। इस समय गुरु जी के साथ भाई मरदाना था, जिसकी विनती को मान कर गुरु जी उसको मक्का व मदीना दिखाने ले गए थे।

मक्के हाजीयों के साथ चर्चा

मक्के पहुंच कर गुरु जी ने एक-एक अजीव चमत्कार किया। रात के समय आप जी कावे की तरफ पैर करके सो गए। सुवह मुंह-अंधेरे जव वहां का सेवा दार झाड़ देने के लिए आया तो उसने आप जी को कावे की तरफ पैर करके सोए हुए देखकर गुस्से से कहा तू कौन काफिर है, जो खुदा के घर की ओर पैर करके सोया हुआ है? आगे से गुरु जी ने बड़े धीरज के साथ कहा, भाई मैं लम्बे सफर करके थका हुआ हूं। उठ नहीं सकता, तुम जिस तरफ खुदा का घर नहीं है, उस तरफ मेरे पांव कर

दो। क्योंकि मुझे मालूम नहीं है, कि खुदा का घर किस ओर है और किस ओर नहीं है, मैं अनजान हूं और पहली बार ही यहां आया हूं। यह बात सुन कर जीवन ने बड़े गुस्से के साथ गुरु जी को पैरों से पकड़ लिया और घसीट कर दूसरी तरफ कर दिया। जब पैरों को छोड़ कर जीवन ने देखा कि काबा फिर भी गुरु जी के पैरों की तरफ था। उसने फिर बड़े गुस्से के साथ पैर पकड़ कर दूसरी तरफ घुमा दिए, पर क्या देखता है कि काबा फिर गुरु जी के पांव की तरफ था।

जब जीवन ने दो तीन बार गुरु जी के पांव घुमा कर देखा कि काबा आप जी के पैरों की तरफ ही है, तो हैरान होकर गुरु जी के पैरों पर गिर पड़ा और अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी।

इस वार्ता को भाई गुरदास जी इस तरह वर्णन करते हैं:-

मक्के की यात्रा

बाबा फिरि मक्के गइआ नील बसत्र धारे बनवारी ॥
आसा हथि किताब कछि कूजा बांग मुसलाधारी ॥
बैठा जाइ मसीत विचि जिथै हाजी हजि गुजारी ॥
जा बाबा सुता राति नौ वलि महराबे पाइ पसारी ॥
जीवनि मारी लति दी केहड़ा सुत्ता कुफर कुफारी ?
लतां वलि खुदाइदे किउं करि पइआ होइ बजिगारी ॥
टंगों पकड़ि घसीटिआ फिरिआ मक्का कला दिखारी ॥
होइ हैरानु करेनि जुहारी ॥32॥ (वार 1)

जिस पऊड़ी जिस तरह गुरु जी ने भेष धारण किया था, उस का भी हमें पता चल जाता है। गुरु जी ने नीले कपड़े पहने हुए थे। हाथ में आसा और बगल में किताब थी। लोटा और मुसला

(निमाज पढ़ने के लिए नीचे विछाने वाली सफ) भी पास थी। इस हाजियों के भेष में मक्के पहुंच कर मसजिद में जहां हाजी ठहरते हैं, वहां जा बैठे। रात हुई तो कावे की तरफ पैर करके सो गए। जीवन ने जोर से ठुड्डा मार कर कहा कि यह कौन काफिर सोया पड़ा है? उसने गुरु जी को जब टांग से पकड़ कर टांगें दूसरी तरफ की तो बावा नानक जी ने ऐसी शक्ति दिखाई कि मक्का भी साथ ही घूम गया। सारे हाजी और मौलवी हैरान हो कर नमस्कार करने लगे।

फिर आगे जैसे काजी और मौलवी इकट्ठे होकर बातें पूछने लगे। भाई साहिब जी उसका वर्णन ऐसे करते हैं।

पुछनि गल्ल ईमान दी काजी मुल्लां इकठे होई।
वडा सांग वरताइआ लखि न सकै कुदरति कोई॥
पुछनि फोलि किताब नो हिन्दू वड़ा कि मुस्लमानोई॥

गुरु जी की तरफ से इसका उत्तर इस तरह देते हैं:-

बावा आखै हाजीयां सुभ अमलां बाभहु दोनों रोई॥
हिंदू मुसलमान दुई दरगाह अंदरि लहनि न ढोई॥
कचा रंगु कसुंभ दा पानी धोतै थिरु न रहोई॥
करनि बखीली आपि विचि राम रहीम इक थाई खलोई॥
राहि शैतानी दुनीयां गोई॥33॥ (वार 1)

गुरु जी के इस तरह निर्भय और सच्चे वचन सुनकर काजियों और मुल्लाओं ने आप जी को नमस्कार किया और आपजी की खड़ाऊं निशानी के तौर पर अपने पास रख लीं। भाई गुरदास जी लिखते हैं:-

मक्का की दिग् विजय

धरी नीसाणी कऊस दी मक्के अंदरि पूज कराई॥

जिथै जाइ जगति विचि वावे वाभु न खाली जाई ॥
घरि घरि वावा पूजीऐ हिन्दू मुसलमान गुआई ॥
छपै नाहि छपाइआ चढ़िआ सूरजु जगु रुसनाई ॥
वुकिआ सिह उजाड़ विचि, सभि भिग्गावलि भन्नी जाई ॥
वड़िआ चंदु न लुकई कढि कुनाली जोति छपाई ॥
उगवणो ते आथवणो नउ खंड प्रिथमी सभ भुकाई ॥
जग अंदरि कुदरति वरताई ॥34॥ (वार 1)

इस तरह मक्का और मदीना में कई हाजीयों, पीरों और मौलवीयों के साथ गुरु जी की चर्चा हुई। सव ने आप जी को ईश्वर का सच्चा अवतार मान कर नमस्कार और सत्कार किया। मक्के की चर्चा के समय सैय्यद रूकनलुद्दीन ने जो उच्च शरीफ से हज करने गए थे, गुरु जी के साथ हाजियों के मुखिया होकर चर्चा की थी और आपजी से निशानी के तौर पर खड़ाऊं ली थी।

बग़दाद जाना

मक्का मदीना से चलकर गुरु जी वगदाद गए। वहां शहर से वाहर वैठ कर जव गुरु जी ने सतिनाम की आवाज दी तो सारी नगरी उस आवाज से गुमसुम हो गई। पीर दसतगीर ने हैरान हो कर समाधि लगा कर देखा कि यह कौन है, तो उसको पता चला कि एक वड़ा मस्ताना फकीर है। इस वारे भाई गुरदास जी वर्णन करते हैं:-

फिरि वावा गिआ वगदाद नौ वाहरि जाई कीआ अस्थाना ॥
इक वावा अकाल रुप दूजा रवावी मरदाना।
दिती वांगि निवाजि करि सुन्नि समानि होआ जहानां ॥
सुन्न-मुन्न नगरी भई देखि पीर भइआ हैराना ॥
वेखै धिआनु लगाइ करि इक फकीरु वडा मस्तानां ॥
पुछिआ फिरि कै दसतगीर कउणु फकीरु किसका घरिहाना ॥

नानक कलि विचि आइआ रबु फकीरु इको पहिचाना ।।
धरति आकास चहुदिसी जाना ।।35।। (वार 1)

यह पता लगा कर पीर दसतगीर गुरु जी के पास आया और पूछा कि तूं किस भेष का फकीर है और तेरा नाम क्या है ? भाई मरदाने ने बताया यह (गुरु) नानक है, जो कलियुग में आया है और एक ईश्वर के भेष को मानने वाला है। यह सारी पृथ्वी, आकाश और चारों कूटों में प्रसिद्ध है। फिर पीर ने और भी कई प्रश्नोत्तर किए और पूछा कि आपने जो लाखों पातालों और लाखों आकाशों का कहा है, यह आप कैसे कह सकते हो ? जब कि हमारे हजरत साहिब ने तीन आकाश और तीन ही पाताल बताए हैं और हिन्दू मत सात पाताल और सात आकाशों का वर्णन करता है। आप की बात मैं नहीं मान सकता, यह झूठ है। गुरु जी ने कहा पीर जी ! जितनी किसी की बुद्धि हो उतनी ही कोई बात करता है। हमें करतार ने लाखों ही बताए हैं, हम लाखों की ही बात करते हैं। पीर ने कहा, हमें आपकी बात का कैसे यकीन आए ? गुरु जी ने कहा, हम आप को दिखा सकते हैं। पीर ने कहा मेरे सपुत्र को दिखा दें, मुझे यकीन आ जाएगा। तब गुरु जी पीर के पुत्र को साथ लेकर आंख झपकते ही आकाश में पहुंच गए और लाखों ही आकाश दिखा कर फिर क्षण भर में ही पाताल में ले जाकर लाखों ही पाताल दिखाए। पाताल से वापिस आते समय एक जगह संगत इकट्ठी हुई थी। तथा कड़ाह प्रसाद बांटा जा रहा था। वहां से गुरु जी ने एक मिट्टी का बर्तन भरकर पीर के लड़के को दिया और वापिस पीर के पास आ गए। जब पीर के पुत्र ने पीर को बताया कि मैं इनके साथ लाखों ही आकाश और लाखों ही पाताल देखता-देखता थक गया हूं, बेअंत ही हैं, कोई अंत नहीं है। फिर उसने कड़ाह का बर्तन जो पाताल वाली संगत ने गुरु जी को दिया था, पीर के आगे रख कर ...

कि इनके मुरीद सारे ही आकाश और पातालों में हैं। यह प्रसाद इनके मुरीदों ने पाताल से दिया है। यह एक गुणी पुरुष हैं, जो किसी के छुपाने से छुपाई नहीं जा सकती, तो पीर ने वड़े हैरान होकर गुरु जी को नमस्कार किया।

भाई गुरदास जी ने इस सारी वार्ता का इस प्रकार वर्णन किया:-

पुछे पीर तकरार करि ऐह फकीर वडा* अतताई ॥
ऐथे विचि वगदाद दे वडी करामात दिखलाई ॥
पाताल आकाश लख उड़कि भाली खवरु सुनाई ॥
फेरि† दुराइन दसतगीर असी भि वेखा जो तुहि पाई ॥
नालि लीता बेटा पीर दा अखी मीटि गइआ‡ हावाई ॥
लख आकास पताल लख, अख फुरक विचि सभि दिखलाई ॥
भरि कचकौल प्रसादि दा धुरो पतालो लई कड़ाही ॥
जाहर कला न छपै छपाई ॥36॥ (वार 1)

श्री गुरु नानक चमत्कार में भाई वीर सिंह जी की लिखत अनुसार वगदाद शहर से पश्चिम दिशा एक मील दूर जहां गुरु जी वैठ कर पीर वहलोल के साथ चर्चा करके उपदेश दिया था। वहां यादगार के तौर पर एक थड़ा वना हुआ है। जिसकी चार दिवारी में सिल लगी हुई है। इस सिल के ऊपर गुरु जी के यहां वैठने का सन् 917 या 927 विक्रमी सम्वत् 1577 के वरावर वनता है जो आप जी की पश्चिम यात्रा का ठीक समय है।

सारे इतिहासकारों ने आप जी की वगदाद यात्रा को आप जी की चतुर्थ उदासी सम्वत् 1575 से 1579 का समय ही लिखा है।

---

*शक्तिवान।
†दुहराकर वोला।
‡असमान में।

ईरान तुर्किस्तान और काबुल

देश ईराक के शहर बगदाद से चल कर गुरु जी ईरान देश के तहरान शहर में गए। यहां से रूस के ईलाके में तुर्किस्तान के शहर ताशकंद, समरकंद (बाबर का तख्त स्थान) और बुखारे आदि शहरों से होते हुए अफगानिस्तान के शहर *काबुल में पहुंचे और लुंडे समुद्र के उस पार एक पहाड़ी पर जा बैठे। गुरु जी की इस याद में यहां एक गुरुद्वारा बना हुआ हैं, पहाड़ी के ऊपर ही एक चश्मा है जो गुरु जी के नाम से प्रसिद्ध है। नवचंद्रमा इतवार को मेला लगता है और कढ़ाह प्रसाद बांटा जाता है। यहां गुरु जी ने एक पठान को उपदेश दिया था कि पढ़ा हुआ वह है जिसके अन्दर भगवान व्यापक है, क्योंकि विद्या का निचोड़ नाम है। नाम जपने वाला ही अच्छा है, चाहे छोटा हो या बड़ा।

पंजा साहिब और वली कंधारी

काबुल से गुरु जी ने खैबर दर्रे से लांघ कर पेशावर आकर गंज मुहल्ले विश्राम किया। यहां आप जी की याद में धर्मशाला बनी हुई है। जो धर्मशाला बाबा श्री चन्द के नाम से प्रसिद्ध है। पेशावर से नौशहरे के रास्ते गुरु जी गांव हसन अबदाल आ कर गांव के बाहर एक पहाड़ी के पास बैठ गए। इस पहाड़ी पर एक फकीर वली कंधारी, जिसने जप तप करके अनेक सिद्धियां प्राप्त की हुई थी, वहां रहता था। यह बड़ा अहंकारी था। जब

---

*इस जगह पर पहुंचने का सम्वत् 1577 तवारीख में लिखा है। जो ऊपर लिखे बगदाद शहर के सम्वत् साथ ही है।

गुरु जी को कुछ दिन यहां बैठे हुए हो गए तो गुरु जी को इसके अहंकारी होने का तथा वली कंधारी को पता चल गया कि गुरु जी शक्तिशाली हैं। गुरु जी को उसका अहंकार तोड़ना चाहते थे, तथा कंधारी गुरु जी की शक्ति को मात करके लोगों को दिखाना चाहता था।

पहाड़ी की चोटी के ऊपर पानी का एक चश्मा निकलता था, जिसके पास ही वली कंधारी का डेरा था। एक दिन अन्तर्यामी गुरु जी ने मरदाने को इस चश्मे से पानी लाने के लिए वली कंधारी के पास भेजा। पहाड़ी पर पहुंच कर मरदाने ने बहुत मिन्नतें की पर वली कंधारी ने उसको पानी न दिया, तथा कहा कि अगर तुम्हारा पीर शक्तिशाली है तो उसे कहो कि तुम्हें पानी दे, अपना नया चश्मा निकाल लो। जब ऐसी अहंकार वाली तथा तर्कवाली बातें सुनकर मरदाने ने आकर गुरु जी को बताई तो गुरु जी ने सतिनाम कह कर मरदाने से पत्थर परे हटाने को कहा, जिसके नीचे से पानी का एक चश्मा चल पड़ा। इसके चलने से ऊपर वली कंधारी का चश्मा बंद हो गया।

अपना चश्मा बंद हुआ देख कर वली कंधारी ने बड़े क्रोध से पहाड़ी की एक चट्टान को अपनी शक्ति से नीचे गुरु जी की ओर धकेल दिया। लुड़कती-लुड़कती चट्टान जब गुरु जी के नजदीक आई तो आप जी ने अपने हाथ का पंजा फैला कर उसको वहीं पर ही रोक दिया।

गुरु जी की यह शक्ति, पहले पानी को नीचे खींचने वाली और दूसरी पहाड़ी को हाथ के साथ रोक लेने वाली, देखकर वली कंधारी ने पहाड़ी से नीचे उतर कर गुरु जी से माफी मांगी और आगे से नम्र रहने का प्रण किया।

गुरु जी के पंजे वाला यह पत्थर अभी तक गुरुद्वारा पंजा

साहिब में देखा जा सकता है। इस पंजे के निशान के कारण ही इस गुरुद्वारे का नाम पंजा साहिब प्रसिद्ध है। अब यह गुरुद्वारा पंजा साहिब पाकिस्तान में है, जहां हर वर्ष वैसाखी को बहुत ही देशों से हिन्दू, सिख इकट्ठे होकर मेला लगाते हैं। गांव हसन अबदाल जिला केमलपुर (पाकिस्तान) में है।

स्यालकोट-मूला मरण

कुछ दिन हसन अबदाल में रहने के पश्चात वली कंधारी का अहंकार दूर करके और उसको "खालिकु खलक महि मालकु पूरि रहिऊ सब ठाईं" का उपदेश करके सबको एक दृष्टि देखना और सलूक करना सिखाया। यहां से विदा होकर गुरु जी रावलपिंडी, मरी, कहूटा, जेहलम, मीरपुर भिंदर से होते हुए स्यालकोट आए।

गुरु जी की स्यालकोट की यह दूसरी फेरी थी। पहली फेरी में आप जी को मूले ने सच्च मरना तथा झूठ जीना बताया था, तथा हमजा गौस से गुरु जी की चर्चा हुई थी। अब इस बार जब स्यालकोट पहुंच कर गुरु जी मूले को मिलने गए तो उसकी बीवी ने गुरु जी को देखकर मूले को उपलों की कोठरी में छुपा दिया, कि कहीं फिर से गुरु जी मूले को अपने साथ ही न ले जाएं।

जब गुरु जी ने बाहर दरवाजे पर खड़े होकर मूले को आवाज लगाई तो उसकी बीवी ने उत्तर दिया, सन्त जी! मूला घर पर नहीं है। अन्तर्यामी गुरु जी यह उत्तर सुनकर मरदाने को कहा, आओ भाई मरदाना! अगर मूला घर नहीं तो न सही, हम तो उसे मिलने आए थे पर यह मूर्ख अपनी बीवी के कहने से घर में छिप गया है। यह वचन करके जब गुरु जी हमजा गौस मकबरे के पास बेरी के नीचे आ बैठे तो पीछे से जल्दी ही खबर आई कि मूला सांप लड़ने से मर गया है। यह खबर सुन कर गु-

ने यह वचन उच्चारण किया:-

श्लोक ॥ नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥
मरणु न जापै मलिआ आवै कितै थाइ ॥
(म: 1 पन्ना 1412)

सैयदपुर 'ऐमनाबाद' भाई लालो के पास

स्यालकोट से चलकर गुरु जी सैयदपुर भाई लालो के पास तीसरी बार आए। यहां आकर जब गुरु जी ने अपनी दूर दृष्टि के साथ देखा कि इस गांव को तबाही होने वाली है तो आप जी ने अपने प्यारे सिख भाई लालो को इस शब्द द्वारा होने वाली तबाही का वर्णन किया:-

तिलंग महला 1॥ (पन्ना 722)

जैसी मैं आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मगै दानु वे लालो ॥
सरमु धरमु दुइ छप खलोए कूड़ु फिरै परधान वे लालो ॥
काजीआ बामणा की गलि थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥
मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥
जाति सनाती होरि हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥
खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥1॥
साहिब के गुण नानकु गावै मासपुरी विचि आखु मसोला ॥
जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला ॥
सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥
काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥
आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥
सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥2॥

थे । श्री गुरु अंगद देव जी परमात्मा के प्रेम रस में सदा आनंद रहते थे ।

तपे की ईर्ष्या

खडूर साहिब एक तपा रहता था जो खहरे जाटों का गुरु कहलाता था । एक बार बड़ा सूखा पड़ा बारिश न हुई, लोग इकट्ठे होकर तपे के पास गए तथा विनती की कि बारिश कराओ । तपे ने कहा कि जब तक यह अपने आप को गुरु कहलवाने वाले, (श्री गुरु अंगद देव जी) गांव में रहेंगे तब तक बारिश नहीं होगी । इनको गांव की सीमा से बाहर निकालें तभी बारिश होगी । यह बात जमींदारों ने जब आकर गुरु जी को बतलाई तो सतिगुरु जी रात के समय चुपके से उठ कर गांव तुड़ को चले गए । तुड़ से छापरी गांव की संगत आपजी को अपने पास ले गई । कुछ दिन छापरी में व्यतीत करने के बाद गुरु जी भरोवाल आ गए । भरोवाल से गुरु को खडूर की संगत आप जी से माफी मांगकर वापिस खडूर ले आई । यहां आप जी अपने अंतिम दिनों तक संगतों को नाम दान का उपदेश देकर कृतार्थ करते रहे ।

मुख्य उपदेश

गुरु जी सिख संगतों को इस प्रकार उपदेश देते थे । श्रद्धा के साथ सतिनाम का स्मरण करना । भलाई के काम गुरु के सन्मुख प्रेम से करने । सतिगुरु तथा परमात्मा के दिए में ही संतोष रखना । सबमें एक ईश्वर का रूप देखना । घर आए की श्रद्धा के साथ यथा शक्ति सेवा करनी और अपनी कमाई का दसवां हिस्सा गुरु के नाम देना । अहंकार आदि बुराईयों का त्याग करना ।

देश के बादशाह

गुरु जी के समय नीचे लिखे बादशाहों ने देश पर राज्य किया:-

1. हुमायूं सम्वत् 1596 – 97 तक।
2. शेर शाह सूरी सम्वत् 1597 से 1602 तक।
3. सलीम शाह सूरी सम्वत् 1602 से 1609 तक।

गुरु अंगद साहिब जी की पवित्र कीर्ति

सवईए महले दूसरे के 2

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि ॥
सोई पुरखु धन्नु करता कारण करतारु कारण समरथो ॥
सतिरु धन्नु नानकु मसतकि तुम धरिउ जिनि हथो ॥
त धरिउ मसतकि हथु सहजि अमिऊ वुठऊ छजि सुरिनर गण मुनि वोहिय अमाजि ॥
मारिउ कंटकु कालु गरजि धावनु लीउ वरजि पंच भूत एक घरि राखिले समजि ॥
जगु जीतउ गुर दुआरि खेलहि ससत सार रथु ऊनमनि लिव राखि निरकारी ॥
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणां जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ 1 ॥
जाकी दृसटि अंमृत धार कालुख खानि उतार तिमर अगिआन जाहि दरस दुआर ॥
उई जु सेवहि सवदु सारु गाखड़ी विखम कार ते नर भव उतारि कीए निर भार ॥
सत संगति सहज सारि जागीले गुरु वीचारि निमंरी भूत सदीव परम पिआरि ॥
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ 2 ॥ (पन्ना 1391)

वचित्र जीवन

श्री गुरु अमरदास जी

जन्म—10 ज्येष्ठ सम्वत् 1536
गुरुगद्दी—3 वैसाख सम्वत् 1609
ज्योति जोत—भाद्रपद सुदी 15 सम्वत् 1631

भले अमरदास गुण तेरे
तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥
(सवईए म : 3 के)

——

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु अमरदास जी

सिख पंथ के तीसरे सतिगुरु

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री (गुरु) अमरदास जी 10 ज्येष्ठ (वैशाख सुदी 14) संम्वत 1536 (मई सम्वत् 1579) को गांव वासरके जिला अमृतसर में श्री तेज भान महल्ला क्षत्रिय के घर माता सुलक्खनी जी की कोख से पैदा हुए।

शादी

आप जी की शादी श्रीमति मनसा देवी के साथ 11 माघ सम्वत् 1559 को हुआ।

संतान

आपजी के घर दो सपुत्र बाबा मोहन जी सम्वत् 1593 तथा मोहरी जी सम्वत् 1596 में तथा दो सपुत्रीयां बीबी दानी जी 1587 तथा बीबी भानी जी सम्वत् 1591 में पैदा हुई।

जीवन लग्न तथा आचार व्यवहार

गुरु जी अपनी पहली अवस्था में गांव वासरके में करियानें की दकानदारी का काम करते थे तथा हर वर्ष संघ के साथ मिलकर

हरिद्वार तीर्थ करने जाते थे। इस तरह आप जी ने बीस बार हरिद्वार क यात्रा की।

गुरु मिलाप

श्री गुरु अंगद देव जी की सपुत्री बीबी अमरो जी बासरके ब्याही हुई थी उससे गुरबानी का पाठ रस भीनी आवाज़ में सुबह सवेरे सुनकर आप जी को गुरु मिलाप की लग्न लगी। बीबी जी को साथ लेकर आपजी सम्वत् 1599 में गुरु अंगद देव जी पास खडूर साहिब हाजिर हुए तथा वहीं टिक गए। उस समय आपजी की आयु 63 वर्ष की थी।

गुरू सेवा

गुरु अंगद देव जी की सेवा में हाजिर होकर आपजी बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ सेवा में जुट गए।

सवा पहर रात रहते आप जी उठकर श्री गुरु अंगद देव जी के लिए ताजे पानी की गागर लाकर स्नान करवाते थे। स्नान करने के बाद गुरु जी के वस्त्र साफ करके सूखने के लिल डाल देते और फिर आप स्नान करके एकांत में बैठकर सतिगुरु जी की मूरत के ध्यान में जुट जाते थे।

दिन चढ़ने पर लंगर के लिए पानी ढोने और लंगर के चूल्हे झोंकने की सेवा करते थे। पर जब प्रसाद तैयार हो जाता तो सतिगुरु जी को प्रसाद खिलाते तथा और हर प्रकार की सेवा करते थे। गर्मियों में संगतों को ठंडा जल पिलाते तथा पंखे की सेवा करते थे।

इस तरह रात दिन आप जी सतिगुरु जी की तथा संगत की

सेवा में वड़े मग्नरहते थे, पर किसी को अपना किहा जतालते नहीं थे ।

गुरू सेवा से सेवा वर

इसी तरह ही आप जी के एकाग्र मन से सेवा करते हुए पांच छः साल वीत गए । एक दिन सुवह सवेरे जव श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाने के लिए जल की गागर कंधे पर उठा कर ला रहे थे तो अंधेरे में आपजी जुलाहे की खड्डी के किल्ले से ठोकर खाकर गिर पड़े । गिरने से पानी से भरी जव गागर धरती पर गिरी तो उसकी आवाज़से जुलाहे ने हलवली में जुलाही से पूछा कौन है ? जुलाही ने कहा होगा अमरु निथावा, इस वक्त और कौन हो सकता है ?

श्री अमरदास जी ने अपने आपको संभाला तथा उठकर पानी की गागर लेकर नित्य कर्म के अनुसार गुरु जी को स्नान जा करवाया ।

सुवह दीवान की समाप्ति पर जव गुरु जी की सुवह की घटना का और जुलाही के अपशब्दों का पताचला तो आप जी ने इनकी नम्रता प्रेम और सहनशीलता पर प्रसन्न होकर अपने आलिंगन में लेकर वड़े प्यार से कहा, "श्री अमरदास जी निमाणियां दे मान, निथावियां दी थां, निआसरो के आसरे,' निओटियां दी ओट अते पीरां दे पीर समरथ पुरष हैं ।"

गुरू गद्दी की प्राप्ति

इस प्यार तथा वर की वखशीश देने के वाद गुरु अंगद देव जी ने संगत में प्रकट कर दिया कि आज से अमरदास जी हमारा रूप हैं, यह गुरु गद्दी के हर तरह से योग्य हैं । समयानुसार इनको गुरु गद्दी का तिलक दिया जाएगा ।

वासरके वापिस

गरु गद्दी मिलने के उपरांत आपजी के साथ गुरु अंगद देव जी के सपुत्र दासू तथा दातू जी ईर्ष्या करने लग गए, इस लिए गुरु जी ने आप को वासरके भेज दिया और हुक्म किया कि जब तक हम वापिस न बुलाए आप अपने बाल बच्चों में वासरके रहे।

गोंदे की बिनती

गुरु जी का हुक्म मान कर आप जी वासरके अपने गांव चले गए। कुछ दिनों के बाद गोंदा मरवाहा क्षत्रिय खडूर साहिब गुरु अंगद देव जी के पास आया तथा विनती की कि मेरा गांव जो मैं ब्यास के किनारे पर अपने नाम से गोइंदवाल वसाना चाहता हूं उसको भूत प्रेत वसाने नहीं देते। आपजी कृपा करके अपने किसी सपुत्र का वहां निवास करवा दे जिससे प्रेतों का डर लोगों के दिलों से दूर हो जाए तथा मेरा गांव वस जाए। मैं आपजी के रहने के लिए मकान बनवा दूंगा तथा और भी हर प्रकार से सेवा करूंगा।

दासू जी तथा दातू जी का इंकार

गोंदे की प्रार्थना सुन कर गुरु जी ने अपने दोनों पुत्रों को कहा कि आप एक या दोनों भाई गोंदे के साथ चले जाओ तथा वहां जाकर अपनी दुकान का काम करो। पर गुरु जी के पुत्रों ने खडूर से अपनी दुकान का चलता काम छोड़ कर गोंदे के साथ जाने से इनकार कर दिया।

श्री 'गुरु' अमरदास जी का गोइंदवाल निवास

तो फिर श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री अमरदास को वासरके से बुला कर आज्ञा दी कि आप गोंदे के साथ गोइंदवाल चले जाओ तथा इसकी सहायता करो ।

वाद में भुँत प्रेतों के ढर को दूर करने के लिए गुरु जी ने अपने हाथ की एक छड़ी दी तथा कहा कि इसको देखकर कोई भूत प्रेत वहां नहीं रहेगा । आप जाएं तथा गोंदे के पास वहीं रहें ।

गरु जी का आदेश मानकर आप जी गोंदे के साथ चले गए तथा गुरु जी की कृपा से उसका गांव वस गया । तव गोंदे ने आप जी के परिवार के लिए मकान वनवा दिए तथा आपजी सम्वत् 1605 विक्रमी से गोइंदवाल के पक्के निवासी हो गए ।

गुरु जी के दर्शनार्थ रोज खडूर साहिब आना

गोईंदवाल से आप हर रोज गुरु जी का लंगर तैयार होने से पहले खडूर साहिव पहुंच जाते थे । सतिगुरु जी को प्रसाद खिला कर तथा लंगर की सेवा करके आप जी फिर तीसरे पहर गोइंदवाल चले जाते थे ।

गोंइदवाल से डेढ़ मील गांव कावे, जिसको अब हन्सांवाल कहा जाता है, की सीमां पर यहां गुरु जी खडूर साहिव को जाते आते वैठ कर विश्राम करते थे आपजी का प्रसिद्ध स्थान दमदमा साहिव कायम है । जो खडूर साहिव से लगभग साढे चार मील है । संतों तथा संगतों के उद्धम से वहुत सुन्दर इमारत वनी हुई है ।

यह वात भी प्रसिद्ध है कि गोइंदवाल में निवास के समय श्री गुरु अमरदास जी व्यास से हर रोज पानी की गागर लाकर श्री गुरु अमरदास जी का खडूर साहिव स्नान करवाते थे तथा यहां पानी की गागर रख कर विश्राम (दम) करते थे । सम्भव है कि जव श्री अमरदास जी गोइंदवाल से गुरु साहिव जी के दर्शन करने के लिए

तो फिर श्री गुरु अंगद देव जी के छोटे सपुत्र दातू जी आप जी की ख्याति कर आज्ञा दी कर खडूर से गोइंदवाल गए। उस समय गुरु जी अपने इसकी सहा पर संगत में वैठे थे कि दातू जी ने आकर क्रोध से आप की पीठ पर लात मारी और कहा कि यह गद्दी हमारे पिता जी अपने की थी जिसके हम हकदार हैं। आप सेवा करते करते गद्दी संभाल वैठा हैं।

गुरु जी ने उठकर दातू जी के पांव पकड़ कर उसकी मुठ्ठियां, भरी तथा कहा कि आप साहिवजादे हैं आप के चरण कोमल हैं, मेरे सूखे शरीर की हडीयों पर भार कर आप को चोट आई होगी इसलिए मैं आप से क्षमा मांगता हूं।

वासरके सन्त साहिब

वाद में ईर्ष्या की ज्वाला से वचने के लिए आप जी उस रात ही चुप-चाप गोइंदवाल से उठ कर आ गए तथा अपने गांव वासरके से वाहर एक कोठे में एकांत वास धारण कर लिया। दरवाज़े पर वाहर लिख दिया कि जो कोई इस दरवाजे को खोलेगा वह गुरु का देनदार होगा वाहर यह लिखकर आप जी ने अंदर से दरवाजा वन्द कर लिया।

इधर गोइंदवाल से गुरु जी के चले जाने के वाद वावा दातू जी गद्दी लगाकर संगतों में गुरु वनकर वैठ गए। पर उनको संगतों की तरफ से वह मान सम्मान न मिला जो वह गुरु वनकर लेना चाहते थे। इसलिए दूसरे तीसरे दिन ही निराश होकर दात जी खडूर आ गए।

इसके कुछ दिनों के वाद वावा वुडा जी के नेतृत्व में संगते उत्साह तथा प्रेम के साथ गुरु जी की खोज में वासरके पहुंच गई। आगे जव दरवाजे पर लिखा हुआ गुरु जी का हुक्म पढ़ा तो वावा

ड्डा जी कोठे के पीछे सन्न लगाकर अंदर चले गए। संगतों ने जी के दर्शन किए तथा विनती करके आपजी को वापिस गोइंदवाल आए। यह 'कोठा सन्न साहिब' के नाम से प्रसिद्ध है।

पहरावा

गुरु जी बड़े उजले सफेद वस्त्र पहनते थे। रंगदार कपड़ा कभी हीं डालते थे। अपने पास कोई फालतू कपड़ा नहीं रखते थे। ब नए कपड़े पहनते थे तो पहले उतार कर किसी जरूरतमंद प्रेमी को दे देते थे।

लंगर का नियम

लंगर सबको एक पंक्ति में बैठ कर खाना पड़ता था; बाद में लंगर का पकवान कच्चा पक्का जो भी बच जाता था रात को सोने तक, वह नदी ब्यास दनी में जलजीवों को डाल दिया जाता था। यहां तक कि पानी के घड़े भी खाली करवा कर उल्टे करवा दिए जाते थे। इस तरह घर में अन्नजल तथा कपड़ा आदि कोई चीज भी जमा नहीं रखते थे। हर चीज जरूरत के अनुसार नई आती तथा प्रयोग की जाती थी।

अकबर बादशाह की लंगर के लिए जागीर

सम्वत् 1624 में अकबर बादशाह ने दिल्ली से लाहौर को जाते हुए गोइंदवाल के तट से ब्यास नदी पार कर के डेरा लगाया। अकबर ने सुना कि श्री गुरु अमरदास जी बिना किसी ऊंच नीच के भेदभाव के एक पंक्ति में बिठा कर सब को लंगर देते थे तथा खिलाते थे। इस बात को परखने के लिए अकबर स्वयं लंगर में गया तथा सब को एक समान देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ। प्रसन्न होकर अकबर ने गुरु जी के

लन्गर के लिए, भवाल परगने कोपांच सों वीघा ज़मीन का पट्टा गुरु जी को जगीर के तौर पर लिख दिया ।

गुरु जी का मुख्य उपदेश

किसी के साथ द्वेष करनी, सव का भला चाहना । ऊंच नीच की विचार के विना अन्न दान करना । क्योंकि अनाज में ही सव के प्राण हैं । तन से दसों अंगुलों की कमाई करके साधु संगतों की सेवा करनी । मन से प्रभ की भक्ति तथा सतिनाम का स्मरण करना । सुवह सवेरे स्नान करके कुछ क्षण एकाग्र मन होकर गुरु शब्द की विचार करना तथा सुनना । सदा मीठा वोलना । वुरे इन्सान का भी भला करना ।

गुरू जी के परोपकार

गुरु जी ने देश तथा जाति हैतु वहुत कार्य किए, जो कि इस तरह हैं :-

1. छूत-छात मिटाना

छूत-छात के भ्रम को दूर करने के लिए एक पंक्ति तथा संगत में वैठ कर प्रसाद ग्रहण करने का नियम वनाना ।

2. सती की प्रथा

सती की रस्म की विरोधता करके उसकी बुराईआं लोगों के सामने रख कर उसको वन्द करने की प्रेरणा दी ।

इस वारे आपजी ने फरमाया :-

[श्लोक म: 3]

1. सतीआं एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जल्लनि ॥

2. नानक सतीआ जाणीअनि
जि विरहे चोट मरनि ॥1॥ म: 3 ॥

3. भी सो सतीआ जानीअनि सील संतोखि रहनि ॥
सेवनि साई आपना नित उठि संमालनि ॥

अर्थात :- ऐ सती की रस्म के पुजारीयो !

1. सतियां वह नहीं कही जा सकती जो मुर्दे पतियों के साथ उनकी चिता में ही जल जाती हैं।

2. सतियां उन को कहें जो अपने पतियों के वियोग में सदमे से मर जाए।

3 उनको भी सती जाने जो नेक आचरण तथा सब्र संतोष के साथ रहती है तथा अपने पति की सेवा शुश्रूषा के लिए ही सदा तत्पर रहती है।

3. बाणी अकत्रित करके लिखवाई

गुरु नानक जी, गुरु अंगद जी, अपनी तथा भक्तों की बाणी एकत्रित करके गुरु जी के अपने पौत्र बाबा मोहन जी के सपुत्र संस राम जी से दो पोथियां में लिखवाई। बाद में श्री गुरु अर्जुन देव जी ने यह पोथियां बाबा मोहन जी से लेकर इनकी बाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की बीड़ में दर्ज की।

गुरु साहिब जी की अपनी रचना की हुई बहुत सारी बाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में विद्यमान है, जिसमें बहुत

प्रसिद्ध 40 पौड़ियों की वाणी 'अनंद साहिब' पन्ना 917 श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से आरम्भ होती है। यह हर खुशी तथा गमी के समय श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पाठ भोग के समय पढ़ी जाती है तथा अमृत प्रचार की पांच वाणियों में से एक प्रसिद्ध वाणी है।

4. सिख प्रचार की नींव

सिख धर्म के प्रचार के लिए गुरु जी ने 22 मंजियां कायम करके दूसरे ईलाकों में सिख धर्म के प्रचार के लिए 22 केंद्र नियत किए तथा जगह-जगह धर्मशाला बनवाई।

5. बावली की रचना

गोइंदवाल में चौरासी पौड़ीयों वाली बावली रची तथा उस को वर दिया कि जो प्राणी मात्र इन चौरासी पौड़ीयों पर बावली में स्नान करके जपुजी साहिब के चौरासी पाठ करेगा उसकी जनम मरण से मुक्ति होगी। आज तक हजारों श्रद्धालु माई भाई गुरु जी के इस आदेश का पालन करके अपने मन को शांत करते हैं। यह बावली संवत 1616 से आरंभ होकर सम्वत 1623-24 में सम्पूर्ण हुई।

6. बैशाखी का त्यौहार

गुरु जी ने दूर नजदीक की संगतों के मेलजोल के लिए बैशाखी का मेला नियत किया।

7. अमृतसर की नींव रखवाई

गुरु जी ने श्री जेनां (रामदास) जी से सम्वत 1627 में गुरु

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु रामदास जी

सिख पंथ के चतुर्थ सतिगुरु

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री गुरु रामदास जी 26 अस्सू कार्तिक वदी 2 वीरवार सम्वत् 1591 को चूनां मंडी लाहौर में श्री हरदास मल्ल सोढी क्षत्रिय के घर माता दया कौर जी की कोख से पैदा हुए।

शादी

श्री गुरु अमरदास जी की छोटी सपुत्री बीबी भानीं जी के साथ आप जी की शादी 22 फल्गुन सम्वत् 1610 को गोइंदवाल में हुई।

संतान

सेवा से मेवा

जैसा कि बुजुर्ग कहते हैं कि सेवा से मेवा मिलता है, वहीं बात श्री जेठा जी के साथ हुई। आपजी का सेवा भाव, नम्रता, शारीरिक आरोग्यता तथा हर प्रकार की योग्यता देखकर श्री गुरु अमर दास जी ने अपनी छोटी सपुत्री बीबी भानी जी के साथ 22 फाल्गुण सम्वत् 1610 को आपजी की शादी कर दी।

सेवा की लगन

आपनी शादी के उपरांत भी श्री जेठा जी गोइंदवाल ही टिके रहे तथा पहले से भी और ज्यादा श्रद्धा प्रेम से, दामाद होने का अभिमान छोड़कर, एक सिख के रूप में, गुरु जी की निजि तथा संगतों की सेवा में लगे रहे।

आप जी सुबह सवेरे गुरु जी को स्नान करवाते, उनके वस्त्र साफ करते, प्रसाद खिलाते, शरीर दबाते तथा जरुरत अनुसार आज्ञा पालन के लिए सेवा में हाजिर रहते। इस प्रकार आपजी सदा सेवा में संलग्न रहते तथा प्रेम में मस्त होकर कहते :-

हउ मूरख कारै लाईआ नानक हरि कम्मे। (आसा पन्ना 449)

बावली साहिब की कार सेवा

वैसाखी के दिन सम्वत् 1616 को जब बावली की खुदाई आरंभ हुई तो जेठा जी ने साधारण सिखों की भान्ति सिर पर टोकरी उठाकर रात दिन एक करके सेवा की। आपजी इस दास भावना वाली सेवा पर गुरु अमरदास जी बहुत प्रसन्न रहते थे।

बीबी भानीं जी की सेवा

बीबी भानी जी अपने परम पूज्य पिता श्री गुरु अमरदास जी

की तन मन से तथा नमृता से सेवा करते थे। गुरु जी की इच्छा अनुसार प्रसाद तैयार करके उनको खिलाते थे। उनके वृद्ध शरीर के खाने, पीने, पहनने का वीवी जी हर तरह ध्यान रखते थे तथा ज्यदा समय अपने पूज्य पिता गुरु जी के पास ही व्यतीत करते इस तरह श्री अमरदास जी इन दोनों पति पत्नि की सेवा पर वहुत प्रसन्न थे।

झुबाल परगणें की जागीर का पटा सम्वत् 1624

वीवी भानी तथा श्री जेठा जी की अनथक नमृ सेवा से प्रसन्न होकर गुरु अमरदास जी के झुवाल परगणें की पांच सौ वीघा जमीन की जागीर का पटा, जो अकवर वादशाह ने आपजी को लंगर के लिए दी थी, श्री जेठा जी तथा वीवी भानी जी को दे दी।

गुरु चक का निवास

गुरु गद्दी प्राप्त करके श्री गुरु रामदास जी पहले कुछ समय गोइंदवाल ही विराजकर संगतों को प्रसन्न करते । इसके उपरांत आपजी अपने आरंभ किए हुए नगर गुरु चक आ गए । यहां आकर गुरु जी ने हर प्रकार के कस्बे के लोगों को सहुलीयतें देकर नगर में वसाया, तथा इस तरह नगर की रौनक वढ़ाई ।

रामदास सरोवर की नींव रखनी

गुरु चक की रौनक वढ़ाने के साथ ही गुरु जी ने सवम्त् 1634 में एक और सरोवर की नींव रखकर उसकी खुदाई करवाई । इस का नाम गुरु जी के अपने नाम के साथ 'रामदास' सरोवर प्रसिद्ध हो गया ।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने सरोवर के इस नाम का गुरु ग्रन्थ साहिव में वर्णन करके इसको वहुत वरदान दिए ।

जैसा कि :-

1. संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जीका ॥
(सोरठ म : 5 पन्ना 623)

2. रामदासि सरोवर नाते ॥
सभ लाथे पाप कमाते ॥
(सोरठ म : 5 पन्ना 624)

3. रामदास सरोवर नाते ॥
सभि उतरे पाप कमाते ॥
(सोरठ म: 5 पन्ना 625)

अमृत सरोवर तथा अमृतसर का नाम

जैसा कि ऊपर बताया गया है इस शहर का नाम पहले गुरु अमरदास जी के समय 'चक गुरु' था। फिर जब गुरु रामदास जी ने गुरु गद्दी पर बैठकर इसमें अपना निवास करके उन्नति की तो इसका नाम 'चक रामदास' तथा 'रामदासपुर' प्रचलित हो गया।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने नगर के इस नाम का भी अपनी वाणी में वर्णन किया है।

गुरु चक का निवास

गुरु गद्दी प्राप्त करके श्री गुरु रामदास जो पहले कुछ गोइंदवाल ही विराजकर संगतों को प्रसन्न करते । इसके उ आपजी अपने आरंभ किए हुए नगर गुरु चक आ गए । यहां गुरु जी ने हर प्रकार के कस्बे के लोगों को सहुलीयतें देकर में वसाया, तथा इस तरह नगर की रौनक वढ़ाई ।

रामदास सरोवर की नींव रखनी

गुरु चक की रौनक वढ़ाने के साथ ही गुरु जी ने सवम्त् 16 में एक और सरोवर की नींव रखकर उसकी खुदाई करवाई । इ का नाम गुरु जी के अपने नाम के साथ 'रामदास' सरोवर प्रसिद्ध हो गया ।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने सरोवर के इस नाम का गुरु ग्रन्थ साहिव में वर्णन करके इसको वहुत वरदान दिए ।

जैसा कि :-

1. संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥
   जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जीका ॥
   (सोरठ म : 5 पन्ना 623)

2. रामदासि सरोवर नाते ॥
   संभ लाखे पाप कमाते ॥
   (सोरठ म : 5 पन्ना 624)

3. रामदास सरोवर नाते ॥
   सभि उतरे पाप कमाते ॥
   (सोरठ म: 5 पन्ना 625)

गुरू चक का निवास

गुरु गद्दी प्राप्त करके श्री गुरु रामदास जो पहले कुछ समय गोइंदवाल ही विराजकर संगतों को प्रसन्न करते । इसके उपरांत आपजी अपने आरंभ किए हुए नगर गुरु चक आ गए । यहां आकर गुरु जी ने हर प्रकार के कस्बे के लोगों को सहुलीयतें देकर नगर में वसाया, तथा इस तरह नगर की रौनक वढ़ाई ।

रामदास सरोवर की नींव रखनी

गुरु चक की रौनक वढ़ाने के साथ ही गुरु जी ने सवम्त् 1634 में एक और सरोवर की नींव रखकर उसकी खुदाई करवाई । इस का नाम गुरु जी के अपने नाम के साथ 'रामदास' सरोवर प्रसिद्ध हो गया ।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने सरोवर के इस नाम का गुरु ग्रन्थ साहिव में वर्णन करके इसको वहुत वरदान दिए ।

जैसा कि :-

1. संतहु रामदास सरोवरु नीका ।।
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जीका ।।
(सोरठ म : 5 पन्ना 623)

2. रामदासि सरोवर नाते ।।
संभ लाखे पाप कमाते ।।
(सोरठ म : 5 पन्ना 624)

3. रामदास सरोवर नाते ।।
सभि उतरे पाप कमाते ।।
(सोरठ म : 5 पन्ना 625)

रामदास सरोवर की महानता

सिख मिसलों के समय भी चाहे गुरु ग्रन्थ साहिब जी के हरिमंदिर में पुरातन मर्यादा के अनुसार प्रकाश होते थे परन्तु यह अब वर्तमान प्रचलित मर्यादा महाराजा रणजीत सिंह ने ज्ञानी संत सिंह जी आदि विद्वानों की सलाह से चलाई थी।

उस समय से हरिमंदिर साहिब में रात दिन लगातार गुरवाणी का कीर्तन तथा पाठ होता रहता है।

इस गुरवाणी के पाठ तथा कीर्तन ने इस सरोवर को सचमुच ही 'अमृत' (का सरोवर) कर दिया हुआ है। जो कोई स्त्री प्रेमी श्रद्धा के साथ इसमें मर्यादा सहित सम्मान के साथ स्नान करता है, उसके शरीर के रोग दूर हो जाते है तथा शरीर को आरोग्यता के साथ ही मन भी शांति प्राप्त कर लेता है।

श्री गुरु रामदास जी के परोपकार

1. हरिमंदर तथा अमृत सरोवर

गुरु जी ने रामदास पुर वसा कर इसमें संसार के शिरोमणी धर्म स्थान हरिमंदिर तथा तीर्थ 'अमृत सरोवर' की स्थापना की। इन दोनों को सिख धर्म की आधार थिलाएं कहा जा सकता है।

"लाहौर सहरु जहरु सवा पहरु।"

वाद में जव श्री गुरु अमरदास जी ने लाहौर में सतसंग तथा नाम वाणी के कीर्त्तन का प्रवाह चलता देखा तो आपजी ने वचन किया कि यह शहर वाहिगुरु की महिमा (मान सम्मान) का घर होने के कारण (अमृत) शांति का (सर) सरोवर हो गया है—अव यह जुल्म का घर नहीं रहा।

...रु अव जहरु कहरु घर नहीं है।

2. लाहौर धर्मशाला

चूना मंडी लाहौर अपने घर वाले स्थान पर आपजी ने सिख धर्म के प्रचार के लिए धर्मशाला बनाकर सिख प्रचार की नींव रखी तथा सतसंग को प्रचलित किया। इस स्थान पर गुरु जी ने संगतों के सुख के लिए एक कुआं भी लगवाया।

3. गुर सिखी का प्रचार

गुर सिखी के प्रचार के लिए गुरु जी ने भाई गुरदास आदि विद्वानों को बाहर दूसरे इलाकों में भेज कर अनेक श्रद्धालुओं को सिखी का दान देकर कृतार्थ किया।

4. गुरबाणी की रचना

प्राणी मात्र के कल्याण के लिए आपजी ने छः वारां तथा 320 शब्द (श्लोक, पौड़ीयां, छंद अष्टपदियां, अलाहणीयां तथा घोड़ीयां के रूप में उच्चारण करके महान परोपकार किया। आप जी की यह वाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में शामिल है।

सूही राग में आप जी ने चार लावां रचकर सिख धर्म की विवाह मर्यादा कायम की।

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु अर्जुन देव जी

सिख पंथ के पाँचवें सतिगुरु

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री गुरु अर्जन देव जी 19 वैसाख (वदी 7) संवत 1620 को श्री गुरु रामदास जी साहिब के घर माता भानी जी की कोख से गोईंदवाल में पैदा हुए।

विवाह तथा संतान

गुरु जी का विवाह 23 आषाढ़ संवत 1636 को श्री कृष्ण चन्द, गांव मऊ ज़िला जालन्धर, को सुपुत्री श्री गंगा देवी जी के साथ हुआ।

आप जी के घर जोधा पुत्र श्री गुरु हरगोविंद जी 21 आषाढ़ (वदी 6) संवत 1652 (सन् 1595 जून 14) को गांव वडाली (छेहरटा) ज़िला अमृतसर में पैदा हुए।

आज्ञा का पालन

गुरु जी माता पिता जी की आज्ञा में रहकर प्रसन्न रहते थे। जब आप जी के दोनों बड़े भाईयों ने अपने ताऊ सहारी मल के लड़के की शादी पर लाहौर जाने से इनकार कर दिया तो आप जी

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु अर्जुन देव जी

सिख पंथ के पाँचवें सतिगुरू

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री गुरु अर्जन देव जी 19 वैसाख (वदी 7) संवत 1620 को श्री गुरु रामदास जी साहिब के घर माता भानी जी की कोख से गोईंदवाल में पैदा हुए।

विवाह तथा संतान

गुरु जी का विवाह 23 आषाढ़ संवत 1636 को श्री कृष्ण चन्द, गांव मऊ ज़िला जालन्धर, की सुपुत्री श्री गंगा देवी जी के साथ हुआ।

आप जी के घर जोधा पुत्र श्री गुरु हरगोविंद जी 21 आषाढ़ (वदी 6) संवत 1652 (सन् 1595 जून 14) को गांव वडाली (छेहरटा) ज़िला अमृतसर में पैदा हुए।

आज्ञा का पालन

गुरु जी माता पिता जी की आज्ञा में रहकर प्रसन्न रहते थे। जब आप जी के दोनों वड़े भाईयों ने अपने ताऊ सहारी मल के लड़के की शादी पर लाहौर जाने से इनकार कर दिया तो आप जी

दूसरी चिट्ठी

जब इस चिट्ठी का कोई उत्तर न आया तो कुछ दिन इंतजार करके आप जी ने दूसरी चिट्ठी लिखी :—

तेरा मुखु सुहावा जी सहज धुनि वाणी ॥
चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥
धनु सु देसु जहां तूं वसिआ
मेरे सजणा मीत मुरारे जीउ ॥ 2 ॥
हउ घोली हऊ घोलि घुमाई
गुर सजणा मीत मुरारे जीऊ ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

तीसरी चिट्ठी

जब इस दूसरी चिट्ठी का भी उत्तर न आया तो फिर कुछ और समय इंतजार करके आप जी ने तीसरी चिट्ठी लिखी :—

इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥
हुणि कदि मिलो ऐं प्रिअ तुनु भगवंता ॥
मोहि रैणी न विहावै नींद न आवै

संगत के सम्मुख कहा कि जो हमारे दर्शनों का इतना इच्छावान होकर भी आज्ञा का पालन करता है वही गुरुता का योग्यता से भार उठा सकता है। जिसके मन में अहंकार नहीं है, नम्र तथा आज्ञाकारी है, वही आश्चर्यजनक वस्तु को सहन कर सकता है। संगत के सम्मुख ऐसे विचार प्रकट करके दूसरे दिन ही श्री गुरु रामदास जी ने श्री अर्जन देव जी को लाने के लिए भाई बुड्डा जी को लाहौर भेज दिया।

जब भाई बुड्डा जी के साथ आप जी लाहौर से अमृतसर पिता जी के पास आ गए तो गुरु जी ने उपरोक्त विचार के अनुसार गुरु गद्दी का योग्य अधिकारी मानकर गुरुआई दे दी। लिखा है कि गुरुआई की प्राप्ति के बाद आपजी ने यह चतुर्थ पद पिता जी के सम्मुख उच्चारण किया:—

भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥
प्रभु अविनासी घर महि पाइआ ॥
सेव करी पलु चसा न विछुड़ा
जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ 4 ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई
जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥ 1 ॥ 8 ॥

इस के साथ 'नानक' नाम की मोहर छाप लगा दी जो कि पहले तीन पादिआँ के साथ नहीं थी लाई गई क्योंकि तब आप जी को गद्दी प्राप्त हुई थी।

नोट:—यह चार पदे का संपूर्ण शब्द राग माम्क म: 5 के सिरलेख के नीचे पन्ना 96 में शब्द हजारे के नाम से प्रसिद्ध है।

गुरु गद्दी की प्राप्ति

श्री गुरु रामदास जी अपने सपुत्र श्री अर्जन देव से यत्न से भरपूर मिलाप की खुशी का समाचार सुनकर अति...

इस वचन पर श्रद्धा रखने वाली बेअंत स्त्रियां जिन के बच्चे होकर गुजर जाते हैं अथवा जिनको बच्चे पैदा ही नहीं होते, यहां हर पंचमी को स्नान करती हैं। गुरु जी उनकी भावनां पूरी करते हैं। इस छेहरटा कुँएं पर कम से कम बारह पंचमियां लगातार स्नान करना ज़रुरी समझा जाता है।

वापिस अमृतसर

जब साहिबज़ादा डेढ़-दो वर्ष का हो गया तो गुरु जी वडाली से वापिस अमृतसर आ गए।

वापिस घर आकर गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया :—

धनासरी महला 5 (पन्ना 678)

जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए,
सुख सहज सेती घरि आउ ॥
अनंद मंगल गुन गाउ
सहज धुनि निहचलु राजु कमाउ ॥ 1 ॥
तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥
तुमरे दोखी हरि आपि निवारे,
अपदा भई बितीति ॥ रहाउ ॥
प्रगट कीने प्रभ करनै हारे,
नासन भाजन थाके ॥
घरि मंगल वाजहि नित वाजे
अपुनै खसमि निवाजे ॥ 2 ॥
असथिर रहउ डोलहु मत कबहु
गुर कै बचनि अधारि ॥
जै जै कारु सगल भू मंडल,
मुख ऊजल दरबार ॥ 3 ॥

जिन के जीअ तिनै ही फेरे
आपे भइआ सहाई ॥
अचरजु कीआ करनै हारै
नानक सचु वडिआई ॥ 4 ॥

यह शब्द गुरु जी ने अपने महलों में अमृतसर आकर श्री हर-गोविंद जी लोरी तथा आशीश के तौर पर सुनाया था। इसमें मुख्य रूप से प्रमात्मा का धन्यवाद है।

बात यह थी कि चंदू आदि का उकसाया हुआ सुलही खां दिल्ली से चढ़ कर गुरु जी को अमृतसर से निकालने ने लिए आ रहा था। जिस कारण गुरु जी उस दुष्ट के आने का सुनकर पहले ही अमृतसर को खाली करके वडाला चले गए थे।

परन्तु सुलही खां दिल्ली से आता हुआ रास्ते में अपने मित्र बावा पृथी चन्द जी के पास गुरु के कोठे ठहरा तथा दूसरे दिन इंटों के सुलग रहे आवे में आवा देखते समय घोड़े समेत गिर कर जल मरा।

इस वार्ता के बारे आप जी ने यह शब्द उच्चारण किया :—

"तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत"

इस में यही इशारा है कि अब विपदा टल गई है, प्रभू ने दु:ख देने वालों को स्वयं ही समेट लिया है। फिर कहते हैं कि 'अचरजू कीआ करनैहारै नानक सचू वडिआई।" यह आश्चर्यजनक कार्य सुलही खां को मारने वाला स्वयं ही ईश्वर ने किया है, यह उसकी अपनी से तारीफ है कि वह अपने सेवकों की स्वयं ही लाज रखता है। हे मेरे लाल हरगोविंद जी। अब आप खुशियों से रहो तथा राज्य करो।

यह अमृतसर वापिस आने की वार्ता संवत् 1653 के अंत में हुई।

ग्रन्थ साहिब की रचना

वडाली से वापिस आकर जब श्री हरिमंदर साहिब की रचना संपूर्ण हो गई तो भाई बुड्डा जी तथा भाई गुरदास जी विद्वान गुरसिखों ने गुरु जी के पास विनती की कि जैसे हर एक मंदिर में अपने किसी न किसी इष्ट देवता की मूर्ति स्थापित की जाती है, वैसे तो इस मंदिर में कौन सी मूर्ति स्थापित करने की आज्ञा है। गुरु जी ने फरमाया कि यह निर्गुण स्वरुप अकाल पुरष का 'हरि मंदिर' है, इसमें गुरु जी की उपदेश-मयी निर्गुण स्वरुप वाणी का निवास करना ही उत्तम है। इस लिए आज ही सारे सिखी मंडल में सिखों को हुकम नामे भेज दें कि जिस तरफ भी गुरु नानक देव जी, गुरु अंगद देव जी, गुरु अमरदास जी की कोई वाणी लिखी हो वह सब लेकर जल्दी अमृतसर पहुंच जाएं। इस के इलावा अगर किसी को वाणी जवानी याद हो तो वह भी स्वयं लिखकर या किसी से लिखवाकर अमृतसर भेज दें।

इस प्रकार के लिखे हुए हुकमनामें जब सभीं सिख संगतों को पहुंच गए तो जिन जिन के पास कोई लिखित वाणी का कोई पत्तरा या कोई किताब थी वह सब लेकर गुरु जी के पास हाज़िर होना आरम्भ हो गए। सब से बड़ा गुरुवाणी का लिखती सांचा भाई वखता अरोड़ा जलालपुर ज़िला गुजरात वाला लाया। भाई वखता ने चारों गुरु साहिबों की वाणी इकत्रित करके लिखी हुई थी।

इस के इलावा श्री गुरु अमरदास जी ने पहले दो गुरु साहिबों की कुछ भक्तों की तथा अपनी रचना अपने पौत्र संसराम से दो पोथियों में लिखवाई हुई थी। यह दोनों पोथियां इस समय बाबा मोहन जी के पास थी, जिन से गुरु अर्जन देव जी ने बड़ी नम्रता के साथ स्वयं नंगे पांव गोइंदवाल जाकर बड़े सम्मान के साथ

पालकी में रख कर अमृतसर लाए। इस के इलावा गुरु जी ने स्वयं भी बेअंत वाणी की रचना की।

इस तरह जब सब तरफ से गुरबाणी की पहुंच गुरु जी को मिल गई तो आप जी ने रामदास सरोवर वाली एकांत स्थान देख कर तम्बू लगवा दिए तथा भाई गुरदास जी को साथ लेकर अपनी रची हुई तथा इकत्रित की हुई वाणी को पहले राग वार किया। फिर हर एक राग में गुरुवाणी को शब्द, छंद, अष्टपदियां, सोहिले, वारां आदि को सुचारु ढंग में लिखा। बाद में भक्तों की वाणी जो गुरु अमरदास जी ने गुरु साहिबां को वाणी से दो पोथियों में अपने पोत्र से लिखवाई हुई थी, उस को भी रागों के अनुसार करके यथार्त रागों में गुरु साहिबों को वाणी के पीछे लिखने के लिए क्रम अनुसार कर दिया।

पूरी तैयारी करने के बाद गुरु जी ने भाई गुरदास जी से सारी गुरुवाणी तथा भक्त वाणी को एक सांचे में लिखवा कर संवत् 1661 मैं संग्रह कर लिया। तथा इसका नाम गुरु जी ने "पोथी साहिब" रखा।

पहला प्रकाश

इस पोथी (ग्रन्थ) साहिब का प्रकाश गुरु जी ने हरमिंदर भाद्रपद सुदी एकम संवत् 1661 को करके बाबा बुड्डा जी को इसका ग्रन्थी नियत किया।

रामसर सरोवर की रचना

गुरु जी ने हर समय तथा हर जरुरत के अनुसार प्राणी मात्र के उपदेश तथा कल्याण के लिए बहुत सारी वाणी उच्चारण की। आप जी के 2216 शब्द श्लोक आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में शामिल हैं। इस के पाठ के साथ बेअंत प्राणियों का कल्याण हो रहा है। इसका नियम के साथ पाठ करने वाले पुरुष का कोई

काम अधूरा नहीं रहता । इस बारे फरमाया है :—

सब ते ऊच ताकी सोभा बनी ॥
नानक इह गुण नामु सुखमनी ॥
(सुखमनी अष्टपदी 24)

अकबर बादशाह ने (गुरु) ग्रन्थ साहिब के दर्शन किए

(गुरु) ग्रन्थ की रचना देख कर ईर्ष्यावादी ब्राह्मणों और मुल्लाओं ने इस की विरोधता करनी आरम्भ कर दी । दोनों धड़ों ने अकबर बादशाह के पास शिकायत की कि गुरु जी ने अपने ग्रन्थ में हिन्दू तथा मुस्लमान दोनों के अवतारों तथा पैगम्बरों की निंदा की है, इसके प्रचार को बंद किया जाए ।

यह शिकायत सुन कर अकबर ने, जो दिल्ली से लाहौर को जाते हुए गुरदासपुर ठहरा हुआ था, गुरु जी से ग्रन्थ साहिब दर्शनार्थ मंगवा भेजा । गुरु जी ने भाई बुड्डा जी तथा भाई गुरदास जी को ग्रन्थ साहिब देकर बादशाह के पास गुरदासपुर भेजा ।

अकबर ने कहा इसको पढ़ कर सुनाएं इसमें क्या लिखा हुआ है । तब भाई बुड्डा जी ने वाक्य लिया तो यह शब्द आया :—

[1]खाक [2]नूर [3]करंद [4]आलम [5]दुनिआइ ॥
असमान जिमी दरखत [6]आब पैदाइसि खुदाई ॥ 1 ॥
बंदे [7]चसम [8]दीदं [9]फनाई ॥
दुनीआं [10]मुरदार [11]खुरदनी [12]गाफल [13]हवाइ ॥ रहाउ ॥
(गुरु ग्रन्थ साहिब पन्ना 723)

---

1. मिटी 2. चेतन सत्ता 3. की है 4. सारी 5. सृष्टि 6. पानी 7. आंखों से 8. दिखाई देता है 9. नाशवान है 10. अधर्म की कमाई 11. खाने वाली 12. भूली हुई 13. वासना (लालच) करके ।

इस सारे शब्द को सुन कर अकबर बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ तथा धर्म पुस्तक के सम्मान के तौर पर सिरोपाऊ देकर ग्रन्थ साहिब को भाई बुड्डा जी तथा भाई गुरदासजी के हाथ वापिस भेज दिया।

अकबर बादशाह से मामला माफ करवाना

लाहौर से दिल्ली वापिस जाता हुआ अकबर बादशाह अमृतसर आया तथा गुरु जी को मिल कर बड़ा प्रसन्न हुआ। बादशाह ने गुरु जी के लंगर के लिए कुछ भेंट देनी चाही पर गुरु जी ने कहा कि इस वर्ष वर्षा न होने के कारण फसल कुछ कम हुई है इस लिए जिमींदारों को इस फसल का मामला माफ किया जाए। यह लोक कल्याण की सांझी बात सुनकर अकबर बहुत प्रसन्न हुआ तथा जिमींदारों को उस वर्ष का मामला माफ कर दिया।

अकबर की मौत तथा जहांगीर को राज्य प्राप्ति

पंजाब से वापिस आगरा पहुंच कर अकबर बादशाह कार्त्तिक संवत् 1662 सन् ईस्वी 1605 अक्तूबर की 16 तारीख को स्वर्गवास हो गया।

अकबर अपने पौत्र, जहांगीर के पुत्र, खुसरो को अपने बाद बादशाही का ताज देना चाहता था परन्तु जहांगीर, जो उस समय दिल्ली था, अपनी बादशाही का ऐलान करके तखत पर बैठ गया।

खुसरो का विद्रोह तथा मौत

खुसरो जो अभी आगरा हो अपने दादा अकबर की मृत्यु में शोक-मग्न था उसको जहांगीर ने बागी करार दे दिया। जहांगीर का यह ऐलान सुन कर खुसरो आगरा से थोड़ी सी फौज, जो उस वक्त आगरा थी, लेकर काबुल की तरफ निकल पड़ा। रास्ते में गोइंदवाल से लांघ कर खुसरो श्री गुरु अर्जन देव जी को भी मिलने

शरण आए को आशीर्वाद देना भो महापुरुषों को नीति के अनुसार एक साधारण बात थी। जिस को जहांगीर ने क्रोधवश गलत ठहराया तथा गुरू जी को शहीद करने का हुकम दे दिया।

कुल आयु तथा गुरु गद्दी का समय

गुरु जी ने कुल 43 वर्ष 1 माह तथा 15 दिवस तक संसार की यात्रा की जिसमें से आप जी 24 वर्ष 9 माह और 21 दिवस गुरु गद्दी पर विराजमान रहे।

श्री गुरू अर्जन देव जी के प्रसिद्ध गुरूद्वारे स्थान

1. लाहौर:—दीवानखाना चूना मंडी तथा डेहरा साहिब शहीदी स्थान।

2 अमृतसर:—गुरुद्वारा रामसर, गुरु का बाग छेहरटा, गुरु की वडाली, मंजी साहिब गांव खारा तथा तरन तारन साहिब।

3. जालंधर:—करतार पुर शीश महल, गुरु के महल, थम्म साहिब।

आप जी का मुख्य उपदेश

पिछली रात्रि उठ कर स्नान करके, वाहिगुरु मंत्र का स्मरण करना, वाणी पढ़नी, दोनों हाथों की कमाई करके निर्वाह करना तथा भूखे, नंगे की अन्न, वस्त्र से सेवा करनी अहंकार का त्याग भाना मानना, प्रेम तथा श्रद्धा से कीर्तन सुनना, सतसंग करना।

गुरू जी के यात्रा स्थान

अमृतसर, तरन तारन, खानपुर, भैणी, सरहाली, खडूर

साहिब, गोइंदवाल, करतारपुर, खेमकरण, जंवर, चूनिआं, लाहौर, डेरा बाबा नानक, रावी. वारठ, वडाली आदि।

गुरू जी के परोपकार

अमृतसर तथा संतोखसर सरोवरों को पूर्ण किया। हरिमंदिर साहिब रचा, तरन तारन सरोवर रचा तथा नगर बसाया। करतारपुर (दोआबा) नगर बसाया। लाहौर बावली साहिब तथा सतसंग के लिए धर्मशाला बनवाई। छेहरटा कूंआ लगवाया, वाणी इकत्रित करके श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की बीड़ तैयार करके सिख संगतों के उद्धार के लिए स्वयं बेअंत वाणी रच कर ग्रन्थ साहिब की बीड़ में दर्ज करवाई। रामसर सरोवर रचा। सच्च तथा सच्चे असूल की खातिर अपनी शहीदी दी।

देश का बादशाह

अकबर तथा जहांगीर।

आपजी की महिमा

जग अऊर न याहि महातम मै
अवतार उजागरु आनि कीअउ ॥
तिनके दुख कोटिक दूर गए
मथुरा जिन अंम्रित नामु पीअउ ॥
ऐह पधति ते मत चूकहि
रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥
परतछि रिदै गुर अरजनु कै
हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥ 5 ॥
(सवईए महले 5 के)

गुरू जी का मानव हित उपदेश

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की ऐह तेरी वरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न कामु ॥
मिलु साध संगति भजु केवल नामु ॥ 1 ॥
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥
जनम बृथा जात रंगि माइआ कै ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥
कहु नानक हम नीच करम्मा ॥
सरणि परे की राखहु सरमा ॥ 2 ॥
(आसा म: 5 पन्ना 12)

—0—

वचित्र जीवन

श्री गुरु हरगोबिंद जी

जन्म— 21 आषाढ़ सम्वत् 1652
गुरुगद्दी—29 ज्येष्ठ सम्वत् 1663
ज्योति जोत—7 चैत्र सम्वत् 1701

अरजन काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी ॥
दलभंजन गुर सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी ॥
(भाई गुरदास जी)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु हरगोबिंद जी

सिख पंथ के छठे सतिगुरु

—0—

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री गुरु हरगोविंद जी 21 आषाढ़ (वदी 6) संवत् 1652 को श्री गुरु अर्जन देव जी के घर श्री माता गंगा देवी जी की कोख से गांव वडाली जिला अमृतसर में अवतार धारी हुए।

शादी

गुरु हरगोविंद जी के तीन विवाह हुए :—

1. डला गांव निवासी नारायण दास की सपुत्री दमोदरी जी के साथ 12 भाद्रपद संवत् 1661 को डल्ले गांव में हुई।

2. बकाला गांव निवासी हरीचन्द की सपुत्री नानकी जी के साथ 8 वैसाख संवत् 1670 को बकाला गांव में हुई।

3. मंडिआली गांव निवासी दया राम जी की सपुत्री श्रीमति महां देवी (मरवाही) जी के साथ 11 सावन संवत् 1672 को मंडिआली गांव (जिला शेखपुर पाकिस्तान) में हुई।

साईं मीयां मीर का दिल्ली जाना

जब माता जी को इस बात का पता चला तो आपजी ने भाई बुड्ढा जी आदि सिखों को साईं मियां मीर जी के पास लाहौर भेजा कि आप जहांगीर को मिलकर गुरु जी को ग्वालियर के किले से बाहर निकलवाएं, माता जी का संदेश सुन कर साईं जी दिल्ली पहुंच कर वजीर खां को मिले, उसके साथ सलाह करके फिर बादशाह को मिलकर बताया कि चन्दू अपनी लड़की का रिश्ता श्री हरगोबिंद जी के साथ करना चाहता था पर चन्दू को अभिमानी समझ कर गुरु अर्जन देव जी ने इसकी लड़की का रिश्ता लेने से इंकार कर दिया था। इस बात का बदला लेने के लिए आप के आदेश की आड़ लेकर इनके पिता गुरु अर्जन देव जी को बेअंत कष्ट देकर लाहौर शहीद करवा दिया था तथा अब उनके सुपुत्र श्री गुरु हरगोबिंद जी को समाप्त करना चाहता है।

यह अभी 16 – 17 वर्ष का नाबालिग निर्दोष बच्चा है। जिस को किसी के उकसाने पर दुःख नहीं देना चाहिए।

साईं जी की इज्जत

बादशाह जहांगीर साईं मियां मीर जी की बहुत इज्जत करता था। इस बारे उसने अपने रोजनामचे में लिखा है—'हजरत मियां मीर जी परमात्मा के सच्चे तथा प्यारे भक्त हैं। आप मन की पवित्रता तथा सब से ऊंची करनी वाले महापुरुष हैं। आदि।

रिहाई का आदेश

अपनी इतनी श्रद्धा के कारण जहांगीर साईं जी की कोई बात नहीं टाल सकता था। इस लिए साईं जी के कहने पर जहांगीर

ने गुरु जी को किले में से छोड़ देने का आदेश दे दिया तथा वज़ीर खां को कहा कि गुरु जी को ग्वालियर से निकाल कर दिल्ली ले आओ।

बंदी छोड़ गुरु जी

इस किले में गुरु जी की नज़रबंदी के समय और भी बहुत से राजपूत राजा तथा राज घरानों के आदमी, जिनकी संख्या 52 लिखी हुई है, खुसरो की मदद करने के आरोप में बंदी थे। गुरु जी ने इनसे बादशाह के वफादार रहने का प्रण लेकर तथा जहांगीर को स्वयं इनकी वफादारी का भरोसा देकर इनको भी कैद में से छुड़वाया। इस परोपकार के परिणाम स्वरूप गुरु जी को बड़े सम्मान के साथ 'बंद छोड़ पीर' के नाम से याद किया जाता है। इसकी याद तौर पर ग्वालियर के किले में एक चबूतरे पर आज तक 'बंदी छोड़ पीर' का बोर्ड लगा हुआ देखा जा सकता है। वज़ीर खां ने ग्वालीयर से लाकर आप जी का डेरा फिर मजनू टिल्ले करवा दिया।

जहांगीर की गुरु जी के साथ मित्रता

गुरु जी का शारीरिक डीलडौल, ताकत तथा शस्त्र विद्या के करतब देख कर जहांगीर प्रकट तौर पर गुरु जी के साथ प्रेम करता था। गुरु जी के साथ शिकार खेलता था, चौपड़ खेलता था, तथा और भी बहुत हास-परिहास तथा प्यार की बातें करता रहता था पर अंदर से उन पर भरोसा नहीं करता था। उसको भय था कि जैसे चंदू ने बताया हुआ है यह अपने पिता का बदला लेने के लिए मेरे से आज़ाद होकर मेरे विरुद्ध कोई बगावत न खड़ी कर दें। इस लिए जहांगीर गुरु जी को हमेशा अपनी निगरानी में

ही रखना चाहता था। जहांगीर की इस नीति का पता हमें उसकी आगे लिखी राजनीतिक चालों से स्पष्ट लग जाता है।

जहाँगीर की पहली चाल

ग्वालीयर के किले से दिल्ली पहुंच कर गुरु जी ने जब कुछ समय बाद अमृतसर जाने की इच्छा प्रकट की तो जहांगीर ने कहा कि अभी कुछ दिन और ठहर जाओ, मैंने काश्मीर को जाना है, मेरे साथ ही आप चलें।

दूसरी चाल

बाद में जब बादशाह काश्मीर को जाने के लिए दिल्ली से चल कर, लाहौर को जाता हुआ, गोइंदवाल पहुंचा तो पत्तन से लांघ कर गुरु जी ने जहांगीर को कहा कि यहां से आप का तथा हमारा रास्ता अलग हो जाता है। आप ने लाहौर को जाना है तथा हम ने अमृतसर। गुरु जी की यह बात सुन कर जहांगीर ने कहा मैं भी आप के साथ अमृतसर जाकर आप के मंदिर के दर्शन करके फिर आगे लाहौर को जाऊंगा।

तीसरी चाल

इस तरह गुरु जी तथा जहांगीर दोनों अमृतसर आ गए। जहांगीर ने अपना डेरा गांव गुमटाले के नजदीक गुरु जी की रोड़ में कर लिया तथा गुरु जी को घर भेज दिया।

कुछ दिन अमृतसर विश्राम करके जब जहांगीर लाहौर को जाने लगा तो वह वजीर खां तथा किचत बेग को कुछ सेना देकर पीछे अमृतसर ही छोड़ गया तथा पक्की कर गया कि गुरु जी को लेकर जल्दी लाहौर पहुंच जाना।

लगवाया हुआ था। जिस वक्त भी चाहे रात हो या दिन, किसी को कोई दुःख तकलीफ होती, वह उस समय ही शाही घंटा बजा देता था। उस घड़िकाल वजाने की उसी समय फरियाद सुनी जाती थी।

सांई मियां मीर जी तथा वज़ीर खां से जहांगीर को पता चल चुका था कि चन्दू गुरु अर्जन देव जी से जुर्माना वसूल करने के बहाने अपनी लड़की के रिश्ता मोड़ने वाली वात का वदला लेना चाहता था। जिस लिए उसने गुरु जी को कष्ट देकर शहीद करा दिया।

इस लिए जव गुरु जी ग्वालियर के किल्ले से वाहर आए तो अपने इंसाफ को मुख्य रख कर जहांगीर ने चन्दू को यथा योग्य सजा देने के लिए गुरु जी के सपुर्द कर दिया।

गुरु जी दिल्ली से लाहौर को जहांगीर के साथ आते हुए चन्दू को अपने डेरे के साथ एक कैदी की तरह ले आए। लाहौर पहुंचकर चन्दू दुःख तथा शर्म से ग्रस्तर होकर मर गया। वाद में उस का पुत्र कर्म चन्द भी गुरु जी के साथ ईर्ष्या करता रहा तथा अंत में वह भी गुरु जी के हाथों श्री हरिगोविंद पुर की लड़ाई संवत् 1697 में मारा गया।

लाहौर गुरू स्थानों की सेवा

अपने लाहौर निवास के समय गुरु जी ने अपने पिता गुरु देव श्री अर्जन देव जी के शहीदी स्थान के दर्शन किए। वहां पर यादगार के तौर पर गुरु जी ने छोटी सी समाधि वनवाई तथा भाई लंगाह को उसकी सेवा के लिए नियत किया। जन्म स्थान श्री गुरु राम दास जी, वावली, डिव्वी वाज़ार के दर्शन करके उनकी मुरम्मत करवाई।

स्थान में लटकाए हुए थे। जिनके दर्शन संगते अगस्त 1947 तक करती रही।

नानक मता से जोगीयों का जाना

गुरु जी की ऐसी प्रत्यक्ष शक्ति देख कर जोगी सदा के लिए स्थान को छोड़ कर चले गए। भाई अलमस्त को गुरु जी धीरज देकर तथा और हर प्रकार की सहायता देकर हरिद्वार, यमुना तथा सानेसर के रास्ते होते हुए डरोली भाई अपने प्रवास वापिस आ गए।

शब्द चौंकी की मर्यादा

इस वार गुरु जी ने लगभग दो वर्ष डरौली निवास रखा। आप जी के इस लंवे विछोड़े के कारण अमृतसर को संगतें आप जी के दर्शनों के लिए वहुत व्याकुल हो गई। गुरु सिख संगतां का इतना प्रेम तथा श्रद्धा देख कर वावा वुड्डा जी ने सो दर रहिरास के पाठ के वाद चौंकी साहिव की रीति चलाई।

संगतें निशान साहिव पकड़ कर हरिमंदिर साहिव के आगे खड़े होकर अरदास करके शब्द पढ़ती हुई सरोवर की वड़ी परिक्रमा करती तथा फिर हरिमंदिर साहिव के आगे आकर अरदास करती थी "कि हे सतिगुरु जी, संगतां इंतजार कर रही हैं आओ तथा दर्शन देकर निहाल करो।" इस चौंकी साहिव की मर्यादा आज तक चली आ रही है तथा हमेशा चलती रहेगी।

नोट:—कई प्रेमियों तथा इतिहासकारों का यह भी कहना

करें हम उस चौंकी में हाज़िर हुआ करेंगे तथा श्रद्धावान
ां के हमारे दर्शन हुआ करेंगे। आज तक इसी भरोसे तथा
से संगतें चौंकी साहिब चढ़ा कर गुरु जी की खुशियां प्राप्त
ही है।

जब गुरु जी को संगतों के इतने प्रेम प्यार का पता चला तो
जी दो वर्ष बाद अमृतसर आ गए।

गुरु जी का नित्य क्रम

अमृतसर में निवास के समय गुरु जी का नित्य क्रम इस प्रकार
ा था। रात के पहर तड़के उठ कर शौच स्नान करके आप जो
ध्यान होकर बैठ जाते। सूर्य चढ़े से पहर दिन चढ़े तक शब्द
ी का दीवान सजता। बाद में संगते गुरु जी के दर्शन करके
न्न होती। इसके बाद गुरु जी प्रसाद ग्रहण करके विश्राम करते
ा सायं काल स्नान कर के अकाल तख्त पर दिवान सजाते। संगतों
कई प्रकार के उपदेश देकर उनके भ्रम दूर करते। दूसरे तीसरे
ा आप जी जवानों को साथ लेकर शिकार खेलने जाते थे तथा
त्र विद्या का अभ्यास करवाते। संध्या के समय चौंकी साहिब
कर परिक्रमा करते तथा रात के पहर भोजन करके विराजते।

काश्मीर यात्रा

इस तरह कुछ समय अमृतसर निवास करके गुरु जी ने
ाश्मीर की संगतों को दर्शन देने के लिए तैयारीं कर ली। अमृतसर
चल कर गुरु जी ने पहला बड़ा पड़ाव चपराहड़ (स्यालकोट से
ात मील दूर पूर्व दिशा) किया। यहां से आगे रहिश्मां जा
विराजे। इस गांव से दो मील दूर आप जी ने पानी की कमी के
ारग 'गुरु सर' चश्मा प्रवाहित किया। इस के पास ही जिस
ीशम के नीचे गुरु जी ने बैठ कर विश्राम किया था वहां बाद में

संगतों ने इस याद में गुरुद्वारा टाहली साहिब विद्यमान है।

यह 'गुरु सर' जल का स्रोत जो आपने वरछा मार कर जारी किया था आज तक चल रहा है। इससे आगे आप जी गलोटीयां वजीरावाद तथा मीरपुर से होते हुए श्री नगर चले गए। यह इलाका अब श्री नगर के बिना पाकिस्तान में है।

माई भाग भरी का प्रेम

श्री नगर गुरु जी अपने सिख भाई सेवा दास के घर जा विराजे। सेवादास की माता माई भाग भरी ने गुरु जी को एक खद्दर का रेजा भेट किया जो माई ने गुरु जी के लिए बड़े प्रेम से स्वयं कात कर बुना हुआ था। इस रेजे का चोला सिल कर माई ने गुरु जी को पहनाया तथा कुछ दिन गुरु जी का बड़े प्रेम से विश्राम अपने घर करवाया। बाद में माई जी ने गुरु जी की याद में अपने घर धर्मशाला बनवाई तथा अपने पुत्र सेवादास को उसका पुजारी नियुक्त करके सतसंग की मर्यादा चलाई। यह स्थान गुरुद्वारा हरि पर्वत पर काठी दरवाजे विद्यमान है।

कर वजीराबाद होते हुए हाफज़ाबाद अपने सिख कर्म चन्द के पास आ गए।

हाफज़ाबाद से गांव मट्ट भाई होते हुए मंडियाली आ गए। यहां गुरु जी ने भाई दया राम की विनती मान कर उसकी सुपुत्री महांदेवी (मरवाही) जी के साथ संवत् 1672 सावन माह में आनंद कारज किया। मंडिआली गांव रावी से पश्चिम दिशा तीन कोस दूर है। आज कल इसका ज़िला शेखूपुरा पाकिस्तान में है।

मंडिआली से गुरु जी ननकाणे साहिब गुरु नानक देव जी के जन्म स्थान के दर्शन करके मद्दर गांव आए। यहां गुरु अर्जन देव जी के पांव की जूती का एक जोड़ा था, जिस को हज़ीरों पर लाने से भाई किदारे का हज़ीरों का रोग खत्म हो गया तथा उसको किदारे ने गुरु जी से लेकर और रोगीयों का हज़ीरां रोग दूर करने के लिए अपने पास रख लिया था। पाकिस्थान बनने के कारण यह जोड़ा अब भारत में आ चुका हुआ है। कई श्रद्धावान प्रेमी अपना हज़ीरों का रोग दूर करने के लिए अभी भी उस जोड़े वाले प्रेमी के पास जाते हैं।

मद्दरां से चल कर गुरु जी गांव मांगा के रास्ते माझे के गांवों में से गुजरते हुए अमृतसर आ गए।

जहाँगीर की मौत

जहांगीर काश्मीर से लाहौर को वापिस आता हुआ रास्ते में ही 28 अक्तूबर सन् 1627 (संवत् 1684 माह कार्तिक) को मर गया। जहांगीर का मकबरा शाहदरा (लाहौर) के नज़दीक बड़ा शानदार बना हुआ है। यहां इस का शरीर दफ़नाया गया था।

बादशाह शाहजहान

जहांगीर की मौत के बाद उस का बड़ा पुत्र शाहजहान दिल्ली

वचित्र जीवन

श्री गुरु हरिराए साहिब जी

जन्म—20 माघ सम्वत् 1686
गुरुगद्दी—7 चैत्र सम्वत् 1701
ज्योति जोत—7 कार्त्तिक सम्वत् 1718

करे रंक ते राव गन, श्री मुख ते कहि बैन ।।
श्री सतिगुर हरिराए जी सिमरें जिन जम भै न ।।
(सरज प्र: रास 10 आषाढ़ 1)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु हर राए जी

सिख पंथ के सातवें सतिगुरू

—0—

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री हरि राए (गुरु) जी बाबा गुरदित्ता जी के घर माता निहाल कौर जी की कोख से 20 माघ (सुदी 13) संवत 1686 (सन् 26-2-1630) को कीरतपुर अवतार धारण किया।

विवाह

इन का विवाह आषाढ़ सुदी 3 संवत् 1697 को अनूप शहर के निवासी भाई दया राम की पुत्रियों कृष्ण कौर तथा कोट कल्याणी के साथ हुआ।

संतान

गुरु जी के घर दो पुत्र हुए :—

1. माता कोट कल्याणी से राम राए जी संवत् 1703 माह चैत्र।

2. माता कृष्ण कौर जी से श्री (गुरु) हरि कृष्ण जी संवत् 1213 माह सावन।

गुरु गद्दी की प्राप्ति

श्री हरि राए (गुरु) जी के पिता बाबा गुरदित्ता जी स्वै इच्छा से चेत्र सुदी 10 संवत् 1685 में समा गए थे तथा इनके वड़े भाई श्री धीरमल जी संवत् 1691 में करतार पुर के युद्ध के समय तुर्कों के पक्ष में हो गए थे। इस लिए गुरु हरिगोबिंद जी ने इन को तुर्कों का पक्ष करने के कारण गुरु गद्दी के योग्य न समझ कर इनके छोटे भाई श्री हरि राए जी को चैत्र 7 (सुदी 5) संवत् 1701 (8-3-1604 ईस्वी) को कीरतपुर में गुरु गद्दी का तिलक लगाकर सब संगतों को आप जी के चरणों में डाल दिया।

गुरु हरि राए जी का नित्य कर्म

गुरु जी एक पहर रात रहतीं उठ कर शौच स्नान के बाद स्मरण में लीन होकर अपने आनन्द स्वरूप में जुट जाते। बाद में बाहर से आई संगतों को उपदेश देकर उनकी मनोकामनाएं पूरी करते। अरदास होकर दीवान की समाप्ति के बाद लंगर में संगतों के साथ बैठ कर प्रसाद ग्रहण करते थे।

प्रसाद आदि ग्रहण करके आप जी दिन ढले तक विश्राम करके सन्ध्या को शस्त्र पहन कर अपने घुड़ सवारों को साथ लेकर शिकार को जाते थे। शिकार के समय किसी जानवर को मारते नहीं थे, केवल अपने जवानों को शस्त्र विद्या का अभ्यास करवाते थे। शिकार से वापिस आकर कुछ समय कथा होती थी जिस के बाद सन्ध्या को चौकी करके दीवान की समाप्ति करते थे।

करतार पुर धीरमल जी के पास

आप जी कीरत पुर से कभी-कभी अपनी माता जी के साथ

धीरमल जी के पास करतारपुर चले जाते थे तथा वहां आई संगतों को नामदान का उपदेश देकर निहाल करते थे ।

श्री अमृतसर के दर्शन

अस्सू संवत् 1701 में गुरु जी कीरतपुर से श्री अमृतसर के दर्शन करने के लिए तथा दिवाली का मेला आप जी ने अमृतसर में ही किया । मेला करके आप जी करतार पुर से होते हुए कीरत पुर वापिस आ गए ।

मालवा देश का दौरा

आषाढ़ संवत् 1708 में भाई भगतू जी स्वर्गवास हो गए । उनके इकट्ठ पर आई मालवे की संगतें तथा भाई भगतू जी के पुत्र जीवन ने विनती की कि आप हमारे देश में चरण डालें तथा संगतों को दर्शन देकर निहाल करें । इन की विनती मान कर गुरु जी मालवा की धरती तो पवित्र करने के लिए महिराज जा विराजे ।

फूलकीआँ को वरदान

इस गांव के लोगों ने शाहजहान की फौजों के साथ तीसरे युद्ध के समय संवत् 1688 में श्री गुरु हरिगोविंद जी की हर प्रकार से सहायता करके आप जी से बहुत खुशियां प्राप्त की थी । अब जब गुरु हरि राय जी इस गांव में उतरे तो, एक दिन समय पा कर, चौधरी काला अपने भतीजों फूल तथा संदली को साथ लेकर गुरु साहिब जी के पास हाजिर हुआ । चौधरी फूल के निखट्टू हुए इन दोनों बच्चों ने गुरु जी के सामने खड़े होकर अपने पेट

गुरु गद्दी की प्राप्ति

श्री हरि राए (गुरु) जी के पिता बाबा गुरदित्ता जी स्वै इच्छा से चेत्र सुदी 10 संवत् 1685 में समा गए थे तथा इनके बड़े भाई श्री धीरमल जी संवत् 1691 में करतार पुर के युद्ध के समय तुर्कों के पक्ष में हो गए थे। इस लिए गुरु हरिगोविंद जी ने इन को तुर्कों का पक्ष करने के कारण गुरु गद्दी के योग्य न समझ कर इनके छोटे भाई श्री हरि राए जी को चैत्र 7 (सुदी 5) संवत् 1701 (8-3-1604 ईस्वी) को कीरतपुर में गुरु गद्दी का तिलक लगाकर सब संगतों को आप जी के चरणों में डाल दिया।

गुरु हरि राए जी का नित्य कर्म

गुरु जी एक पहर रात रहतीं उठ कर शौच स्नान के बाद स्मरण में लीन होकर अपने आनन्द स्वरूप में जुट जाते। बाद में बाहर से आई संगतों को उपदेश देकर उनकी मनोकामनाएं पूरी करते। अरदास होकर दीवान की समाप्ति के बाद लंगर में संगतों के साथ बैठ कर प्रसाद ग्रहण करते थे।

प्रसाद आदि ग्रहण करके आप जी दिन ढले तक विश्राम करके सध्या को शस्त्र पहन कर अपने घुड़ सवारों को साथ लेकर शिकार को जाते थे। शिकार के समय किसी जानवर को मारते नहीं थे, केवल अपने जवानों को शस्त्र विद्या का अभ्यास करवाते थे। शिकार से वापिस आकर कुछ समय कथा होती थी जिस के बाद संध्या की चौकी करके दीवान की समाप्ति करते थे।

करतार पुर धीरमल जी के पास

आप जी कीरत पुर से कभी-कभी अपनी माता जी के साथ

धीरमल जी के पास करतारपुर चले जाते थे तथा वहां आई संगतों को नामदान का उपदेश देकर निहाल करते थे ।

श्री अमृतसर के दर्शन

अस्सू संवत् 1701 में गुरु जी कीरतपुर से श्री अमृतसर के दर्शन करने के लिए तथा दिवाली का मेला आप जी ने अमृतसर में ही किया । मेला करके आप जी करतार पुर से होते हुए कीरत पुर वापिस आ गए ।

मालवा देश का दौरा

आषाढ़ संवत् 1708 में भाई भगतू जी स्वर्गवास हो गए । उनके इकट्ठ पर आई मालवे की संगतें तथा भाई भगतू जी के पुत्र जीवन ने विनती की कि आप हमारे देश में चरण डालें तथा संगतों को दर्शन देकर निहाल करें । इन की विनती मान कर गुरु जी मालवा की धरती तो पवित्र करने के लिए महिराज जा विराजे ।

फूलकीआँ को वरदान

इस गांव के लोगों ने शाहजहान की फौजों के साथ तीसरे युद्ध के समय संवत् 1688 में श्री गुरु हरिगोविंद जी की हर प्रकार से सहायता करके आप जी से वहुत खुशियां प्राप्त की थी । अव जव गुरु हरि राय जी इस गांव में उतरे तो, एक दिन समय पा कर, चोधरी काला अपने भतीजों फूल तथा संदली को साथ लेकर गुरु साहिव जी के पास हाज़िर हुआ । चौधरी फूल के सिखलाए हुए इन दोनों वच्चों ने गुरु जी के सामने खड़े होकर अपने पेट

वजाए । वच्चों की यह करनी देख कर गुरु जी ने चौधरी काले से पूछा, चौधरी! यह वच्चे पेट क्यों वजाते हैं ? काले ने विनती की कि सच्चे पातशाह ! इनका पिता रूप चन्द मर गया है, तथा यह छोटे छोटे पीछे रह गए हैं । यह बे-आसरा हैं तथा पेट वजा कर वता रहे हैं कि हम भूखे हैं, हमें रोटी का गुज़ारा दिया जाए ।

काले की यह विनती सुन कर गुरु जी वच्चों की यह पेट वजाने वाली नई तरकीब देख कर, वड़े प्रसन्न हुए । उनके पिता रूप चन्द की सेवा का ख्याल करके जो उसने छटे पातशाह जी की युद्ध में सहायता की थी उनको वरदान दिया । फरमाया कि इनकी संतान इस इलाके का राज करेगी तथा इनके घोड़े यमुना से पानी पीएंगे ।

पटयाला तथा नाभा जींद के राजा

सतिगुरु जी के इस वरदान की कृपा से फूल का वड़ा पुत्र तिलोक सिह नाभा तथा जींद का, तथा दूसरा पुत्र राम सिंह पटयाला का राजा हुआ । यह तीन रियासतें वावा फूल के नाम पर "फूलकीआं" के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

चौधरी काले के पुत्रों को बख्शीश

दूसरी वार फिर चौधरी काला गुरु जी के पास अपनी पत्नी के कहने से अपने पुत्रों के लिए भी राज्य भाग्य लेने आया । हाज़िर होकर काले ने विनती की सच्चे पातशाह ! अगर आप जी ने मेरे भतीजों रूप चन्द के पुत्रों को राज्य भाग्य का वरदान दिया है तो आप मेरे पुत्रों पर भी कृपा दृष्टि करें । मेरे पुत्र अपने भाईयों के अधीन काम करें तथा अलग न हों । चौधरी काले की विनती सुन कर गुरु जी ने कहा चौधरी ! तेरे पुत्र

आया था, पकड़ने के लिए देश में बड़ी भगदड़ मची हुई थी। सतिगुरु हरि राय जी इस शोर में अपने घुड़-सवारों के साथ गोइंदवाल तथा खडूर साहिब के दर्शनों को आए हुए थे। दारा शिकोह औरंगज़ेब से डरता पांच सौ के लगभग फौज लेकर लाहौर के रास्ते काबुल जाना चाहता था। गोइंदवाल का पत्तन लांघ कर वह गुरु जी को मिला तथा आप जी से आत्म उपदेश लेकर लाहौर को चला गया।

दारा शिकोह का कत्ल

दारा शिकोह के पीछे ही उस को पकड़ने के लिए औरंगज़ेब फौज लेकर जा रहा था। दारा शिकोह लाहौर, मुल्तान, अजमेर, गुजरात, अहमदाबाद, कच्छ तथा जूना गढ़ आदि स्थानों पर सहायता लेने के लिए भाग-दौड़ की पर औरंगज़ेब से डरते हुए किसी ने कोई सहायता न दी। इस लिए अंत में जूना गढ़ की मुठभेड़ में हार खा कर औरंगज़ेब ने उस को दिल्ली में लेजाकर कत्ल करवा दिया तथा स्वयं निश्चित होकर राज्य करने लगा।

औरंगजेब की कट्टरता

इस तरह पिता तथा भाईयों को ठिकानें लगाकर औरंगज़ेब दिल्ली का बादशाह बन गया। यह एक बड़ा कट्टर मुसलमान था। जो सब को मुसलमान बना कर इसलामी राज्य कायम करना चाहता था। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए उसने कट्टर मुसलमान अपने सलाहकार रख लिए तथा हिंदू धर्म को खत्म करने के लिए हिंदुओं पर बड़े कठोर नियम लागू कर दिए।

हिंदूओं पर सख्ती

औरंगजेब ने हिंदूओं के प्रसिद्ध बड़े बड़े मंदिर; मथुरा, काशी, द्वारिका; पुश्कर राज आदि गिरा दिए तथा उनके समर्थकों को जबर-दस्ती मुसलमान बना लिया या कत्ल कर दिया गया। इसने वेनवा सूफी तथा और भी कई मतों के पीरों फकीरों को तंग किया तथा सरमंद जैसे ब्रह्म ज्ञानी सूफी फकीर को कत्ल करवाया।

गुरु गद्दी की शिकायत

इस संबंध में इसका ध्यान गुरु नानक देव जी की गद्दी पर भी दिलवाया गया। यह गद्दी अब तक बहुत प्रसिद्ध हो चुकी थी। मौलवी गुरु अर्जन देव जी के समय से जब से उन्होंने (गुरु) ग्रन्थ जी की बीड़ बांधी थी विशेष विरोध रखते थे। गुरु घर के साथ ईर्ष्या रखने वाले दोखियों ने बादशाह को उकसाया कि गुरु नानक की गद्दी पर विराजमान वर्तमान गुरु ने दारा शिकोह को गोइंदवाल की सीमा लांघते समय अपनी मदद का भरोसा दिया था तथा उसके हक में उसको आशीष दी थी।

राम राए जी ने दिल्ली जाना

इस शिकायत के कारण औरंगजेब ने गुरु जी को दिल्ली बुला भेजा। पर आप जी ने इस जालिम बादशाह को न मिलने का प्रण किया हुआ था। इस लिए अपने बड़े पुत्र राम राए जी को सर्वशक्तिमान मान कर बादशाह के बुलाने पर दिल्ली भेज दिया।

राम राए जी की देखली

राम राए जी ने औरंगजेब को कई प्रकार के चमत्कार दिखा

कर वहुत प्रसन्न किया। पर ज्यादा प्रसन्न करने के यत्न में राम राए जी से वहुत वड़ी गल्ती हो गई। उस ने "आसा की वार" में "मिट्टी मुसलमान की" प्रयोग किए गए गुरु नानक देव जी के शब्द की जगह, औरंगज़ेब के पूछने पर कि मुसलमान की मिट्टी किस तरह जलती है ? "मिट्टी बेईमान की" कह दी। जब इस तरह गुरु नानक देव जी के वाक्य को उल्टाने का पता गुरु हरि राए जी को लगा तो आप जी ने राम राए को कह दिया कि तुम वादशाह की खुशामद करने के लिए गुरु नानक देव जी के वाक्य को गल्त कहा है, इस लिए अब तुम ने हमारे सम्मुख नहीं आना है। तुम गुरु वाणी तथा गुरु नियमों का उलंघन करने के कारण अपराधी हो। तुम ने वादशाह को नाज़ायज़ करामातें दिखाई हैं तथा गुरु वाणी की तुक वदली है।

डेहरादून बसाना

गुरु पिता जी का यह हुक्म सुन कर राम राए जी ने अपना निवास औरंगज़ेव की सलाह से यमुना के किनारे पर्वतों में कर लिया। इस स्थान का प्रसिद्ध नाम अब डेहरादून है, जो अच्छी वायु तथा पानी के कारण एक प्रसिद्ध शहर है। वावा जी का यहां एक वहुत वड़ा देहुरा है। जिसको लाखों रुपए की वार्षिक आमदनीं है। यह देहुरा औरंगज़ेव ने अपने खर्च से राम राए जी को वनवा कर दिया था।

गुरू जी ने शरीर त्यागना

अपने छोटे सुपुत्र श्री हरि कृष्ण जी को गुरु गद्दी देकर गुरु

जी इतवार 7 कार्तिक (वदी 9) संवत् 1718 (सन् ईस्वी तारीख 6-10-1661) को कीरतपुर शरीर त्याग कर ज्योति जोत समा गए।

कुल आयु

गुरु जी ने कुल 31 वर्ष 8 माह तथा 17 दिन आयु भोगी जिस में से आप जी 17 वर्ष 6 माह 26 दिन गुरु गद्दी पर विराजमान रहे।

गुरु गद्दी के समय देश के बादशाह

गुरु जी ने माह जैत्र संवत् 1701 से कार्तिक संवत् 1718 मुताबिक सन् 8-3-1644 से 6-10-1661 तक गुरुआई की। इस समय देश पर निम्नलिखित राजाओं ने राज्य किया :—

1. शाह जहान महीना चैत्र संवत् 1701 से
2. औरंगज़ेब सावन संवत् 1715 से

मुख्य उपदेश

नाम जपो, कमाई करो, वांट कर खाओ। बुराई का त्याग तथा अच्छे कर्मों को ग्रहण करो। यह आपजी का सर्व सांझा उपदेश था।

गुरु जी पर उपकार

मालवा के जंगली इलाके में गुरु जी ने पेट से भूखे वच्चों को राज्य पद की नींड़ रखी। जिस से सिख राज्य का सारे संसार में डंका वजा।

गुरूबाणी की महानता

गुरुवाणी की तुक उल्टने वाले लायक पुत्र राम राय जी को कठोर सजा देकर गुरुवाणी की महानता कायम की। अगर गुरु जी ऐसी गल्ती करने वाले को इतनी यातना न देते तो हर कोई अपनी मर्ज़ी से तुकें वदल देता। जिस से (गुरु) ग्रन्थ साहिब की पवित्र वाणी में अनेक प्रकार की गलत वाएँ आ जानी संभव थी।

गुरू जी के प्रसिद्ध यात्रा अस्थान

कीरतपुर, करतार पुर, गोइंदवाल, खडूर साहिब, अमृतसर, ज़िला फिरोज़ पुर में गांव मिहराज तथा रूगा आदि।

— इति —

वचित्र जीवन

श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी

जन्म—सावन वदी 10 सम्वत् 1713
गुरुगद्दी—अस्सू सुदी 10 सम्वत् 1718
ज्योति जोत—चैत्र सुदी 14 सम्वत् 1721

श्री हरि कृशन धिआईऐ
जिसु डिठै सभ दुख जाइ ॥

(अरदास)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु हरिकृष्ण जी

सिख पंथ के आठवें सतिगुरु

—0—

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री (गुरु) हरि कृष्ण जी श्री गुरु हरिराए जी के छोटे साहिब-ज़ादे थे। आपजी ने माता कृष्ण कौर जी की कोख से संवत् 1713 सावन वदी 10 बुधवार साढ़े सात घड़ी दिन चढ़े (सन् 7-7-1656) को कीरतपुर में अवतार धारण किया।

विवाह

गुरु हरिकृष्ण जी आठ साल की छोटी आयु में ही स्वर्ग सिधार गए थे, इस लिए आप जी का विवाह नहीं हो सका।

गुरु गद्दी की प्राप्ति

श्री गुरु हरि राए जी के वड़े पुत्र श्री बाबा राम राय जी ने औरंगज़ेब की खुशामद करके गुरु नानक देव जी की उच्चारण की हुई वाणी "मिट्टी मुस्लमान" की जगह "मिट्टी बेईमान" की कह दी थी तथा औरंगज़ेब को खुश करने के लिए कई योग्य अयोग्य करामातें भी उसको दिखाई थी। इस लिए इन को गुरु गद्दी के अयोग्य समझ कर इन के छोटे भाई श्री हरि कृष्ण जी को असू सुदी दसवीं संवत् 1718 (सन् 7-10-1661) को गुरु गद्दी पर स्थापित किया।

औरंगज़ेब के पास राम राए ने शिकायत करनी

जव श्री गुरु हरि राए साहिव जो ज्योति जोत समा गए तो वाद में राम राय जी ने वादशाद औरंगज़ेव के पास शिकायत की कि मेरा छोटा भाई जो कि अभी पांच वर्ष का नादान वच्चा है उस को हमारे पिता जी ने गुरु गद्दी पर बैठा दिया है। गुरु गद्दो पर वैठने का मेरा हक था परन्तु आप के साथ मेरा मेल जोल होने के कारण पिता जी मेरे साथ गुस्से हो गए तथा मुझे गुरु गदी से वेदखल कर गए है। राम राए ने औरंगज़ेव को कहा कि आप श्री हरि कृष्ण जी को दिल्ली बुला कर कहे कि गुरु गद्दी पर मेरा हक मान कर स्वयं को गुरु न कहलवाएं तथा गुरु गद्दी पर गुरु वन कर न बैंठे।

गुरु हरिकृष्ण जी का दिल्ली जाना

राम राय जी के मजबूर करने पर औरंगज़ेव ने राजा जय सिह सवाई को कहा कि आप वालक गुरु जीं को यहां वुलाएं। राजा जय सिह ने अपना प्रधान (वजीर) भेज कर गुरु जी को वड़े सम्मान के साथ दिल्ली वुलाया इस समय गुरु जी के साथ माता जी तथा उनके कुछ सेवक भी गए।

अनपढ़ झीवर से गीता के अर्थ

कीरतपुर से देहली को जाते हुए गुरु जी ने अंवाला से आगे नजदीक ही पंजोखरे गांव में दो तीन दिन विश्राम किया। यहां आप

जी के साथ एक पंडित ने तर्क किया कि आप इतनी छोटी आयु में गुरु पद का समर्थता नहीं रख सकते, अगर आप के पास समर्थता है तो गीता के अर्थ सुनाएं । पंडित की यह वात सुन कर गुरु जी ने वहां के रहने वाले एक अनपढ़ छज्जू झीवर से गीता के अर्थ करवा कर पंडित को वताए । आप जी को इस याद में एक सुन्दर गुरु द्वारा कायम है ।

दिल्ली पहुंचना

दिल्ली पहुंच कर राजा जय सिंह ने वस्ती जय सिंह पुरा में गुरु जी का अपने वाग की कोठी में 'वंगला' के नाम से प्रसिद्ध थी, निवास करवाया । इस बंगले (कोठी) में कुछ दिन विश्राम करने के कारण आप जी को याद में यहां सुन्दर गुरु द्वारा कायम है जो 'वंगला साहिव' के नाम प्रसिद्ध है । यह गुरु द्वारा नई दिल्ली गोल डाकखाने के नज़दीक है ।

रोगियों के रोग दूर करने

जव गुरु जी दिल्ली पहुंचे थे तो शहर में हैज़े की वीमारी फैली हुई थी । आप जी पर श्रद्धा रख कर आप जी के पास वहुत से रोगी आने लगे । जिस रोगी को आप जी अपना चरणामृत देते वह जल्दी ही तन्दरुस्त हो जाता । जव आप की इस तरह परो-पकारी उपमा सुन कर कई और प्रकार के रोगों वाले भी वहुत लोग आने लग गए तो गुरु जी ने एक चुवच्चा वनवाया जिस में अमृत वेला के स्मरण से उठ कर अपने चरणों की छूह का पानी भर देते थे । उस चुवच्चे में से सेवादार आए हुए रोगियों को आठों पहर चरणामृत देते रहते थे । जिस से वहुत से रोगियों के रोग दूर हो जाते थे तथा गुरु जी पर उन की आस्था वन जाती थी ।

यह चुबच्चा अभी तक कायम है तथा इसको हर रोज उस जल से भर दिया जाता है जिस से सुबह के गुरु ग्रन्थ साहिब के प्रकाश स्थान का स्नान कराया जाता है। श्रद्धालु प्रेमी लोग इस में अमृत का घूंट लेकर अपने मन की शांति प्राप्त करते हैं।

अरदास का संकेत

इस ऊपर लिखित परोपकार के कारण, श्री गुरु गोविंद सिंह ने जब नौं पातशाहिओं के नाम लेकर अरदास करने की विधि संकेत की तो आप जी के नाम यह शब्द संकेत किए :—

"श्री हरि कृष्ण धिआइऐ
जिस डिठै सब दुख जाइ ॥"

गुरु गद्दी पर गुरु स्थापित करना

गुरु जी का शरीरक अंत समय नज़दीक देख कर सिख सेवा-दारों ने विनती की कि सच्चे पातशाह ! जिस को आप गुरु गद्दी के योग्य समझते हैं, संगत को उसके सपुर्द कर जाओ। सिखों की यह विनती सुन कर गुरु जी ने पांच पैसे तथा नारियल मंगवाकर गुरु जी का स्मरण करके माथा टेका तथा फरमाया :—

"गुरु बावा बकाले"। इस का अर्थ यह था कि बकाला गांव रहने वाला बावा आज से संगत का गुरु है।

नोट:—उस समय श्री (गुरु) तेग बहादुर जी अपनी माता नानकी जी सहित 20 वर्षों से बकाला अपने ननिहाल गांव रहते थे। गुरु तेग बहादुर जी बावा गुरदित्ता जी के छोटे भाई होने के कारण गुरु हरि कृष्ण जी के बावा जी लगते थे। इस लिए इन का नाम लेने की जगह "संगत का गुरु" गांव बकाला वाला बावा इशारा कर दिया था। उस समय बड़ों का नाम लेना एक बड़ा पाप तथा उनका अपमान समझा जाता था। इस लिए गुरु जी ने नाम नहीं लिया था तथा "बाबा" कह दिया था, जो बकाले गांव रहता था।

कुल आयु तथा गुरुता का समय

गुरु जी ने 7 साल 8 माह तथा 26 दिवस कुल आयु भोगी तथा इस में से 2 वर्ष 5 माह तथा 19 दिवस गुरुआई की।

देश का बादशाह

आप जी के समय औरंगज़ेब देश का बादशाह था।

धीरमल जी गुरु हरिगोबिंद जी के बड़े भाई होने के कारण श्री गुरु हरि कृष्ण जी के ताऊ लगते थे। इन को तुर्कों के पक्ष का तथा अहंकारी होने के कारण श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने गुरु गद्दी नहीं दी थी। धीरमल के करतार पुर कब्जा करके (गुरु) ग्रन्थ साहिब जी के दर्शन करने के लिए संगतें इसके पास आती थीं तथा यह उन से गुरु बन कर कार-भेंट स्वीकार करता था। धीरमल शुरु से ही जब उस के पिता बाबा गुरदित्ता जी समा गए थे तो अपने आप को गुरु गद्दी का हक़दार समझता था, इसलिए इसकी प्राप्ति के यत्न करता रहता था।

दूसरे प्रमुख बाबा सोढी हरजी, सोढी कौल जी का पुत्र था। जो अपने पिता के बाद संवत् 1696 बि: से श्री हरिमंदिर साहिब अमृतसर की गद्दी पर बैठा था।

परन्तु गुरु तेग बहादुर जी जिन को गुरु गद्दी सौंपी गई थी वह इस के इच्छावान नहीं थे जिस कारण वह अपने आप को प्रकट नहीं करना चाहते थे। बाबा गुरु का निर्णय न होने के कारण चार पांच माह इसी तरह ही व्यतीत हो गए कि कोई किसी एक को गुरु समझ कर माथा टेक जाए तथा कोई किसी दूसरे को।

मक्खन शाह की मन्नत

मक्खन शाह लुभाना सिख अपना सौदागिरी का माल बेचकर अपनी मन्नत की पांच सौ मोहर गुरु जी को भेंट करने के लिए बकाला गांव आया। धीरमल के मसंद उस को घेर कर धीरमल के पास ले गए कि गुरु गद्दी के हकदार यही बाबा जी हैं।

मक्खन शाह जिसको अभी सच्चे गुरु का पता नहीं था लगा उसने परख करने के लिए धीरमल तथा और बने गुरुओं के सामने दो-दो मोहरें रख कर माथा टेका पर किसी ने भी मक्खन शाह

से मन्नत को पांच सौ मोहरें नहीं मांगी।

इन सब की परख करने के वादशाह गुरु तेग वहादुर जी के तब स्थान पर गया तथा उन के आगे भी यथा योग्य दो मोहरें रख कर माथा टेका। यह देख कर गुरु तेग वहादुर जो ने मक्खन शाह को कहा, "हे श्रद्धावान गुरु के सिख ! गुरु घर की मन्नत जो तुम ने मानी थी, वह तुम्हें कम नहीं देनी चाहिए, पूरी भेंट करना चाहिए।" यह देखो हमारा कंधा जो तुम्हारे जहाज़ को लगकर जल ने से निकालते समय छीला गया था।

गुरू लाधो रे

इतनी वात सुन कर मक्खन शाह को निश्चय हो गया कि मेरी सहायता करके डूवते जहाज़ को किनारे लगाने वाले यही सच्चे गुरु थे। उस ने कोठे पर चढ़ कर "गुरु लाधो रे" "गुरु लाधो रे" की आवाज़े देकर संगतों में प्रकट कर दिया कि वकाले वाला "वावा गुरु" यही है। इस समय गुरु जी की आयु 43 वर्ष की थी।

धीरमल की विरोधता

इस तरह जव सभी स्त्री पुरप स्वयं ही अपनी कार भेंटा लेकर श्री गुरु तेग वहादुर जी को अर्पण करने लग गई तो धीरमल इस वात को सहन न कर सका। उस ने अपने आदमी भेज कर सारी इकट्ठी हुई कार भेंट उठवा ली।

धीरदल का सव से वड़ा समर्थक शीहा मसंद तो यहां तक गया कि उस नें गुरु जी को कत्ल करने के लिए आप जी के ऊपर बंदूक का वार भी किया। पर वार खाली जाने के कारण गुरु जी वाल-वाल वच गए।

मक्खन शाह की हिम्मत

धीरमल तथा उस के आदमियों की तरफ से यह ज़वरदस्ती देख कर मक्खन शाह ने अपने आदमियों की मदद से धीरमल सभी कुछ जो उस के पास था, उसके आदमी गुरु जी के पास से उठा लाए थे, छीन कर वापिस गुरु जी के पास ले आए।

गुरू जी का अमृतसर दर्शनार्थ आना

इसके वाद गुरु जी मक्खन शाह की विनती मान कर श्री अमृतसर जी के दर्शन स्नान करने के लिए अमृतसर आए। पर जिस समय गुरु जी दर्शनी दरवाज़े के पास गए तो पुजारियों ने आगे से दरवाज़ा वंद कर लिया।

किवाड़ बंद करने का कारण

उस समय दरवार साहिव के सोढी पृथी चन्द जी के पौत्र हरजी का कब्ज़ा था, संवत् 1687 से जव से गुरु हरगोविन्द जी अमृतसर से करतारपुर तथा फिर कीरतपुर चले गए थे तव से वह स्वयं ही तथा न उन के वाद में गुरु हरि राय जी तथा गुरु हरि कृष्ण जी ने अमृतसर आकर कभी निवास किया था। सोढी मिहरवान तथा हरजी ही इसके गद्दीदार प्रवंधक थे, इस लिए सोढी हरजी को डर था कि जिस तरह इन्होंने मक्खन शाह की सहायता से इन सारे वावाओं को वकाले से भगाया था, उस तरह अव दरवार साहिव से भी विदा न कर दें। हरजी के मसंदों ने इस विचार के साथ हरिमंदिर साहिव के दरवाजे वन्द करके गुरु जी को अंदर जाने से रोक दिया था।

गुरू जी का वापिस आना

जव हरजी के मसंदों ने किवाड़ वंद करके गुरु जी को

हरिमंदिर के अन्दर न जाने दिया तो फिर आप जी परिक्रमा से वाहर आकर मक्खन शाह की इन्तजार में एक बेरी के वृक्ष के नीचे वैठ गए। यहां गुरुद्वारा थड़ा साहिव शोभायमान है। फिर आप जो यहां से उठ कर शहर से वाहर मक्खन शाह की इन्तज़ार में जा वैठे, यहां गुरुद्वारा "दमदमा साहिव" के नाम से प्रसिद्ध है, जो अमृतसर की माल मन्डी के पास है। जव मक्खन शाह यहां भी कुछ देर के लिए न पहुंच सका तो फिर आप जी यहां से उठ कर गांव वल्ले से वाहर एक पीपल के वृक्ष के नीचे जा वैठे। यहां आप जी को एक प्रेमी माई ने वड़े प्रेम से अपने घर ले जाकर कोठे में विश्राम करवाया तथा वड़े प्रेम के साथ भोजन आदि की सेवा की। इस याद में यहां एक वड़ा सुन्दर गुरुद्वारा वना हुआ है जो कोठा साहिव के नाम से प्रसिद्ध है। माघ की पूर्णमाशो को यहां हर वर्ष वड़ा भारो मेला लगता है।

मक्खन शाह जो हरिमंदिर साहिव के दर्शन करने के लिए पीछे रह गया था वह भी इतनी देर में पीछे से आकर यहां आ मिला, तथा फिर गुरु जी अपने सेवादारों, मक्खन शाह तथा उसके आदमियों तथा अपने परिवार सहित मिलकर बकाले वापिस चले गए।

बकाला से विदाई

लगभग दो महीने वाद वकाला गांव से माता कृष्ण कौर जी के वुलाने पर गुरु जो अपनी माता नानकी जी महल गुजरी जी तथा सेवादारां के साथ मक्खन शाह को साथ लेकर कीरतपुर चले गए।

गुरु जी के परोपकार

रोगियों के रोग दूर किए

शारीरक रोगियों के रोग दूर करने के लिए आप जी ने दिल्ली में गुरुद्वारा बंगला साहिब में एक चौबच्चा बनवाया तथा प्रेम के साथ चरणामृत लेगा उसका शारीरक रोग दूर हो जाएगा। यह चौबच्चा साहिब आज तक कायम है।

संगतों को उपदेश

सतिनाम का स्मरण करना। गुरुवाणी का पाठ करना। जिस को कोई कामना हो, कोई विघ्न पड़े या मुसीबत आ जाए तो श्री (गुरु) ग्रन्थ साहिब की शरण में जाना। श्री (गुरु) ग्रन्थ साहिब के रोज दर्शन करके माथा टेकना। शुभ विचार ग्रहण करने तथा बुराई को दूर करना।

गुरु जी के प्रसिद्ध स्थान

दिल्ली—गुरुद्वारा बंगला साहिब, तथा बाला साहिब।

अंबाला—गांव पंजोखरा—जहां आप जी ने छज्जू झीवर से गीता के अर्थ करवाए थे।

—०

विचित्र जीवन

श्री गुरु तेग बहादर जी

जन्म– वैसाख वदी पंचमी सम्वत् 1678
गुरुगद्दी—3 वैसाख सम्वत् 1721
ज्योति जोत—माघ सुदी पंचमी सम्वत् 1732

तेग बहादर सिमरीऐ
घरि नौ निधि आवै धाइ ॥

(अरदास)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरु तेग बहादर जी

सिख पंथ के नौवें सतिगुरु

—0—

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री गुरु तेग बहादुर जी श्री गुरु हरिगोबिंद जी के घर माता नानकी जी की कोख से इतवार बैसाख वदी पंचमी संवत् 1673 (सन् ईस्वी 1-4-1621) को अमृतसर में पैदा हुए ।

विवाह

गुरु जी का विवाह श्री लाल चन्द करतार पुर निवासी खत्री की सुपुत्री गुजरी जी के साथ 15 अस्सू (अस्सू वदी 5) संवत 1689 को करतारपुर में हुआ । बारात गुरु के महल अमृततर से चढ़ी ।

संतान

इन के घर पोष सुदी सप्तमी संमत् 1723 को इतवार सवा पहर रात्रि रहते पटना में श्रीं गुरु गोविंद सिंह जीं ने अवतार धारण किया ।

गुरु गद्दी की प्राप्ति

श्री गुरु हरि कृष्ण जीं ने चैत्र सुदीं चौदश बैसाख 3 संव

1721 (सन् ईस्वी 30-3-1664) को दिल्ली में ज्योति जोत समाने के समय आप जी को गुरु स्थापित किया।

बाबा बकाला

गुरु तेग बहादुर जी बाबा गुरदिता जी के छोटे भाई होने के कारण श्री गुरु हरि कृष्ण जी के बाबा जी लगते थे। श्री गुरु हरि कृष्ण जी गुरु हरि राए जी के सपुत्र तथा बाबा गुरदित्ता जी के पौत्र थे।

गुरु तेग बहादुर जी अपनी माता नानकी जी के साथ अपने ननिहाल गांव 'बकाला' रहते थे। इस लिए सम्मान के तौर पर आप जी का नाम लेने की जगह आप जी को 'बाबा' बकाले गांव वाला कह कर ही गुरु गद्दी अर्पित कर दी गई थी।

बाबा गुरदित्ता जी के दूसरे भाई सूरज मल जी इस समय कीरतपुर रहते थे। इस लिए यह गुरुता की बखशिश कीरतपुर वाले बाबा को नहीं थी, बल्कि बकाले वाले बाबा को थी।

गुरु की खोज

'गुरु बाबा बकाले' गुरु का वचन होने के कारण दूर नजदीक की सिख संगतें गुरु जी के दर्शन करने के लिए बकाले गांव आती थी पर पहले गुरु वंश में से कई बाबे गद्दीयां लगाकर गुरु बने बठे थे। इन सब में से धीरमल सब मे आगे था। करतार पुर पर धीरमल का कब्ज़ा था तथा जालंधर के सूबे के साथ इसकी मित्रता थी। हाकिमों के साथ मेल जोल होने के कारण इस के मसंद संगतों को यह कह कर कि बकाले वाले बाबा जी यही हैं घेर-घेर कर कार भेंट ले लेते थे।

सूरज मल की ईर्ष्या

कीरतपुर में भी गुरु जी के बड़े भाई सूरजमल के पौत्र गुलाब राय तथा सयाम चन्द (बाबा सूरज मल के पुत्र, बाबा दीप चन्द के लड़के) ने आप जी के साथ ईर्ष्या वाला वर्ताव किया, जिस करके यहां से भी आपजी निराश होकर आनन्दपुर वाली थां गांव माखोवाल जा ठहरे।

आनंदपुर की नींव रखनी

गांव माखोवाल एक उजड़ा हुआ गांव था। इस के ऊपर गुरु जी ने आषाढ़ संवत् 1722 (सन् 1665) में आनंदपुर की नींव रखी तथा अपने निवास के लिए मकान बनवाएं।

मक्खन शाह की विदाई

गुरु जी का यहां निवास करवा कर मक्खन शाह आप जी से आज्ञा लेकर अपने कारोबार के लिए चला गया।

आनंदपुर निवास सिख संगतों का आना

गुरु जी का यहां अपने घर बना कर निवास करने का सुन कर दूर नजदीक की सब संगतें कार भेट लेकर आप जी के दर्शनों को आने लग गई। जिससे दिन ब दिन श्रद्धा की महिमा बढ़ने लगी।

तीर्थ यात्रा

ज्यों ज्यों संगतें कार भेंट लेकर गुरु जी के दर्शनों को बड़ी तादाद में आने लगी त्यों त्यों विरोधी भाईचारे की तरफ से ईर्ष्या होनी आरम्भ हो गई।

गुरु जी ने जब देखा कि यहां भी ईर्ष्या वादी अपना कार से नहीं हटे तो आप जी ने मन की शांति के लिए इस ईर्ष्या अग्नि से दूर चले जाना ही उत्तम समझा। इस विचार के अनुसार आप जी 15 माघ संवत् 1722 को केवल छः महीने आनंदपुर निवास रख कर तीर्थ यात्रा करने के लिए पूर्व दिशा को चल दिए।

अपने साथ गुरु जी ने अपनी माता नानकी जी, महिल गुजरी जी तथा उनके भाई कृपाल चन्द जी तथा पांच और सिख श्रद्धालुओं को साथ ले लिया।

प्रागराज निवास

हौली हौली सतगुरु जी लोड़ अनुसार पिंडों नगरों में विश्राम करके संगतों को बुलाकर उपदेश देकर निहाल करते हुए आगरा, इटावा के रास्ते प्रागराज (इलाहाबाद) पहुंच गए। यहां गुरु जी ने छे महीने निवास रखा तथा नए संवत् 1723 का इशनान दान करके आगे चले।

इस समय यहां ही गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपनी माता जी के गर्भ में प्रवेश किया। आप जी इस तरह लिखते हैं :

[1]मुर पित पूरब [2]कीअसि पयाना ॥
भांति भांति के तीरथ नाना ॥
जब ही जात [3]त्रिवेणी भए ॥
पुंन दान दिन करत बितए ॥ 1 ॥
तही [4]प्रकाश हमारा भयो ॥
पटना शहर विखै [5]भव लयो ॥

(वचित्र नाटक पन्ना 10)

---

1. मेरे। 2. किया 3. तीन नदियों का संगम (प्रागराज) 4. गर्भ में प्रवेश। 5. जनम।

प्रागराज शहर के महला आहोया पुर में यहां गुरु जी ने छः मास निवास किया था वहां एक सुन्दर गुरुद्वारा "पक्की संगत" के नाम से प्रसिद्ध है।

जब से गुरु जी काशी (बनारस) गए। वहां आप जी की इस याद में गुरुद्वारा बड़ी संगत कायम है। इसके आगे ससराम चाचा फगू को दर्शन देकर मिर्जा पुर से होते हुए गया गए। यह सारे शहरों में गुरु जी के यादगारी गुरुद्वारे कायम हैं।

गया शहर

गया शहर गयासुर दैंत का मरन अस्थान है। इस दैंत के नाम पीछे ही इस शहर का नाम गया प्रसिद्ध है। शहर के साथ ही फलगू नदी बहती है, जिस में हिंदू सनातनी निश्चे अनुसार इशनान करने से पित्री का उद्धार माना जाता है। यहां के पांडयों को गुरु जी नाम दान उपदेश तथा धन पदार्थ दान करके पटने शहर आ गए।

पटने निवास

पटने में गुरु जी को एक जैता सेठ ने अपनी हवेली महल्ला आलम गन्ज में बड़े सत्कार से निवास कराया।

राजा राम सिंह जै पुरीए नाल मेल

आसाम के कामरूप प्रगने का राजा अपने राज में आकी हो कर औरंगजेब को दिल्ली सरकारी मामला नहीं भेजता, जिस कर के उस को अपनी ईन मनाने के लिए औरंगजेब ने जै पुरीए राजा राम सिंह को फौज देकर भेजा।

उस समय ढाके बंगाले की जादूगरनियां प्रसिद्ध थी। जिस के कारण उस देश पर चढ़ाई करने वाला डरता रहता था कि उसको तथा उस की फौज को जादूओं से ही फनाह कर दिया जाएगा।

राजा राम सिंह जब फौज लेकर पटने पहुंचा तो उस को पता चला कि गुरु नानक देव जी की गद्दी वाले गुरु तथा प्रसिद्ध करामाती राम राए जी के 'बाबा जी' अपने परीवार को यहां छोड़ कर ढाके बंगाल के सिखों की बेनती प्रवान करके उनके साथ ढाके चले गए हैं। राजा राम सिंह ने पटने से चल कर अपनी सैनों का डेरा गोहाटी के साहमने ब्रह्म नदी से पार पच्चिम दिशा से कुछ दूर लगा लिया तथा अपने वज़ीर को गुरु जी के पास ढाके भेजकर बेनती की कि आप मेरे पास आन कर इस देश की जादूगरनियों से मेरी रक्षा करें। गुरु जी राजे की बेनती प्रवान करके जब उस के पास गए तो राजे ने आप जी का डेरा ब्रह्म पुत्र नदी के किनारे पच्छिम दिशा धूवरी शहर के मुकाम पर लगवा दिया।

साहिबजादे का नाम

गुरु जी के ढाका निवास के समय पीछे पटना में आप जी के घर पौष (पोह) सुदी सप्तमी संवत् 1723 शनिवार 23 पोह सन् 1666 (दिसम्बर 22) को साहिबज़ादे का जन्म हुआ। यह खुशियों भरी खबर माता नानकी जी ने एक आदमी भेज कर गुरु जी को बताई।

आसाम देश के एक राजा का गुरू जी को मिलना

इसके उपरांत ढाका से गुरु जी राजा राम सिंह के पास धूवरी शहर पहुंच गए। यहां गुरु जी का आना सुन कर एक

और आसामी राजा दर्शन करने के लिए आया ।

इस राजा के कोई संतान नहीं थी । गुरु जी ने इस का श्रद्धा प्रेम देख कर इसको पुत्र का वरदान दिया । समयानुसार राजा को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, जिस का नाम राजा ने रत्न राय रखा ।

यह रत्न राय बड़ा होकर अपनी माता के साथ गुरु गोविंद सिंह जी के दर्शन करने के लिए आनंदपुर आया । इसने प्रसादो हाथी आदि पांच बहुमूल्य चीजें गुरु जी को भेंट कीए । इनका पूरा वर्णन गुरु गोविंद सिंह जी के विचित्र जीवन में आएगा ।

गुरू जी ने कामरूप के राजा के साथ राजा राम सिंह की सुलह करवाई

कामरूप के राजा तथा उस की जादूगरनियों की जब गुरु जी के आगे कोई चाल न चली तो उसने गुरु जी की शरण में आकर राम सिंह के साथ समझौता करना मान लिया. गुरु जी दोनों राजाओं का समझौता करवा कर दोनों राज्यों, दिल्ली तथा कामरूप की सीमा निर्धारित कर दी तथा दिल्ली दरबार को कुछ टके दिलवा दिए ।

वापिस पटना को

दोनों राजाओं की सुलह करवा कर गुरु [illegible] ने [illegible] [illegible], सिलहट आदि शहरों तथा नगरों की संगतों को नामदान का उपदेश देते हुए कलकत्ते से जगन्नाथपुरी से होते हुए पटना आ गए। इन सब शहरों में गुरु जी की इन याद में गुरुद्वारे कायम हैं।

पटना से पंजाब को

लगभग पांच वर्ष आसाम तथा पटना के इर्द गिर्द सिखी का प्रचार करके गुरु जी राजा राम सिंह के साथ अकेले ही पंजाब को वापिस आ गए तथा माता नानकी जी को कहा कि आप सारा परिवार थोड़ी देर और यहां टिके रहे, पंजाब पहुंच कर आप को जल्दी बुला लेंगे।

पटना से चल कर रास्ते में बनारस, आयोध्या, लखनऊ, मथुरा आदि शहरों में ठहरते हुए गुरु जी लखनौरे (अंबाला से चार पांच मील की दूरी पर) आ ठहरे। यहां अपने एक सिख भाई के पास कुछदिन रहने के बाद गुरु जी कीरतपुर होते हुए आनंदपुर पहुंच गए।

आनदपुर पहुंच कर अड़ोस पड़ोस के वातावरण को देख कर गुरु जी ने जल्दी ही सारे परिवार को पटना से पंजाब बुला लिया तथा साहिबज़ादे की विद्या तथा देख भाल आदि का योग्य प्रबंध कर दिया।

गुरु जी का परिवार से पहले अकेले राजा राम सिंह के साथ पजाब आने का कारण यह प्रतीत होता है कि राजा के द्वारा औरंगजेब को आप जी के विरुद्ध उकसाने पर कोई गल्त कार्रवाई करने से रोका जाए। यही बात हुई भी ठीक इसी तरह प्रतीत होती है क्योंकि गुरु जी पटना से आकर लगभग दो वर्ष अनंदपुर बिना किसी रोक टोक के बैठ कर गुरु गद्दी की संभाल करते रहे, किसी ने भी कोई शरारत न की।

लगभग अढ़ाई वर्ष का समय अच्छी तरह बीत गया कि काश्मीर के पंडितों ने हिंदू धर्म की रक्षा तथा तिलक जनेऊ का वास्ता देकर गुरु जी के आगे विनती की। काश्मीर के पंडितों को मुसलमान करने के लिए औरंगज़ेब ने सूबा काश्मीर शेर अफगान

को सखत हुक्म भेजा हुआ था। वह दुखी होकर अपने हिंदू धर्म के बचाव के लिए गुरु जी के पास आए थे। जिस से आगे आप जी को फिर दिल्ली बुलाने की बात शुरु हो गई।

औरंगजेब के जुल्म

औरंगजेब इस समय देश के तमाम हिंदुओं को मुसलमान बनाने में लगा हुआ था। जो हिंदू मुसलमान बनने से इंकार करता था, उस को कोई न कोई बहाना बना कर कत्ल कर दिया जाता था तथा उसका घर-बाहर जब्त कर लिया जाता था।

औरंगजेब के जुल्म से देश में हाहाकार मची हुई थी। इस ने पहले हिंदुओं के प्रसिद्ध स्थान जैसा कि जयपुर, पुष्कर, मथुरा, अयोध्या, प्रयाग राज, बनारस आदि के मंदिरों तथा तीर्थों को नष्ट करके फिर बड़े बड़े हिंदू पीरों फकीरों महन्तों तथा गद्दीदारों को मुसलमान बनाना आरम्भ कर किया हुआ था। मौत का डर, धन, स्त्री आदि का लोभ तथा और कई तरह के डरावे देकर जैसे-तैसे हिंदूओं को मुसलमान बनाया जाता था।

काश्मीर के पंडितों को भी जब इसी श्रेणी में रखकर काश्मीर के सूबा शेर अफगन के द्वारा मुसलमान बनने के लिए तंग किया गया तो वह अति दुःखी होकर शिवजी के प्रसिद्ध मंदिर अमरनाथ में इकट्ठे होकर 'होम-वरनी' मंत्र का जप करने लगे। इस होम वरनी का भोग डाल कर विद्वान पंडितों ने शिव मूर्ती के आगे प्रार्थना की कि हे शिव जी भोले नाथ! हमारे धर्म की रक्षा करो हमारा धर्म तिलक जनेऊ कायम रहे। इस प्रार्थना के बाद पंडितों को अपने अंदर अनुभव हुआ कि इस समय कल्युग के अवतार गुरु नानक हुए हैं, उनकी गद्दी के मालिक की ही शर्ण में जाएं। वही इस संकट के समय हमारे धर्म को तथा तिलक जनेऊ की रक्षा कर सकते हैं।

इस अनुभवी आवाज़ को अपने होम करनी का फल शिव जी की तरफ से हुक्म समझ कर कुछ विद्वान पंडित एक डेपूटेशन के रूप में गुरु जी का पता पूछ कर गुरु जी के पास आनंदपुर आए। काश्मीरी पंडितों ने अपनी व्यथा बताकर विनती की कि हमारे हिंदू धर्म की रक्षा की जाए हम दुःखी होकर आप की शर्ण में आए हैं, आप समय के महांपुरुष अवतार हैं। गुरु जी ने उन की दुःख भरी वार्ता सुन कर धीरज दिया तथा वचन किया कि आप सूबे को कह दें कि अगर गुरु तेग बहादुर मुसलमान होना मान लें तो हम भी आप की बात मान लेंगे। पंडितों ने इसी तरह ही सूबा शेर अफगान को जाकर बता दिया।

बाद में जब औरंगज़ेब को अपने सूबा शेर अफगान से यह पता चला तो उसको निश्चय हो गया कि गुरु जी के पीछे हिंदू जनता बहुत है। इस लिए अगर इनको इसलाम कबूल करा लूं तो इनके पीछे लगने वाले बहुत से हिंदू स्वयं ही मुसलमान हो जाएंगे।
इस विचार को मुख्य रख कर औरंगज़ेब ने अपने सिपाही आनंदपुर भेजकर गुरु जी को दिल्ली बुला लिया।

गुरू जी देहली को

गुरु जी अपने साथ पांच सिख लेकर माह ज्येष्ठ संवत् 1730 में औरंगज़ेब के बुलाने पर दिल्ली को चल दिए। आनंदपुर से कीरतपुर तथा रोपड़ के रास्ते आप जी सैफाबाद एक सूफी फकीर सैफदीन के पास जा ठहरे। दो माह बारिश के यहां रहने के बाद गुरु जी समाना, करहालो, चिहका, कड़ा, खरक खटकड़ आदि गांव की संगतों को दर्शन देकर निहाल करते हुए पड़ाव रखते-रखते आषाढ़ संवत् 1731 में आगरा पहुंचे।

औरंगज़ेब की कैद में

आगरा पहुंच कर आपजी ने यह चमत्कार दिखाया कि शहर के वाहर एक वाग में डेरा डाल कर अयाली लड़के को अपनी एक कीमती अंगूठी तथा दोशाला देकर शहर से कुछ मिठाई आदि लाने के लिए भेजा। पर वह अंगूठी तथा दोशाले को मिठाई के मोल के देने के शक में पकड़ा गया तथा उस के वताने पर आगरा की पुलिस ने पांच सेवादार सिखों सहित आपजी को पकड़ कर दिल्ली ले आए तथा कोतवाली चांदनी चौंक में कैद कर दिया।

औरंगज़ेब की तरफ से बातचीत

औरंगज़ेव चाहे इस समय स्वयं दो तीन महीने से रावलपिंडी गया हुआ था परन्तु उसकी तरफ से भेजे हुए काज़ी तथा ऐहलकारों ने गुरु जी को कहा कि वादशाह चाहता है कि सारे देश का केवल एक ही सच्चा धर्म इसलाम हो। हिंदू मत झूठा तथा निरर्थक है। इस को धारण करने वाले नर्क में दुःख भोगेंगे। वादशाह को तरस आता है तथा इन पर दया करनी चाहता था। अगर यह स्वयं ही रोज़ा, नमाज़, ईद वकरीद के असूलों को मान लें तो वादशाह इन को जागीरों तथा धन माल से मालामाल कर देगा।

फिर उन्होंने इसी सुर में गुरु जी को कहा कि अगर आप मुसलमान वन जाएं तो आप के वहुत मुरीद हो जाएंगे। आप इसलाम के वड़े पीर वन जाएंगे तथा आप को मुँह मांगी मुरादें मिल जाएंगी।

गुरू जी का उत्तर

औरंगज़ेव की तरफ से सारी वात सुनकर गुरु जी ने फरमाया

कि सब धर्म परमात्मा की इच्छा अनुसार होते हैं। इसमें हम और आप कुछ नहीं कर सकते। परमात्मा वही करता है जो उसको मंजूर हो, दूसरी कोई बात वह नहीं करता।

फिर गुरु जी को औरंगज़ेब के नायव काज़ी के जव एक दिन कचहरी में बुलाकर कहा कि मुसलमान हो जाओ तो आप के लिए अच्छा है। गुरु जी ने फिर कहा कि हर एक को धर्म परमात्मा के हुक्म से मिलता है तथा इस लिए उसके दिए हुए को छोड़कर दूसरे को धारण करना यह उसके हुक्म का उल्लंघन है, जो हम नहीं कर सकते।

हकूमत की तरफ से कठोरता

जव गुरु जी ने उसकी वात न मानी तो फिर गुरु जी को डराने के लिए आप जी के पांच सिख सेवादारों में से एक भाई मतीदास जी को गुरु जी के सामने चांदनी चौंक में आरे से चिरवा दिया गया। तथा दूसरे भाई दियाले को उवलती देग में डाल कर शहीद किया गया।

यह ज़ुल्म देख कर गुरु जी ने अपने पास केवल भाई गुरदित्ता जी को रख लिया तथा वाकी के दो सिख भाई ऊदो तथा जैता (चौमां भी लिखा है) वापिस आनंदपुर को भेज दिये।

गुरु जी को लोहे के पिंजरे में बंद करना

जब इस तरह दो सिख गुरु जी के आदेशानुसार चले गए तो आप जी को लोहे के पिंजरे में वंद करने का हुक्म दे दिया तथा भाई गुरदित्ता जी पर करड़ा पहरा लगा दिया, ताकि यह भी दूसरे दो सिखों की तरह भाग न जाए।

माता जी ने आनंदपुर से खबर लेने आदमी भेजना

आनंदपुर से माता जी ने एक सिख को गुरु जी की खवर लेने के लिए दिल्ली भेजा। गुरु जी ने उसके हाथ एक चिट्ठी भेजी जिस जगत को मिथ्या तथा नाशवान वनाकर शांति तथा धीरज के साथ प्रभु का भाणा मानना निश्चय करवाया।

यह चिट्ठा श्लोकों के रूप में थी जो आप जी के पवित्र नाम से 'श्लोक नावें महल' प्रसिद्ध हैं। तथा गुरु ग्रन्थ साहिव के आखिर में दर्ज हैं। श्लोक का आरम्भ इस तरह है :—

गुन गोविंद गाइउ नही जनम अकारण कीन ॥
कहु नानक हरि भज मना जिह विधि जल को मीन ॥ 1 ॥

यह 57 श्लोक लिख कर गुरु जी ने माता जी, साहिवज़ादा गुरु गोविंद सिह जी तथा सारे सिख जगत अथवा संसार को प्रभू का हुक्म मानना, शांत रहना तथा धीरज रखने का उपदेश करके वताया कि इस संसार में न कोई पीछे रहा है तथा न ही किसी ने आगे रहना है। वाहिगुरु का भजन स्मरण करके जन्म सफल वनाना ही मनुष्य जन्म का लाभ है। प्रभु का नाम ही अंत समय साथ जाता है।

औरंगजेब की तरफ से तीन बातें

इस तरह जव गुरु जी को कई दिन लोहे के पिंजरे में वंद किए हुए हो गए तो औरंगज़ेव के हुक्म से आप जी के पास फिर एक मौलाना तथा ऐहलकार आया। जिन्होंने गुरु जी को औरंगज़ेव की तरफ से तीन वातें कहीं।

1. मुसलिम होना मान जाओ। अगर मुसलमान नहीं होना तो :—

2. करामात दिखाओ जिसके वल पर आप जी गुरु कहलाते हैं। अगर करामात नहीं तो फिर :—

3. कत्ल होने के लिए तैयार हो जाओ।

गुरू जी ने तीसरी बात मान ली

जब मौलाना तथा शाही उमराव ने वादशाह की तरफ से गुरु जी को इन तींन वातों में से एक मानने को कहा तो आप जी ने कहा कि हमें वादशाह की पहली दो वातें (मुसलमान होना तथा चमत्कार दिखाना) मंजूर नहीं है। तीसरी वात (शहींद होने) के लिए हम तैयार हैं।

गुरू जी को कत्ल का आदेश

जव वादशाह को गुरु जी का यह उत्तर लिख कर भेजा गया तो उसने सैय्यद आदमशाह तथा जलाल दीन जल्लाद को शहीद करने के लिए हुक्म लिख कर भेज दिया।

गुरू जी की शहीदी

गुरु जी को लोहे के पिंजरे में से निकाल कर चांदनी चौंक कोतवाली के पास लाया गया। आप जी ने पहले कूएं से स्नान किया तथा फिर पास ही वोहड़ के वृक्ष (वट-वृक्ष) के नीचे वैठ कर जपुजी साहिव का पाठ किया। पाठ करके जव आप जी ने सर भुकाया तो जल्लाद ने आप जी का सर तलवार से अलग कर दियां। यह निर्दयी साका वीर वार दिन ढले मांघ सुदी पांच संवत् 1732 (सन् ईस्वी 11-11-1675) को हुआ। इस तरह आप जी

लगभग सवा साल (आषाढ़ 1731 से माघ संवत् 1732 तक) औरंगज़ेब की कैद में रह कर शहीद हुए।

गुरु गोविंद सिंह जी ने इस साके का अपनी जीवन कथा में इस तरह वर्णन किया है :—

तिलक जंझू राखा प्रभ ताका ॥
कीनो वड़ो कलू महि साका ॥
साधन हेति इती जिन करी ॥
सीस दीआ पर सी न उचरी ॥ 13 ॥
धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीस दीआ पर सिरर न दीआ ॥
ठीकरी फोरि दलीसि सिरि प्रभ पुर कीआ पयान ॥
तेग वहादर सी क्रिया करी न किनहु आन ॥ 15 ॥
तेग वहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो, जै जै जै सुर लोक ॥ 16 ॥

आप जी के इस शहीदी स्थान चांदनी चौंक दिल्ली में वड़ा आलीशान गुरुद्वारा "सीस गंज" शोभायमान है।

सीस तथा धड़ की सम्भाल

इस साके के वाद गुरु जी का पवित्र भाई जैता (जो वाद में अमृत ग्रहण करके जिऊण सिंह हो गया) आनंदपुर ले आया। आनंदपुर जहां सीस का संस्कार हुआ उस गुरुद्वारे का नाम भी सीस गंज प्रसिद्ध है।

आप जी के पवित्र धड़ का संस्कार मक्खन शाह लुभाने के भाई बंधु परिवार ने अपनी झोंपड़ियों में किया। इस स्थान पर गुरुद्वारा रकाब गंज शोभायमान है। यह गुरुद्वारा नई देहली पार्लियामैंट हाऊस के सामने पुरानी दिल्ली की दक्षिण दिशा में

है। अब यह गुरुद्वारा बड़ा सुन्दर एक गुरुसिख स: हरनाम सिंह सूरी ने संगमरमर का बड़े प्रेम से बनवाया ।

गुरू जी की कुल आयु तथा गुरू पद का समय

गुरु जी ने कुल 54 वर्ष 7 माह तथा 7 दिन आयु भोगी जिस में से 10 वर्ष 7 माह 18 दिवस गुरु गद्दी पर विराजमान रहे।

देश का बादशाह

आप जी के समय देश का बादशाह औरंगज़ेब ।

गुरू जी के मुख्य उपदेश

जब से गुरु जी गुरु प्रकट होकर गुरु गद्दी पर बैठे तब से ही आप को विरोधी पक्ष (धीरमल तथा राम राए जी) ने एक जगह टिक कर संगतों को उपदेश करने का समय ही नहीं लेने दिया था। परन्तु आप जी की रची हुई वैराग्य-मई वाणी से आप जी के उपदेश स्पष्ट हैं। जैसा कि :—

1. साधो मन का मानु तिआगउ ।।
 काम क्रोध संगति दुरजन की ताते अहिनिसि भागऊ ।।1।।रहाऊ।।
 सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मान अपमाना ।।
 हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ।। 1 ।।
 उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पद निरबाना ।।
 जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहू गुरमुखि जाना ।। 2 ।।
 (गौड़ी म: 9)

2. साधो गोबिंद के गुन गावउ ।। (गौड़ी म: 9)

से गांव माखोवाल का थेह मोल लेकर एक नगर बसाया ; जिसका नाम आप जी ने अपनी माता जी के नाम पर नानकी चक रखा ।

2. सिखी प्रचार

गुरु जी ने सिखी प्रचार के लिए आनंदपुर से लेकर बिहार, उड़ीसा, ढाका, बंगाल, आसाम तक पद यात्रा की । आप जी की सिखी प्रचार के लिए पद यात्रा गुरु नानक देव जी से दूसरे नंबर पर है ।

3. उपदेशमयी बाणी की रचना

गुरु जी प्राणी मात्र के भले के लिए 118 शब्द तथा श्लोक उच्चारण किए, जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में शामिल हैं ।

आप जी के अंतिम श्लोक गुरु ग्रन्थ साहिब के भोग के समय बड़े प्रेम उत्साह के साथ पढ़े जाते हैं ।

4. शहीदी

हिंदू धर्म की रक्षा के लिए गुरु जी ने अपना सीस बलिदान दे दिया । इस बारे गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी जीवन कथा में लिखते हैं :—

तिलक जंञू राखा प्रभ ताका ॥
कीआ बडो कलू महि साका ॥

गुरु जी के प्रसिद्ध स्थान

बाबा बकाला—भोरा साहिब ।
दिल्ली—सीस गंज ।

आनंदपुर—सीस गंज, मंजी साहिव, भोरा साहिव ।
अमृतसर—थड़ा साहिव, कोठा साहिव, गांव वल्ला ।
प्रयागराज —गुरुद्वारा वड़ी संगत ।
पटना साहिव – दरवार साहिव ।

ससराम, गया, ढाका धूवड़ी, गोहाटी आदि वेअंत नगर तथा स्थान हैं, जहां आप जी की याद में गुरुद्वारे मंदिर वने हुए हैं।

सूचना

कई पाठकों तथा गुरु घर के प्रेमियों को इस वात का निर्णय करना मुश्किल हो जाता है कि श्री हरि राए जी की श्री गुरु हरिगोविंद जी के साथ तथा श्री गुरु तेग वहादुर जी का श्री गुरु हरिकृष्ण जी के साथ क्या संवंध था। इसको स्पष्ट करने के लिए श्री हरिगोविंद साहिव जी के सुपुत्र परिवार का व्यौरा दिया जाता है।

श्री गुरु हरिगोविंद जी के पांच सुपुत्र हुए :—

पहला :—वावा गुरदित्ता जी, संमत 1695 में कीरतपुर में शरीर त्याग गए, वावा जी के दो सपुत्र हुए :—

(उ) धीरमल जी, जो करतारपुर पर कावज रहे । करतार पुर के सोढी इनके वंशज हैं ।

(अ) श्री गुरु हरिराए जी इसको इनके वावे श्री गुरु हरिगोविंद जी ने चैत्र संवत 1701 में अपना शरीर त्यागते समय गुरुगद्दी दी।

आगे – श्री गुरु हरि राए जी के दो साहिवजादे हुए।

1. रामराए जी जो औरंगजेव से जमीन लेकर देहरादूनजावसे।

2. श्री गुरु हरि कृष्ण जी उनको इनके पिता श्री गुरु हरि राए जी ने सन्नू संवत 1718 में गुरु गद्दी वख्शी ।

श्री गुरु हरिगोविंद साहिव जी के दूसरे सुपुत्र वावा सूरज मल उनके साहिवजादा दीप चन्द हुए जिसके घर दो सुपुत्र वावा गुलाव सिंह तथा वावा मान सिंह की संतान पुर जोटी है ।

तीसरा :—बाबा अणि राए जी, इन्हों ने शादी नहीं करवाई, ब्रह्मचर्य ही धारण किया। इन्होंने संवत् 1691 में कीरतपुर में शरीर त्यागा।

चौथा :—बाबा अटल राए जी आप 9 वर्ष की आयु में स्वे-इच्छा से संवत् 1685 में शरीर त्याग गए।

पांचवें :—श्री गुरु तेग बहादुर जी—आप जी को आप जी के बड़े भाई बाबा गुरदित्ता जी के पौत्र श्री गुरु हरि कृष्ण जी ने 'बाबा बकाला' का वचन करके चैत्र संवत् 1721 में गुरु गद्दी पर स्थापित किया।

अर्थात् :—श्री गुरु हरि राए जी श्री गुरु हरिगोबिंद जी के पोत्रे, श्री गुरु हरिकृष्ण जी पड़पौत्र। श्री गुरु तेग बहादर जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के सब से छोटे सुपुत्र थे।

नोट :—1. बाबा अणि राए, बाबा अटल राए, श्री गुरु तेग बहादुर जी के आगे वंश नहीं चला।

7. बाबा गुरदित्ता जी के धीरमल जी तथा बाबा सूरज मल के शाम सिंह जी की संतान ही केवल फलीभूत हुई है।

अपने मन के प्रति

मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥ जिह सिमरत गनका सी उधरी ताको जसु उर धारो ॥ 1 ॥ रहाउ ॥ अटल भइओ धूअ जाकै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥ दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥ 1 ॥ जब ही सरनि गही किरपानिधि गज गराह ते छूटा ॥ महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥ 2 ॥ अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥ नानक चेत्र चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥ 3 ॥ सोरठि म: 9 (पन्ना 622)

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी

सिख पंथ के दसम सतिगुरु

—0—

माता पिता तथा जन्म दिन स्थान

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी पोह सुदी सप्तमी संवत् 1723 (सन् 22-12-1666) को श्री गुरु तेग बहादुर जी के घर माता गुजरी जी की पवित्र कोख से पटना शहर बिहार में अवतार धारी हुए ।

विवाह

गुरु जी के तीन विवाह हुए :—

1. श्री माता जीतो जो लाहौर निवासी हरजस सुभिक्खी की सुपुत्री से आषाढ़ संवत् 1734 को गुरु के लाहौर (आनंदपुर के नज़दीक) हुआ ।

2. श्री माता सुन्दरी जी लाहौर निवासी राम शरण कुमरा खत्री की सपुत्री के साथ वैसाख संवत् 1741 को आनंदपुर में हुआ ।

3. श्री माता साहिब देवां जी रोहतास निवासी रामू बसी की सपुत्री से वैसाख संवत् 1757 को आनंदपुर में हुआ ।

संतान

2. माता जीतो जी से :—

1. साहिब जुझार सिंह जीं मंगलवार 21 चैत्र संवत् 1747 को आनंदपुर साहिब पैदा हुए ।
2. साहिब जोरावर सिंह जी एतवार 6 माघ संवत् 1753 को आनंदपुर साहिब पैदा हुए ।
3. साहिब फतहि सिंह जी बुधवार 2 फाल्गुन संवत् 1755 को आनंदपुर साहिब में पैदा हुए ।

3. माता साहिब देवां जी :—

आनंद पुर में 18 वैसाख संवत् 1757 को नादीं पुत्र खालसा पंथ आप जी की गोद में डाला ।

गुरू गद्दी का तिलक

12 माघ संवत् 173? सन् 11 नवम्बर 1675

अपनी कथा

श्री मुखवाक पा: 10

॥ चौपाई ॥

अब मैं अपनी कथा बखानो ॥
तप साधत जिह बिधि मुहि आनो ॥
हेम कुट परवत है जहां ॥
सपत स्रिंग सोभित है तहां ॥ 1 ॥
सपत स्रिंग तिह नामु कहावा ॥
पंड राज जहं जोग कमावा ॥
तह हम अधिक तपसिआ साधी ॥
महा काल कालका अराधी ॥ 22 ॥

इह विधि करत तपसिआ भयो ॥
दवै ते एक रूप वहै गयो ॥
तात मात मुर अलख अराधा ॥
वहु विधि जोग साधना साधा ॥
तिन जो करी अलख की सेवा ॥
ताते भए प्रसन्नि गुरदेवा ॥
तिन प्रभ जव आइस मुहि दीया ॥
तव हम जनम कलू महि लीया ॥ 4 ॥

(वचित्र नाटक अध्याय 6)

—0 भाग प्रथम 0 –

अवतार धारण

माघ संवत् 1722 को आनंदपुर से परिवार सहित तीर्थ यात्रा के लिए चल कर जब श्री गुरु तेग वहादर जी पटना पहुंचे तो अपने परिवार (माता नानकी जी, महिल गुजरी जी, मामा कृपाल चन्द तथा पांच सिख सेवकों) का सेठ जैत राम की हवेली में निवास का प्रवन्ध करवा कर, आप ढाके की संगतों की प्रार्थना स्वीकार करके उनके साथ ढाका चले गए । आप जी के वाद में पोह सुदी सप्तमी शनिवार 23 पोह संवत् 1723 (22 दिसम्वर सन् 1666) को माता गुजरी जी की पवित्र कोख से आप जी के घर साहिवज़ादे का जन्म हुआ । यह खुशखवरी गुरु जी को माता जी की तरफ से एक विशेष सिख भेज कर ढाका पहुंचाई गई । गुरु जी ने साहिवज़ादे का नाम गोविंद राए रखने के लिए माता जी को लिख भेजा । पटना में सारे सिख सेवकों तथा परिवार की तरफ से आप जी के जन्म की वहुत खुशियां मनाई गई तथा गरीवों को दान-पुण्य किए गए ।

अवतार है जो ज़ालिम तथा जुल्म का नाश करेगा, इसको साधारण वच्चा न समझें।

गुरु जी के प्रकाश की यह प्रथम किरण थी जिसको देखकर आप जी के सेवक कमल फूल की तरह खिल गए । भाई संतोख सिंह जी इस वारे लिखते हैं :—

सम सूरज के अवतार भयो,
हम से जन पंकज को विकसाऐ ।।

आप जी का सूर्य चढ़ने के भांति अवतार हुआ जिसने हमारे जैसे अनेक दासों को कमल फूल की तरह खिला दिया अर्थात् खुशियां प्रदान कीं।

बाल्यावस्था के चमत्कार

गोद अवस्था से जव आप (वालक गुरु) खेल अवस्था में आए तो कई प्रकार की मनमोहिनी तथा प्यारी-प्यारी वातें करते, जिनको देख सुन कर परिवार को वड़ी प्रसन्नता होती। बाहर वच्चों में खेलते समय नाव में सैर करते समय, वाग आदि में फल-फूल देखते समय आप जी के मामा कृपाल चन्द जी सदा आप जी के साथ सुरक्षा के तौर पर रहते ।

1. बच्चों के साथ सैनिक लड़ाईयाँ लड़नी

दूसरे वालकों के साथ मिल कर आप जी कई प्रकार की खेलें खेलते थे, जैसा कि सिर पर कलगी लगा कर, हाथ में तीर कमान पकड़ कर तथा कमर वंद वांध कर स्वयं सैनिक जरनैल वन जाते तथा और वालकों को सिपाही वनाकर उनको दो टोलीयों में वांट कर झूठी लड़ाईयां लड़ते थे ।

2. पानी भरने आई स्त्रियों के घड़े तोड़ने

आप जी के घर के आंगन में एक कुंआं था, जहां से मुहल्ले की औरतें पानी लेने आती थीं। जब वह पानी के घड़े भर कर चलती थीं तो आप जी उनके मिट्टी के घड़ों को गुलेल मार कर फोड़ देते थे। जब उन औरतों ने माता जी आगे शिकायत की तो माता जी ने उन को लोहे की गागरें ले दीं। फिर उनमें भी आप जी तीर के निशाने से छेद कर देते थे। जिस कारण माता जी ने उस कुएं को श्राप दिया तथा उसका पानी खारा कर दिया, जिस से औरतों ने वहां से पानी भरना ही बंद कर दिया तथा साहिबजादे की शरारतें भी बंद हो गईं।

3. शाहूकार की पत्नि को पुत्रों का वर

शहर के एक शाहूकार के घर संतान नहीं होती थी उसने जब आप जी की कीर्ति सुनी तो उसकी पत्नि अपनी सास को लेकर माता जी के पास आई। सास ने माता जी को सारी बात बता कर प्रार्थना की कि मेरी इस बहू के घर बच्चा नहीं होता आप कृपा करके साहिबजादे से 'पुत्र हो' का वर दें। गुरु जी उस समय आंगन में खेल रहे थे, माता जी ने आप जी को बुलाकर गोदी में बिठाकर प्यार किया तथा कहा बेटा! यह गुरु नानक देव जी के समय से गुरु घर के सिक्ख हैं इनकी आशा पूरी करो, इनके घर बालक हो।

माता जी की यह बात सुन कर आप जी ने हंस कर कहा माता जी! पहले यह अपनी नाव मुझे दरिया में सैर करने के लिए देंगे तो फिर मैं इनको पुत्र का वर दूंगा। आप जी की यह भोली भाली बात सुन कर औरतें खिलखिला कर हंस पड़ी तथा शाहूकार

की माता ने कहा कि आप हमारी जो भी नाव पसंद करें, वही ले लें, यह सब आप की ही हैं, हम तो केवल इनके रखवाले हैं। शाहूकारनी की यह बात सुन कर आप जी ने माता जी की गोद में से उठ कर हाथ में छड़ी पकड़ कर उस स्त्री के सिर पर एक दो तीन चार पांच बार छुआई तथा कहा कि इसके घर पांच लड़के होंगें। यह वरदान लेकर साहूकारनी अपनी बहू को साथ लेकर बड़ी खुशी खुशी घर चली गई। समयानसार गुरु जी की कृपा से उसके घर पांच पुत्र हुए।

4. पं: शिवदत्त को राम रूप में दर्शन

गंगा के जिस घाट पर जाकर गुरु जी बच्चों के साथ खेलते स्नान करते तथा नाव में सैर करते थे उसी घाट पर ही एक पंडित शिवदत्त, जो श्री राम चन्द्र जी का उपासक था, सुबह के समय बैठ कर पाठ-पूजा करता था। उसने जब आप जी की आत्म-शक्ति की बातों की कीर्ति सुनीं तो उसने एक दिन मन में निश्चय कर लिया कि अगर यह सचमुच ही ईश्वर का अवतार है तो मुझे श्री राम चन्द्र जी के रूप में दर्शन दें तो मैं इनको सच्चा अवतार मानूंगा। एक दिन गुरु जी बालकों के साथ घाट पर खेल रहे थे तथा पंडित नेत्र बंद करके भगवान के स्मरण में लीन था। उस की मनोकामना पूरी करने के लिए गुरु जी खेलते खेलते आगे जा खड़े हुए। इससे पंडित जी को ऐसा लगा कि जैसे उसके सम्मुख श्री राम चन्द्र जी साक्षात् रूप खड़े हैं। पर जब पंडित जी ने आंखें खोली तो सामने गुरु जी खड़े मुस्करा रहे थे। यह चमत्कार देख कर पंडित बड़ा प्रसन्न हुआ तथा उठकर गुरु जी के चरणों में नमस्कार करके सदा के लिए आपका चरण दास बन गया।

5. राजा फतेह चंद मैनी की रानी

एक दिन रानी फतेह चंद गंगा घाट पर स्नान करने गई। उसने आप जी को बालकों के साथ खेलते देखकर मन में विचार किया कि अगर मेरे घर भी इस जैसा एक सुन्दर बालक जन्म ले तो मैं अपने को सौभाग्यशाली मानूंगी। बाद में जब पंडित शिवदत्त की मनोकामना पूर्ण हुई सुनी तो राजा तथा रानी आपजी के पक्के श्रद्धालु बन गए तथा रात दिन घर में आप जी का चिंतन करने लगे। राजा तथा रानी की प्रेम श्रद्धा देख कर एक दिन गुरु जी बालकों के साथ खेलते हुए राजा मैनी के घर चले गए। उस समय रानी अपने आंगन में बैठी हुई थी। गुरु जी तत्काल ही उस की गोद में बैठ कर कहने लगे मां जी। आपजी की इच्छा थी कि आप के घर मेरे जैसा पुत्र पैदा हो, सो अपने जैसा मैं हूं, इस लिए आप मुझे ही आज से अपना पुत्र समझें। आप जी का यह वचन सुन कर रानी बहुत प्रसन्न हुई। बाद में आप जी तथा आप के बालक साथियों के लिए जब रानी बाजार से मिठाई मंगवाने लगी तो आप जी ने कहा, मां जी! बाजार से कुछ नहीं मंगवाना इस समय घर में जो कुछ भी तैयार है जल्दी दे दें, हमें खेलते हुए बड़ी भूख लगी है।

उस समय मैनी के घर में चनों की तली हुई घुंघणियां तैयार थी। जो सब बालकों को बांटी गई। गुरु जी ने कहा मां जी! यह बहुत स्वादिष्ट हैं, हम रोज ही यहां आकर खाया करेंगे। इस दिन के बाद आपजी हर रोज ही बालकों के साथ मैनी के घरजाकर खेलते तथा घुंघणियां खाते थे। आपजी की इस याद मे राजा फतेह चन्द मैनी का घर गुरुद्वारा "मैनी संगत" के नाम से प्रसिद्ध है, तथा यहां हर रोज संगत को घुंघणियां का प्रसाद ही बांटा जाता है।

6. माया का कंगन

एक दिन जब आप जी बालकों के साथ मिल कर गंगा घाट पर स्नान कर रहे थे, तो खेल में ही आप जी के एक हाथ का स्वर्ण कंगन नदी में गिर कर गुम गया। जब आप जी घर आए तो माता जी ने एक हाथ का कंगन न देख कर आप जी से पूछा कि इस हाथ का कंगन कहा है ? तब आप जी माता जी को गंगा घाट पर ले गए तथा दूसरे हाथ का कंगन उतार कर पानी में फेंक दिया तथा कहा कि माता जी ! पहला कंगन लगभग यहीं पर ही हाथ में से गिरा था।

जब माता जी ने इस तरह दूसरे कंगन को फेंकने का कारण पूछा तो आप जी ने कहा माता जी ! इन हाथों के साथ ही ज़ालमों को सुधारना है। इन से ही दीन-दुखियों की सेवा करनी है, इन से ही अमृत तैयार करके मृतों को जीवित करके तथा नीचे गिरे हुओं को ऊंचा उठाना है, इन से ही गुरु की वाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरु गद्दी का टीका देना है।

इस लिए अगर इन हाथों को अभी से ही माया से बांध लिया तो यह काम जो अकाल पुरख ने हमारे सपुर्द किए हैं, कैसे पूरे होंगे ? यह उत्तर सुनकर माता जी चुप चाप घर को वापिस चले गए।

पटना में बाल गुरू जी की पवित्र यादगारें

1. सोने के पैरों वाला झूला जो पटना से विदाई समय पटना की संगत ने माता जी को विनतीं करके साहिबज़ादे की याद के तौर पर रख लिया था।
2. साहिबज़ादे के चार तीर।

3. एक छोटी कृपाण ।
4. एक छोटा खंडा ।
5. एक छोटा कटार ।
6. चंदन का कंघा ।
7. हाथी दांत की खड़ाऊं ।
8. कुछ छोटे चक्र तथा ढाल आदि ।
9. वाल्यावस्था की तस्वीर ।

पटना में प्रसिद्ध गुरुधाम

1. हरिमंदिर साहिब :—इस स्थान पर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अवतार धारण किया । यह सिख पंथ का दूसरा तख्त है ।
2. गोविंद घाट :—गंगा के किनारे जहां गुरु जी वालकों के साथ खेलते तथा स्नान करते थे । पंडित शिवदत्त को श्री राम रूप में आप ने यहीं दर्शन दिए थे ।
3. गुरुद्वारा मैनी संगत :—यहां गुरु जी फतेह चन्द मैनी के घर खेलने जाते थे ।
4. गुरु का वाग :—यह वाग काज़ी रहीम खां करीम खां ने गुरु साहिब जी को भेंट किया ।

पटना से पंजाब को

श्री गुरु तेग वहादुर जी ने आसाम से पटना पहुंच कर कुछ समय प्रवार की देखभाल करके परवार तथा साहिबजादे को पटना में ही रहने दिया तथा स्वयं पंजाब को वापिस आ गए । वाद में आप जी ने आनंदपुर पहुंचकर कुछ समय सारे हालात का पता करके साहिवजादे तथा परिवार को पंजाव ले आने के लिए एक

सिख को पटना भेज दिया।

इस बुलावे के अनुसार माता जी ने रथ आदि सवारी का प्रबंध करके फालगुन संवत् 1728 को सभी परिवाजनों सहित पटना से पजाब को भेज दिया। पटना से चलकर दानापुर, आरा, छोटा मिर्जापुर तथा फिर कांशी (बनारस) पहुंच कर गुरु परिवार ने यहां कुछ दिन विश्राम करके अनेकों श्रद्धालुओं को दर्शन देकर शांति प्रदान की। इस से आगे प्रयागराज तीर्थ के दशन-स्नान किए तथा कुछ दिन यहां विश्राम करके आयोध्या श्री राम चंद जी का जन्म स्थान देखा। कुछ दिन यहीं विश्राम कर के श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी का तथा फिर लखनऊ तथा आगरा से होते हुए मथुरा, गोकुल, वृन्दावन पहुंच कर श्री कृष्ण भगवान् जी के स्थानों के दर्शन किए।

लखनौर निवास

मथुरा से हरिद्वार, सहारनपुर के रास्ते सारा परिवार अंबाला छावनी से चार पांच मील पश्चिम दिशा लखनौर गांव भाद्रों संवत् 1729 में अपने सिख भाई जेठे के घर आ गए। यहां क्योंकि श्री गुरु तेग बहादर जी ने आनंदपुर पहुंचने से पहले कुछ समय ठहरने के लिए आज्ञा की थी, इस लिए आप जी का आदेश आने तक यहां ठहरने का ही प्रबन्ध किया गया था। इस लिए सारा परिवार ठहर कर आनंदपुर पहुंचने के हुक्म की इन्तज़ार करने लगा।

पीरों ने दर्शन करने

सैय्यद भीखन शाह जो सब से पहले बालक गुरु जी के दर्शन पटना साहिब कर आया था। जब उसको पता लगा कि पटने में

प्रकट होने वाला भगवान का रूप लखनौर में आ गया है तो वह वड़ी श्रद्धा तथा प्रेम के साथ ठसका से आप जी के दर्शन करने आया और दर्शन करके वड़ा आनंदित हुआ।

एक दिन जव श्री गुरु गोविंद सिंह जी वालकों के साथ गांव के वाहर खेल रहे थे, तो उस रास्ते पीर आरफ दीन जो मुलतान की ज़ियारत करके दिल्ली को पालकी में वैठ कर जा रहा था, ने जव गुरु जी को देखा तो उसने झट हो पालकी में से उतर कर गुरु जी के चरणों में माथा टेका। यह चमत्कार देखकर पीर के मुरीदों ने पूछा, पीर जी, आपने हिन्दू को क्यों प्रणाम किया है? यह हमारी रीति के विपरीत है। तव पीर ने कहा यह अल्लाह का रूप है, इस में मुझे अल्लाह का जलवा दिखाई दे रहा है, मैंने उसके आगे प्रणाम किया है। यह वात करके पीर ने फिर आप जी को प्रणाम किया तथा पालकी में वैठ कर अपने रास्ते पड़ गया।

लखनौर में यादगारें

लखनौर में उस समय पीने वाले पानी की लोगों को तंगी थी, जिससे माता गुजरी जी ने एक कूआं लगवाकर लोगों की यह कठियाई दूर की।

माता गुजरी जी तथा वाल गुरु जी के यहां उस समय विराजने वाले दो पलंग संगत ने वड़े सम्मान के साथ आप जी की याद के तौर पर यहां रखे हुए हैं। भाई जेठे का घर यहां गुरु परिवार ठहरा था, एक सुन्दर गुरुद्वारा वना हुआ है।

आनंदपुर को तैयारी तथा पहुंच

कुछ समय के उपरंत गुरु तेग वहादुर जी ने कृपाल चंद जी को रथ आदि सवारी का प्रवन्ध करके साहिवज़ादे को परिवार सहित

आनंदपुर ले आने के लिए भेजा। वाद में पूरी तैयारी करके सारे परिवार को लेकर कृपाल चन्द जी लखनौर से चलकर रास्ते में जहां रात्रि हो जाती वहां ठहरते तथा विश्राम करते हुए कीरतपुर आप के ताया जी, वावा सूरज मल जो रहते थे। वावा जी ने सारे परिवार को वड़े सम्मान के साथ अपने पास रखकर सेवा की तथा विश्राम करवाया। दूसरे दिन सारा परिवार आनंदपुर पहुंच गया। यर समय संवत् 1730 माह वैसाख ज्येष्ठ का था।

आनंदपुर में खुशियाँ

आनंदपुर वासियों ने साहिवज़ादे के आने की वड़ी खुशियां मनाई, घर वाहर सजाकर दीपमाला को गई तथा माता जी के घर वधाईयां देने वालों का तांता लग गया।

माता जी ने साहिवज़ादे से कई प्रकार के वारने करके गरीवों को दान किए तथा सव की खुशियां की।

बाल गुरू जी को शिक्षा तथा विद्या का प्रबंध

हर प्रकार की खुशियां तथा वधाईयों से फारिग होकर श्री गुरु तेग वहादुर जी ने साहिवज़ादा जी को हिन्दी, गुरुमुखी तथा फारसी की लिखाई पढ़ाई के लिए पंडित, भाई तथा मौलवीं के प्रवंध कर दिए। गुरुमुखी की पढ़ाई के लिए मुनशी साहिव चन्द तथा फारसी विद्या के लिए मुनशी पीर मुहम्मद को नियत कर दिया।

शास्त्र विद्या के साथ ही आपजी को गुरु पिता जी ने शस्त्र विद्या की सिखलाई का प्रवंध भी कर दिया। जेसे कि तीर अंदाज़ी तलवार का चलानां तथा घोड़ सवारी करनी आदि।

आनंदपुर अपने इस प्रवन्ध का वर्णन आप जी ने 'अपनी [illegible] में इस तरह किया है :—

मदर देस हम को ले आए ॥
भांति भांति' दाइअनि दुलराऐ ॥
कीनी अनिक भांति तन रच्छा ॥
दीनी भांति भांति की सिच्छा ॥ 3 ॥

(वचित्र नाटक, ध्याए 7वां)

[illegible] गुरु जी इस तरह अपने आने वाले जीवन के लिए [illegible] रियां कर रहे थे तथा गुरु पिता जी गुरु उपदेश के द्वारा श्रद्धालु [illegible] के हृदय शांत करके कल्याण कर रहे थे। इस तरह आनंदपुर [illegible] आनंद की पुरी वन रही थी।

पहले भाग का व्यौरा

श्री गुरु तेग वहादुर साहिव जी ने तीर्थ यात्रा को जाना तथा [illegible] को पटना छोड़ कर स्वयं ढाका को जाना। श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने पटना में अवतार धारण करना. सैय्यद भीखण शाह [illegible] गुरु के दर्शन करने, वाल्यवस्था के चमत्कार वच्चों के [illegible] सैनिक लड़ाईयां लड़नी, पानी भरने आई औरतों के घड़े [illegible] साहूकार की पत्नी को पुत्रों का वर, पंडित शिवदत्त को [illegible] में दर्शन देना, राजा फतेह चन्द मैनी की रानी, माया का [illegible] पटना में पवित्र यादगारें, पटना में प्रसिद्ध गुरु धाम, पटना से [illegible] को, लखनौर ठहरना, पीरों ने दर्शन करने, लखनौर में [illegible] गारें, आनंदपुर को तैयारी तथा पहुंच, आनंदपुर में खुशियां, [illegible] तथा विद्या का प्रबंध आदि।

—0—

‡ भाग दूसरा ‡

काश्मीरी पंडितों की पुकार

एक दिन श्री गुरु तेग बहादुर जी अपनी नित्य मर्यादा के अनुसार अपने महलों के आंगन में (प्रसिद्ध मंजी साहिब) संगतों को सद्उपदेश देकर दीवान की समाप्ति के बाद विराजमान थे कि काश्मीरी पंडितों का एक संघ आ गया। उन्होंने हाज़िर होकर विनती की कि धर्म रक्षक, धर्म मूर्ती गुरु जी ! औरंगज़ेब हमारे ऊपर बड़े ज़ुल्म कर रहा है, जो उसके कहने पर मुसलमान नहीं हो रहा उसको कत्ल कर देता है। हम उससे छः माह की मोहलत लेकर अपनी धर्म रक्षा के लिए आप को शरण आए हैं, आप ही हिंदू धर्म, तिलक तथा जनेऊ रख सकते हैं।

बालक गुरू जी ने गुरू पिता जी को खामोशी का कारण पूछना

पंडितों की इस तरह की लंबी चौड़ी दुःख भरी कहानी सुन कर गुरु जी कुछ सोचने लग गए। इतनी देर में खेलते-खेलते बालक गुरु गोविंद सिंह जी आ गए। साहिबज़ादा जी ने पिता गुरु जी को पूछा, पिता जी ! क्या सोच रहे हैं ? यह कौन हैं तथा क्या चाहते हैं !

भाई सुखा सिंह जी ने गुरविलास में गुरु जी की तरफ़ से इसका उत्तर इस तरह दिया है :—

चौपाई ॥ तुरकन भार दुखत भई लोई ॥
छत्री जगत न दिखीअत कोई ॥

जो निज अपने सीस वढ़ावै ॥
निघरन धरन भार ठहरावै ॥

यह वचन पिता जी के सुन कर वालक श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने भाई सुखा सिंह जी की लिखत अनुसार कहा :—

यों सुन कर पित की सुत वानी ॥
वीच सभा कहि प्रगट वखानी ॥
तुम ने और अधिक को आही ॥
देग तेग जाके ग्रिह माही ॥ 16 ॥

अपने होनहार वच्चे की जव पिता गुरु जी ने यह विचार सुना तो कवि जी लिखते हैं :—

यौ सुन तात धरी मन माही ॥
फिर कछू वचन वखानयो नाही ॥
कितक काल इह भांति विताई ॥
चढ़ै सु नामि सि कार जिताई ॥

तात्पर्य यह कि :—श्री गुरु तेग वहादर जी ने कहा, वेटा ! यह काश्मीर से आए पंडित हैं, औरंगजेव इनको जवरदस्तो मुस्लमान वनाना चाहता है। यह अपने धर्म की रक्षा के लिए यहां आए हैं।

अव कोई ऐसा महापुरुष चाहिए जो अपना सीस वलिदान दे तो हिंदू धर्म वच सकता है। वालक गुरु जी ने पिता जी का यह हुक्म सुनकर तत्काल ही कहा, पिता जी ! आप जी से कौन अच्छा महापुरुष है। इन शरण में आए लोगों की रक्षा आप ही कर सकते हैं। दीनों की रक्षा के लिए अपने नौं वर्ष के वच्चे से यह जजवाती उत्तर सुन कर गुरु जी समझ गए कि हमारे वाद में अपने आप को संभालने के योग्य है, हमें इनकी वाल्यवस्था की चिंता नहीं करनी चाहिए। यह विचार कर गुरु जी ने पंडितों को कहा कि जाओ काश्मीर के सूवे शेर अफगन को वता दो कि

अगर गुरु तेग बहादुर जी मुसलमान हो जाएंगे, तो हम उनके पीछे सभी मुसलमान हो जाएंगे।

औरंगजेब ने गुरू जी को दिल्ली बुलाना

पंडितों ने यही बात जाकर शेर अफगन को बता दी तथा उसने आगे औरंगज़ेब को दिल्ली लिख दिया।

इसके फलस्वरूप औरंगज़ेब के कर्मचारियों ने आप जी को दिल्ली बुलाकर बंदी बना लिया तथा चमत्कार दिखाने या मुस्लमान बन जाने के लिए कहा। जब गुरु जी ने यह दोनों बातें चमत्कार दिखाना या मुसलमान होना न माना तो ज़ालिम औरंगज़ेब ने आप जी को शहीद करने का आदेश दे दिया। यह आदेश सुन कर सतिगुरु जी ने साहिबज़ादे को परखने के लिए एक सिख के हाथ यह दोहरा लिख कर भेजा :—

दोहरा—बलु छूटकिउ बंधन परे,
कछू न होत उपाइ॥
कहु नानक अब ओट हरि,
गजि जिउ होहु सहाई॥ 53॥

इस का उत्तर बालक श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने लिख कर उसी सिख के हाथ पिता जी को भेज दिया।

दोहरा—बलु होआ बंधन छुटे सभ किछु होत उपाइ॥
नानकु सबु किछु तुमरै हाथ मैं तुमही होत सहाइ॥ 54॥

श्री गुरू तेग बहादुर जी की शहीदी

अपने होनहार सपुत्र का यह उत्तर पढ़ कर आप जी को निश्चय हो गया कि साहिबज़ादा जी गुरु गद्दी के हर प्रकार से योग्य हैं तथा किसी मुसीबत के समय डोलने वाले नहीं हैं। यह

विचार करके आप जी ने पांच पैसे तथा एक नारियल एक सिख के हाथ भेज कर आप जी को गुरु गद्दी दे दी।

इस के थोड़े दिन बाद ही औरंगज़ेब का आदेश आने पर आप जी को माघ सुदी 5 संवत् 1732 (11 नवंबर सन् 1675) को दिल्ली के चांदनी चौंक में शहीद कर दिया गया।

श्री गुरु तेग बहादर जी ज्येष्ठ संवत् 1730 में आनंदपुर से चले तथा रास्ते में सिखी का प्रचार करते अनेक श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी करते हुए आषाढ़ संवत् 1731 में आगरा से दिल्ली पहुंचे। औरंगज़ेब स्वयं इस समय खटक कबीले की सिर-कोबी करने हसन अब्दाल रावलपिंडी की तरफ गया हुआ था, उसके आदेश से ही दिल्ली का सूबा सतिगुरु जी के साथ बंदीग्रह में दुःख तथा कष्ट देने वाला वर्ताव करता था।

इस दुःखद घटना का वर्णन श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने वचित्र नाटक में इस तरह किया है :—

तिलक जंञू राखा प्रभु ताका ॥
कीनो वडो कलू महि साका ॥
साधनि हेति इती जिनि करी ॥
सीस दीआ पर सी न उचरी ॥ 13 ॥
धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीस दीआ परु सिररु न दीआ ॥ 14 ॥

दोहरा—ठीकरि फोर दलीसि सिरि
प्रभ पुर कीआ पयान ॥
तेग वहादर सी क्रिया
करी न किनहू आन ॥ 15 ॥
है है है सभ जग भयो
जै जै जै सुरलोक ॥ 16 ॥
(वचित्र नाटक)

गुरु गद्दी का तिलक

चाहे आप गुरु गद्दी के अधिकारी उसी दिन से ही हो गए थे जिस दिन से पांच पैसे तथा एक नारियल दिल्ली से गुरु पिता जी की तरफ से भेजा गया था, परन्तु पूर्ण रस्म गुरु गद्दी का तिलक आदि उसी दिन हो हुई जिस दिन गुरु तेग बहादुर जी को क्रिया आदि अंतिम संस्कार करके आप जी को सिख संगतों तथा बिरादरी की तरफ से पगड़ी बंधवाई गई। साधारण तौर पर आप जी को गुरु-गद्दी की तिलक स्थापना 12 माघ संवत् 1732 (11-11-1675) को हुई मानी जाती है। भाई राम कुईर जी जिन्होंने इस समय आप जी को गुरुआई का तिलक लगाया था, वह बाबा बुड्डा जी से पांचवें स्थान पर पड़पौत्र थे। राम कुईर जी गुरु जी से उमर में छः वर्ष छोटे थे।

गुरु जी विचित्र नाटक में लिखते हैं :—

जब हम धरम करम मो आए ॥
देव लोक तब पिता सिधाए ॥ 3 ॥

(विचित्र नाटक)

आनंदपुर जिस जगह पर बैठ कर आप जी को गुरु गद्दी का तिलक लगाया गया था, उसका नाम दमदमा साहिब प्रसिद्ध है। यहीं बैठ कर आप जी दीवान सजाते थे तथा इसी जगह बैठकर ही आप जी ने मसंदों को सजाएं दी थी।

शस्त्र विद्या का अभ्यास

गुरु गद्दी पर बैठ कर गुरु जी ने अपने पिता पुरखी धर्म के कार्य को संभाल कर शस्त्र-विद्या का अभ्यास आरम्भ कर दिया : —

यथा—राज साज हम पर जब आयो ॥
जथा सकत तब धरम चलायो ॥
भांति भांति बन खेल शिकारा ॥
मारे रीछ रोझ झंखारा ॥ 1 ॥
(बिचित्र नाटक अध्याय 8वां)

संगतों के दोनों वक्त सवेरे शाम के जोड़ मेले तथा कथा उपदेश के बाद गुरु जी शस्त्र विद्या का अभ्यास करने के लिए तीसरे पहर सिखों को साथ लेकर शिकार खेलने जाते थे। जंगल में भांति भांति के जंगली जानवरों का शिकार करके संध्या के समय वापिस घर आ जाते थे। अगर शिकार पर न जाना हो तो शूरवीरों को निशानेबाज़ी के अभ्यास के लिए आप जी ने एक मिट्टी का ढेर बनवाया हुआ था जिसमें बन्दूक तथा तीरअंदाज़ी के निशाने लगाने का नित्य अभ्यास किया जाता था।

इसके इलावा घोड़े की सवारी, नेज़ा-बाज़ी, तलवार चलाना, फौजी परेड तथा शिकार खेलने जानवरों को दांव-पेच के साथ मारने का ढंग आप सीखते तथा शूरवीरों को सिखलाते थे।

गुरु जी ने सेना इकत्रित करनी

शस्त्र-विद्या तथा युद्धों के अभ्यास करने के कारण गुरु जी के पास छटे तथा सातवें गुरु साहिबों के समय के शूरवीर जो आठवें गुरु जी के समय अपने अपने घर चले गए थे, वह तथा और शूरवीरता वाले हर जाति के हिंदू, मुसलमान, सिख तथा नीची जातियों के नाई, छींबे, लोहार, बढ़ई आदि योद्धा गुरु जी के पास नौकरी करने लग गए। गुरु जी इन सैनिकों को घोड़े तथा शस्त्र अपने पास से देते तथा फौजी ढंग की शिक्षा द्वारा हर समय दुश्मन का मुकाबिला करने के लिए तैयार रखते थे।

गुरु जी का विवाह
(नए लाहौर की रचना)

गुरु साहिब की कीर्ति सुनकर दूर-दूर से संगतें आप जी के दर्शन करने तथा आत्मिक कल्याण के लिए आनंदपुर साहिब आने लग गई। एक दिन लाहौर की संगत आई, उसने गुरु जी के दर्शन किए तथा भेंट चढ़ाई। संगत में लाहौर निवासी एक हरजस सुभिखी खत्री भी था, उसने माता जी के आगे विनती की कि माता जी! मेरी पुत्री जीत कौर का रिश्ता साहिबज़ादे के लिए कर लें। यह आशा रखकर मैं लाहौर से आया हूं। सुभिखी का प्रेम तथा श्रद्धा देख कर माता जी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। परन्तु जब विवाह का दिन नियत होने लगा तो साहिबज़ादे ने कहा कि शादी यही आनंदपुर में ही होनी चाहिए। सुभिखी ने प्रार्थना की कि महाराज! शादी लाहौर में ही करें तथा जैसे-तैसे मेरी लाज रखो। गुरु जी ने उस की प्रसन्नता के लिए कहा कि हम लाहौर यहीं रचा लेंगे, आप चिंता न करें। जब हरजस ने इस बात को मान लिया तो गुरु जी ने आनंदपुर से उत्तर दिशा, 7 मील दूर पहाड़ में नैनां देवी से आगे एक नया लाहौर रचा कर, उसमें हर प्रकार की दुकानें तथा बाज़ार रचा दिए। सब कस्बों के कारीगर लाकर कईओं को अपने पास से ही पैसा देकर दुकानों पर सौदा लेने वालों की चहल-पहल से बाज़ार भर गए। इस रचना को देखकर सुभिखी बहुत प्रसन्न हुआ तथा उसने अपनी लड़की जीत कौर का आनंद कारज गुरु जी के साथ 24 आषाढ़ संवत् 1734 को बड़ी धूम धाम से कर दिया।

गुरू जी ने पानी का चश्मा जारी करना

विवाह के समय गुरु जी के एक धोवी ने विनती की कि सच्चे पातशाह जी ! आप जी के वस्त्र धोने तथा साफ करने के लिए पानी नहीं है आनंदपुर जाकर ही सभी वस्त्र आदि धोए जा सकते हैं, धोवी की यह विनती सुन कर सतिगुरु जी ने एक पत्थर में नेजा मारा, जिससे वहां उसी समय पानी वहने लग गया। यह चमत्कार देख कर सभी लोग हैरान हो गए, तथा गुरु जी की शोभा में धन्य-धन्य उच्चारण करने लगे। यह धारा ज्यों की त्यों आज तक चल रही है। सिख संगतें वड़ी श्रद्धा के साथ स्नान करतीं चरणामृत लेती तथा अपने घरों को पवित्र करने के लिए वोतलों तथा वर्तनों में डाल कर इस के जल को ले जाती हैं।

राजा रतन राए ने भेंट लेकर दर्शनार्थ आना

राजा राम सिंह जय पुरिया जो औरंगजेव के आदेश से राजा आसाम के विरुद्ध फौज लेकर गया था, वह आसाम के जादू-टोनों से अपनी रक्षा के लिए श्री गुरु तेग वहादुर साहिव जी को ढाका से अपने पास धूवरी ले गया था। गुरु साहिव जी ने वीच में आकर दोनों राजाओं की आपस में सुलह करवाई थी। इस समय तक आसाम देश का एक रजवाड़ा राजा राम राए आपका वड़ा प्रेमी तथा श्रद्धालू हो गया था। राम राए के घर कोई पुत्र नहीं था, उसकी रानी तथा राजा ने गुरु साहिव जी से पुत्र रत्न का वर मांगा, जिस से प्रसन्न होकर गुरु जी ने कहा कि आप के घर गुरु नानक जी की कृपा से एक पुत्र होगा जो गुरु घर का प्रेमी तथा श्रद्धालू होगा।

समयानुसार *राजा राम राय के घर पुत्र ने जन्म लिया, जिस का नाम रत्न राए रखा गया। बालक रत्न राए जब ग्यारह बारह वर्ष का हो गया तो उसकी माता ने उसको एक दिन बताया कि जिस गुरु जी की आशीर्वाद से तुम्हारा हमारे घर जन्म हुआ है इस समय उनके सुपुत्र पंजाब में आनंदपुर नगर में निवास रखते हैं। उनके चरणों में माथा टिकाने के लिए मैं आनंदपुर जाना चाहती हूं गुरु घर की महिमा तथा अपने जन्म का वरदान सुन कर रत्न राए अपनी माता के साथ अनमोल भेंटें लेकर संवत् 1 35 में गुरु जी के दर्शन करने आनंदपुर आया।

रत्न राए की भेंटों का ब्यौरा

1. परसादी हाथी :—जिसका सांढ के जितना कद था, रंग काला था तथा माथा एक रोटी की तरह सफेद। सूंड की नोक से पूछ के सिरे तक पोठ के ऊपर से एक सफेद लकीर थी।

सूंड के साथ अपने मालिक को चौरी करता था, पैर धोता तथा और कई काम करता था।

2. पांच कला शस्त्र : -यह हाथ में पकड़ने वाली छड़ी थी जिस में से तलवार, तमाचा, बरछी तथा नेज़ा आदि पांच प्रकार के शस्त्र निकल आते थे।

3. संदल की चौंकी :—इसमें से चार पुतलियां चौपड़ बिछा कर बाज़ीं खेलने लग जाती थी।

---

*प्रो: साहिब ने राजा राम राए को गौरीपुर का राजा लिखा है, गोरीपुर ढाका से उत्तर ई. बी. रेलवे का स्टेशन है।

भाई कान सिंह जी ने महान कोप में उस राम राए को आसाम देश का एक रईस लिखा है।

4. कटोरा :—जल पीने वाला कटोरा, इसमें से धरती तथा आकाश के रंगा रंग के नक्शे (दृष्य) दिखाई देते थे।

5. पांच घोड़े :— बहुत कीमती सुनहरी काठियों वाले तथा बहुमूल्य साज़ों-समान से सजाए हुए।

बहुमूल्य चाननी

काबुल का एक सिख जिस का नाम दुनी चन्द था वह अपनी तथा और सिखों की नेक कमाई को कार भेंट इकट्ठी करके गुरु जी के लिए बहुत बढ़िया चाननी अढ़ाई लाख रुपये खर्च करके बनवा कर लाया था। यह चाननी भी उस समय गुरु जी के पास ऊपर लिखित पांच चीज़ों के इलावा एक बहुमूल्य चीज़ थी।

रणजीत नगारा बनवाना

गुरु जी ने सेना तथा सेना के लिए घोड़े, शस्त्र तथा वस्त्र इकट्ठे करने तथा सेना को युद्ध का अभ्यास कराने के साथ हीं सेना की चढ़ाई के लिए संवत् 1741 में एक बड़ा नगारा बनवाया, जिसका नाम आप जी ने रणजीत (अर्थात् युद्ध को जीतने वाला) नगारा रखा। योद्धाओं के साथ शिकार पर जाने के समय आप जी पहले इस नगारे को बजाते थे। इसकी गूंज के साथ पहाड़ों की चोटियां गूंज उठती थी, तथा सुनने वालों के हृदय कांप जाते थे।

मसंदों की माता जी के आगे शिकायत

इस तरह जब रोज़-रोज़ रणजीत नगारा गूंजने लगा तो दूर नज़दीक के पर्वतीय इलाके में इसके विरुद्ध बातें होने लगीं। जब मसंदों ने लोगों की यह बातें सुनी तो उन्होंने माता जी के पास जाकर कहा कि माता जी ! गुरु साहिब जी को समझाओ कि इस

तरह नगारे वजा कर शिकार पर जाना ठीक नहीं, क्योंकि इस तरह पहाड़ी राजाओं से शत्रुता हो सकती है। घोड़े रखना, फौज रखनी, नगारे वजाने तथा शिकार खेलने, यह राजाओं के काम हैं। गद्दीदार महापुरुषों को यह शोभा नही देते। आगे देखो कि क्या खेल खेला गया है, वड़े गुरु साहिव जी को ज़ालिम औरंगज़ेव ने वेगुनाह ही शहीद कर दिया है। अब इन्हें चुप रहना चाहिए।

मसंदों की शिकायत सुन कर माता जी ने जब आप को पास वुलाकर मसंदों के कहने अनुसार समझाया तो आप जी ने माता जी को गरज कर उत्तर दिया। माता जी ! क्या अब हम इन पहाड़ी राजाओं से डर कर रहें ? क्या झगड़ा करेंगे तो हम औरतें नहीं हैं जो डर कर दब जाएंगी। हम ने ज़ालिम तथा जुल्म का नाश करना है।

गुरु जी ने रणजीत नगारा बजाना

माता जी के साथ यह वचन करके आप जी ने चोवदार को हुक्म दिया कि जाओ निर्भय होकर ज़ोर से नगारा वजाओ जो सारे दून में सुना जाए। आज्ञानुसार चोबदार ने अपने पूरे ज़ोर के साथ दोहरी चोवें मारकर रणजीत नगारे की गड़गड़ाहट शुरु कर दी, जिस के साथ अड़ोस पड़ोस की दूनें कांप उठी।

राजा भीम चन्द ने वज़ीर को पूछना

राजा भीम चन्द विलासपुरिए ने जव नगारे की गूंज सुनी तो उसने अपने वजीर परमानंद को वुलाकर पूछा कि यह नगारा कहां वज रहा है ? कोई पड़ोसी राजा हमारे ऊपर चढ़ाई करने न आ रहा हो ? इसके उत्तर में परमानंद ने भीम चन्द को सारी बात वताई कि यह नगारा श्री गुरु तेग वहादर जी के साहिवज़ादे

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का माखोवाल (आनंदपुर) में बज रहा है। आप जब शिकार खेलने चलते है तो इस तरह नगारा बजा कर चलते हैं।

भीम चन्द ने गुरु जी के दर्शनार्थ आनंदपुर आना

अपने वज़ीर से गुरु साहिब की यह बातें सुन कर भीम चन्द बड़ा हैरान हो गया तथा कई और बातें गुरु जी के रहन-सहन तथा फौजी ताकत की वज़ीर से पूछने लगा। इसके फलस्वरूप वज़ीर ने बिनती की कि आप स्वयं आनंदपुर जाकर देख लें कि गुरु जी ने वहां क्या चमत्कार रचाए हैं। भीम चन्द ने यह बात मान कर अपना वज़ीर गुरु जी के पास पहले भेज कर उनको अपने आने की खबर भेज दी तथा दूसरे दिन स्वयं भी आनंदपुर पहुंचकर गुरु जी के दर्शन करके बड़ा प्रसन्न हुआ।

राजा ने प्रसादी हाथी तथा बहुमूल्य चीजें देखनी

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने प्रौहणचारी के सम्मान के तौर पर राजा भीम चन्द को परसादी हाथी, बहुमूल्य चाननी तथा पांच कला शस्त्र आदि दिखाए, जिनको देख कर राजा बड़ा हैरान हुआ तथा मन में सोचने लगा कि इनके पास ऐसी बहुमूल्य चीजें हैं जो हमारे राज घरानों में भी नहीं हैं। इस लिए इनको लेने के लिए मुझे वह ढंग सोचना चाहिए जिससे यह चीजें गुरु जी से मेरे पास आ जाएं। इन विचारों को मन में लेकर राजा गुरु साहिब जी

से आज्ञा लेकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट करता हुआ अपनी राजधानी विलासपुर को चला गया।

भीम चन्द ने प्रसादी हाथी तथा चाननी माँगनी

वापिस विलासपुर जाकर भीम चन्द ने अपने वज़ीरों के साथ सलाह की कि जैसे तैसे करके जिस तरह भी हो सके किसी वहाने गुरु जी से चाननी तथा हाथी ले आओ। एक वार यह चीज़ें हमारे पास आई तो फिर हम किसी तरह भीं इनको वापिस नहीं देंगे। यह सलाह करके भीम चन्द ने अपने वज़ीर को गुरु जी के पास भेजा तथा विनतीं की कि राजा फतेह शाह गढ़वालिए को लड़की से उसके लड़के की सगाई नियत हुई है, इस लिए इस शुभ अवसर पर दो चार दिन के लिए अपना परसादी हाथी तथा चाननी हमें मंगवें दे दो। सगाई की रस्म के वाद यह दोनों चीज़ें आप को वापिस भेज दी जाएंगी।

गुरू जी ने इन्कार करनी

राजा भीम चन्द के वजीर की यह वात सुनकर गुरु जी ने उन के मन की चालाकी जानकर कहा कि यह चीज़ें जिन श्रद्धालु सिखों ने हमें प्रेम से भेंट की हैं उन्होंने विनती की थी कि इन चीज़ों को आप अपने पास ही रखें। इस लिए उन प्रेमियों की इच्छा का पालन करना हमारा प्रण है। यह और किसी को नहीं दी जा सकतीं।

भीम चंद ने क्रोध करना

गुरु जी से उत्तर लेकर जव वज़ीर ने सारी वात भीम चंद

को बताई कि गुरु जी ने हाथी तथा चाननी देने से इन्कार कर दिया तो राजा ने बड़े क्रोध के साथ कहा कि मैं यह चीजें ज़रुर मंगवाऊंगा चाहे कुछ हो जाए। वज़ीर ने कहा, गुरु जी से झगड़ा नहीं करना चाहिए, उनकी सेवा करना ही अच्छा है।

परन्तु भीम चंद ने वज़ीर की कोई बात न सुनी तथा कहने लगा कि मैं बाईस धार राजाओं का शिरोमणी राजा हूं। अब मैं मिन्नतों या छल से नहीं बल्कि अपने ज़ोर से हाथी मंगवाऊंगा। देखूंगा मेरे पास से भाग कर कहां जाते हैं। हम राजपूत क्षत्रिय हैं, उनके सिखों की तरह बने, लुबाणें, लोहार, तरखान नहीं हैं।

भीम चंद ने चिट्ठी लिखनी

भीम चंद ने राजा हरी चंद हिंडूरिया, राजा कृपाल चंद कटोचिया, राजा केसरी चंद जसवालिया आदि अपने पड़ोसी राजाओं से सलाह करके गुरु जी को चिट्ठी लिखी कि या अपना परसादी हाथी तथा चाननी मुझे भेज दो, नहीं तो मेरे राज में से निकल जाओ। अगर इन दोनों बातों में से आप ने कोई नहीं माननी तो युद्ध के लिए तैयार हो जाओ, मैं आप के उत्तर की ही प्रतीक्षा कर रहा हूं।

गुरू जी का उत्तर

भाम चंद की यह चिट्ठी पढ़ कर गुरु साहिब जी ने उसको लिखा कि न ही हमने अपना हाथी आदि कोई चीज़ तुझे देनी है तथा न ही हम ने यहां से कहीं जाना है। हाथ में तलवार पकड़ना हमारा धर्म है। आप जल्दी आएं, देरी न करें, हमारी यही इच्छा है। यह उत्तर लिख कर गुरु जी ने अपने सब शूरवीरों को गोला बारुद तथा और युद्ध का सामान बांट दिया तथा पहाड़ियों के

मुकाबिले के लिए अपनी पूरी तैयारी कर लो ।

गुरु जी की दूसरी शादी

जब से आप जी गुरु गद्दी पर बैठे थे दूर दूर की सिख संगतें आप जी के दर्शन करने तथा अपने कल्याण के लिए उपदेश लेने के लिए आती ही रहतीं थीं। इसी तरह ही जैसे पहले लाहौर की संगत के साथ हरजस राए सुभिखी खत्री 1734 में आप जी के दर्शन करने आया था तथा अपनी सपुत्री श्री जीतो जी का विवाह आप जी के साथ कर गया था। इसी तरह ही संवत् 1741 में भी जब वैसाखी के समय लाहौर से संगत गुरु जी के दर्शन करने आई तो इनके साथ लाहौर निवासी रामसरन कुमरा खत्री भी आया, जिसकी सपुत्री श्री सुन्दरी जी का विवाह गुरु जी के साथ 7 वैसाख संवत् 1741 को माता जी की आज्ञा के अनुसार हुआ। गुरु जी के इस दूसरे विवाह की माता जी को इस लिए जरूरत पड़ी थी क्योंकि माता जीतो जी की कोख से अभी तक कोई बालक पैदा नहीं हुआ था।

गुरु जी का नित्यकर्म

संवत् 1732 से ही जब से गुरु साहिब जी गुरु गद्दी पर बैठे थे कुछ इस तरह का प्रोग्राम चल रहा था। सुबह उठकर स्नान करके अपना नित्य अभ्यास करना। बाद में ऐतिहासिक ग्रन्थों जैसे कि श्रीमद् भागवत पुराण, चंडी चरित्र, राम अवतार आदि अपने कवीयों से सुनने तथा भाषा में अनुवाद करवाने, जाप साहिब, अकाल स्तुति आदि वाणियों का उच्चारण करना तथा प्रसाद ग्रहण करके विश्राम करना। तीसरे पहर का दीवान लगाकर योद्धाओं को पिछले युद्धों के प्रसंग सुनाने, घुड़ सवारी शस्त्र आदि

की शिक्षा देनी तथा अभ्यास कराना। वाद में वाहर से आई संगतों को दर्शन देकर उनकी मनोकामनाएं पूर्ण करनी तथा गुरु-उपदेश की शिक्षा देनी। सप्ताह में एक दो दिन शिकार पर जाना, जिससे कई प्रकार के जंगली जानवरों का शिकार करना तथा साथ साथ ही योद्धाओं को युद्ध विद्या का अभ्यास करवाते रहना।

सिख संगतों के प्रति आप जी का आदेश था कि जो सिख हमारे लिए घोड़ा तथा शस्त्र भेंट लाएगा, उस पर गुरु नानक साहिव जी की वहुत खुशियां होंगी। जो योद्धा हमारी सेना में भर्ती होंगे, उनका लोक परलोक गुरु रखेगा।

दूसरे भाग का व्यौरा

श्री गुरु तेग वहादुर जी के पास काश्मीरी पंडितों का आनंद पुर आना श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने पिता गुरु जी को पंडितों की धर्म रक्षा के लिए विनती करना। औरंगजेब ने गुरु जी को दिल्ली बुलाना। गुरु जी ने देहली जाना तथा शहीद होना। श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने गुरु गद्दी पर स्थापित होना। गुरु जी ने शस्त्र विद्या के अभ्यास करने। सेना इकत्रित करनी, नया लाहौर रचा कर श्री (माता) जीतो जी के साथ विवाह करना। नए लाहौर में जल की कमी को पूरा करने के लिए पहाड़ी में से चश्मा निकालना। राजा रत्न राए का वहुमूल्य भेंट लेकर आना।

गुरु जी ने रणजीत नगारा वजाना। मसंदों ने माता जी के आगे शिकायत करनी। राजा भीम चन्द ने अपने वज़ीरों को पूछना यह नगारा कहां वजता है ? भीम चन्द ने आनंदपुर गुरु जी के दर्शनों के लिए आना। राजा ने परसादी हाथी आदि अदभुत वस्तुएं देख, गुरु जी से धोखे के साथ इनको लेने की कोशिश

करनी। गुरु जी ने हाथी देने से इन्कार करना तथा भीम चन्द ने दूसरे पहाड़ी राजाओं के साथ सलाह करके गुरु जी को आनंदपुर खाली कर देने के लिए या लड़ाई के लिए तैयार रहने के लिए चिट्ठी लिखनी।

गुरु जी ने उत्तर देना हम न अपना परसादी हाथी आदि कोई चीज़ देने को तैयार है तथा न ही आनंदपुर खाली करना है, युद्ध करने के लिए, जो क्षत्रिय का धर्म है, हम तैयार हैं, जल्दी आ जाएं। गुरु जी ने अपना दूसरा विवाह श्री सुन्दरी जी के साथ करना, गुरु जी का नित्य कर्म।

—0—

‡ भाग तीसरा ‡

नाहन के राजा का बुलावा

गुरु साहिब जी का हाथी देने से इन्कार करने का उत्तर पढ़ कर एक तरफ भीम चन्द आदि राजा गुरु जी के साथ युद्ध करने की तैयारी में जुट गए तथा दूसरी तरफ गुरु साहिब जी राजाओं का मुकाबिला करने के लिए अपने योद्धाओं को पुरातन युद्धों, जंगों के प्रसंग सुनाकर दुश्मन के साथ दो-दो हाथ करने के लिए उत्साह जनक तैयारी करने में लग गए। दोनों तरफ कीं तैयारीयों की, दूर नजदीक तक खबरें पहुंच गईं।

राजा मेदनी प्रकाश नाहन पति ने जब यह बात सुनी तो उसने इस दुर्घटना को रोकने के लिए गुरु साहिब जी को चिट्ठी लिखी कि आप मेरे राज्य में चरण डाल कर मुझे निहाल करो। कहलूर पति राजा भीम चंद आप के साथ नित्य झगड़े वाली बातें करता रहता है, इस लिए आप मेरे राज्य में आकर जहां चाहें

अपना सुखी निवास कर सकते हैं।

इस चिट्ठी का जब माता जी को पता चला तो उन्होंने गुरु जी को ज़ोर देकर नाहन राज्य में चले जाने के लिए कहा। इस तरह माता जी के बहुत तरह से समझाने से गुरु जी ने नाहन के राजा का बुलावा मान लिया।

नाहन राज्य में प्रवेश

माता जी की आज्ञा का पालन करते हुए गुरु जी ने नाहन को चलने की तैयारी करके नगारा बजा दिया। सभी योद्धा गुरु जी के साथ शस्त्र-वस्त्र सजाकर चल पड़े तथा 17 वैसाख संवत् 1742 को नाहन पहुंच गए।

गुरु साहिब जी लिखते हैं :—

देस चाल हम ते पुन भई ॥
सहिर पांवटा की सुधि लई ॥
कालिंद्री तट करे बिलासा ॥
अनिक भांत के देख तमासा ॥ 2 ॥

(विचित्र नाटक ध्याय 8)

राजा नाहन ने आप जी का अपने राज की सीमा पर आगे आकर स्वागत किया अपने महलों में निवास करवा कर तन तथा धन से सेवा करके बहुत खुशियां प्राप्त की।

कुछ दिनों के बाद एक दिन राजा ने प्रार्थना की, सच्चे पातशाह जी ! यह सारा देश ही आप जी का है, परन्तु जहां आप जी आज्ञा दें, वहां आप जी के निवास स्थान का प्रबन्ध कर दिया जाए।

दूसरे दिन जब गुरु साहिब जी राजा मेदिनी प्रकाश के साथ शिकार को गए तो आप जी यमुना के किनारे एक जगह पसंद

करके राजा को कहा कि हमारी रिहायश के लिए एक किला बनवा दें। यह एकांत स्थान यमुना का किनारा हमें पसंद है। आज्ञानुसार राजा ने बहुत सारे कारीगर तथा मेहनती लोग लगाकर जल्दी ही किला तैयार करवा दिया।

आनंदपुर से आकर संवत 1742 में सतिगुरु जी ने नाहन राज्य में जहां अपने चरण लगाए अर्थात निवास किया उसका नाम पांवटा प्रसिद्ध है।

भाई संतोख सिंह जी ने गुरु प्रताप सूरज में इस बारे इस तरह लिखा है :—

"पाव टिकयौ सतगुरु कौ आनंद ते आए।
नाम धरयो इस पांवटा सब देसन प्रगटाइ।"

पांवटा निवास तथा सेना भर्ती करनी

पांवटे में अपने सुख निवास तथा शत्रु से बचाव के लिए गुरु जी ने संवत् 1742 में राजा मेदिनी प्रकाश नाहन पति की सहायता से किला तैयार करके उसको फौजी सामान से लैस कर दिया। आप जी ने हर जाति के हिंदू मुसलमान योद्धा नौकरी पर रख लिए। घोड़े तथा शस्त्र खरीदने तथा जवानों को भर्ती करना आरम्भ कर दिया। वरसी पठाना के पांच सौ पठान जो शाही फौज में से किसी कारण से निकाले गए थे अपने रोज़गार के लिए सैय्यद बुद्धू शाह के द्वारा गुरु के पास नौकर हो गए। काले खां, हयात खां, नजाबतखां, भीखण खां तथा उमरखां इनके पांच सरदार थे तथा हर एक का अपना अपना सौ-सौ जवान का जत्था था।

बाद में महन्त कृपाल दास गांव हेहर (लुध्याना) निवासी का पांच सौ उदासी चेला भी आप जी के पास आ गया। पांच सौ जवान गुरु जी के साथ आनंदपुर से आया था। इन पठानों

तथा उदासियों के इलावा कुछ और जवान भी आप जी के पास आकर सैनिक सिखलाई लेने लगे।

राजा फतेह शाह ने शरण में आना

गुरु साहिब जी को बढ़ती शक्ति तथा ख्याति देखकर श्री नगर गढ़वाल का राजा फतेह शाह बहुत से उपहार लेकर आप जी को मिलने आया। फतेह शाह के राज्य की सीमा मेदनी प्रकाश नाहन पती की सोमा से लगती थी, इस लिए दोनों का कुछ झगड़ा रहता था। गुरु जी का यहां राजा नाहन के पास निवास रखने के कारण राजा फतेह शाह को डर पैदा हो गया कि नाहन राजा की सहायता करके गुरु जी उसके ऊपर चढ़ाई न कर दें। इस लिए उसने गुरु जी को मिल कर आप जी का सदा श्रद्धालु रहने का भरोसा दिय-। जिस कारण गुरु जी ने दोनों राजाओं नाहन तथा गढ़वाल की आपस में सुलह करवा दी। दोनों ने अच्छे पड़ोसियों की तरह रहने का प्रण किया तथा गुरु साहिब जी का धन्यवाद करके अपने अपने राज्यों को चले गए।

अजीत सिंह का जन्म

यहां ही 23 माघ संवत् 1743 को माता सुन्दरी जी की कोख से गुरु जी के घर साहिबजादे का जन्म हुआ, जिसका नाम गुरु जी ने अजीत सिंह रखा।

पौंटे में नित्य कार्यक्रम

सवा पहर दिन चढ़े तक गुरु साहिब जी किसी को दर्शन नहीं देते थे। इस समय यमुना के पर्व किनारे पर बैठ कर अपने 52

कवियों से दशम सकंध भागवत् पुराण ग्रन्थों में से कृष्ण अवतार की कथा पहले स्वयं सुनते थे तथा फिर उसका भाषा में अनुवाद करवाते थे। कृष्ण अवतार के अनुवाद में आप जी लिखते है :—

दसम कथा भागौत की भाखा करी बनाइ ॥
अवर वासना नाहि प्रभ धरम जुद्ध के चाइ ॥
सत्रै सै पैंतालि मे सावन सुदि तिथि दीप ॥
नगर पांवटा सुभ करन जमुना वहै समीप ॥
(कृष्णावतार दशम ग्रन्थ)

अर्थात् :—ऐसी कविताओं का संस्कृत में से भाषा में अनुवाद आप जी और विचार से नहीं बल्कि केवल योद्धाओं को धर्म-युद्ध लड़ने के लिए उत्साह देने के मनोरथ से ही करते थे तथा कवियों से करवाते थे।

जैसा कि भाई संतोख सिंह जी सूरज प्रकाश ग्रन्थ में लिखते हैं:—

आदि महाभारत जे आन।
भाखा सभ की करत सुजान।
सो हम पंथ हेत करवावै।
पठहि आप सबहून सुडावै।
हुते बवंजा कवि गुरु पास।
सभि ही बानी करहि प्रकास।
सतिगुरु सभ इकत्र करवावै।
पत्रै दीरघ पर लिखवावै।
नाम ग्रन्थ को विद्या सागर।
राखन कीनो स्री प्रभ नागर।
(गु: प्र: सू: रुत 3 अंक 51)

यह महाभारत आदि ग्रन्थों के भाषा अनुवाद गुरु जी खालसा के लिए करवाते थे। इन को विद्वान सिख स्वयं पढ़े तथा

दूसरों को सुनाएं। जो 52 कवि सतिगुरु जी के पास होते थे, वह सारे ही अनुवाद करते तथा वाणी रचते थे। सतिगुरु जी सारे कवियों की रचनाएं इकट्ठी करके रखते जाते थे तथा इस संग्रह ग्रन्थ का नाम आप जी ने विद्या सागर रखा था। यह ग्रन्थ आनंद पुर खाली करने के बाद नीच मंडली दुश्मनों के हाथों जला दिया गया था।

सतिगुरु जी के बावन कवियों के नाम महान कोष में इस तरह दिए हैं :—

(1) उदे राय (2) अणी राए (3) अमृत राए (4) अलू (5) आसा सिंह (6) आलिम (7) ईशर दास (8) सुखदेव (9) सुखा सिंह (10) सखिआं (11) सुदामा (12) सैनापति (13) शयाम (14) हीर (15) हुसैन अली (16) हंसराय (17) कलू (1) कुवरेश 19) खान चन्द (20) गुणिआ (21) गुरदास (22) गोपाल (23) चंदन (24) चन्दा (25) जमाल (26) टैहकन (27) धर्म सिंह (2) धन्ना सिंह (29) ध्यान सिंह (30) नानू (31) निसचल दास (32) निहाल चन्द (33) नंद सिंह (34) नंद लाल (35) पिंडीदास (36) वल्भ (37) बलू (38) विधी चन्द (39) बलंध (40) व्रिख (41) व्रिज लाल (42) मथरा (43) मदन सिंह (44) मदन गिरि (45) मल्लू (46) मानदास (47) माला सिंह (48) मंगल (49) राम (50) रावल (51) रोशन सिंह (52) लक्खी।

ग्रन्थों के अनुवाद के पश्चात् भोजन ग्रहण करके कुछ आराम करके दिन ढले शिकार करने जाते थे तथा योद्धाओं की आपस में लड़ाईयां करवाकर युद्ध विद्या का अभ्यास कराते थे।

बाबा राम राय जी के साथ मेल

बाबा राम राए जी श्री गुरु हरि राए साहिब जी के

वड़े लड़के थे, जिन्होंने औरंगज़ेव के पास रह कर उसको 72 करामातें दिखाई थी। इस कारण औरंगज़ेव वावा जी पर वड़ा प्रसन्न था। पर जब वावा जी ने गुरु नानक देव जी की वाणी की एक तुक "मिट्टी मुस्लमान" की जगह "मिट्टी वेईमान" की वादशाह को खुश करने के लिए कहा तो गुरु हरि राय जी ने उस को गुरु गद्दी के योग्य न समझ कर अपने छोटे साहिवज़ादे श्री गुरु हरि कृष्ण जी को गुरु गद्दी दे दी।

इसके वदले औरंगज़ेब ने वावा राम राय जी को देहरादून में एक जंगी जागीर देकर निवास का प्रवन्ध कर दिया। वही स्थान आज-कल डेहरादून करके प्रसिद्ध है।

वावा राम राय जी को जब पता चला कि गुरु गोबिंद सिंह जी ने नाहन राज्य में यमुना के किनारे एक किला तैयार करके अपना निवास कर लिया है तथा सेना शस्त्र आदि इकट्ठे कर रहे हैं तो वावा जी को चिंता हो गई कि अपने पिता श्री गुरु तेग वहादर जी की शहीदी का वदला लेने के लिए गुरु जी उस पर ही चढ़ाई न कर दें। इस लिए वावा जी आप के साथ मेल मिलाप करना चाहते थे। पर वावा जी के मसंद अपनी मनमानियां करने के लिए यह नहीं चाहते थे कि इन की सुलह हो। इस लिए न वह वावा जी को गुरु जी के पास पौंटे जाने देना चाहते थे तथा न ही गुरु जी को डेहरादून वावा जी के पास बुलाना चाहते थे।

पाठकों की जानकारी के लिए यहां यह वताना भी व्यर्थ नहीं होगा कि वावा राम राय जी के कोई संतान नहीं थी, इस लिए मसंद चाहते थे कि इन के वाद हम ही गुरु वन कर सिखों से कार भेंट तथा वादशाह से जागीर खाते रहे। श्री गुरु गोविंद सिंह जी क्यों कि वावा जी के चाचा जी लगते थे, इस लिए मसंदों को डर था कि अगर इन का मेल मिलाप हो गया तो वावा जी के वाद में इनकी सारी सिखी सेवकी गुरु जी संभाल लेंगे तथा

हम हाथ मलते ही रह जाएंगे।

आखिरकार कुछ अच्छे मसंदों के द्वारा बाबा जी ने गुरु जी को संदेश भेजा कि फलां दिन वह यमुना में नाव में सैर करने के लिए जाना है तथा आप जी ने भी उस दिन वहीं आ जाना। नाव में बैठ कर सैर भी करेंगे तथा बातचीत भी वहीं करेंगे। इस निश्चित कार्यक्रम के अनुसार गुरु जी यमुना किनारे शिकार खेलते-खेलते बाबा जी के पास पहुंच गए तथा नाव में बैठ कर ही एक दूसरे का हालचाल तथा और घर के हालात पूछकर प्रसन्नता प्राप्त की बाद में आप जी ने गुरु जी के आगे प्रार्थना की कि मसंद हमें बड़ा तंग करते है, सांसों का कोई भरोसा नहीं है, मेरे बाद आप मेरी पत्नी पंजाब कौर का ख्याल रखे उसको मसंद तंग न करें।

बाबा राम राय जी के मसंदों का अहंकार

इस तरह की बातचीत करके जब श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने यमुना किनारे किश्ती से उतरते वक्त देखा तो बाबा जी के मसंद आप की तरफ पीठ करके खड़े थे। जिस का भाव यह था कि मसंद आप जी का सम्मान नहीं करना चाहते थे तथा यह बताना चाहते थे कि हम आप को कुछ नहीं मानते। हमारा गुरु बाबा राम राय जी असली गुरु हैं।

मसंदों का यह खराब तरीका देखकर सतिगुरु जी ने कहा कि राम राए जी के मसंद भूतने हैं। राम राय सच्चा है।

इस तरह वर श्राप लेकर बाबा राम राय जी तथा उनके मसंद अपने डेरे को चले गए तथा गुरु जी पौंटे साहिब को आ गए।

बाबा राम राय जी के मसंदों को ठीक करना

बाबा राम राय जी योग-अभ्यासी थे, कई कई दिन वह अपने सांस दशम द्वार में चढ़ा कर बैठे रहते थे। अब जब बाबा जी को

गुरु जी के साथ सुलह हो गई तो मसंदों को पता चला तो उन्होंने वावा जी को एक तरफ करने की योजना वनाई, कुछ दिन वाद जव वावा जी को समाधि लगाकर वैठे दो तीन दिन वीत गए तो मसंदों ने वावा जी को स्वर्गवासी प्रकट करके उनके शरीर का संस्कार कर दिया । मसंदों की यह वुरी चाल समझ कर माता पंजाव कौर ने गुरु जी को पौंटे से वुला कर मसंदां की ज्यादतियों तथा वुरी चालों की सारी वात वताई तथा अपनी सहायता के लिए प्राथना की। वाद में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने डेहरादून जाकर सभी मसंदों को इकठ्ठा करके पूछा तथा जो दोषी थे, उनको योग्य सजाएं देकर आगे से माता पंजाब कौर की आज्ञा में रहने की हिदायत की । इस तरह गुरु जी वावा राम राय जी के मसंदों को ठीक करके कुछ दिनों के वाद वापिस पौंटे साहिव पहुंच गए ।

यह घटना भाद्रपद संवत् 1744 में हुई वर्णित है ।

नोट :– वावा राम राय जी की दो पत्नियां थी, 1. पंजाब कौर 2. राज कौर । माता राज कौर ने वावा जी के होते ही अपना निवास मनीमाजरा रियासत पटयाला में अपने सिख सेवकों के पास कर लिया था, माता जी के घर कोई संतान नही थी, इस लिए यह सिख सेवक माता जी के पुत्रेले कहलाए तथा वाद में इनकी संतान सोढी (मनीमाजरे) वाले प्रसिद्ध हुई ।

माता पंजाव कौर जी की भी कोई संतान नहीं थी, इस लिए इन्होंने अपने डेरे को उदासी मत की संप्रदाय के साथ संवंधित कर लिया था, जिसस डेरे का महन्त कोई शादी नहीं कर सकता तथा कोई योग्य शिष्य ही डेरे का महन्त स्थापित किया जा सकता है । डेरे को लाखों करोड़ों रुपये की अस्ल जायदाद है । आज कल डेरे के महन्त इंद्रेश कुमार जी हैं, जो वहुत योग्य व्यक्ति है । डेरे की आमदनी मे एक हाई स्कूल चला रहे हैं तथा और भी जरुरतमंद वृद्ध व्यक्तियों की सहायता करते हैं । आप

अच्छे विद्वान मिलनसार, दूरदर्शी तथा योग्य प्रबंधक हैं ।

फतेह शाह की लड़की की शादी नंद चंद ने तम्बोल लेकर जाना

राजा फतेह शाह ने अपनी लड़की की शादी का दिन नियत करके श्री गुरु जी को विवाह की गांठ भेज कर प्रार्थना की कि इस शुभ समय आप जी ने अवश्य दर्शन देकर घर को पवित्र करना । गुरु साहिब जी ने राजा की प्रार्थना स्वीकार करके इस समय सभी राजाओं के इकट्ठ में स्वयं जाना तो ठीक न समझा परन्तु राजा की कन्या का विवाह जानकर सवा लाख का कीमती जेवर कपड़ा तैयार करवा कर भाई नन्द चन्द तथा दया राम के साथ पांच सौ घुड़ सवार देकर राजा फतेह शाह के घर श्रीनगर भेज दिया । फतेह शाह ने भाई नन्द चन्द के जत्थे का बड़ा अच्छा स्वागत किया तथा एक सुंदर बाग में डेरा डलवा दिया ।

गुरू जी ने भीम चन्द के लड़के की बारात का रास्ता रोकना

राजा फतेह शाह के घर जाने के लिए वैसाख संवत् 1746 में राजा भीम चंद विलासपुर से अपने लड़के की बारात लेकर आया । उसके साथ कटोच का राजा कृपाल चंद जसवालिया, राजा केसरी चन्द, राजा हरि चन्द हंडूरिआ, प्रथी चन्द डढवालिआ, राजा सुखदयाल जसरोटिया अपने अपने घोड़ों तथा पैदल सेना के साथ शामिल थे ।

विलासपुर से श्रीनगर (गढ़वाल) को जाने के लिए रास्ते में पौंटा साहिब आती थी क्योंकि राजा भीम चन्द की बारात के साथ

और राजा तथा उनकी सेनाएं भी थी, इस लिए जब गुरु साहिब जी को इस बात का पता चला कि भीम चन्द और राजाओं के साथ बहुत सी फौज लेकर अपने लड़के की बारात लेकर श्रीनगर को यहां से लांघ रहा है, तो आप जी ने अपने पांच सौ योद्धाओं को आगे होकर पहाड़ियों का रास्ता रोकने का हुक्म दे दिया। यह इस लिए कि यहां से लांघते समय पहाड़ी फौजें आप जी के डेरे का जान तथा माल का, कोई शरारत करके, नुकसान न कर दें।

जब भीम चन्द को यह पता चला कि गुरु जी के सिख हमारा रास्ता रोक कर खड़े हैं तो उसने अपने वज़ीर को गुरु जी के पास भेज कर प्रार्थना की कि कृपा करके अपने आदमियों को हमारे रास्ते में से एक तरफ करके हमें बारात लेकर लांघ जाने दें। परन्तु गुरु जी ने कहा कि हम अपने डेरे में से किसी फौज को लेकर लांघने की आज्ञा नहीं दे सकते।

गुरु जी का यह उत्तर सुन कर भीम चन्द को फिकर पड़ गया कि अब क्या किया जाए। दूसरा रास्ता बड़ा लम्बा है उस रास्ते विवाह के दिन श्रीनगर पहुंचा नहीं जा सकता तथा यहां अगर गुरु जी के साथ युद्ध करें तो रंग में भंग पड़ जाएगा, कई मौतें तथा कई ज़ख्मी हो जाएंगे। यह विचार करके भीम चन्द ने अपने वज़ीर के द्वारा गुरु जी के आगे विनती की कि विवाहपर पहुंचने के लिए लड़के को तथा उसके साथ कुछ आदमियों को अपनी सीमा लांघ जाने दें, मैं और सारी बारात को लेकर दूसरे रास्ते चला जाऊंगा। गुरु जी ने राजा की यह विनती मान कर विवाह वाले लड़के और कुछ आदमियों को साथ अपनी सीमा में से लांघने की आज्ञा दे दी।

फतेह शाह ने गुरु जी का तंबोल मोड़ना

भीम चन्द ने जब श्रीनगर पहुंच कर यह सुना कि गुरु जी के आदमी ने फतेह शाह को कहा कि गुरु मेरा दुश्मन है अगर तुम उसका तंबोल लोगे तो मैं तेरी लड़की को डोली नहीं लेजाऊंगा। तेरा मेरा कोई रिश्ता नहीं रहेगा।

दरवाज़े आई बारात को वापिस करना गया गुज़रा आदमी भी निरादरी समझता है, इस लिए फतेह शाह ने भीम चंद को यकीन दिलाया कि मैं गुरु जी का तंबोल अभी वापिस कर देता हूं, राजा जी आप नाराज़ न हों।

यह बात करके फतेह शाह ने भाई नंद चंद को संदेश भेज दिया कि हमने गुरु जी का तंबोल नहीं लेना क्योंकि उन्होंने मेरे समधि की बारात नही लांघने दी तथा बहुत परेशान किया है, आप अपना तंबोल वापिस ले जाएं।

भाई नंद चन्द जी ने अपना तंबोल लेकर वापिस आना

जब यह संदेश भाई नंद चंद जी को मिला तो भाई जी ने उसी समय अपने आदमियों को कहा कि सब कुछ संभाल कर झटपट यहां से निकल चलें इन कच्चे पहाड़ियों का कोई भरोसा नहीं है। और कहीं हमारा सभी कुछ लूट कर हमें कत्ल कर दें या कारावास में डाल दें तैयारी करके जब सिंह आप सब कुछ संभाल कर घोड़ों को कस कर चलने लगे तो भीम चन्द आदि राजाओं ने सलाह करके अपने आदमियों को भेजा कि गुरु जी का तंबोल लूट लो तथा आदमियों को मार दो। पर इन भीम चन्द के आदमियों के तैयारी करके पहुंचने तक भाई नंद चंद तथा दया

राम जी सभी कुछ संभाल कर अपने सवारों सहित यमुना के घाट से पार हो गए। पौंटे साहिब पहुंच कर भाई जी ने गुरु जी को सारा वृत्तात, जैसा उनके साथ पहाड़ी राजाओं ने किया था, जा सुनाया।

गुरु जी ने भाई जी की विद्वत्ता देखकर तथा दुश्मनों में से होशयारी से निकल आने की प्रशंसा की तथा प्रसन्नता से शाबाश दी।

फतेह शाह की गुरू जी के ऊपर चढ़ाई

गुरु जी लिखते है : फते शाह कोपा तव राजा ॥
लोह परा हम सौं विन काजा ॥ 3 ॥

जब भाई नंद चंद आदि सिख अपना सब कुछ संभाल कर पहाड़ियों से बच कर निकल आए तो विवाह से फारिग होकर, फिर भीम चंद ने दूसरे राजाओं के साथ सलाह करके अपने समधि राजा फतेह शाह को कहा कि बारात का रास्ता रोक कर गुरु जी ने आगे हमारा बड़ा अपमान किया है, अब हमने डोली लेकर वापिस जाना है, गुरु जी ने हमें फिर सीधे रास्ते लांघने नहीं देना इस लिए तुम आगे चलो, हम सभी तुम्हारे साथ आएंगे। पहले गुरु जी का पौंटे से सफाया करके फिर ही बारात तथा डोली हम सीधे रास्ते ले जाने के काबिल होंगे। गुरु जी के साथ लड़ना चाहे फतेह शाह नहीं चाहता था परन्तु अपने समधि भीम चन्द तथा और राजाओं के जोर देने से उसको गुरु जीं के साथ युद्ध करने की तैयारी करनी पड़ी। गुरु जीं के ऊपर चढ़ाई के समय फतेह शाह के साथ यह राजा उसके सहायक थे :—

पठान नौकरों की गद्दारी

गुरु साहिब जी ने फतेह शाह आदि पहाड़ी राजाओं की जब चढ़ाई सुनी तो आप जी ने भी अपने सूरमाओं माहरी चंद, संगो शाह, जीत मल, लाल चन्द तथा दया राम आदि को तैयारी का आदेश दे दिया। जिस से सारे योद्धा अपने-अपने शस्त्र-वस्त्रों को पहन कर तैयारी करने लग गए।

जब इस तरह जयकारों की गूंज में घोड़े हिनहिनाने लगे तथा शस्त्र चमकने तथा खड़कने लगे तो योद्धाओं की भुजाएं फड़कने लगी तथा चेहरे खुशी से चमकने लगे तथा कायरों के दिल धड़कने तथा पीले होने लगे।

ऐसे वातावरण में पठान नौकरों को अपना जानों की पड़ गई। उनमें से चार सरदार हयात खां, नजावत खां, भीखण खां तथा उमर खां बहुत समझाने के बावजूद भी बहाने बनाकर अपने जत्थों के चार सौ पठान सिपाहियों के साथ गुरु जी को छोड़ कर पहाड़ी राजाओं के साथ यमुना के पार जा मिले। गुरु जी के पास केवल काले खां अपने एक सौ साथियों के साथ रह गया।

उदासी साधुओं का भी खिसकना

महन्त कृपाल दास हेहरा वाले के साथ जो पांच सौ उदासी थे वह भी युद्ध के बादल गरजते देखकर रातों रात ही भाग गए। जब गुरु जी को पता चला कि उदासी साधू सभी भाग गए हैं तथा महन्त कृपाल दास अकेला ही पीछे रह गया, तो गुरु जी ने मुस्कुरा कर कहा कि "अच्छा हुआ महन्त नहीं गया, इससे उदासियों का मूल रह गया है। मूल रह गया तो फल फूल शाखाएं अपने आप लग जाएंगी।" जगत में महन्त कृपाल दास ने अपने मोटे कुतके (डंडे) से हयात खां पठान का सिर, जो अपने साथियों सहित गुरु

जी को छोड़कर पहाड़ी राजाओं के साथ जा मिला था, तोड़ दिया । गुरु साहिब जी विचित्र नाटक में लिखते हैं :—

कृपाल कोपीअं कुतके संभारी ॥
हठी खान हयात के सीस झारी ॥
उठी छिछ इछं कढा मेज जोरं ॥
मनो माखनं मटकी कान फोरं ॥ 7 ॥

सैय्यद बुद्धु शाह ने चेले लेकर गुरु जी के पास आना

जब सैय्यद बुद्धू शाह को सढौरे पता चला कि जो पांच सौ पठान उसने गुरु जी के पास नौकर करवाए थे उनमें से चार सौ गद्दारी कर गए हैं, तो उसने इस बात को बहुत बुरा मनाया कि यह पठान समय पर नमक हराम होकर गुरु जी के साथ गद्दारी कर गए हैं । गुरु जी के आगे सच्चा होने के लिए सैय्यद जी अपने दो पुत्र, एक भाई तथा सात सौ शिष्य लेकर गुरु जी के पास रण क्षेत्र में आ गए ।

युद्ध का मैदान भंगाणी

पहाड़ी राजाओं के साथ मुकाबिला करने के लिए गुरु जी ने 16 वैसाख संवत् 1746 को पौंटे से सात मील पूर्व दिशा भंगाणी के मैदान में अपने मोर्चे कायम करके पहाड़ियों का रास्ता रोक लिया ।

गुरु जी के पास इस समय लगभग पांच हज़ार सेना थी जो आप जी के मुख्य योद्धाओं के नेतृत्व में बंटी हुई थी । मुख्य योद्धा यह थे :—

बीबी वीरो के पांच पुत्र—गंगो शाह, जीत मल, गोपाल चंद

गंगा राम तथा माहरी चन्द । माला किरपाल चंद, नंद चंद तथा पुरोहित दया राम तथा साहिब चंद आदि ।

जब सिख योद्धा रणजीत नगारा बजाकर पहाड़ी सैनिकों के आगे आए तो उस समय का नक्शा इस प्रकार था, जिस तरह का गुरु साहिब जी ने चन्डी की वार एक पौऊड़ी में वर्णन किया है :—

पौऊड़ीं ॥ दुहां [1]कंधारा मुह जुड़े दल [2]घुरे नगारे ॥
[3]उरड़ि आऐ सूरमे सरदार [4]रणिआरे ॥
लैके तेगां वरछिआं हथिआर उभारे ॥
[5]टोप पटोला [6]पाखरा [7]गलि संज सवारे ॥ 52 ॥

आप जी ने विचित्र नाटक में इस युद्ध का वर्णन इस तरह किया है :—

भुजंग प्रयात छन्द ॥

1. खुलै खान खूनी खुरासान खगं ॥
परी ससत्र धारं उठी झाल अगं ॥
भई तीर भीरं कमान कड़के ॥
गिरे वाज ताजी लगे धीर धक्के ॥ 17 ॥

2. वजी भेर भुंकार धुके नगारे ॥
दुहूं उर ते वीर वंके वकारे ॥
करे वाहु आघात ससत्रं प्रहारं ॥
डकी डाकनी चांवडी चीतकारं ॥ 18 ॥

अर्थात्:-1. खूनी खानों के हाथ में खुरासान की तलवारें नंगी पकड़ी हुई थी। शस्त्रों की धार पर सूर्य की रोशनी पड़ने से आग की लपटों की तरह चमक निकली थी।

युद्ध में तीरों की भीड़ हो गई। कमानें कड़क रहीं थी। धीरज-

---

1. सेना के। 2. गूंजे। 3. उल्लर (टट) कर। 4. लड़ाके। 5. सिर पर लोहे के टोप तथा मुंह पर लोहे के बुर्के। 6. घोड़े के ऊपर झालर। 7. गले में संजोए थे।

वान योद्धाओं के धक्के लगने से कई घोड़े धरनी पर गिर पड़े थे ।

2. भेरियों की भुंकार बजती थी तथा नगारे की धुंकार पड़ रही थी । दोनों तरफ से योद्धा ललकारते थे । बाजुओं को उठाकर शस्त्रों के वार करते थे । (सूरमाओं का खून पीकर) डाकनीयां डकार मारती तथा चांवडीयां चीकें (किलकारियां) मारती थी ।

यह भयानक युद्ध 16 वैसाख को आरंभ होकर 18 वैसाख संवत् 1746 को समाप्त हुआ । जिस में पहाड़ियों के शूरवीर राजा हरी चन्द हंडूरीया, नजाबत खां, हयात खां पठान आदि अनेक योद्धाओं सहित मारे गए तथा बहुत से जवान जख्मी हो गए । अपना नुक्सान जान तथा माल का करवा कर पहाड़िए हार खाकर भाग गए । जैसा कि गुरु साहिब जी विचित्र नाटक में लिखते हैं कि पहाड़िए राजा :—

रणं तिआग भागे ।। सभै त्रास पागे ।।
भई जीत मेरी ।। क्रिया काल केरी ।। 34 ।।

आगे अपनी जीत की खुशी के बारे लिखते हैं कि हम :—

रण जीत आए ।। जयँ गीत गाए ।।
धनँ धार बरखे ।। सभै सूर हरखै ।। 35 ।।

अर्थात् :-(1) युद्ध को जीत कर जब डेरे आए तो सूरमाओं ने विजय के गीत गाए । (2) हम ने शूरवीरों के ऊपर धन की वर्षा की, जिससे शूरवीर खुश हो गए ।

इस युद्ध में गुरु साहिब जी के मुख्य योद्धाओं के इलावा यह योद्धा शहीद हुए । बीबी वीरो जी के दो पुत्र गंगो शाह तथा जीत मल । सैय्यद बुद्धू शाह के कुछ चेले (मुरीद) तथा दो पुत्र ।

सतिगुरू जी के युद्ध का वर्णन

दुश्मन की ओर से अपने ऊपर हुए वार तथा अपनीं तरफ से

दुश्मन पर किए वारों का सतिगुरु जी विचित्र नाटक में इस तरह वर्णन करते हैं।

दुश्मन की तरफ से वार :—

भुजंग छंद

हरी चंद कोपे कमाणं संभारं ।।
प्रथम वाजीयं ताण वाणं प्रहारं ।।
दुतिय ताक कै तीर मोको चलारं ।।
रखिउ दईव मै कान छवै कै सिधारं ।। 29 ।।

अर्थात् :—हरी चन्द ने गुस्से से धनुष पकड़ कर पहले तीर खींच कर उसने अपने घोड़े को मारा। दूसरा तीर साध कर उसने मेरे ऊपर चलाया। अकाल पुरष ने मुझे रख लिया, वह तीर मेरे कान को छूकर लांघ गया ।। 29 ।। फिर—

त्रितय वाण मारियो सु पेटी मझारं ।।
विधिअं चिलकतं दुआल पारं पधारं ।।
चुभी चिच चरम कछू घाइ न आयं ।।
कलं केवलं जान दासं बचायं ।। 30 ।।

अर्थात् :—फिर हरी चन्द ने हमें तीसरा वाण पेटी में मारा, जो पेटी को वेंध कर पेटी के तस्में से पार निकल गया, चाहे इस तीर की चोंच हमें चुभी पर कोई ज़ख्म न हुआ, हमें केवल अकाल पुरप ने ही अपना दास जान कर बचा लिया था ।। 30 ।।

गुरु जी की तरफ से वार :—

जबै वाण लागिउ ।। तबै रोस जागिउ ।।
करं लै कमाणं ।। हनं वाण ताणं ।। 31 ।।

अर्थात् :—जब हमें वाण लगा, तभी हमें गुस्सा आ गया तथा हाथ में कंगन पकड़ कर हम ने एक वाण खींच कर मारा।

सभै वीर धाए ।। सरोघं चलाए ।।
तबै ताकि वाणं ।। हनियो ऐक जुआनं ।। 32 ।।

अर्थात् :—जब हमने तीर चलाए तो सभी जवान भाग गए। तभी हम ने तीर देख कर एक जवान को मार दिया।

हरी चन्द मारे ॥ सु जोधा लतारे ॥
साकरोड़ रायं ॥ वहे काल घायं ॥ 33 ॥

अर्थात् :—हरी चन्द मार लिया, उसके योद्धा दल सुटे (साकरोड़) कोट लैहर का राजा था, उसको भी मौत ने मार दिया। उपरांत :—

रण तिआग भागे ॥ सभै त्रास पागे ॥
भई जीत मेरी ॥ क्रिपा काल केरी ॥ 34 ॥

अर्थात् :—दुश्मन युद्ध छोड़ कर भाग गए। सभी डर से भरे हुए थे। मेरी विजय हो गई। यह सब अकाल पुरुष की कृपा है।

पीर बुद्धू शाह को बखशिश

इस युद्ध में पीर बुद्धू शाह ने बड़े धीरज तथा श्रद्धा से गुरु जी की सेवा की। अपने दो पुत्र, एक भाई तथा कुछ मुरीद शहीद करवा कर भी उसने धीरज नहीं छोड़ा था। युद्ध के बाद गुरु जी ने पांऊंटे पहुंच कर एक भारी समागम करके अपने शूरवीरों को यथा योग्य मुक्त भुगत की बखशीशें दी।

बुद्धू शाह पर आप जी ने अति प्रसन्न होकर अपनी आधी दसतार, एक अपने केशों का कंगा, एक कटार तथा एक हुक्मनामा बखशा। अपनी शेष आधी दसतार गुरु जी ने महन्त कृपाल दास को बखशी। जिसको महन्त ने टोपी के ऊपर ही बांध लिया। पीर बुद्धू शाह तथा महन्त कृपाल दास गुरु जी से अपनी विदायगी लेने इकट्ठे ही आए थे। इस लिए दोनों को आधी-आधी दसतार की बखशिश हुई लिखी है। गुरु साहिब जी में कंगे के साथ उस समय आप जी के पवित्र केश भी थे जो बुद्धू शाह ने बड़े सत्कार के साथ कंगे के साथ ही ले लिए थे।

तीसरे भाग का व्यौरा

गुरु जी को नाहन के राजा का बुलावा। नाहन राज्य में प्रवेश। पांऊंटे निवास तथा सेना की भर्ती। राजा फतेह शाह ने गुरु जी की शरण आना। पांऊंटे में गुरु जी का नित्य-क्रम। बावा राम राए जी के साथ मेल। बावा राम राय के मसंदों का अहंकार मसंदों को ठीक करना। राजा फतेह शाह की लड़की की शादी तथा नन्द चन्द ने तंवोल लेकर जाना। राजा भीम चन्द ने लड़के की बारात लेकर आना, गुरु जी ने रास्ता रोक लेना, राजा फतेह शाह ने गुरु जी का तंवोल वापिस कर देना। भाई नन्द चन्द ने तंवोल लेकर पौंटे साहिब पहुंच जाना। राजा फतेह शाह की गुरु जी के ऊपर चढ़ाई। पठान नौकरों की गद्दारी। उदास साधुओं ने भी खिसकना। युद्ध का मैदान भंगाणी। सतिगुरु जी ने स्वयं युद्ध जीत कर पीर बुद्धू शाह आदि को वखशिशें करनी।

—0—

‡ भाग चतुर्थ ‡

आनंदपुर को वापिस

भंगाणी का युद्ध जीत कर गुरु जी ने अपने घायलों को देख भाल तथा मरहम पट्टी की तथा फिर आगे की सारी बातें सोच कर आनंदपुर वापिस जाने की तैयारी कर ली। बड़ी धूमधाम से पौंटे से सेना के साथ आनंदपुर चल पड़े। आगे-आगे रणजीत नगारे की गूंज तथा पीछे-पीछे योद्धाओं के "सति श्री अकाल" के जैयकारों के साथ आकाश में गूंज पड़ रही थी। पहला पड़ाव आपने सढोरे जाकर किआ। सढौरे से चलकर लाहौर पुर तथा

आगे टोके पहुंच कर ठहरे। टोका रियासत नाहन में एक गांव है। यहां जब गुरु जी पहुंचे तो राजा मेदनी प्रकाश के वज़ीर ने विनती की कि राजा आप जो को मिलना चाहता है, आप यहीं पर ही उनका इन्तज़ार करें। गुरु साहिब जी यहां 12 दिन राजा का इन्तज़ार करते रहे पर वह दूसरे राजाओं से डरता वहां न पहुंच सका। गुरु साहिब जी की इस याद में ज्येष्ठ सुदी 10 को यहां हर वर्ष मेला लगता है। गुरुद्वारा टोका साहिब यहा प्रसिद्ध स्थान है।

आगे चलकर गुरु साहिब जी रायपुर पहुंचे तथा रानी की सेवा से प्रसन्न होकर उस के पुत्र के सिर पर केश रखवाए तथा नाम 'सिंह' रखा। एक ढाल तथा तलवार गुरु जी ने रानी को बख्शी, तथा कहा कि इनका आदर करना, जब आप को कोई मुश्किल पढ़े तो इनके आगे कढ़ाह प्रसाद करके अरदास करें मुश्किल दूर हो जाएगी।

रानी की इस श्रद्धा तथा सेवा करने के कारण गांव का नाम रानी का रायपुर प्रसिद्ध हुआ।

यहां से चलकर आप जी टोडे, नाभे आदि गांवों से होते हुए ढकोली गांव पहुंचे तथा इससे आधा मील उत्तर दिशा में डेरा डाल दिया। यहां लोगों को पानी की तंगी थी तो गुरु जी ने वरछा मार कर पानी निकाला। एक तालाब तथा बावली यहां पर गुरु जी के प्रलिद्ध स्थान हैं, इससे आगे आप कटला गांव गए। यहां के पठानों ने गुरु जी की प्रेम तथा श्रद्धा के साथ सेवा की। गुरु जी ने प्रसन्न होकर उन को एक कटार तथा ढाल बखशी। यहां पर भी गुरु जी के दो यादगारी स्थान हैं। कोटला से चलकर आप जी, घनोले, बुंगे आदि नगरों से होते हुए कीरतपुर पहुंचे। यहां गुरु जी ने गुरुद्वारा पातालपुरी तथा बाबा गुरदित्ता जी तथा गुरु हरि राए जी के स्थानों पर कढ़ाह प्रसाद चढ़ाए तथा दर्शन

करके भेंट अरदास कराई। बावा सूरज मल जी के पौत्रे तथा सोढी दीप चन्द के पुत्र गुलाब राय तथा श्याम सिंह ने आप जी की बड़े प्रेम तथा श्रद्धा के साथ सेवा की तथा पहाड़ी राजाओं के साथ हुई टक्कर का हाल सुनकर बीबी वीरो के दो पुत्रों तथा और योद्धाओं के शहीद हो जाने का अफसोस प्रकट किया।

आनंदपुर पहुंच

कीरतपुर से जब गुरु जी सेना सहित आनंदपुर पहुंचे तो बहुत खुशियां मनाई तथा दीप माला की गई। सतिगुरु जी ने यहां पहुंच कर इसे नए सिरे से आबाद किया। जिसका वर्णन अपनी जीवन कथा विचित्र नाटक में करते हैं :—

जुध जीत आए जबै, टिके न [1]तिन पुर [2]पांव ॥
[3]काहलूर मैं बाधिओं, आन [4]आनंदपुर गांव ॥ 36 ॥

आनन्दगढ़ आदि किलों की रचना

एक तरफ पहाड़ी राजा भंगाणी युद्ध में गुरु जी से बुरी हार खाकर इस का बदला लेने के लिए सलाह कर रहे थे। दूसरी तरफ गुरु जी की दिन रात बढ़ती शक्ति को देखकर मुगल राज्य के सूबा सरहिन्द, लाहौर तथा दिल्ली आदि भी गुरु साहिब जी को बुरी नजर से देखते थे। इन दोनों विरोधी धड़ों का ध्यान रख

1. पांटे। 2. पैर। 3. राजा भीम चन्द बिलासपुरिए का इलाका। 4. श्री गुरु तेग बहादर जी ने जब इस नगर की नींव 26 अस्सू संवत् 1722 में रखी थी तो इस का नाम अपनी माता जी के नाम पुरा नानकी चक रखा था। दशम गुरु जी जब भंगाणी का युद्ध जीत कर पांटे से माह आषाढ़ संवत् 1746 को वापिस आए तो आप जी ने इसका नाम आनन्दपुर रखा। जैसा आप जी ने ऊपर लिखा है– "जुध जीत आए जबै।"

कर गुरु जी ने संवत् 1746 में ही आनंदपुर नगर की रक्षा के लिए पांच किले बनवाए :—

1. किला आनंद गढ़—शहर आनंदपुर से दक्षिण दिशा लगभग तीन फर्लांग के फासले पर। इस किले में एक बहुत बड़ी बावली है। इस बावली में फौजों के ठहरने का तथा पानी का बहुत अच्छा प्रबंध है। इस किले को तोड़ने के लिए ही पहाड़ी राजाओं ने हाथी को शराब से मस्त करके भेजा था।

2. लोहगढ़- अनन्दपुर के उत्तर दिशा शहर के चरण गंगा से पार केस गढ़ से पश्चिम दिशा में है।

3. फतहगढ़ :—आनंदपुर से उत्तर दिशा शहर के साथ ही। यह अब ढह गया है।

4. होलगढ़ :—गढ़ शंकर वाली सड़क पर गांव अँगम पुरे के पास आनंदपुर से एक मील सतलुज नदी के किनारे पर।

होला मुहल्ला किला आनंदपुर से आरंभ होकर इस किले तक जाता है तथा यहां से वापिस होकर केसगढ़ आता है।

5. केसगढ़ यहां गुरु महाराज जी ने बैसाखी वाले दिन संवत् 1756 विक्रमी को अमृत तैयार करके खालसा पंथ सजाया था। होले मुहल्ले को यहां बड़ा भारी मेला लगता है।

शहर की शक्ति के साथ ही गुरु जी कवियों से ग्रन्थों के अनुसार ढाडियों से पुरातन युद्धों के कारनामें तथा देश सेवा के लिए मर मिटने के लिए शूरवीर सिखों में जोश भरकर दुश्मनों के टाकरे के लिए अपनी पूरी तैयारी करते रहते थे।

सूबा काश्मीर ने पहाड़ी राजाओं से रुपया लेने के लिए मीयाँ खाँ को भेजना

औरंगजेब को सन् 1681 से दक्षिण में लड़ाई करते हुए इस

समय तक लगभग आठ वर्ष हो गए थे, जिस कारण उसको सेना के व्यय के लिए अनाज तथा धन की बहुत कमी हो गई थी। इस कमी को पूरा करने के लिए उसने अपने सारे सूबों को हुक्मनामे भेज कर जैसे तैसे रुपया इक्ठ्ठा करके मुझे जल्दी भेजो। इस आदेशानुसार ही काश्मीर के सूबे ने अपने एक कारदार मीयां खां को पहाड़ी राजाओं से रुपया लेने के लिए भेज दिया। मीयां खां स्वयं तो जम्म के इलाके में ही वसूली करने लग गया तथा अपने एक सरदार अलफ़ खां को कांगड़े की तरफ भेज दिया।

नादौन का युद्ध

भीम चन्द आदि राजाओं ने गुरु जी से सहायता लेनी

अलफ़ खां ने नादौन के पास व्यास के किनारे डेरा डाल कर कांगड़ा के राजा कृपाल चन्द को सरकारी मांमले का रुपया चुकाने के लिए संदेश भेजा। उसने अलफ़ खां को पहले राजा भीम चंद से रकम वसूल करने के लिए सलाह दी। इस वात का जव भीम चंद को पता चला तो उसने अपना वज़ीर गुरु जी के पास भेज कर अपनी सहायता के लिए प्रार्थना की। गुरु जी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करके अपने योद्धाओं के साथ अलफ़ खां मुकावले के लिए नादौन व्यास के किनारे जा कर मुकाम किया। दूसरे दिन अलफ़ खां के साथ सख्त टक्कर हुई, जिसमें वह वहुत सा जान-माल का नुक्सान करवाकर मैदान छोड़कर भाग गया। इस की खुशी में राजा भीम चंद ने गुरु जी को अपनी राजधानी विलासपुर लेजाकर वहुत सम्मान किया तथा वहुत मूल्य भेंटे देकर आठ दिनों के वाद विदा किया।

गुरु जी ने विचित्र नाटक में इस युद्ध का इस तरह वर्णन किया है :-

भजिओ अलफ खानं न खाना संभार्यो ॥
भजे अऊर वीरं न धीरं बिचार्यो ॥
नदी पै दिनं असट कीने मुकामं ॥
भली भांति देखै सभै राज धामं ॥ 22 ॥

अर्थात।—अलफ़ खां सब कुछ छोड़ कर भाग गया तथा उसके योद्धा भी हौंसला छोड़कर भाग गए। हमने आठ दिन नदी व्यास के किनारे डेरा रखा तथा राजा भीम चंद के राज मंदिर बड़ी अच्छी तरह देखे।

जुझार सिंह का जन्म

जब गुरु साहिब जी युद्ध जीत कर वापिस आनंदपुर आए तो आप जी को यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप जी के घर माता जीतों जी की कोख से साहिबज़ादे ने मंगलवार 21 चैत्र संवत् 1747 को जन्म लिया है। सतिगुरु जी ने युद्ध के दिनों में पैदा होने के कारण साहिबज़ादे का नाम जुझार सिंह रखा। यह साहिबज़ादा जी अपने बड़े भाई अजीत सिंह जी के साथ 8 पोष संवत् 1761 को चमकौर युद्ध में शहीद हुए थे।

दिलावर खाँ सूबा लाहौर की चढ़ाई

अलफ़ खां के भाग जाने के बाद गुरु जी वचित्र नाटक में लिखते हैं कि :—

बहुत बरख इह भांति विताऐ ॥
चुनि चुनि चोर सबै गहि गाऐ ॥
केतक भाज शहिर ते गऐ ॥
भुख मूरत फिर आवत भऐ ॥ 1 ॥

(अध्याय दसवां)

जब नादौन के युद्ध को बहुत वर्ष बीत गए फिर :—

तब लौ खान दिलावर आए ॥
पूत अपनं हम उर पठाए ॥
द्वैक घड़ी बीती निसि जबै ॥
चड़त करी खानन मिल तबै ॥ 2 ॥

दिलावर खां का पुत्र चिढ़ कर आया। उसने दो पहर रात बीतने के बाद चढ़ाई कर दी।

फिर :-

जब दल पार नदी के आयो ॥
आन आलमै हमै जगायो ॥
सोर परा सब ही नर जागे ॥
गहि गहि शस्त्र बीर रस पागे ॥ 3 ॥

जब पठानों का दल नदी के पार पहुंचा तो हमारे ड्योढ़ी सरदार आलम सिंह ने हमें आकर जगा दिया। हमारे जागने से यह खबर सुनकर शोर पड़ गया तथा योद्धा शस्त्र पकड़कर वीर-रस से भर गए तथा तभी हमारे योद्धाओं की तरफ से :—

छूटन लगी तुफंगै तब ही ॥
गहि गहि शस्त्र रिसाने सब ही ॥

बंदूकों के वार होने लगे तथा योद्धे शस्त्र संभाल कर शोर मचाने लगे फिर उन पठानों ने :-

करूर भांत तिन करो पुकारा।
सोर सुना सरता के पारा ॥ 4 ॥

बड़ी हाल-दोहाई मचा दी, उनका शोर नदी के पार से हमने सुना :-

इते बीर गरजे भए नाद भारे ॥
भजे खान खूनी बिना शस्त्र झारे ॥ 6 ॥

इधर हमारे शूरवीर दुश्मनों का शोर सुनकर गरजने लग गए,जिससे बड़ी ऊंची आवाजें को सुनकर खूनी पठान शस्त्र चलाने के विना ही डर कर भाग गए। इसके उपरांत :—

हुसैनी युद्ध

इस युद्ध के संबंध में गुरु जी लिखते हैं :—

गयो खानजादा पिता पास भुंज ॥
सक जवाब दै न हनै सूर लजं ॥
तहा ठोक बाहा हुसैनी गराजीयं ॥
सबै सूर लै कौ सिला साज सजियं ॥ 1 ॥

अर्थात :- दिलावर खां का सपुत्र रुस्तम खां, पिता के पास भाग कर लाहौर चला गया तथा अपने शूरवीरों को विना युद्ध के मरवाने का कारण पिता के पूछने पर शर्म के मारे वता न सका। उस समय हुसैनी ने बाजूओं पर थापी मार कर किलकारी मारी तथा सारे शूरवीर (दो हजार सेना) साथ लेकर शस्त्र सजा लिए।

हुसैनी ने पहाड़ियों पर चढ़ाई करके अच्छी तरह से लूटा तथा पाटा। उनका अनाज लूट कर अपने जवानों में बांट दिया।

इस तरह हुसैनी की लूट पाट से डरते पहाड़ी राजा मधुकर शाह ढडवालिआ, भीम चंद कहलूरिआ तथा कृपाल चंद कटोचिआ हुसैनी के साथ मिल गइ।

राजा गोपाल चंद गुलेरिआ ने जब हुसैनी के ईनमन्नक शाही टके न दिए तो हुसैनी अपने दूसरे साथी राजाओं को साथ लेकर इस पर चढ़ाई करने लगा। इस जुंडली को सलाह थी कि पहले गुलेरिए को अधीन करके फिर अपनी पूरी ताकत के साथ

इधर हमारे शूरवीर दुश्मनों का शोर सुनकर गरजने लग गए,जिससे बड़ी ऊंची आवाज को सुनकर खूनी पठान शस्त्र चलाने के बिना ही डर कर भाग गए। इसके उपरांत : —

हुसैनी युद्ध

इस युद्ध के संबंध में गुरु जी लिखते हैं :—

गयो खानजादा पिता पास भुँज ।।
सकं जवाब दै न हनै सूर लजं ।।
तहा ठोक बाहा हुसैनी गराजीयं ।।
सबै सूर लै को सिला साज सजियं ।। 1 ।।

अर्थात :- दिलावर खां का सपुत्र रुस्तम खां, पिता के पास भाग कर लाहौर चला गया तथा अपने शूरवीरां को बिना युद्ध के मरवाने का कारण पिता के पूछने पर शर्म के मारे बता न सका। उस समय हुसैनी ने बाजूओं पर थापी मार कर किलकारी मारी तथा सारे शूरवीर (दो हजार सेना) साथ लेकर शस्त्र सजा लिए।

हुसैनी ने पहाड़ियों पर चढ़ाई करके अच्छी तरह से लूटा तथा पाटा। उनका अनाज लूट कर अपने जवानों में बांट दिया।

इस तरह हुसैनी की लूट पाट से डरते पहाड़ी राजा मधुकर शाह ढडवालिआ, भीम चंद कहलूरिआ तथा कृपाल चंद कटोचिआ हुसैनी के साथ मिल गइ।

राजा गोपाल चंद गुलेरिआ ने जब हुसैनी के ईनमन्नक शाही टके न दिए तो हुसैनी अपने दूसरे साथी राजाओं को साथ लेकर इस पर चढ़ाई करने लगा। इस जुंडली की सलाह था कि पहले गुलेरिए को अधीन करके फिर अपनी पूरी ताकत के साथ

आनंदपुर पर चढ़ाई करके गुरु जी को आसानी से ही काबू कर लेंगें। यह सलाह करके गोपाल को हुसैनीं ने उसके किले में हीं घेंर लिया। गोपाल ने और कोई रास्ता न देखते हुए गुरु जी को अपनी सहायता के लिए प्रार्थना की।

गुरु साहिब जी नें अपने योद्धा भाई संगतिआ सिंह को जत्था देकर भेजा तथा कहा कि पहले यह यत्न करना कि राजा भीम चंद तथा कृपाल चंद के साथ गोपाल चंद की सुलह हो जाए। संगतिआ सिंह ने दोनों धड़ों में पड़ कर सुलह करवाने की कोशिश की, पर कृपाल चंद कटोचिए ने हुसैनी को उकसा दिया कि गोपाल से पूरी रकम लेकर सुलह की वात करनी है। गोपाल उतनी रकम न दे सका जितनी हुसैनी कृपाल चंद की उकसाहट पर लेना चाहता था, इस लिए वहां भी ऊंची नीची वातें होने के कारण धड़ों की टक्कर हो गई।

हुसैनी तथा कृपाल चंद अपने कुछ साथियों के साथ इस टक्कर में मारे गए तथा उधर संगतिआ सिंह तथा उसके सात साथी भी शहीद हो गए। यह युद्ध संवत् 1752 के कार्तिक माघ महीने में हुआ।

अकाल पुरुष का धन्यवाद

हुसैनीं, जो गुरु साहिव जी पर चढ़ाई करने के लिए वड़े अहंकार के साथ आया था, उसका दूसरों के हाथों मारे जाने का सुन कर गुरु जी ने परमात्मा का धन्यवाद किया। इस का वर्णन आपजी विचित्र नाटक में इस युद्ध के अंत में इस तरह करते हैं:—

चौपाई :— जीत भई रन भयो उभारा ॥
सिमरत करि सव घरे सिधारा ॥

राखि लयो हम को जगराई ॥
लोह घटा अनत बरसाई ॥ 69 ॥

अर्थात:—गोपाल की विजय हो गई तथा युद्ध खत्म हो गया, हर एक युद्ध की बातों को याद करता हुआ घर को चल पड़ा। हमें वाहिगुरु ने रख लिया तथा शस्त्रों के बादल अन्यत्र बरसा दिए। अर्थात हुसैनी आया तो हमारे ऊपर चढ़ाई करने था, परन्तु दसरों के साथ युद्ध करके वहीं पर ही मर मिट गिया। हमें जगत पिता ने इस झंझट से बचा लिया।

साहिबज़ादा जोरावर सिंह का जन्म

इस समय माता जीतो की कोख से 6 माघ दिन इतवार संवत् 1753 को गुरु साहिब जी के घर साहिबज़ादे ने जन्म लिया। सतिगुरु जी ने साहिबज़ादे का नाम ज़ोरावर सिंह रखा। इसका कारण यह था कि हुसैनी को अकाल पुरुष ने दूर ही मिटा दिया। आनंदपुर तक आने ही नहीं दिया,इस लिए यह साहिबज़ादा ज़ोरावर है।

जुझार सिंह राजपूत की चढ़ाई

हुसैनी आदि योद्धाओं का मरना सुनकर दिलावर खां ने बड़े क्रोध में आकर अपने एक फ़ौजी सरदार जुझार सिंह राजपूत को सेना देकर भेजा। जुझार सिंह ने भलान गाव को लूट कर वहां के निवासियों को निकाल दिया। यह गांव तहसील ऊना थाना नूरपुर में है। इस गांव में गुरु गोविंद सिंह जी दिलावर खां के पुत्र को पराजित करने के लिए आए हुए थे। इस कारण ही जुझार सिंह ने इसको लूटा तथा उजाड़ा था। गुरु साहिब जी की याद में इस जगह मंजी साहिब बना हुआ है।

को जानने लगा। जब उसको पता चला कि पहाड़ी राजाओं की ओर कई वर्षों का सरकारी मामला रहता है तथा जब कोई शाही अफसर मामले की रकम लेने जाता है तो उसके साथ लड़ाई करके वह जान माल का नुक्सान कर देते हैं। इस लिए उसने मिर्ज़ा बेग को बहुत बड़ी सेना देकर इन पहाड़ी राजाओं से मामले की वसूली के लिए भेजा। इस को सभी पहाड़ी राजाओं ने हाथ जोड़कर तथा नम्रता पूर्वक सारी रकम अदा कर दी।

चतुर्थ भाग का ब्यौरा

आनंदपुर को वापसी, आनंदपुर पहुंच कर आनंदगढ़ आदि पांच किलों की रचना, सूबा काश्मीर ने मीयां खां को पहाड़ी राजाओं से रुपया लेने के लिए भेजना, युद्ध नादौन। साहिबज़ादा जुझार सिंह का जन्म, सूबा लाहौर की चढ़ाई। हुसैनी युद्ध अकाल पुरुष का धन्यावाद, साहिबजादा ज़ोरावर सिंह का जन्म। जुझार सिंह राजपूत की चढ़ाई। औरंगजेब ने शाहज़ादा मुअज्जम को पंजाब भेजना तथा उसने पहाड़ी राजाओं से सरकारी मामला वसूल करना।

भाग पाँचवां

गुरु साहिब जी के रूझान

शाहज़ादा मुअज्जम के पंजाब आने से पहाड़ी राजा सरकारी मामले आदि अदा करके उसको प्रसन्न करने के यत्नों में लगे रहे। इधर गुरु साहिब जी अपनी हर तरह की सैनिक शक्ति बढ़ाकर अपने करने वाले अन्य कार्य करते रहे।

इस तरह गुरु साहिब जी की वाणी रचना, शूरवीरों को युद्ध के ढंगों की सिखलाई देनी, शस्त्र तैयार करवाा, रामायण

आदि ग्रन्थो के अनुवाद करवाने, कवियों के कवि दरबार लगाने तथा और अच्छे कार्यो के लिए सम्वत 1753 से सम्वत 1759 तक पांच छः वर्ष शान्ति का समय मिल गया। जिस तरह कृष्ण अवतार के भाषा अनुवाद में आप जी ने लिखा है कि यह पाऊंटे यमुना के किनारे सम्वत 1745 में किया है, इसी तरह यहां श्री राम अवतार की कथा का अनुवाद करके अंत में लिखते हैंः—

संवत सत्राय सहस भणिंजै, अरध सहस फुनि तीन कहिजै।
भाद्रव सुदी असटमी रवि वारा, तीर सतद्रव ग्रन्थ सुधारा ॥29॥

संस्कृत पढ़ने के लिए सिखों को काशी भेजना

उस समय पंडित लोग किसी शूद्र को संस्कृत विद्या नहीं पढ़ाते थे। उनका विचार था कि यह देव वाणी है. इसको ब्राह्मण के इलावा और किसी का पढ़ने का अधिकार नहीं है।

एक पंढित जो गुरु जी पास श्री महाभारत, रामायण आदि संस्कृत भाषा में लिखे हुए ग्रन्थों की कथा किया करता था, एक दिन आप जी ने उसको कहा कि पंडित जी। आप हमारे सिखों को भी संस्कृत विद्या दिया करें। फिर जब समय मिलेगा यह स्वयं ही पढ़ लेंगे। पंडित ने कहा गुरु जी। आप जी के सिख शूद्र आदि नीचि जातिओं के है, इनको वेद आदि ग्रन्थों की देव वाणी संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने की आज्ञा नहीं है। गुरु जी ने हंसकर कहा पंडित जी, वह समय भी अब जल्दी ही आने वाला है, जब यह संस्कृत विद्या लेना केवल ब्राह्मणों का ही अधिकार नहीं होगा। हमारे सिख इस विद्या को पढ़कर विद्वान बनेंगे तथा दूसरों को पढ़ाकर विद्वान बनायेंगे। ब्राह्मण लोग हमारे विद्वान सिखों के

साथ में बैठ कर इस विद्या को प्राप्त किया करेंगे।

इस बातचीत के फलस्वरूप गुरु जी ने अपने पांच विद्वान सिखों को संस्कृत विद्या पढ़ने के लिए काशी (बनारस) भेज दिया, इन सिखों ने अपना सम्पूर्ण समय देकर संगतों से संस्कृत विद्या पढ़ी, तथा वापिस आनन्दपुर आकर और सिखों को पढ़ाई संस्कृत विद्या के अध्यापक होने के कारण तथा युद्धों से निर्लेप रहने के कारण सिखों में इनका नाम निर्लेप संत पड़ गया। जिस से निर्लेप संतों का सम्प्रदाय चला।

ब्रह्मभोज तथा ब्राह्मणों की परीक्षा

ब्राह्मण जाति की अपने कर्म-धर्म में दृढ़ता परखने के लिए गुरु जी ने दूर-दूर तक ब्राह्मणों को निमन्त्रण-पत्र भेज कर एक बड़ा ब्रह्मभोज किया। आप जी ने एक तरह महा प्रसाद का लंगर तैयार करवाया तथा दूसरी तरफ वैष्णव भोजन। जब भोजन तैयार हो गये तो सतगुरु जी ने ब्राह्मणों के समागम में ऊंची आवाज से कहा कि एक तरफ महा प्रसाद का लंगर तैयार है तथा दूसरी तरफ वैष्णव खीर-पूड़ा आदि तैयार है-जो ब्राह्मण महा प्रसाद का लंगर ग्रहण करेंगे उनको पांच-पांच मोहरों की दक्षिणा दी जाएगी तथा जो वैष्णव भोजन लेंगे उनको एक-एक मोहर दक्षिणा स्वरुप मिलेगी। दोनों रास्ते खुले हैं, जिस तरफ किसी की रुचि हो, जाकर प्रसाद ग्रहण कर लें।

गुरु जी के इस सम्बोधन से बहुत से ब्राह्मण महाप्रसादि वाले लंगर में प्रसाद ग्रहण करने चले गये तथा केवल इक्कीस ब्राह्मण ही वैष्णव भोजन की तरफ रह गए।

जब ब्राह्मण प्रसाद ग्रहण कर चुके तो गुरु साहिब जी ने

महा प्रसाद का लंगर छकने वालों को एक-एक मोहर दक्षिणा दी तथा साथ ही उनको शर्मिंदा भी किया कि आप लोग चरित्र हीन हैं, जिन्होंने धन का लालच करके अपने धर्म कर्म की परवाह नहीं को, जिस कारण आप अपने ब्राह्मणवादी होने का अभिमान नहीं कर सकते। महा प्रसाद छकना केवल क्षत्रियों का कर्म है। जिनका वास्ता हमेशा ही युद्धों से रहता है।

बाद में गुरु जी ने वैष्णव लंगर में जाकर ब्राह्मणों को जो केवल इक्कीस थे। पांच-पांच मोहरें दक्षिणा दे कर उनको प्रशंसा करके कहा कि आप धन्य हैं जो अपने धर्म कर्म के नियम में पक्के हैं। आप गृहस्थी लोगों को उपदेश देकर उनका जीवन सुधार सकते हैं। फिर सतगुरु जी ने सिखों को कहा कि यह ब्राह्मण जो अपने धर्म के नियम में पक्के हैं।सम्मान के योग्य हैं।

इस तरह गुरु जी से कुछ विद्वान ब्राह्मणों ने अपनी प्रशंसा तथा मान-सम्मान सुन कर गुरु जी को कहा, गुरु जी। अगर आप देवी सिद्ध कर लें तो फिर युद्धों में सदा ही दुश्मनों पर आपकी विजय हुआ करेगी। आपके आगे कोई भी दुशमन टिक नहीं सकेगा। जब गुरु जी ने पूछा कि क्या आजकल कोई ऐसा पंडित है जो देवी सिद्ध कर सकता है। तो पंडितों ने बताया कि गुरु जी एक पंडित केशो दास काशी में रहता है, वह वेद-मन्त्रों में बहुत विद्वान है: उसको बुला लें, वह देवी सिद्ध कर देगा।

देवी सिद्ध करने का चमत्कार करना

जब ब्रह्मभोज ग्रहण करके पंडित अपने-अपने घरों को चले गए तो उनमें से किसी पंडित ने काशी में केशो पंडित को बता दिया कि श्री गुरु गोविन्द सिंह जी जो इस समय आनन्दपुर रहते हैं, वह देश में से जालिम तथा जुल्म को दूर करना चाहते हैं,

इस कार्य के लिए उनको दैवी शक्ति की जरूरत है। वह किसी ऐसे विद्वान पंडित की खोज में हैं, जो उनको दैवी शक्ति सिद्ध करा दे। उस पंडित को वह मुँह मांगा धन देंगे। ऐसी बातें सुनकर अपनी शोभा तथा आनंदपुर आ गया।

गुरु साहिब जी के साथ सारी बातचीत करके केशो दास ने हवन करने के लिए बहुत सारी सामग्री, घी आदि मंगवा कर नैना देवी के टीले पर हवन कुंड रचा कर वैसाख की पूर्णमाशी सम्वत 1753 को कार्य आरम्भ कर दिया। जब नौ माह दिन प्रतिदिन लगातार पंडित वेद मन्त्र पढ़ता तथा कुंड में आहुतियां डालता रहा, पर कोई देवी प्रकट न हुई, तो एक दिन अमृत समय सारी सामग्री इकट्ठी करके गुरु जी ने अग्नि कुंड में डाल दी। इस अग्नि की बड़ी ऊंची लपटें निकली तथा दूर-दूर तक लोगों ने देखा। यह चमत्कार रचा कर गुरु जी ने श्री साहिब म्यान में से निकाल कर ऊंचो करके हाथ में पकड़ ली तथा देखने वालों को कहा कि यह देवी शक्ति प्रकट हुई है। जिसके जोर से हमने ज़ुल्म तथा जालिम का नाश करना है। यह जिसके हाथ में होगी वही शक्तिशाली होता है, इस लिए यही हमारा शक्ति देवी है, जिसको हमने प्रकट करना था।

उपरोक्त देवी प्रसंग के सम्बध में यह बात भी विशेष वर्णन योग्य है कि कई विद्वानों का निश्चय है कि गुरु जी ने यह कोई चमत्कार नहीं रचा, उनका कहना है कि गुरु जो स्वयं पूर्ण परमेश्वर अवतार थे, उनको अपनी शक्ति देवा को सिद्ध करने की क्या जरुरत था ? उन सज्जनों के कथन अनुसार यह सब ब्राह्मणवाद की कहानी सिखों को गुमराह करने के लिए ब्राह्मण मत के लोगों की तरफ से घड़ी गई है। परन्तु इस बात से लेखक सहमत नहीं हैं।

काशी भेजना। ब्रह्मभोज तथा ब्राह्मणों की परीक्षा, देवी सिद्ध करने का चमत्कार करना, साहिबजादे का जन्म।

भाग छठा

सिख संगतों को बुलावा

देवी का चमत्कार समाप्त करके गुरु जी के दीवान नंद चन्द को आज्ञा देकर देश प्रदेश में सभी सिखों को हुक्मनामे भेजकर वैसाखी के मेले पर पहुंचने की ताकीद कर दी। मेले में अभी डेढ़-दो महीने का समय शेष था, इसलिए हुक्मनामे सभी को ठीक समय पर मिल गए। बहुत गिनती में संगतें वैसाखी से पहले ही आनंदपुर साहिब पहुंच गई। सब के डेरे अलग अलग इलाके के नियत तंबुओं में लगाए गए। सुबह-शाम के दीवान सजते जिसमें हजारों की गिनती में सिख स्त्री-पुरुष हाजिर होते।

गुरु जी ने भण्डारा करना तथा पंडित केशो दास ने रुठना

इन खुशियों भरे वातावरण में गुरु जी ने दीवान नंद चन्द को हुक्म दिया कि संगतों की प्रसन्नता के लिए खीर, पूरी पूड़े आदि का एक बहुत बड़ा भण्डारा तैयार करो तथा सब संगतों को सम्मान के साथ खिला कर तृप्त करो।

जब दीवान नंद चन्द ने आज्ञानुसार सब पकवान तैयार करवा दिए, तो गुरु जी ने रणजीत नगारा बजवा कर सब संगतों को पंक्तियों में बिठा कर लंगर छकाया।

बाद में जब पंडित केशो दास को इस भण्डारे का पता चला तो उसने गुरु जी के पास आकर अपना बहुत गुस्सा प्रगट किया कि आपने मुझे क्यों नहीं बुलाया ? तब गुरु जी ने केशो दास को

आप पंडित जी ! गुस्सा दूर करो।

कपड़े तथा लेफ तलाई अभी भेज दूंगा, यह बात आप पक्की ही समझें।

खत्री तो सभी आपके ही बनाए हुए हैं, (आप की रक्षा के लिए) इन पर कृपा दृष्टि रखो ।।1।।

हमने इनकी (आप की) कृपा से युद्ध जीते हैं, इनकी कृपा से भोजन भण्डारे चलते हैं।

इनकी कृपा से सभी पाप मिट जाते हैं। इनकी कृपा से घर भरे हुए हैं।

इनकी कृपा से ही शस्त्र विद्या प्राप्त की है, इनकी कृपा से ही सारे दुशमन नष्ट हुए हैं।

इनकी कृपा से ही हम सजे हुए हैं, नहीं तो मेरे जैसे करोड़ों गरीब घूम रहे हैं ।।2।।

इनकी सेवा करनी ही हमें भाती है, और किसी की सेवा करनी हमें अच्छी नहीं लगती।

इन को दान देना ही अच्छा है तथा और किसी को दान देना अच्छा नहीं लगता।

इनको दिया हुआ ही आगे जाकर फली भूत होता है तथा संसार में शोभा होती है, और दिया हुआ सब फीका।

मेरा तन, मन, धन तथा सिर तक भी इनका है ।।3।।

गुरु जी का यह उतर सुन कर केशो दास जल भुन कर कोयला हो गया तथा भुन भुनाता हुआ उठ कर घर को चला गया। इस वारे गुरु जी लिखते हैं:—

चटपटाए चित में जरयो, तृण जयो क्रुधत होए।
खोज रोज के होते लग, दयो मिस्र जू रोए ।।4।।

अर्थातः—यह उतर सुनकर अन्दर ही अन्दर क्रोध से जल कर कायला हो गया, रोजी छिन जाने के कारण मिसर (पंडित केशो दास) जी रो पड़े ।

पांच प्यारे चुनने (सीस भेंट लेना)

जऊ तऊ प्रेम खेलण का चाऊ ।
सिरु धरि तली गली मेरी आऊ ।।
इतु मारगि पैरु धरीजै ।।
सिरु दीजै काणि न कीजै ।।

सम्वत 1756 की वैसाखी का दिन आ गया, संगते आप जी के दर्शनार्थ अपनी-अपनी भेटें लेकर हाजरीं भर चुकी थीं, तथा कीर्तन करने वाला जत्था कीर्तन की समाप्ति करके भोग डाल चुका था। गुरु साहिव जी शक्ति रुपी तलवार की धार से अपने सिखों में वीर रस भरने की सोची समझी विधि के अनुसार अपने आसन पर से उठकर स्टेज पर चुपचाप खड़े हो गए। सिखों ने दूर से ही दीवान में वैठे हाथ जोड़ कर नमस्कार की तथा कई जो पीछे वेठे हुए थे, उन्होंने वड़ी श्रद्धा के साथ उठ कर आप जी के दीदार किए तथा नमस्कार किया। अव सिख संगतें आप जी के वचन सुनने के लिए व्याकुल हो रही थीं कि, "चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे प्यारिआ हरि प्रभु मेरा चोजी जीऊ" के वाक्य के अनुसार महा चोजी सतगुरु जी ने अपनी कृपाण म्यान में से निकाल कर अपने सिर से ऊंची कर ली तथा गरज कर वोले "हमें इस समय एक सिख के सिर की जरुरत है। जिस ने सिर भेंट देना हो वह आगे आ जाए"।

इस गरजते वचन के सुनते ही सवके हृदय कांप गए, तथा

डरपोक वेचारे तो उठकर जाने की सोचने लगे। जव तीन वार सतगुरु जी ने यही मांग दोहराई तो दीवान में से उठ कर एक भाई दया राम जी भाई पार के कुल में से डला निवासी ने अपने आप को सिर भेंट देने के लिए गुरु जी के आगे हाजिर कर दिया। गुरु जी उसको वांह से पकड़ कर तंबू में ले गए तथा वाहर आकर जव फिर एक और सिख के सिर की जरुरत है, कहा तो फिर भाई धरमदास जी गांव जटवाड़ा जिला सहारन पुर के जाट उठकर हाजिर हो गए। इसको भी गुरु जी तंबू में ले गए। तीसरी वार जव फिर वाहर आकर एक और सिर की मांग की तो भाई मुहकम चन्द जी छींबे गांव वूड़िआं रियासत पटियाला के निवासी हाजिर हो गए। फिर चौथी वार भाई साहिव चन्द जी गांव नंगल शहीदां जिला हुशियारपुर के नाई तथा पांचवीं वार भाई हिम्मत मल जी संगतपुरा राज पटियाला के झीवर हाजर हो गए।

कुछ समय उपरान्त जव गुरु जी इन पांचों को तंबू से वाहर लेकर आए तो इन्होंने नए वस्त्र तथा शस्त्र सजाए हुए थे। सव सिख संगतें इनको देखकर हैरान रह गई। सतगुरु जी ने इन पांचों को अपने साथ स्टेज पर खड़े करके संगतों को वताया कि यह पांच मेरे प्यारे हैं, जिन्होंने मुझे अपना आप दे दिया है। यह हैं:—

पंच परवाण पंच परधानु।
पंच पावहि दरगहि मानु॥

यह पंथ में प्रधान (मुखिया) तथा दरगाह में परवान होंगे।

——

अमृत संचार

अमृत की सार सोई जाणै
जि अमृत का वापारी जीऊ ।।
(पन्ना 993)

इसके बाद अमृत दाता सतिगुरु जी लोहे के कटोरे में जल तथा पताशे डालकर उसमें बाएं हाथ से खण्डा फेरते रहे तथा मुंह से जपुजी साहिब, जाप, सवईऐ आदि पांच वाणियों का पाठ करते रहे । पाठ के समाप्त होने पर गुरु जी ने इन पांचों प्यारों को वारी वारी से अमृत के पांच घूंट पिलाए, पांच आंखों पर छींटे मारे तथा पांच केसों में डाले । हर एक घूंट के साथ आप 'वाहिगुरु जी का खालसा वाहिगुरु जी की फतहि' बुलाते गए तथा उनसे बुलाते गए ।

सिंह पद धारणे का आदेश

अमृत की मर्यादा पूरा करके फिर गुरु जी ने संगत के प्रति कहा कि आज से इनके नाम सिंह हैं । जैसा कि भाई दया सिंह, भाई धर्म सिंह, भाई हिम्मत सिंह, भाई साहिब सिंह तथा भाई मुहकम सिंह जी । आगे से भी गुरु जी ने कहा, अमृतधारी सिख का नाम सिंह ही होगा ।

पाँच वायदे करने

बाद में गुरु जी ने पांच प्यारों को सम्बोधन करके कहा-अमृत-धारी सिख को पांच वायदे—(क) केश, कंघा, कृपाण, कड़ा तथा

अर्थातः—कोई भी हमारा सिख इन वाणियों के पाठ करने के बगैर प्रसाद न छके, जो ऐसा करेगा वह पतित होकर अपना जीवन निष्फल करेगा ।

चार बुराईयां

अपने सिखों का चरित्र ऊंचा करने वाले सतिगुरु जी ने चार कामों की बुराईयां बताकर इनके करने तथा प्रयोग की सख्त मनाही कर दीं ।

1. पर स्त्री संग—पराई स्त्री के संग करके पुरुष के [illegible] कर्म सभी नष्ट हो जाते हैं । इसकी संगत करनी जहरीले [illegible] की सँगत के समान है ।

यथा—जैसा संगु विसीअर सिउ है रे
तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥
(आसा म: 5)

पराई स्त्री की संगत पुरुष के बल, बुद्धि, धन तथा [illegible] नष्ट कर देती है । पर-स्त्री संग की बुराइयों को गुरु जी ने [illegible] चरित्र 21 में इस तरह प्रकट करके बताया है :—

पातशाही 10 ॥ छंद ॥

1. सुधि जब ते हम धरी वचन गुर दए हमारे ॥
पूत इहै प्रन तोहि प्रान जब लग घट धारे ॥
निज नारी के साथ नेहु तुम नित बढैयहु ॥
पर नारी की सेज भूलि सुपने हूं न जैयहु ॥ 51 ॥

क्योंकि :—

2. पर नारी के भजे *सहस वासव भग पाए ॥
पर नारी के भजे चंद्र कालंक लगाए ॥
पर नारी के हेत सीस †दससीस गवायो ॥

---

* इंदर को गोतम ऋषि के श्राप के कारण [illegible] भगां के निशान पड़ गए । † रावण ने ।

4. केशों की बेअदवी—केशों की उपमा वेदों शास्त्रों में भी लिखी गई है। पुरातन समय के ऋषि मुनि, पीर पैगम्बर, साधु महात्मा तथा राणा महाराणा सभी केशधारी होते थे। तव किसी के केशों को काटना उसका सिर काटना समझा जाता था। सिख को 'सिंह' नाम तभी शोभा देता है अगर वह शेर की तरह ही जटाजूट केशधारी हो। इस लिए सतिगुरु जी ने सिखों को केश कटवाने (मुंडवाने) की सख्त मनाही कर दी।

खालसा

सतिगुरु जी ने सव संगतों के प्रति फरमाया कि जो हमारा सिख इन कुरीतियों से वचेगा तथा उच्च चरित्र का होगा, वह खालसा है, ऐसे खालसे में मेरा, अपना निवास होगा उसको आप मेरा रुप ही जाने। जैसा कि सर्व लोह ग्रंथ में आपजी ने उच्चारण किया है :-

चौपाई:—खालसा मेरो रुप है खास ॥
खालसे महिहुऊ करों निवास ॥
खालसा मेरो मुख है अंगा ॥
खालसा के हऊ वसत सद संगा ॥
खालसा अकाल पुरख की फौज ॥
प्रगटिउ खालसा कालहि मौज ॥
जव लग खालसा रहे निआरा।
तव लग तेज दींओ मैं सारा ॥

इस तरह आप जी ने खालसा की इज्ज़त में वहुत चौपाइयां तथा दोहे उच्चारण किए जो सर्व लोह ग्रन्थ में विद्यमान हैं।

गुरु जी ने अमृत छकाना

तत्पश्चात् आप जी ने अपने पांचों प्यारों को कहा कि खालसा जी ! अब आप अमृत तैयार करके मुझे उसी विधि से पिलाएं जिससे मैंने आपको पिलाया था। आपजी के यह वचन सुनकर पहले तो भाई दया सिंह आदि झिझक गए, पर जब आपजी ने अपनी अभेदता उनमें निश्चय करवाई तो फिर उन्होंने आज्ञा का पालन करके अमृत तैयार करके आपजी को छकाया, तथा आप जी के पवित्र नाम के साथ सिंह पद जोड़ कर गुरु गोविंद राय से गुरु गोबिंद सिंह जी कर दिया।

इस घटना को भाई गुरदास जी दूसरे ने जो गुरु गोविंद सिंह जी से बाद में हुए हैं अपनी वार में इस तरह लिखा है :—

इऊं तीसर पंथ रचाइअन वड सूर गहेला ॥
वाह वाह गोविंद सिंघ आपे गुर चेला ॥16॥

इस तीसरे खालसा पंथ के लक्षण गुर जी ने 33 सवैय्यों में कथन किए हैं :—

जागत जोत जपै निस वासुरु,
एक विना मन नैक न आनै ॥
पूरन प्रेम प्रतीत सजै
व्रत गोर मढी मट भूल न मानै ॥
तीरथ दान दया तप सजम,
एक विना नह इक पछानै ॥
पूरन जोति जगै घट मैं,

तब खालसा ताहि नखालस जानै ॥1॥

यह सारा चमत्कार, तथा आपजी के पवित्र मुंह से अमृत-धारी खालसे की महिमा सुनकर बहुत सारे सिख अमृत छकने के लिए तैयार हो गए। सिखों में यह उत्साह देखकर सतिगुरु जी ने भाई दया सिंह जी आदि पांचं प्यारों को आज्ञा दी कि अमृत के वाटे तैयार करके सभी इच्छावान प्रेमियों को छका दो। सो बेअंत सिख इस समागम में ही अमृत छक कर तैयार-वर-तैयार खालसे सज गए।

इस उत्साह तथा जोश के वातावरण को देखकर सिख आपस में बड़े प्रेम-तथा श्रद्धा से झूम-झूम कर पढ़ रहे थे :—

गुर सिमर मनाई कालका [1]खंडे की वेला ।।
पावहु पाहुल [2] खंडेधार हुई जनम सुहेला ।।
[3]गुर संगति कीनी खालसा मनमुखी दुहेला ।।
वाह वाह गोविंद सिंघ आपे गुर चेला ।। 1 ।।

(वार भाई गुरदास सिंह)

खालसे का शिष्टाचारक बोल

इस तरह खालसा पंथ की साजना करके गुरु साहिब जी ने फरमाया कि जिस तरह और संप्रदाय के प्राणी एक दूसरे को मिलने के वक्त अपने अपने संप्रदाय के संकेत किए हुए वाक्य बोलते हैं, इसी तरह ही खालसा जब एक दूसरे को मिले तो हाथ जोड़कर वाहिगुरु जी का खालसा वाहिगुरु जी की फतह बुलाए। जो सिख पहले फतहे बुलाएगा उसकी तरफ हमारा मुख होगा। जो सिख बाद में बुलाएगा उसकी तरफ दायां कंधा होगा, परन्तु जो पीछे धीरे से बुलाएगा उसकी तरफ हमारा बायां कंधा तथा जो चुप रहेगा उसकी तरफ हमारी पीठ होगी।

[1]अमृत छकाने के समय। [2]खंडे के साथ तैयार किया हुआ। [3]गुरु जी की संगत करने वाले खालसा हो गए तथा विमुख रहने वाले दुःखी हुए।

अमर प्यारे

यह पांच प्यारे जिन्होंने अपना सिर गुरु जी के अर्पण करके गुरु साहिब जी से अमृत छक कर यह सम्मान प्राप्त किया, अमर प्यारे हैं । यह कभी बदले नहीं जा सकते ।

परन्तु आजकल समयानुसार कार्य सिद्ध करने के लिए जो पांच 'प्यारे' बनाए गए हैं, वह कार्य की समाप्ति के अरदासे के उपरांत इस 'प्यारे' पद के अधिकारी नहीं रहते । इस बात को स्पष्ट करने के लिए कार्य साधक नियुक्त किए हुए पांच प्यारों को कार्य के आरम्भ की अरदास में यह स्पष्ट कहना चाहिए कि:—

हे सतिगुरु जी ! ''हम पांच प्यारों के रुप में' हाजर होकर अरदास प्रार्थना करते हैं ।

जो सज्जन यह शब्द अरदास में नहीं कहते वह गल्ती करके भाई दया सिंह जी आदि अमर प्यारों की निरादरी करने के दोषी बनते हैं ।

छटे भाग का ब्यौरा

सिख संगतों को बुलावा, गुरु जी ने भंडारा करना, खालसा पंथ को सजाना, पांच प्यारे अमृत संचार, सिखी रहित तथा कुरीतियां, खालसा, खालसे का शिष्टाचार बोला, अमर प्यारे ।

—0—

* भाग सातवां *

राजा अजमेर चंद ने आनंदपुर आना

अमृत छकाकर सब ऊंच नीच के भेद मिटा कर गुरु जी

ने खालसा पंथ सजाना तथा उसको शस्त्रधारी करने की खबरें जब पहाड़ी राजाओं ने सुनी तो वह बेचैन हो उठे।

कहलूर का राजा भीम चंद संवत् 1749 में मर गया तथा उसके बाद उसका पुत्र अजमेर चंद कहलूर का राजा बना। अजमेर चंद भी अपने पिता की नीति पर ही चलता था तथा गुरु साहिब जी की इस सुधारक लहर को अपने धर्म तथा राज्य के विरुद्ध समझता था; इसको यह सुनकर बड़ी चिंता हुई कि गुरु जी ने अपनी ताकत कायम करने के लिए अमृत तैयार करके एक नई लहर चला ली है, जिस के परिणाम स्वरूप सभी छोटे-बड़े नीची जातों के गुरु जी के श्रद्धालु बनते जा रहे हैं, जिनको गुरु जी शस्त्रधारी करके युद्धों के लिए तैयार कर रहे हैं। गुरु जी की नीति हमारे लिए एक बड़ा भारी खतरा है। नीची जातों को हमारे में बिठा कर हमारा धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं तथा इनसे अपनी ताकत बना कर हमारे राज्य को खतरा पैदा कर रहे हैं। इस लिए इस नई लहर का पता करना चाहिए, तथा इसको रोकने का प्रबंध करना चाहिए। ऐसे विचार सोचकर अजमेर चंद कुछ और साथी राजाओं के साथ मिलकर आनंदपुर आया। आनंदपुर आकर जब उन्होंने सिखों को अपने नए रंग-ढंग से शस्त्र-वस्त्र सजाकर सैनिक रूप में देखा तो अजमेर चंद आदि बड़े हैरान हुए।

उन्होंने जब इस नई लहर चलाने का कारण पूछा तो गुरु जी ने बताया कि हिन्दू जाति में जिस कमजोरी के कारण मुगलों की तरफ से जुल्म हो रहे हैं उसको दूर करने के लिए इस तरह सैनिक्यार लाकर ही जाति का उद्धार तथा जुल्म का नाश हो सकता है। इस लिए आप भी अमृत छक कर तैयार हो जाओ,

इसमे तुम्हारी सैनिक शक्ति मजबूत हो जाएगी, तथा मुगल राज्य के जुल्मों से बचने के लिए आप समर्थ हो जाओगे। हम भी इस कार्य में आपकी यथा योग्य सहायता करेंगे।

गुरु साहिब जी के यह विचार सुनकर पहाड़ी राजाओं के प्रधान अजमेर चंद ने कहा गुरु जी! अगर हमें सिर मुंडाने की, लांगड़ वाली धोती पहननें की तथा देवी, देवता पूजने की छूट दी जाएं तो हम भी अमृत छक लेते हैं। परन्तु गुरु जी ने कहा अमृतधारी सिख को इनमें से किसी बात की भी छूट नहीं दी जा सकती।

गुरु-सिखी शेर का बाणा

गुरु जी ने फरमाया हमने सिखों को जात-पात के बंधनों में से निकालकर यह शेर का बाणा बखशा है। जब तक यह बाणा धारण करेंगे, इनके नजदीक कोई नहीं आएगा, सभी इनसे भय खाएंगे, परन्तु जब यह इस बाणे को त्याग देंगे तो फिर यह अपनी जात बिरादरी में मिलकर नीचे कहलाऐंगे तथा पांव के नीचे मसले जाएँगे।

गुरु साहिब जी की यह उच्चकोटि की बातें सुनकर पहाड़ी राजा कोई उत्तर न दे सके और जै देवा करके अपने स्थानों को चले गए।

सिखों को उपदेश गधे को शेर का बाणा

अपने सिखों को शेर के बाणे की महानता समझानें के लिए एक दिन गुरु जी ने एक शेर की खाल रात के समय एक गधे

पर लगवा दी तथा उसको बाहर खेतों में छोड़ दिया। शेर बना हुआ गधा कई दिन लोगों की फ़सलें नष्ट करता रहा, परन्तु उसको शेर समझ कर उसके नज़दीक कोई न गया। एक दिन और गधों को हिनहिनाते देखकर वह भी मस्ती से ज़ोर-जोर से हिनहिनाने लग गया। उसका हिनहिनाना सुनकर लोग उसके पास चले गए। उसके मालिक ने उसके ऊपर से शेर की खाल उतार कर और गधों के साथ उस पर भारी सामान लाद कर आगे लगा लिया।

इस चमत्कार के बाद गुरु जी ने सिखों को बताया कि आपने देख लिया है कि जब तक इस गधे पर शेर की खाल पड़ी हुई थी तब तक सभी लोग इसको शेर समझकर इस से डरते थे परन्तु जब इससे खाल उतर गई तो इसके साथ गधों जैसा ही बर्ताव होने लग गया है।

सो यह पांच बुराइयों से मनाही तथा अमृत का छकाना आपको शेर का बाणा है। जब तक इसको धारण करोगे आपके नज़दीक कोई नहीं आएगा। सभी आपसे भय करेंगे तथा दूर रहेंगे। परन्तु जब आप सिखी असूलों तथा इस शस्त्र धारी बाणे को त्याग दोगे तो फिर आप अपनी जात बिरादरी में मिल जाओगे तथा वही पहली जात बिरादरी की दोहरी मारें तुम्हें सहनी पड़ेगी।

होला मुहल्ला उत्सव

गुरु जी की तरफ़ से अमृत संचार तथा खालसा पंथ की साजना बहुत दूर-दूर तक मशहूर हो गई। गुरु जी ने इसको और भी उजागर करने के लिए संवत् 1757 को होलीयों पर

आनंदपुर पहुंचने के लिए जहां-तहां सिख संगतों को चिट्ठीयां लिख दी। सभी गुरु के सिख श्रद्धालू दूर-नज़दीक से आनंदपुर आकर इकट्ठे हुए। रोज सुबह-शाम गुरु जी के दीवान सजते, अमृत की महानता तथा शस्त्रों की विशेषता पर सिख संगतों को भाषण दिए जाते।

उधर होलियां मनाने के लिए बच्चे बूढ़े स्त्री पुरुष एक दूसरे पर मिट्टी, गँद तथा रंग डालकर खेलते तथा लड़ते देखकर गुरु जी ने अपने सिखों में से इस लड़ाई झगड़े की मूल रस्म को हटा कर उनकी रुचि को जवान मरदी की तरफ लाने के लिए सभी सिखों को आज्ञा दी कि शस्त्र-वस्त्र सजा कर सब तैयार हो जाओ, खालसा आज होला मनाएगा।

जब शस्त्र-वस्त्र सजाकर सब तैयार हो गए तो पैदल तथा घुड़सवारों को कतारों में खड़ा करके रणजीत नगाड़ा बजाया गया। फिर एक विशेष जगह पर, जो अब होलगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है, दुश्मन का मोर्चा बंधा हुए मान कर उस पर 'सति श्री अकाल' के जयकारे के साथ जोर शोर से हल्ला बोल दिया। वहां पहुंचकर दुश्मन का काल्पनिक मोर्चा तोड़कर फिर नगाड़ों के साथ फतह के जैकारे बुलाते हुए चरण गंगा के किनारे किला फतह गढ़ के पास आकर खुले मैदान में नेजा बाजी घुड़ दौड़ तथा शस्त्र विद्या को खेलें करवाई। इस के बाद गुरु जी ने सब को खुशीयां प्रदान की तथा गुरु के लंगर में महाप्रसाद खुले तौर पर परोसा गया। तब (संवत् 1757) से ही आनंदपुर साहिब में यह मर्यादा चली आ रही है तथा इस समय दूर-दूर से हज़ारों नर-नारी आनंदपुर पहुंच कर इस समागम में शामिल होकर गुरु साहिब की खुशीयां प्राप्त करते हैं।

मसंद शाही की समाप्ति

तीसरे सतिगुरु अमरदास जी ने सिखी के प्रचार के लिए तथा गुरु के लिए निकाली हुई सिखों से कार-भेंट इकट्ठी करके गुरु जी के लंगर के लिए भेजने के लिए बाहर इलाकों में कुछ सिख नियत किए हुए थे। इनको मसंद कहा जाता था। यह मसंद गुरु हरि राए जी, गुरु हरिकृष्ण जी तथा गुरु तेग बहादर जी के समय सिखों के पास कार भेंट लेकर मनमानी करने लग गए थे तथा माया के मान के कारण अपने आप को सिखों का कर्त्ता धर्त्ता समझ कर बहुत अहंकारी हो गए थे।

गरीब सिखों पर यह बड़े अत्याचार करते थे। कार भेंट की माया सिखों से लेकर उसमें थोड़ी बहुत गुरु के लंगर के लिए भेजकर बाकी स्वयं ही मौज उड़ाते थे।

श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने जब अमृत छका कर जब खालसा पंथ सजा लिया तो आपजी के पास इन मसंदो की बुरी करतूतों की बहुत शिकायतें आने लग गई।

फिर इस होले मुहल्ले पर आए लोगों ने इनकी नकल करके गुरु जी को बताई। नकल में उन्होंने बताया कि यह मसंद गुरसिखों को किस तरह तंग करके उनसे मन माने पदार्थ लेते हैं। जो सिख इनको मनमानी कार भेंटा नहीं देता उसको बहुत बुरा भला कहते तथा हर तरह से तंग करते हैं। कार-भेंट लेकर शराब पीते तथा वेश्या गमन करते हैं। मसंदों की बुरी आदतें तथा गुर सिखों की तकलीफों को सुनकर गुरु जी को बड़ा गुस्सा आया। जिससे गुरु जी ने अपने सिखों को इन मसंदों के हाथों छुटकारा दिलाने का पक्का निर्णय कर लिया।

होले के वाद में वैसाखी देखने के लिए वहुत सी संगतें आनंदपुर ही ठहर गई थी। फिर मसंदों को ठीक करने के लिए गुरु जी ने उन मसंदो को भी वुला लिया जो उस समय नहीं आए थे। जव सभी हाज़िर हो गए तो सभी मसंदों की पड़ताल की गई तथा जो चेतू जैसे मसंदों की वहुत शिकायतें थी उनको गुरु जी ने संगतों के सामने ही उनके गुनाहों के अनुसार यथा-योग्य सख्त सज़ाए दी।

कसूरवारों को सज़ाए देकर गुरु जी ने संगतों को हुक्म दे दिया कि आगे से हमारा कोई सिख भी किसी मसंद को गुरु की कार भेंटा न दे। वल्कि हर एक सिख अपनी कार-भेंटा लेकर वैसाखी तथा दिवाली को आनंदपुर आकर भेंट किया करे। अगर कोई सिख स्वयं न आ सके तो अपनी कार-भेंट किसी दूसरे विश्वासनीय सिख के हाथ भेज दिया करो। इस तरह मसंद शाही समाप्त करके गुरु जी ने सिखों को मसंदों से सदा के लिए छुटकारा दिलाया।

खालसा को शस्त्रधारी रहने का आदेश

वाद में गुरु जी जव सिखों के एक भारी इकठ्ठ में केश रखने, कच्छा पहनना, तथा अपने पास कृपाण रखने के लिए कह रहे थे तो दीवान में कुछ दूर से आए सिखों ने प्रार्थना की कि महाराज। आप जी के आदेशानुसार हमने केश रखे हुए हैं तथा कच्छे पहनें हुए हैं परन्तु हमें देखकर हिंदू तथा मुसल-मान मज़ाक करते हैं। कई वार हमें रास्ते में मीरपीट कर लूट भी लेते हैं। अगर कोई अपनी जान-माल के वचाव के लिए आगे से हाथ उठाता है तो उसको जान से ही मार देते हैं। अगर ऐसे ही हमारे साथ होता रहा तो फिर आपजी के दर्शनार्थ

गुरु साहिब जी का यह उत्तर सुनकर रामू ने हाथ जोड़कर कहा गुरु जी मैं इस अपनी लड़की को इसकी छोटी आयु से हीं आप के सपुर्द करके अरदास की हुई है तथा तब से ही लोग इसको माता जी कहकर बुलाते थे, सम्मानते हैं। इस कारण इसका रिश्ता किसी भी और सिख ने नहीं लेना, आप इस को ज़रूर अपना कर अपनी दासी बना लें। सतिगुरु जी ने कहा कि अगर इसने हमारे साथ आत्मिक संबंध रखकर ही जीवन व्यतीत करना हो तो फिर हमें ऐसा करने में कोई इन्कार नहीं है, परन्तु अगर इसे शरारिक संबंध रखने की इच्छा हो तो फिर हम इसे पत्नि नहीं अपना सकते। जब गुरु जी की यह शर्त रामू, उसकी पत्नि तथा श्री साहिब देवां ने मान ली तो आप जी ने श्री साहिब देवां जी के साथ 18 वैशाख वाले दिन विवाह कर लिया। बाद में इनको अमृत छका कर श्री गुरु जी ने आप जी का नाम साहिब कौर रखा तथा कहा कि सारा खालसा पंथ आप जी का पुत्र कहलाएगा यह आपका नादी पुत्र है। जो भी प्राणी अमृत छकेगा, उसकी माता साहिब देवां तथा पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी होंगे। उस दिन से यही रीति चली आ रही है तथा आगे भी जब तक सिख पंथ है, चलती रहेगी।

गुरू का लंगर तथा सदाब्रत

गुरु घर में आए गए यात्री तथा दर्शनाभिलाषी सिख प्रेमियों के लिएप्रसाद आदि का प्रबंध श्री गुरु नानक देव जी के करतारपुर (रावी) निवास समय से ही प्रचलित है। यहां से क्योंकि जरुरतमंदो तथा अनाथों को अन्न पानी का दान होता था, इसलिए इसका नाम लंगर प्रसिद्ध हो गया।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी पिछली अवस्था में लगभग अठारह वर्ष करतारपुर में खेती वाड़ी करके लंगर चलाया। श्री गुरु अंगद साहिब जी ने खडूर साहिब में इसको जारी रखा। सते बलवंड ने लिखा है 'नित रसोई तेरीऐ घिऊ मैदा खाणु।' श्री गुरु अमरदास जी ने इसको गोइंदवाल बहुत महानता दी तथा इसे पशु-पक्षियों तक वितरित किया। आपजी के पक्षपात रहित लगर पर प्रसन्न होकर अकबर बादशाह ने आपजी को झुबाल परगणे की पांच सौ बीघे ज़मीन दे दी थी। यह जागीर बाद में श्री गुरु रामदास साहिब जी के नाम कर दी गई। श्री गुरु रामदास जी ने गुरु का लंगर अमृतसर, जिसका पहला नाम गुरु का चक अथवा रामदास पुर होता था बड़ी अच्छी तरह से चलाया। बाद में श्री गुरु अर्जनदेव जी ने इस को जारी रखा। श्री गुरु हरिगोबिंद जी ने अमृतसर से जाकर कीरतपुर इस लंगर को चलाया। श्री गुरु हरिराए जी तथा गुरु हरिकृष्ण जी के समय भी कीरतपुर ही लंगर चलता रहा। श्री गुरु तेग बहादर जी ने आनन्दपुर लगभग तीन वर्ष ही निवास रखा तथा लंगर चलाया। श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने उन कमज़ोरीयों को दूर करने के लिए जो पिछले कुछ वर्षों से गुरु के लंगर में आ गई थी, इसके प्रबन्धकों लंगर चलाने वालों आदि की देखभाल तथा परीक्षा के लिए अपने विचार बनाए।

लंगरों की परीक्षा

एक दिन गुरु जी एक अतिथि साधू का रुप धारण करके सिखों के लंगरां की परीक्षा लेने लगे। गुरु जी ने बारी-बारी

हर एक लंगर वाले डेरे के सामने जाकर कहा हमें भूख लगी है परशादा दो। आगे से किसी डेरे ने कहा अभी अरदास करने वाली है गुरु साहिब को भोग लगाना है आदि आदि।

किसे ने कहा अभी प्रशादा तैयार नहीं, किसी ने कहा अभी दाल कच्ची है। इस तरह किसी ने कुछ तथा किसी ने कुछ और कहा, गुरु जी को प्रशादा किसी से भी नहीं मिला।

अंत में जब गुरु जी ने भाई नन्द लाल जी के डेरे जाकर प्रशादा मांगा तो भाई जी ने झट से अंदर से जो भी कच्चा पक्का तैयार था, लाकर गुरु जी के आगे रख दिया।

दूसरे दिन दीवान में संगतों को गुरु जी ने लंगरों का सारा विवरण सुनाकर कहा, कि केवल भाई नन्द लाल जी का ही लंगर एसा है यहां से अतिथि को हर समय प्रसाद मिल सकता है। हमें वही सिख प्यारा है जो किसी को भूखा नहीं देख सकता तुरन्त ही उसको प्रशादा छकाता है। गुरु जी के इन वचनों को भाई संतोख सिंह जी इस तरह लिखते हैं:—

नन्द लाल जी हमरो दाता ॥
भगति भाव संतन मन राता ॥
छुधित न देख सकै चित भारो ॥
देग करत मम सोइ पिआरो ॥

(सूरज प्रकाश)

भाई नन्द लाल जी

भाई नन्द लाल मुन्शी छज्जू राम के घर गजनवी शहर में सन् 1633 में पैदा हुए। मुन्शी छज्जू राम सन् 1630 में

हिंदुस्तान से गज़नवी गया तथा अपनी अरवी फारसी की योग्यता के कारण गज़नवी के हाकिम का मीर मुन्शी वन गया। मुंशी छज्जू राम ने नन्द लाल को अरवी फारसी की विद्या दी जिसमें यह विद्वान हो गए। जब बारह वर्ष की आयु में इनको अपने वैष्णव गुरु से वैष्णव धर्म की शिक्षा तथा गल कँठी डालने के लिए इनके पिता मुंशी छज्जू राम ने कहा तो भाई जी ने कहा कि मैं अभी कोई धर्म ग्रहण नहीं करना चाहता, आप ऐसी कोई बात न करें।

सन् 1652 (सम्वत् 1701 विक्रमी) में जब मुंशी छज्जू राम का देहांत हो गया तो नन्द लाल जी उदास होकर गजनवी से आ गए तथा मुलतान शहर दिल्ली दरवाज़े निवास कर लिया। यहां इनकी विद्या तथा अच्छे आचरण के कारण इनके कई सेवक बन गए, जो आप जी को आगा (स्वामी) जो करके संबोधित करते थे। इस बात से ही जिस मुहल्ले में यह रहते थे, उसका नाम 'आगापुर' प्रसिद्ध हो गया।

मुलतान निवास के समय ही इनकी शादी एक सिख घराने की लड़की से हो गई, जिससे इनको गुरसिखी की लग्न लग गई।

मुलतान से भाई जी अमृतसर के, दर्शन करने आए तथा यहां से गुरु जी की महिमा सुनकर आनन्दपुर पहुंच गए। आनन्दपुर गुरु जी के दर्शन करके भाई जी बहुत प्रभावित हुए तथा एक पुस्तक फारसी भाषा में रचकर उसका नाम "बँदगी नामा" रखा तथा सतिगुरु जी को भेंट की। इस पुस्तक को पढ़कर सतिगुरु जी बड़े प्रसन्न हुए तथा कहा कि यह बंदगी नामा नहीं हैं 'ज़िंदगी नामा" है, इसको जो नर-नारी प्रेम से पढ़ेगा, सुनेगा उसका जन्म सफल हो जाएगा।

भाई नन्द लाल जी की रचनाओं की यह पुस्तकें हैः—
1. ज़िंदगीनामा। 2. तौसीकौसना। 3. गंजनामा। 4. जोत विकास। 5. दीवान गोया। 6. इनशा दसतूर। 7. अरजुल इलफाज़। 8. खातमां।
भाई जीं का तखल्लस (कवि छाप) गोया था।

सातवें भाग का ब्यौरा

राजा अजमेर चंद ने आनन्दपुर आना, गुरसिखी शेर का वाणा, गधे को शेर का वाणा (गुरसिखों को उपदेश), होला मुहल्ला उत्सव, मसंद शाही की समाप्ति, खालसे को शस्त्रधारी रहने का हुक्म, गुरु जी का तीसरा विवाह, गुरु का लंगर तथा सदाब्रत, लंगरों की परीक्षा, भाई नन्द लाल जी।

—0—

† भाग आठवां †

नन्द चन्द की मृत्यु

भाई नन्द चन्द गुरु गोविंद सिंह जी का दीवान था। सतिगुरु जी इसके साथ वड़ा प्रेम करते थे तथा इस पर वड़ा भरोसा रखते थे। उन दिनों में गुरवाणी के प्रेमी तथा श्रद्धालू सिख हाथ से गुरवाणी की पोथीयां तथा श्री ग्रन्थ साहिव जी की वाणी लिखकर एक दूसरे को प्रेम स्वरूप भेंट भी करते थे तथा कई वार समर्थ गुरसिखों से इस की भेंट माया भी ले लेते थे।

एक वार उदासी साधू श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की वीड़ बड़ी सुन्दर लिखकर आनन्दपुर गुरु साहिब जी के हस्ताक्षर लेने के लिए लाए। उन्होंने दीवान नन्द चन्द के आगे विनती की कि इन के ऊपर गुरु जी के हस्ताक्षर करवा दो। दीवान नन्द चन्द ने उनको कहा कि आप कुछ दिन ठहर कर आए, जिस दिन गुरु जी को समय मिला मैं हस्ताक्षर करवा कर रखूंगा। परन्तु जब वह साधू दोबारा आए तो दीवान नन्द चंद ने टालमटोल करके उनको ग्रन्थ साहिब देने से इंकार कर दिया।

इस पर साधुओं ने शोर मचाया, बात गुरु जी तक पहुंच गई, गुरु जी ने नन्द चन्द को कहा कि साधुओं का ग्रन्थ उनको दे दो। परन्तु साधुओं को ग्रन्थ साहिब देने की जगह नन्द चंद उस को चोरी लेकर आनँदपुर से भाग कर करतारपुर बाबा धीरमल जी के पास चला गया।

बाबा धीरमल के मसंदों ने जब इस को यहां डेरा लगाते को देखा तो उन्होंने धीरमल को कहा कि गुरु जी! यह गुरु गोबिंद सिंह का बड़ा तथा मुख्य मसँद है तथा यहां आप के पास कोई न कोई शरारत करके आपका नुक्सान करने आया है, इस पर भरोसा करना ठीक नहीं होगा। इसको मरवा देना चाहिए। मसदों ने यह सलाह करके नन्द चंद को धोखे से गोली मार कर मरवा दिया।

नहीं करता। दर्शन करके एक दो शब्दों का पाठ तो अनेकों ने किया है, जिन अनेकों में एक यह दास लेखक भी शामिल है।

राजा आलम तथा बलिया चंद

गुरु जी अपने योद्धाओं के युद्ध के अभ्यास के लिए रणजीत नगाड़ा बजा कर पहाड़ी जंगलों में शिकार के लिए जाते थे। रणजीत नगाड़े की गूंज बंदूकों के गड़गड़ाहट तथा योद्धाओं का चिल्लाना सुनकर पहाड़ी राजा बड़ी ईर्ष्या करने लग गए। उनको डर था कि गुरु जी सैनिक तैयारी करके हमारे से हमारे राज्य छीन लेगे।

इस लिए एक दिन राजा आलम चद तथा वलिआ चन्द ने सलाह की कि अगर किसी दिन इधर हमारे तरफ़ गुरु जी शिकार के लिए आ गए तो उनको घेर कर पकड़ लेंगे। राजाओं की यह सलाह करने के बाद एक दिन गुरु जी जब स्वाभाविक ही उधर शिकार खेलने चले गए तो उन्होंने अपने सैनिकों के साथ गुरु जी के ऊपर हमला कर दिया। गुरु जी के योद्धाओं ने भी भाई उदय सिंह तथा आलम सिंह के नेतृत्व में डट कर मकाबिला किया, जिसमें राजा आलम चंद का एक हाथ आलम सिंह के वार से कट गया तथा राजा वलिआ चंद की टांग जखमी हो गई। इस तरह जब दोनों राजा स्वयं ज़खमी होकर पीछे हट गए, तो उनकी सेना भी कुछ आदमी मरवा कर ज़खमी आदमी छोड़कर भाग गई। गुरु जी के भी कुछ आदमी शहीद सुए। गुरु जी के आदमी जखमियों को संभाल कर विजय के नगाड़े बजाते हुए वापिस आ गए।

पहाड़ी राजाओं ने सूबेदार दिल्ली से मदद मांगनी

इस छोटी सी झड़प में बुरी तरह हार खाकर पहाड़ी राजाओं को बड़ी चिंता लग गई कि गुरु जी ने थोड़े से अपने शिकारियों की मदद से ही हमारे दो राजा ज़ख्मी कर दिए हैं तथा कुछ सैनिक भी मार दिए हैं। इस लिए इनको अगर अभी ही रोकथाम न की गई तो किसी दिन को हमारे राज्य के लिए यह भारी खतरा बन जाएंगे।

दिल्ली से दीनाबेग तथा पैंडा खाँ की चढ़ाई

इस तरह घबरा कर इन्होंने वज़ीर खां सूबा सरहिंद के द्वारा सूबेदार दिल्ली से मदद मांगी। सूबेदार दिल्ली ने इनसे फौज का व्यय लेने पर अपने दो जनरल दीना बेग तथा पैंडा खां को पांच पांच हज़ार सेना देकर भेज दिया।

युद्ध दीना बेग तथा पैंडे खां

दीना बेग तथा पैंडे खां के आने की खबर सुनकर कहिलूर कटोच तथा जसवाल आदि पहाड़ी रियासतों के राजा भी अपनी अपनी सेना लेकर उनको आगे जाकर रोपड़ जा मिले।

इधर खबर मिलने पर गुरु साहिब जी ने भी अपने सिखों को तैयारी का हुक्म दे दिया। जब युद्ध का नरसिंघा तथा रणजीत नगाड़ा बजा तो शूरवीरों को युद्ध करने का जोश आ गया।

सिख शूरवीरों ने, दुश्मन फौजों को सरसा नदी के पार ही जा कर रोक लिया। दोनों तरफ से भयानक युद्ध हुआ जिसमें दुश्मन सेना के बेअंत आदमी मारे गए। पैंडे खां गुरु जी के तीर से मारा गया तथा दीना बेग सख्त घायल होकर युद्ध से भाग गया। इसके भागने से पहाड़ी राजा भी दिल छोड़ कर भाग गए। जीत का मैदान गुरु जी के हाथ आया। सिखों ने भाग कर जाती शाही सेना का खिदराबाद तक पीछा करके बहुत जानी नुक्सान किया तथा बहुत सारा फौजी सामान भी छीन लिया। भाई सतोख सिंह जी इसका हवाला देकर लिखते हैं:—

"रोपर निकट अहै पुर और ॥
गिदराबाद वसै तिस ठौर ॥
तिस ही दिसि दल गयो पलाई ॥
जाहि खालसा पीठ दवाई ॥
(सूरज प्रकाश)

यह यद्ध संवत् 1758 की पहली तिमाही में हुआ।

राजा अजमेर चंद ने आनंदपुर का किराया माँगना

लड़ाई में बहुत बुरी तरह हार खाकर पहाड़ी राजाओं ने गुरु जी को राजा अजमेर चंद से लिखवाया कि आनंदपुर वाली जगह हमारी है। इस लिए आप कृपा करके हमारे पिछले किराए की रकम हमें जल्दी भेज दो नहीं तो हमारी जगह खाली कर दो।

गुरु जी का उत्तर

गुरु जी ने इसके उत्तर में लिखा कि जगह हमारे पिता जी ने आप का मूल्य चुका कर ली है। हम इसके मालिक हैं। आपको हम इसका कोई किराया देने को तैयार नहीं। अगर आप चैन से रहना पसंद करते हैं तो हमसे दुश्मनी छोड़ दो।

पहाड़ी राजाओं की चढ़ाई

गुरु जी का यह उत्तर पढ़कर राजा अजमेर चंद ने अपने साथी राजाओं के साथ सलाह की कि शाही सेना भी गुरु जी का कुछ नही विगाड़ सकी तथा गुरु जी जैसे के तैसे निर्भय होकर अपना काम करते जा रहे हैं। इसलिए शाही सेना का खर्च सहन करने की जगह हमें स्वयं ही सब को इकट्ठा होकर एक वार सांझा हमला करके इस बढ़ रहे डर को दूर करना चाहिए। अगर हमारी सैनिक ताकत कुछ कम हो तो हमें अपनी गुज्जर रियाया को उसके सरदार जमतुल्ला माऊ के द्वारा अपने साथ ले लेना चाहिए।

यह सलाह पक्की करके राजाओं को जमतुल्ला माऊ के द्वारा गुज्जरों तथा रंघड़ों को साथ लेकर माघ संवत् 1758 में आनंदपुर पर चढ़ाई कर दी।

गुरु जी तथा पहाड़ियों की फौजी ताकत

इस समय गुरु जी ने दस हजार योद्धाओं के इलावा पांच सौ मझैलों का जत्था लेकर भाई सालो का पौत्र दुनीचंद

आनंदपुर पहुंच चुका था तथा और भी जिन सिखों ने गुरु साहिब जी पर पहाड़ी राजाओं की चढ़ाई सुनी वह भी शस्त्र धारण करके गुरु जी के पास पहुंचते जाते थे। इस तरह से गुरु जी के पास लगभग ग्यारह हज़ार योद्धा थे।

इस के मुकाबिले तथा बाईधार के राजाओं के पास डेढ़ लाख सेना के इलावा जमतुल्ला माऊ के साथी कई हज़ार गुज्जर तथा रंघड़ भी थे।

गुरु जी की युद्ध की तैयारी

पहाड़ी राजाओं की इतना भारी फौज की चढ़ाई सुनकर गुरु जी इनके मुकाबिले के लिए अपने योद्धाओं को पांच-पांच सौ का जत्था देकर किला फतेहगढ़, लोहगढ़, होलगढ़ तथा केसर गढ़ में तैनात कर दिया तथा बाकी के जवानों को किला आनंद गढ़ में अपनी कमान में रखा।

युद्ध आरंभ

जब पहाड़ी सेना आनंदपुर के नजदीक आ गई तो सिखों ने शहर के बाहर निकल कर सख्त मुकाबिला करके उसके अच्छे दांत खट्टे किए तथा भग दौड़ मचा दी।

इस तरह एक दो दिन की लड़ाई में जब पहाड़ियों की सेना का बहुत नुकसान हो गया तो उन्होंने अपनी और कोई राह न देखकर शहर को घेरा डाल कर बाहर से अनाज आदि आना बन्द कर दिया। इस दशा में सिंह रात को किले में से निकल कर पहाड़ी सेना पर धावा बोल कर मार-काट कर जाते तथा अपने खाने के लिए रसद आदि लूट कर किले में आ जाते। जब

आमने-सामने तथा छापे मार हल्ले गुल्ले का युद्ध लगभग दो माह होता रहा, तो अपना बहुत नुकसान होता देखकर पहाड़ी राजे बहुत घबरा गए, तथा अपनी जीत के लिए कोई और उपाय सोचने लगे।

राजाओं ने मस्त हाथी को आनंदगढ़ किले का दरवाजा तोड़ने के लिए भेजना

पहाड़ी राजाओं ने इकट्ठे होकर यह सलाह की कि गुरु जी के किले का दरवाजा तोड़ कर अन्दर दाखिल हो जाओ तथा सिंघों को मार काट करके गुरु जी को कैदी बनाकर अपने पास ले आएं।

इस सलाह के अनुसार उन्होंने राजा केसर चन्द जसवालीए के एक बड़े हाथी को शराब से मस्त करके उसके माथे पर लोहे के तवे बांध दिए, तथा आनन्दगढ़ किले का दरवाजा टक्कर मार कर तोड़ने के लिए भेज दिया। इसके पीछे बहुत सी सेना तलवारें, बरछियां तथा नेजे आदि शस्त्रों से त्यार करके किले पर कब्जा करने के लिए लगा दी।

भाई बिचित्र सिंह ने टाकरा करना

मस्त हाथी को दरवाजे के सामने आता देखकर गुरु जी ने पहाड़ियों की बुरी नियत को ताड़ कर भाई विचित्र सिंह को किले से बाहर जाकर हाथी को रोकने के लिए आदेश दिया। गुरु जी के चरणों पर माथा टेक कर तथा आपजी से प्रसन्नता की थाप ले कर भाई विचित्र सिंह सति श्री अकाल के जयकारे लगाता हुआ, हाथ में एक बड़ा मजबूत बरछा लेकर किले से बाहर आया

तथा आगे आ रहे मस्त हाथी के माथे में जोर से मारा। भाई साहिब का जोर से लगा हुआ वरछा हाथी के बांधे हुए लोहे के तवों को लगा तथा तवों को तोड़ कर हाथी के सिर में जा चुभा, जिससे हाथी चीखें मारता हुआ पीछे आ रही पहाड़ी सेना को पैरों के नीचे रौंदता हुआ पीछे को भाग गया।

इस तरह पहाड़ी सेना में भगदड़ मची हुई देख कर सिंघों ने किले में से निकल कर तलवारों तथा वरछों के साथ उसका काफी नुक्सान किया, तथा लाशों के ढेर लगा दिए।

केसरी चन्द की मौत

जब राजा केसरी चन्द जसवालिए ने अपनी सेना की यह बुरी हालत देखा तो वह गुस्से से लाल पिला होकर आगे बढ़ा। आगे इसके मुकाबिले के लिए भाई उदय सिंह सामने आया। दोनों योद्धाओं के एक दूसरे पर दोहरे वार हुए, जिसमें केसरी चन्द भाई उदय सिंह के हाथों मारा गया। भाई उदय सिंह ने राजा का सिर नेजे पर टांग कर गुरु जी के आगे लाकर रख दिया।

केसरी चन्द की मौत से पहाड़िओं के दिल बहुत टूट गए। उनका इस तरह हौंसला टूटा देखकर सिंघों ने शेर रूप होकर एक बार ही जोर का हल्ला मारकर मार काट करके दुश्मनों में भगदड़ मचा दी।

दूसरे दिन फिर पहाड़ी राजाओं ने त्यारी करके राजा घुमंड चन्द कटोच (कांगड़ा) के नेतृत्व में सिंघों पर बड़े जोर का हल्ला बोला। सिंघ शूरवीरों ने भी आगे से डट कर मुकाबिला किया। इस दिन दोनों दलों का बहुत जानी नुक्सान हुआ। पहाड़ियों के और जानी तथा माली नुक्सान के इलावा राजा घमंड चन्द भी

मारा गया।

इससे पहाड़ियों के थोड़े वहुत हौंसले भी टूट गए तथा वह रात के अंधेरे में मैदान छोड़कर भाग गए। सिंघ जीत के नगाड़े तथा सति श्री अकाल के जयकारे लगाते हुए अपने शहीदों तथा जखमियों को सम्भाल कर वापिस किले में आ गए।

कड़ाह प्रसादि की लूट

हुक्म पालन का उपदेश

इस जीत की खुशी में गुरु साहिब जी ने लंगर वालों को आदेश दिया कि एक हजार रुपये का कड़ाह प्रसादि करके दीवान में ले आओ। हुक्म अनुसार जब प्रसाद के कई बड़े-2 कढ़ाहे त्यार होकर दीवान में आ गए तो गुरु जी ने सिख संगतों को कहा कि यह प्रसाद हाथ से किसी को नहीं बांटा जाएगा। इस को स्वयं ही जितना कोई लूट कर खा सके खा ले। यह वचन कर के गुरु साहिब जी स्वयं दीवान में से उठ कर अपने महलों में चले गए तथा सिखों ने कड़ाह प्रसाद का लूट मचा दी। जितना जिससे लूट कर खाया गया, उसने खाया तथा कढ़ाहे खाली कर दिए।

भाई राम कौर (बाबा गुरबख्श सिंह) जी गुरु साहिब जी का यह चमत्कार देखकर दीवान में अंडोल बैठे रहे। उन्होंने तथा उनकी संगत ने कड़ाह की लूट में कोई हिस्सा न लिया।

इस बात का गुरु जी को जब पता चला तो गुरु जी ने भाई जी को कहा—भाई जी। आदेश का पालन न अहँकार को दूर करता है, पर आपने हमारे हुक्म का पालन करके अहंकार को सहारा दिया है, सिख को अहंकार को सहारा न लेकर आदेश

का सहारा लेना चाहिए, जिससे लोक परलोक में सहारा मिलता है। गुरु जी का आदेश चाहे कैसा भी हो, सिख को उसका पालन अवश्य करना चाहिए। भाई जी ने अपनी भूल की क्षमा मांगी तथा आगे से यथा हुक्म तथा कर्म करने का प्रण किया।

आठवें भाग का व्यौरा

नन्द चन्द की मौत, राजा वलिया चन्द तथा आलम चन्द की टक्कर, पहाड़ी राजाओं ने सूबा दिल्ली से सहायता मांगनी। दिल्ली से दीना वेग तथा पैंडे खां ने फौज लेकर आना, युद्ध दीना वेग तथा पैंडे खां राजा अजमेर चन्द किलासपुरीए ने गुरु जी से आनन्दपुर का किराया मांगना, पहाड़ी राजाओं की चढ़ाई, गुरु जी तथा पहाड़ियों की सैनिक शक्ति, गुरु जी की युद्ध का त्यारी, युद्ध आरम्भ, आनन्दगढ़ किले का दरवाजा तोड़ने के लिए राजाओं ने मस्त हाथी भेजना, भाई विचित्र सिंह ने मुकाविला करना, केसरी चन्द की मौत कड़ाह प्रसाद की लूट, हुक्म का पालन करने का आदेश।

† भाग नवम †

आनन्दपुर का त्याग

युद्ध में पहाड़ी राजाओं की तरफ से राजा केसरी चन्द, राजा घुमंड चन्द कटोचिया तथा जसतुल्ला भाऊ आदि मुख्य योद्धा तथा अनगिनत सैनिकों के मारे जाने के कारण राजा अजमेर चन्द तथा उसके साथी राजा वहुत चिंतित हुए।

अजमेर चन्द गुरु जी से अनंदपुर की जगह का किराया मांगता था, जब गुरु जी ने कहा कि यह जगह हमारे पिता जी

को खरीदी हुई है, तो फिर अजमेर चन्द और साथी राजाओं की मदद से सेना लेकर गुरु साहिब जी से अनन्दपुर जिसको वह अपनी जगह वताता था, खाली करवाने के लिए आया। परन्तु इस दो महीने के युद्ध से वह कुछ भी न कर सका गुरु जो ने राजाओं की कोई वात भी न मानी।

नवीन खोज के अनुसार यह वात सिद्ध हो चुकी है कि अनंद पुर वाली जगह विलासपुर की विधवा रानी ने माता नानकी जी को पांच सौ रुपये में रजिस्ट्री कर दी थी। तथा वाद में आपाढ़ या अस्सू सम्वत् 1722 में गुरु तेग वहादर जी ने यहां नानकी चक की नींव रखी। कारण यह जगह गुरु जी की ज़र खरीद थी।

राजाओं ने गाय की सौगन्ध खानी

इस तरह राजाओं की कोई वात सिरे न चढ़ सकी तो इन्होंने पम्मे (परमानन्द) पुरोहित की, जो अजमेर चन्द का वजीर था, यह सलाह मान ली कि एक आटे की गाय वनाकर उसके गले के साथ राजा अजमेर चन्द उसके साथी राजाओं की तरफ से यह सौगन्ध पत्र लिखकर वांध दिया जाए कि - 'गुरु जी हमें गाय माता की सौगन्ध है, अगर आप अनन्द पुर खाली करके चले जाओ तो हम आपके साथ कोई छेड़खानी नहीं करेंगे। आपके इस तरह करने से हम यह कहने लायक हो जाएंगे कि हमने गुरु जी से अनन्द पुर छुड़वा लिया है। कुछ दिनों के वाद फिर आप चाहे यहीं आकर वस जाएं"।

पम्मे ने एक आटे की गाय वनाई तथा राजाओं से सौगन्ध पत्र गाय के गले में डाल दिए तो गुरु जो ने हिन्दू धर्म की सवसे वड़ी सौगन्ध पर भरोसा करके अपने सिंघों को अनंदपुर को खाली करने के लिए त्यारी का हुक्म दे दिया। उस दिन तीसरे पहर ही गुरु जी अनंदपुर

खाली करके कीरतपुर से कुछ आगे गांव हरदो नमोह के पास एक ऊंचे टीले पर आकर टिक गए।

निरमोह गढ़ की लड़ाई

जब गुरु जी यहां एक दिन खुली जगह पर दीवान सजा रहे थे तो पहाड़ी राजाओं ने अपने तोपचियों को तोप के गोले से गुरु जी को उड़ा देने के लिए कहा। तोपचियों ने गुरु जी पर निशाना बांध कर गोला मारा जिससे आपजी का सेवक भाई राम सिंह मारा गया, परन्तु गुरु जी बाल बाल बच गए। गुरु जी ने यह घटना देखकर उस समय ही दोनों तोपचियों को अपने तीर के निशाने से मार दिया। इन दोनों की यहां दो कबरें बनी हुई हैं, तथा भाई राम सिंह की शहीदी जगह पर गुरुद्वारा शोभायमान है।

इस घटना के घटने से ही गुरु साहिब जी ने पहाड़ियों की बुरी नियत ताड़ ली कि इन्होंने हमारे साथ धोखा करने के लिए ही गाय की झूठी सौगन्ध खाकर अनदपुर छुड़वाया है। इसलिए आपजी ने अपने बचाव के लिए उस ऊंचे टीले पर गढ़ी (छोटा सा कच्चा किला) बनवाना आरम्भ कर दिया। इसका नाम आपजी ने निरमोह गढ़ रखा, क्योंकि आपजी अनंदपुर का मोह त्याग कर यहां आकर बसे थे।

उधर पहाड़ियों ने वजीर खां सूबा सरहिन्द को चिट्ठी लिखी कि इस समय गुरु गोविन्द सिंह जी मैदान में बैठे हैं, अगर जल्दी सेना लेकर पहुन्च जाओ तो अब आसानी से ही इनको काबू किया जा सकता है। इस समय गुरु जी के पास न कोई किला है, न ही इतनी सेना तथा न ही गोला बारूद का सामान है. इसलिए जल्द पहुन्चो।

पहाड़ी राजाओं की चिट्ठी मिलते ही वजीर खां ने सेना त्यार करके गुरु जी के ऊपर चढ़ाई कर दी। पहाड़ी राजा वजीर खां का आना सुनकर आगे जाकर रोपड़ उससे जा मिले।

निरमोह गढ़ कीरतपुर से रोपड़ को जाते अढ़ाई तीन मील दूर रोपड़ वाली सडक के दाएं हाथ है। रोपड़ से निरमोह गढ़ चौदह-पन्द्रह मील दूर है।

पहाड़ी राजाओं की जब इस बेईमानी का पता चला तो गुरु जी भी इनके मुकाबिले के लिए त्यार हो गए। रणजीत नगाड़ा बजा दिया गया। जिसकी गूंज सुनते ही सिख शूरवीर सति श्री अकाल के जयकारे लगाते हुए शस्त्र पकड़ कर दुशमन के सामने मैदान में कूद पड़े।

दो दिन घमासान युद्ध होता रहा। पहाड़ी राजाओं तथा मुगल फौजों के मुकाबले पर गुरु जी के पास बहुत थोड़े ही सिख रह गए थे; क्योंकि अनंदपुर छोड़ने के समय कई सिघ अपने घरों को चले गए थे तथा कई अभी पूरी रिहायश का प्रबन्ध न होने के कारण इधर उधर बिखरे पड़े थे। इस लिए सिंघों ने चाहे अपनी पूरी ताकत के साथ दुशमन का मुकाबिला करके उसके बहुत दांत खट्टे किए लेकिन फिर भी अपने बचाव के प्रबन्ध के लिए गुरु जी सिघों के साथ सतलुज नदी के पार लांघ गए।

पहाड़ी राजाओं ने इतने में ही अपनी विजय समझ कर वजीर खां सूबा सरहिन्द को सेना का खर्च देकर उसका धन्य वाद किया तथा उसको विदा करके स्वय अपने घरों को वापिस चले गए। इस युद्ध में भाई साहिब चन्द गुरु जी का एक बलवान योद्धा भी शहीद हुआ। यह घटना सम्वत् 1758 के आखिर में घटी।

इस तरह जब तोपची के निशाने से तथा वजीर खां के हमले से बचकर सतगुरु जी दुश्मनों को दबा कर सतलुज से पार हो

गए तो आप जी ने अकाल पुरख के धन्यवाद में कहा:—

सब संकट ते संत बचाए। सब कंटक कंटक जिम घाए।
दास जान मुर करी सहाई। आपू हाथू दै लयो बचाई ॥2॥
(बिचित्र नाटक अध्याय 14वां)

बिसाली के राजा के पास

इस तरह जब गुरु जी सतलुज से पार होकर बिसाली राज्य में चले गए तो वहां का राजा धर्मपाल आप जी को बड़े प्रेम के साथ अपने पास ले गया। राजा ने सतगुरु जी को कई दिन अपने पास रख कर बहुत सेवा की। गुरु जी की इस याद में राजा के महलों में मंजी साहिब गुरुद्वारा बना हुआ है। इसकी सेवा बिसाली के राजा की तरफ से ही होती है। यह स्थान कीरतपुर से उत्तर पश्चिम की ओर पांच मील की दूरी पर है।

बिभौर निवास

बिसाली से एक दिन गुरु जी शिकार खेलते हुए राजा बिभौर की रियासत में चले गए। इस बात का पता जब राजा बिभौर को लगा तो उसने अपने मन्त्री तथा और मुख्य आदमियों के साथ आकर गुरु जी के आगे प्रार्थना की, कि मेरे गृह में चरण डालकर मेरे घर को पवित्र करो। गुरु जी उसका प्रेम तथा श्रद्धा देखकर सेना सहित उसके पास आ गए। गुरु जी ने वहां दरिया सतलुज के किनारे बिभौर गांव से दक्षिण दिशा में एक फर्लांग पर ऊंची खुली तथा सुन्दर जगह देख कर अपना निवास कई महीने रखा। इस याद में यहां आपजी का गुरुद्वारा बिभौर साहिब

हुआ है ! अब इस स्थान की नया नंगल बनने से बहुत रौनक हो गई है। यह नए नंगल की उतर दिशा आबादी के साथ ही मिल गया है।

इस स्थान के पांव की तरफ सतलुज दरिया बहता है जिस का बहुत सुन्दर नजारा देखकर गुरु साहिब जी सवेरे शाम दीवान सजाते थे। लिखा है कि यहां पर ही आपजी ने चौपाई– हमरी करो हाथ द रछा' उच्चारण की थी। वैसाखी को हर वर्ष यहां बहुत भारी मेला लगता है। विभौर के राऊ साहिब भी इसकी सेवा में बहुत हिस्सा लिया करते हैं। विभौर साहिब गुरुद्वारा नंगल रेलवे स्टेशन से दो मील सतलुज के दाएं किनारे पर वद्यमान है।

कलमोट के दोषियों को दंड

इस गाव के निवासियों ने एक वार गुरु साहिब जी के दर्शन करने के लिए आ रही संगत की लूटमार की थी। जब संगत से इस बात का गुरु जी को पता चला तो आपजी ने चढ़ाई करके दोषियों को सख्त सजाएं दी तथा सिघों ने उनका किला तोड कर ढेरी कर दिया। यह गांव गढ़ शंकर से अनँदपुर को आने वाली सड़क पर अनंदपुर से 14-15 मील की दूरी पर है।

वापिस अनंदपुर निवास

इस समय वजीर खां सूबा सरहिन्द तथा अजमेर चन्द (भीम चन्द का लड़का) आदि पहाड़ी राजा दोनों चुप हो कर बैठ चुके थे। कोई भी आंख उठा कर गुरु जी की तरफ देखने की हिम्मत

रहते हैं, वह गुरु के साथ कभी नहीं मिल सकते ।

रवालसर का मेला

राजा अजमेर चन्द के दूत की प्रेरणा तथा सिख सैनिकों की मेला देखने की इच्छा अनुसार गुरु जी सारे परिवार तथा सेना सहित वैसाखी के मेले पर रवालसर गए । जव पम्में परमानन्द) के द्वारा पहाड़ी राजाओं को इस वात का पता चला तो वह भी अपने फौजी डेरे लेकर रवालसर पहुंच गए । तथा पम्मे दूत की मार्फत सव राजाओं ने गुरु जी के साथ मुलाकात की । परस्पर मेल जोल करके राजा वहुत प्रसन्न हुए । यह रवालसर तीर्थ रियासत मण्डी से दस मील पश्चिम की तरफ है ।

गुरु जी मण्डी के राजा के पास

रवालसर के मेले के वाद गुरु जी एक दिन शिकार खेलने गए आप जी को शिकार के समय मण्डी का राजा सिद्ध सेन मिल कर वड़ा प्रसन्न हुआ तथा वड़े प्रेम से आपजी को अपने नगर मण्डी में ले गया । गुरु जी की वड़े प्रेम से सेवा करके राजा ने गुरु जी को वड़ी प्रसन्नता प्राप्त की । आप जी के नाम पर राजा ने यहां किला त्यार करवाया तथा अपनी सच्ची श्रद्धा

अनंदपुर निवास

मण्डी से वापिस अनंदपुर आकर गुरु जी प्रसन्नता पूर्वक चमत्कार करते रहे। जैसा कि कवि संवाद, राजनीति उपदेश शस्त्र परीक्षा तथा सिखी के रहन-सहन की शिक्षा आदि।

बाहरी देशों से दर्शन करने आए सिखों को उपदेश तथा उस समय के चल रहे रस्मों रिवाजों के नुक्सान तथा लाभ बता कर उनको भ्रमों से निकलना आदि।

कुरुक्षेत्र सूर्य ग्रहण तथा चमकौर का पहला युद्ध

इस वर्ष गुरु साहिब जी सिखी प्रचार के लिए सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र चले गये। यहां आपने गुरु नानक साहिब जी के उस स्थान पर जहां निरंकारी जी ने बैठकर नानू पंडित को मांस साग का निर्णय करके समझाया था. तथा नानू पंडित आप जी की शरण आ गया था, एक बड़ा लंगर लगाकर मेले के यात्रियों की रुचि अपनी तरफ करके अपने 'पंथ खालसा' का उद्देश्य बताया कि यह खालसा पंथ दीन दुखियों के जात-अभिमानियों के पैरों के नीचे लताड़े हुओं को ऊंचे करने के लिए सजाया गया है। आओ अमृत छको, पांच ककार की रहत रखो तथा सब के बराबर होकर बैठो। आप जी के इस उपदेश के साथ कई लोग सिख हो गए तथा कईयों ने सिख बनने के प्रण कर लिए।

बाद में आपजी वहां से कुछ घोड़े खरीद कर चमकौर गांव के बड़ते की तरफ आकर ठहरे। तम्बू कनातों में सब सैनिकों के

डेरे लग गए। दूर-नजदीक के गांवों के लोग दर्शन करने के लिए भेटें लेकर आने लग गए। काबुल कंधार की तरफ से अनंद पुर आपजी के पास आ रही संगत भी यहीं मिल गई।

इस तरह जब गुरु जी कुछ समय से चमकौर टिके हुए थे तो अजमेर चंद आदि पहाड़ी राजाओं को जो सदा इस ताड़ में रहते थे कि इनके प्रभाव को खत्म करके इनको अनंदपुर से निकाल दिया जाये। इस समय इनको पता चला कि सूबा लाहौर के दो उमराव सैद बेग तथा अलफ खां पांच-पांच हजार फौज लेकर दिल्ली को जा रहे हैं तो इन्होंने यह अच्छा समय देखकर अपने ऐलची को लुधियाना इन मनसबदारों के पास भेजकर कहा कि इस समय गुरु जी थोड़े से सिखों के साथ चमकौर गांव के मैदान में ठहरे हुए हैं। इनको काबू करना बड़ा आसान काम है। जल्दी इधर आ जाओ।

अजमेर चन्द की तरफ से यह संदेश तथा प्रार्थना पत्र मिलने पर यह दोनों उमराव बहुत खुश हुए कि हमारा यह काम आसान ही हो जाएगा तथा बादशाह से हमें बहुत बड़ा इनाम मिलेगा। हमने उस व्यक्ति को पकड़ कर बादशाह के आगे पेश करना है, जिसने शाही सेना तथा पहाड़ी राजओं को आगे कई बार तौबा बुला दी है। इस तरह यह इस अवसर को गनीमत समझ कर फौज लेकर चमकौर को चल दिए।

इनकी लुधियाना से चढ़ाई की खबर गुरु साहिब जी को मिल गई। आगे से आपजी भी रणजीत नगाड़ा बजाकर टाकरे के लिए त्यार होकर उनको रास्ते में ही जा मिले।

जब दोनों तरफ का टाकरा हुआ तो सेद बेग थोड़े से सिखों को लड़ाई में मरते-मारते देख कर उनकी वीरता पर बड़ा हैरान हुआ। वह आगे होकर स्वयं गुरु जी के साथ युद्ध करने

के लिए सामने आया, परन्तु आपजी के तेज प्रताप को देख कर सैद वेग जहां खड़ा था, वहीं रह गया।

सैद वेग घोड़े से उतरा तथा गुरु जी के चरणों पर सिर रखकर हाथ जोड़ कर कहा, आप पीरों के पीर अल्लाह के नूर हो, मेरा गुनाह माफ करो, मैं शस्त्र लेकर आपके सामने आया हूँ। सैद वेग की अधीनता तथा श्रद्धा देखकर गुरु जी ने उसको शावाश दी तथा कहा, जाओ किसी पर जोर जुल्म न करना तथा खुदा को याद रखना।

गुरु जी से शावाश तथा खुदा को याद रखने का उपदेश लेकर सैद वेग की यह दशा हो गई कि:—

कवीर सतिगुरु सूरमे वाहिआ वानू जू एकू ॥
लागत ही भुई गिरिआ परिआ परा कलेजे छेक ॥174।

उपरान्त सैद वेग अपने साथियों को लेकर सिंघों के साथ आ मिला। जव यह चमत्कार अलफ खां ने देखा तो वह अपने फौजियों को साथ लेकर दिल्ली को चला गया। गुरु साहिव जी खुशी के नगाड़े वजाते हुए वापिस अनंदपुर आ गए।

राजाओं ने ऐलची दिल्ली भेजना

इस तरह अपनी पराजय पर पराजय होती देखकर अजमेर चन्द आदि पहाड़ी राजा यह समझ गए कि वह तथा सूवा सरहिंद गुरु जी को किसी तरह भी जीत नहीं सकेंगे, जिससे उन को सूवा दिल्ली से फौजी मदद लेकर ताकतवर होकर गुरु जी को अनंदपुर से निकाल कर ही दम लेना चाहिए।

इस लिए पहाड़ियों ने एक लम्वा-चौड़ा प्रार्थना पत्र लिख कर अपने ऐलची के हाथ दिल्ली सूबे को भेजा कि वह वादशाह

से आज्ञा लेकर गुरु जी को अनंदपुर से निकालने के लिए एक ताकतवर सेना भेजे ।

शाही सेना के साथ युद्ध अनंदपुर

राजाओं की प्रार्थना स्वीकार करके सूबा दिल्ली ने अपनी सेना देकर एक सरदार सैद खां की कमान के नेतृत्व में 17 फाल्गुन सम्वत् 1759 को राजाओं की सहायता के लिए एक ताकतवर फौज भेजी ।

गुरु जी के पास इस समय केवल पांच सौ शस्त्रधारी त्यार सिंघ थे, तोन सौ के लगभग फौजी सैद बेग के साथी भो, जो गुरु जो की शरग आ चुके थे, गुरु जी की सेना में शामिल थे, कुल आठ सौ योद्धा थे ।

दिल्ली से चलकर सैद खां ने जब थानेसर आकर डेरा डाला तो सूहीए ने गुरु जी की भो अनन्दपुर खबर कर दी । जिससे गुरु जी ने भी त्यारी कर लो ।

अनन्दपुर के नजदीक दोनों सेनाओं का आमने सामने टाकरा हुआ, जिसमें गुरु साहिब जी का श्रद्धालु सैद बेग तथा कुछ सैनिक शहीद हो गए । शाही सेना का भो बहुत जान-माल का नुक्सान हुआ ।

सैद खां यह देखकर बड़ा हैरान हुआ कि गुरु साहिब जी के योद्धाओं में मुसलमान भी शामिल थे । सैद बेग तथा मैमूं खां जैसे माने हुए योद्धा सिखों के आगे होकर शाही सेना तथा पहाड़ियों के साथ लड़े हैं तथा कईयों को मार कर स्वयं भी शहीद हुए हैं । गुरु जी सब के सांझे हैं, इसलिए इनको मुसलमानों का दुश्मन तथा हिन्दुओं का पक्षपाती कहना गलत है ।

उसने जव गुरुजी को युद्ध के मैदान में नीले घोड़े पर शस्त्रों, वस्त्रों से सजा हुआ देखा तो अपने साथियों को कहा कि मुझे खुदा का नूर नजर आ गया है, जो अपने मुरीदों को जिन्दा करने वाला है, मैं इनकी वरावरी किस तरह कर सकता हूं । इन अक्षरों के साथ सैद खां ने घोड़े से उतर कर गुरु जी के चरणों पर शीप निवाया तथा सेना की कमान छोड़कर चला गया ।

रमजान खाँ की मौत

जव सैद खां इस तरह लड़ाई को वीच में ही छोड़कर चला गया तो उसकी जगह रमजान खां ने फौज की कमान सम्भाल ली । रमजान खां ने वड़े क्रोध से आगे होकर वार किये परन्तु गुरु जी के एक तीर से ही इसकी मृत्यु हो गई ।

अनंदपुर की लूट

रमज़ान खां की मौत देखकर शाही तथा पहाड़ी राजाओं की सेनाए एक साथ ही सिंघों पर टूट पड़ी । इस समय सिंघ युद्ध में वहुत शहीद हो चुके थे तथा पीछे थोड़े ही वाकी थे, चाहे उन्होंने डटकर मुकाविला किया, परन्तु वह इतनी वड़ी सेना को न रोक सके । गुरु जी सिंघों के जत्थे के साथ दुश्मन के दलों में से एक तरफ निकलकर वच गए तो शाही सेना ने अनदपुर पर कव्जा करके सभी घर-वार लूट कर पोछे को खुशी-खुशी कूच कर दिया ।

शाही सेना पर सिंघों का हल्ला

अनंदपुर पर पुनः कब्ज़ा

शाही सेना ने जीत की खुशी में वापिस होकर रास्ते में यहां रात

को डेरा डाला था. सिंघों ने एक मशविरा करके वहां पर ही निश्चिन्त सोई हुई सेना को जा दवाया। रात के अंधेरे में आधी सोई तथा आधो जागती शाही सेना घवरा कर इधर उधर भाग गई। सिंघां ने मारकाट भो वहुत को तथा अपना लूटा हुआ माल भी वापिस ले आए दूसरे दिन सुवह ही सिंघों ने फिर अनंदपुर पर कब्जा कर लिया।

भाग नवम् का व्यौरा

अनंदपुर का त्याग, निरमोह गढ़ की लड़ाई, विसाली के राजा के पास, विभौर निवास, कलमोट के दोषियों को दड, वापिस अनंदपुर। राजा अजमेर चन्द ने सुलह करनी. अजमेर चन्द का दूत गुरु जी के पास, सँगतों का आना-जाना। श्रद्धावान तथा अश्रद्धावान सिख, मेला रवालसर। मँडी जाना, अनंदपुर निवास कुरुक्षेत्र का मेला, चमकौर का पहला युद्ध। राजाओं ने ऐलची भेजने शाही सेना की चढ़ाई, युद्ध अनँदपुर, अनंदपुर की लट अनंदपुर पर पुनः कब्जा।

—0—

* भाग दशम *

औरंगजेब को चिट्ठी

जव इन लड़ाइयों तथा शोर शरावे की औरंगजेव को दक्षिण में खवरें मिली तो उसने गुरु साहिव जी को एक चिट्ठी लिखी — "गुरु जी ! मेरा तथा आपका भगवान् को मानने वाला एक ही धर्म है। आप मुझे जरूर मिलो आपको मेरे साथ सुलह-सफाई के साथ रहना चाहिए। मुझे यह वादशाही भगवान् ने दी हुई

है ! आपको मेरा हुक्म मानना चाहिए तथा लड़ाई-झगड़े नहीं करने चाहिए ।"

गुरु जी की तरफ से उत्तर

औरंगजेब की इस चिट्ठी के उत्तर में गुरु जी ने उसको लिखो कि "जिस ईश्वर ने तुझे वादशाही प्रदान की हैं उसी ने ही मुझे भी संसार में भेजा है। तुझे उसने इन्साफ करने तथा प्रजा का पालन करने के लिए भेजा है, परन्तु तुम उसका यह हुक्म भूल गए हो। इसलिए तुम्हारे साथ जो अपने ईश्वर के आदेश को भूला हुआ है, हमारा किस तरह मेल हो सकता है ?

फिर जिन हिंदुओं पर तुम जुलम करते हो, वह भी उस ईश्वर के ही आदमी हैं जिसने तुझे वादशाही दी है। परन्तु उनको ईश्वर के आदमी नहीं समझा जिस से तुम उनके धर्म तथा धर्म स्थानों को निरादरी तथा हानि करने हो ।

सिंघों का गुरु जी के पास इकट्ठे होना

अनंदपुर की लूट तथा जँग की खवरे सुनकर सिंघ शूरवीर दूर-नजदीक से गुरु जी के पास इकट्ठे होने आरंभ हो गए। सिखों को इकट्ठे होते देखकर राजा अजमेर चन्द तथा उनके साथी राजा घवरा गये। उनको डर हो गया कि शायद गुरु जी अपनी फौजी ताकत इकट्ठी करके अनंदपुर की लुट का वदला लेने के लिए उनपर अचानक चढ़ाई करने के लिए तैयारी कर रहे हैं ।

राजाओं की औरंगजेब को चिट्ठी

गुरु जी की तरफ से इस तरह डर अनुभव करके राजा अजमेर

चन्द विलासपुरिये तथा भूप चन्द हडूरिये ने सभी पहाड़ी राजाओं की तरफ से एक पत्र लिखकर अपने विशेष आदमी के हाथ औरंगजेब को दक्षिण की तरफ भेजा।

राजाओं ने लिखा कि गुरु जी अपने पिता श्री गुरु तेग वहादुर जी की शहीदी का वदला लेने के लिए आपके विरुद्ध हमें लड़ाई करने के लिए कहते थे, परन्तु आपके वफादार होने के कारण हमने उनकी मदद करने से इन्कार कर दिया, जिससे गुरु गोविंद सिंह हमारे से दुश्मनी रखते हैं ! रात-दिन अपनी सैनिक शक्ति बनाने में लगे हुए हैं। इससे हमें डर है कि किसी वक्त यह आपके विरुद्ध ही लड़ाई न छेड़ दें। हजूर ! इस का अभी प्रबंध कर लेना अच्छा है, नही तो फिर अराजकता फैल जाएगी तो इनको काबू करना मुश्किल हो जाएगा।

औरंगजेब की सूबों को चिठी

राजाओं के इस पत्र से पहले औरंगजेब को गुरु साहिब जी की तरफ से उसकी चिट्ठी का उत्तर भी पहुंच चुका था जिस से वह आगे ही वड़े गुस्से में था, ऊपर से राजाओं की इस चिट्ठी ने उसको और भी भड़का दिया। इस लिए उसने तुरंत सूबा दिल्ली, सरहिंद तथा लाहौर को हुक्म नामे भेज दिए कि पहाड़ी राजाओं की मदद के लिए उनकी सेनाओं के साथ अपनी सेनाए लेकर आनंदपुर का नामो-निशान मिटा दो तथा गुरु जी को पकड़ कर मेरे पास हाजिर करो।

दक्षिण में औरंगजेब मराठों से तंग आया हुआ था, अब उसको अपने सूबों की रिपोर्टों से तथा अजमेर चन्द पहाड़ी राजाओं के मेजरनामे से पंजाब में गुरु जी की तरफ से वड़ा भारी खतरा महसूस हुआ जिस करके उसने सबों को आदेश दिया कि

इस कार्य में ढील नहीं होनी चाहिए।

सूबों की चढ़ाई

औरंगजेव का यह सख्त हुक्म पहुंचने के साथ ही वजीर खां सूवा सरहिन्द तथा जवरदसत खां सूवा लाहौर ने अपनी सेनाएं अनंदपुर को भेज दी। इन के साथ आगे पहाड़ी राजा भी सेनाएं लेकर मिल गये तथा अनंदपुर पर चढ़ाई कर दी।

इनकी चढ़ाई के उदेश्य सुनकर गुरु जी ने अपनी सेना को पांच जत्थों में बांट दिया:—

1. साहिवजादा अजीत सिंह जी को पांच सौ जवान देकर किला केसगढ़ पर नियत कर दिया।

2. भाई आलम सिंह को पांच सौ के जत्थे के साथ अगमपुर किला होलगढ़ में कायम कर दिया।

3. भाई उदय सिंह को पांच सौ सिंघ शूरवीरों के साथ किला लोहगढ़ भेज दिया।

4. भाई दया सिंह को पांच सौ जवानों के साथ किला फतह गढ़ में भेज दिया।

5. इन चारों स्थानों पर फौज भेजकर वाकी सिंघों की कमान भाई शेर सिंह तथा नाहर सिंह को सौंप कर गुरु जी ने इनको अपने पास अनंदगढ़ किले में ही रख लिया।

अनंदपुर को घेरा

शाही सेनाओं ने पहाड़ी सेनाओं के साथ मिलकर मोर्चे वांध कर अनंदपुर को घेरा डाल दिया। अपने अपने मोर्चों से दोहरी चोटें होने लग पड़ी। जव दाव लगता सिंघ हल्ला-चुल्ला करके

दुशमन पर जा चढ़ते तथा जानी व माली नुक्सान करके वापिस अपने मोर्चों में आ जाते।

जव दुशमन दल ने देखा कि यहां आमने-सामने लड़ाई करनी मुश्किल है क्योंकि वह नीचे मैदान में थे तथा सिंघ ऊंचे पहाड़ी टीले पर कायम थे, तो उन्होंने शहर को पूरी तरह से घेरा डाल दिया तथा सिंघों को अंदर रसद-पानी जाना वंद कर दिया। इसके साथ ही वाहर इलाके में ढिंडोरा पिटवाया कि जो कोई सिंघों के लिए वाहर से राशन-पानी लाएगा, या किसी तरह से उनको अंदर पहुंचाएगा, उसको सजा दी जाएगी।

इस तरह राशन-पानी की जव सिंघों को तंगी होने लगी तो सिंघ रात को ही किले से निकल कर हल्ला-गुल्ला करके रसद इकट्ठी करके ले आते। जो आगे से लड़ता झगड़ता उसको सीधा कर देते। अंत में कितना समय ऐसे गुजर सकता था। सिंघ रसद-पानी के विना वहुत तंग आ गए। वृक्षों के पत्ते खाकर गुजारा करने लगे।

उधर पहाड़ी इलाका भी शाही सेना के इकट्ठ करके उजड़ रहा था। लोग अनाज के अभाव में वहुत दुःखी हो गए थे। शाही सेना को राशन तथा तनखाहें देने के कारण पहाड़ी राजाओं के खजाने भी खाली हो गए थे। इस तरह युद्ध लम्वा होने के कारण पहाड़ी राजा भी वहुत तंग आ गए थे तथा युद्ध को जल्दी खत्म करना चाहते थे।

अजमेर चंद की गुरु जी की तरफ चिट्ठी

राजा अजमेर चंद ने अपना एक आदमी किले के अंदर गुरु जी के पास चिट्ठी देकर भेजा। राजा ने गुरु जी को लिखा कि अगर

आप एक वार अनंदपुर खाली करके चले जाओ तो कुछ समय वाहर व्यतीत करके आप फिर आ सकते हैं। आपके एक वार किला खाली करके चले जाने से हम वादशाह के सामने सच्चे हो जाएंगे कि हमने किला खाली करवा लिया है। नहीं तो इस हालत में बैठे हम और आप दोनों तंग होगें। पहाड़ियों ने गुरु जी को यह भी यकीन दिलाया कि जव आप किला खाली करके जाओगे तो हम आपका कोई नुक्सान नहीं करेंगे। आप बेफिक्र होकर अपना सामना साथ ले जा सकते हैं।

जव इस पत्र का माता जी तथा सिखों को पता चला तो सव ने मिलकर गुरु जी को प्रार्थना की कि भूखों मरने से अव यही अच्छा है कि किला खाली करदें। माता जी तथा सिघों को पहाड़ियों की यह वेईमानी की चाल वताने के लिए गुरु जी ने राजा को संदेश भेजा कि आज रात को हम किला खाली कर देगें।

इकट्ठी सेनाओं की वेईमानी

गुरु जी ने इकट्ठी सेनाओं की ईमानदारी परखने के लिए टूटा फूटा सामान, कूड़ा-करकट तथा मरे हुए घोड़ों की हडीयां छतों में भरकर बैलों तथा घोड़ों पर लाद कर वाहर भेज दी। जिस समय यह सामान वाहर गया तो सम्मिलित फौजों ने घेरा डाल कर सव कुछ लूट लिया। इस तरह गुरु जी ने उन झूठों का झूठा वहाना, जो कहते थे कि हम आपके माल का कोई नुक्सान नहीं करेंगे, खोल दिया।

यह चमत्कार करके गुरु जी ने माता जी तथा सिघों को वताया कि आपने देख लिया है कि पहाड़िए तथा शाही सवे दिल

के खोटे तथा धोखेबाज़ हैं। हमें इनकी किसी बात का भरोसा नहीं करना चाहिए। इससे माता जी तथा सिखों को भी यकीन हो गया तथा वह चुप करके गुरु जी के सहारे बैठ गए।

औरंगजेब की तरफ से चिट्ठी

इतनी देर में औरंगजेब की तरफ से एक चिट्ठी लेकर गुरु जी के पास *ख्वाजा मरदूर आ गया। इसमें औरंगजेब की तरफ से कुरान की कसम खाकर गुरु जी को भरोसा दिया हुआ था कि अगर आप अनंदपुर खाली करके चले जाओ तो आपके साथ कोई छेड़खानी नही करेगा। इस के साथ ही पहाड़ी राजाओं ने भी गाय को सौगंध लिखकर भेजी तथा भरोसा दिलाया कि अगर आप अनंदपुर खाली कर दो तो आप के साथ हमारा कोई वैर नहीं रहेगा, तथा आप अपनी इच्छा से अपना माल-सामान तथा परिवार को लेकर जहां जाना चाहो चले जाए।

---

*ख्वाजा मरदूर का ठीक नाम ख्वाजा खिज़र खां था। यह औरंगज़ेब की सेना का एक सिपाह सलार था। गुरु साहिब जी ने इसका हवाला जफ़रनामा के 34 वें बैंत में दिया है। चमकौर की लड़ाई के समय जहां नाहर खां तथा और शाही सरदारों ने आगे होकर युद्ध करके जाने दी, वहां इसने एक तरफ कायरों की भांति छिप कर जान बचाई। जिससे गुरु जी ने इसको मरदूर लिखा है। दूसरा कारण इसको मरदूर लिखने का यह था कि इसने औरंगजेब के नाम पर उसकी कुरान की सौगंध वाली चिट्ठी लिखकर गुरु जी से धोखे से अनंदपुर खाली करवाया था।

गुरु जी ने अनंदपुर खाली करना

इस समय लगभग सात महीने लड़ाई छिड़ी को हो गए थे। बहुत सारे सिघ कुछ युद्ध में तथा कुछ दुःख भूख से शहीद हो चुके थे। कुछ दुःख भूख से तंग आ कर गुरु जी को बेदावा लिख कर अपने घरों को जा चुके थे। अब पीछे केवल पांच सौ सिंह तथा गुरु साहिब जी का †परिवार ही बाकी अनंदगढ़ के किले में रह गया था।

पहाड़ी राजाओं तथा औरंगजेब की तरफ से खाई हुई सौगंधों पर भरोसा करके सिघों तथा माता जी के ज़ोर देने के कारण गुरु साहिब जी ने आनंदपुर खाली करने की तैयारी कर ली।

सबसे पहले आप जी ने भाई गुरबख्श उदासी साधू को गुरुद्वारा श्री सीस गंज आदि की सेवा संभाल के लिए नियत कर दिया. फिर आपजी ने अपना कीमती सामान साड़-फूंक दिया तथा कुछ जो ठीक समझा ज़मीन में दबा दिया।

बाद में आपजी ने 6 पोह की रात संवत् 1761 को पहर रात गई सिघों को टोलियां बना कर जत्थों में कीरतपुर की तरफ भेजना आरंभ कर दिया। जब यह कुशल पूर्वक दुश्मन फौजों में से निकल गए तो आधी रात के लगभग आप जी ने माता गुजरी जी. चारों साहिबज़ादे तथा दोनों महिलों की सिघों के एक

---

† माता गुजरी जी। महिल—श्री माता सुन्दरी जी, माता साहिब कौर जी साहिबजादे—साहिब अजीत सिंह जी, साहिब जुझार सिंह जी, साहिब जोरावर सिंह जी तथा साहिब फतिह सिंह जी।

तकड़े पहरे में भेज दिया। स्वयं गुरु जी सिघों के एक जत्थे के साथ अरदास करके अपने पारवार के पीछे चल दिए।

तुर्क सेना का हमला

जव तक गुरु साहिव जी किले में स्वयं वैठे रहे थे तव तक ढोल तथा नगाड़ों का खड़ाक कराते रहे थे, जिससे दुश्मनों को यह भरोसा वना रहा कि अभी किला खाली नहीं हुआ परन्तु गुरु साहिव जी के चले जाने के वाद जव चुपचाप हो गई तो राजा अजमेर चंद कहलूरिये तथा सरहिंद क सूबे वज़ीर खा ने सलाह करके अपने फौजी आदमियों के साथ गुरु जी का पीछा करके सिघों को अनंदपुर से 10-11 मील क. दूरी पर सरसा नदी के नज़दीक जा घेरा।

सरसा नदी एक वरसाती नाला है, जव पहाड़ों पर वरसात होती है तो इसमें वड़े जोर की वाढ़ आ जाती है। सात पोह को भी यहीं वात वनी हुई थी, वारिश के कारण सरसा वड़े जोर से चढ़ी हुई थी। दुश्मनों को पीछा करके आ रहे देखकर गुरु जी ने सिघों का एक जत्था उनको नदी के पीछे ही रोकने के लिए खड़ा कर दिया। वाकी सिघों को अपने साथ सरसा पार करने के लिए आज्ञा दे दी।

सिघ भूखे प्यासे तथा पोह की सर्दी से ठिठुरे हुए थ, पीछे से दुश्मन की सेनाए मारोमार करती नजदीक पहुच गई थी, जिससे सरसा को पार करने के लिए सिघों में अफ़रा-तफ़री पड़ गई। कुछ घुड़सवार तथा हिम्मत वाले पार हो गए, परन्तु वहलीन वेचारे ठंडे पानी की सर्दी तथा सरसा के तेज नाले में वह गए। कुछ दुश्मन की सेना का सामना करते हुए शहीद हुए।

इस अफरा तफरी में माता गुजरी जी तथा छोटे दो साहिब-जादे जोरावर सिंह जी तथा फतह सिंह जी एक सेवक के साथ भूल कर एक तरफ निकल गए वहां से उनको खेड़ी का गंगू ब्राह्मण जो कुछ देर पहले गुरु जी का रसोइया होता था. धोखे से अपने घर खेड़ी ले गया तथा धन के लालच के कारण इनको मुरिंडे के हाकिम के द्वारा सरहिंद के सूबे के पास पहुँचा दिया। सूबे ने साहिबजादों को 13 पोह सवत् 1761 को नींव में चिनवा कर शहीद कर दिया तथा माता गुजरी जी इन मासूम पौत्रों के गम में शरीर त्याग कर शहीद हो गए।

गुरु जी ने रोपड़ आकर माता सुन्दरी जी तथा माता साहिब देवां जी को भाई मनी सिंह जी के साथ दिल्ली भेज दिया वहां उन्होंने कूचा दिलवाली सिंघ में अजमेरी दरवाजे के अंदर जाकर निवास किया।

रोपड़ के पास फिर दुश्मनों के साथ सिंघों का सामना हुआ। शाही सेना का बहुत नुकसान करके कुछ सिंघ भी शहीद हुए। वहां से गुरु साहिब जी दुश्मनों से बच-बचा कर दूरे माजरे जा ठहरे तथा वहां से आगे सात पोह की शाम को चमकौर साहिब पहुंच गए।

भाग दस्स का ब्यौरा

गुरु जी तरफ औरंगजेब की चिट्ठी। गुरु जी की तरफ से उत्तर। सिंघों का गुरु जी के पास इकट्ठे होना राजाओं की औरंगजेब, की चिट्ठी, औरंगजेब की सूबों को चिट्ठी. सूबों की चढ़ाई. अनंदपुर को घेरा, अजमेर चन्द की गुरु जी की तरफ चिट्ठी। सम्मिलित सेनाओं की बेईमानी, औरंगजेब की तरफ से

चिट्ठी। गुरु जी ने अनंदपुर खाली करना. तुर्क सेना का हमला, सरसा नदी पर सिंघों का जाना तथा माली नुक्सान।

– 0 –

‡ भाग ग्याराह ‡

चमकौर की गढ़ी में

चमकौर से लुधयाना के रास्ते गुरु जी का विचार मालवा को निकल जाने का था, परन्तु जब चमकौर के नज़दीक जाकर आपजी को पता चला कि दिल्ली का सूबा 10 हजार सेना लेकर नज़दीक ही आ रहा है, तो आपजी ने चमकौर ही ठहरने का फैसला कर लिया।

इस गांव में ऊंची सी जगह एक जगत सिंघ जाट की हवेली थी. गुरु जी ने दुश्मन के वार से बचने के लिए 40 सिंघों के साथ उसमें जा डेरा डाला। उस समय जबकि अराजकता के समय लोगों को हर समय खतरा बना रहता था लोग अपने रहने के लिए कच्चे कोठे बना लेते थे। सात पोह की रात को गुरु जी थके-मांदे चालीस सिंघ तथा दो बड़े साहिबजादों के साथ इस गढ़ी में दाखिल हुए, गांव वालों से राशन पानी लेकर लंगर तैयार करके छका।

दुश्मन दल जो रोह लेकर पीछे आ रहा था, उसको जब पता चल गया कि गुरु जी थोड़े से सिंघों के साथ इस गांव में ठहरे हैं, तो वह भी गांव को घेरा डाल कर दूर-दूर तक बैठ गए। एक तरफ दिल्ली से नई आई दस हज़ार सेना तथा दूसरी तरफ पहाड़ी राजाओं तथा सूबा सरहिंद वजीर खां तथा लाहौर

के फौजी सिपाही ।

गढ़ी में युद्ध

आठ पोह को सुवह-सुवह ही दुश्मनों ने गोलीयां चलानी शुरु कर दीं। गुरु जी ने गढ़ी को उंचा अटारा से दुश्मन सेनाओं को देखकर गढ़ी के चारों तरफ ऊंची दीवारों के मोर्चों में आठ-आठ सिंघों को तीर-गोलीयों का सामान देकर विठा दिया। दो सिंघो को गढ़ी के दरवाजो पर कायम कर दिया। गुरु जी स्वयं दोनों साहिवजादे तथा वाकी पांच छः सिंघ ऊंची अटारी में मोर्चा संभाल कर बैठ गए।

दोहरी बंदूको तथा तीरों की एक दूसरे पर वर्षा होने लगी। दो चार घड़ी वाद ख्वाजा मरदूर ने गढ़ी पर हमला करके गुरु जी को पकड़ने का आदेश दे दिया। दुश्मन दल के जवान जव अली अली करके गढ़ी पर हमला करने के लिए आगे आए तो गुरु जी तथा सिंघो ने तीरों तथा गोलियों की ऐसी वर्षा की कि दुश्मन वड़ी भारी संख्या में ढेर हो गए। फिर जव ख्वाजा मरदूर ने अपने जवानों को दीवारो पर चढ़ाने का यत्न किया तो जो भी दीवार को हाथ डालता था वही सिंघो के तीर से छटपटाता नीचे आ गिरता। इसका वर्णन गुरु जी ने औरंगजेव को लिखे ज़फरनामा के 26 से 45 बैतों में किया है‡।

इस तरह दुश्मनों के माने हुए योद्धा जैसा कि नाहर खां अफ़गान खां आदि तथा बेअंत और सिपाही गुरु जी तथा सिंघों की गोलियों तथा तीरों से मारे गए। दिन भी ढलने लगा तथा सिंघो के पास युद्ध का सामान भी थोड़ा ही रह गया। अव दुश्मनऔरगर्म होकर गढ़ी पर कब्जा करने के यत्न करने लगा। यह दशा

‡ पूरा वर्णन ज़फरनामा के शीर्षक से पढ़े।

देखकर गुरु जी ने सिंघों को कहा कि गढ़ी के घेरे में आकर निहत्थे होकर मर जाने से दुश्मन को मार कर मर जाना बहुत अच्छा है। इस विचार के अनुसार गुरु जी ने पांच पांच सिंघों को तलवारों, नेजों से तैयार करके किले से बाहर जाकर दुश्मन के साथ लड़ने के लिए आदेश दिया। सिंघों के जत्थे सैंकड़ों दुश्मनों को मार कर शहीद होते गए। एक जत्थे के साथ बाबा अजीत सिंह जी तथा दूसरे के साथ बाबा जुझार सिंह जी जिनकी आयु इस वक्त केवल 19 तथा 15 वर्ष की थी, गुरु पिता जी से आज्ञा लेकर दुश्मन का टाकरा करके अनेकों को मौत के घाट उतार कर शहीद हुए।

(देखें बैंत नं: 78)

इस तरह घमासान युद्ध करते रात पड़ गई, गुरु जी के पास बाकी पांच सिंघ—भाई दया सिँह, भाई धर्म सिँह, भाई मान सिंह, भाई संगत सिंह तथा भाई संत सिँह ही रह गए।

इस समय गुरु जी के पास न ही कोई युद्ध-शस्त्र रह गया था तथा न ही युद्ध करने वाले सिँघ। दुश्मन के हजारों में से भी कई हजार बाकी थे। युद्ध का सामान भी उनके पास बहुत था। इस दशा में दूसरे दिन टाकरा करने के लिए पांचों सिंघों ने अपना और कोई रास्ता न देखकर एक सलाह होकर गुरु जी को प्रार्थना की कि आप इस रात के अंधेरे में यहां से बच कर निकल जाओ अगर आप बच जाएंगे तो खालसा पंथ भी बच जाएगा। आप ही पंथ को चढ़ती कलाओं में ले जा सकते हैं। जब गुरु जी ने सिंघों की यह विनती मानने से इंकार कर दिया तो सिंघों ने कहा कि हम पांच प्यारों के रुप में आपको आदेश देते हैं कि आप जी पंथ की खातिर यहां से निकल जाएं।

सतिगुरु जी ने पांच सिंघों की सलाह को मानकर अपने वस्त्र तथा जिगाह कलगी भाई संत सिंघ जी को पहना दी तथा

सव वातों का निर्णय करके भाई संत सिंह तथा संगत सिंह सहीदियां प्राप्त करने के लिए गढ़ी में ही ठहर गए तथा गुरु जी के साथ उनकी रक्षा के लिए भाई दया सिंह, भाई धर्म सिँह तथा भाई मान सिंह को तैयार कर दिया।

गढ़ी में से निकलना

सारी योजना वनाकर सतिगुरु जी ने पहले गढ़ी के पिछली तरफ एक खिड़की में से निकल कर भाई दया सिंह तथा भाई धर्म सिंह को दुश्मनों से सुरक्षित रास्ते का पता लगाने के लिए भेजा। जव इन्हों ने दुश्मनों से निकलकर हाथों की ताली वजा कर संकेत दे दिया कि इधर आ जाओ रास्ता साफ है। तव गुरु जी भाई मान सिंह को साथ लेकर ताली की दिशा में चले गए। इस समय 8 पोह की अंधेरी तथा ठंडी रात का समय था। दुश्मन थोड़े से कैम्पों में बेसुध होकर सोए पड़े थे। गुरु जी ने अपने साथी सिंघों को समझाया कि यहां से आगे अकेले-अकेले हो कर निकल चलो। अगर आपस में अंधेरे के कारण मेल न हो सके तो वह उत्तर की तरफ जो दिन का तारा दिख रहा है, उसकी सेध को तरफ माछीवाड़ा पहुंच जाना।

वाद में इस घुप अंधेरे में दुश्मन दलों के पहरेदारों से वच कर निकलने के लिए तीनों सिंघ ही गुरु जी से अलग हो गए। गुरु जी अकेले ही रात के अंधेरे तथा झाड़ी वूटिओं में से निकलते हुए आठ नौ मील सफर तय कर गए। इस समय अव पौ फट चुकी थी, इस कारण दिन के समय सफर करना वड़ा खतरनाक था, क्योंकि सारे इलाके में ही खवरे पहुंच चुकी थी कि शाही फौजे गुरु जी को पकड़ने के लिए उनके पीछे लगीं हुई हैं। सो इसलिए आपजी थके मांदे गांव चहड़वाल के नजदीक जंगल

में घने झाड़ों की ओट में लेट गए तथा पिछली बीती पर विचार करके अकाल पुरुष के धन्यवाद में यह शब्द उच्चारण किया :—

खिआल पातशाही 10 ॥
मित्र पिआरे नूं हाल मुरीदां का कहनां ।
तुध बिन रोग रजाइआं दा उढण,
नाग निवासा दे रहिणा ।
सूल सुराही खंजरु पिआला,
बिंग कसाईयां दा सहिणा ।
यारड़े दा सानूं सथरु चंगा,
भठु खेड़िआं दा रहणा ॥ 1 ॥

इस स्थान पर गुरुद्वारा झाड़ साहिब शोभायमान है ।

फिर यहां से उठकर गुरु जी आठ सौ मील चलकर माछीवाड़ा के बाहर गुलाबे मसंद के बाग में जा विराजे । यहीं पर ही आपको भाई दया सिंह आदि आकर मिल गए । बाग में आपको गुलाबे के नौकर ने देखकर गुलाबे को जा बताया कि आपके बाग में कोई आपके गुरु जी जैसा सिंघ घने वृक्षों के नीचे सोया पड़ा है । गुलाबे ने बाग में आकर जब गुरु जी तथा तीनों सिखों को देखा तो उसने आपजी की हर तरह प्रसाद आदि की सेवा की । गुरु जी 9 पोह की रात के पिछले पहर गुलाबे के बाग में पहुंचे थे तथा 10 पोह का दिन यहीं बाग में ही काटा ।

पीछे चमकौर में क्या बीता ?

गुरु साहिब जी तीन सिंघों के साथ गढ़ी में से निकलने से पहले भाई संत सिंह औरों को यह पक्की कर आए थे कि आप धौंसे पर चोट लगाते रहना, जिससे दुश्मनों को यह

ख्याल वना रहेगा कि सिंघ अभी अन्दर ही हैं ।

भाई संत सिह जी को अपनी कलगी तथा पोशाक पहनाने का भी गुरु जी का यही उदेश्य था कि जव भाई संत सिह जी शहीद हो जाएंगे, जो कि अवश्य है, तो शाही सेना तथा पहाड़िए यह समझ कर कि गुरु जी शहीद हो गए हैं, पीछा करना छोड़ कर ढीले हो जाएंगे। उनके इस ढीले होने के समय गुरु जी का अपनी रक्षा के कोई और जरुरी प्रवंध करने का समय मिल जाएगा। 9 पोह की सुवह को दुश्मन दलों ने गढ़ी पर हमला कर दिया, जिसमें भाई संत सिंह जी शूरवीरों की भांति जूझते शहीद हुए ।

जव गढ़ी के अंदर विल्कुल चुपचाप हो गई, तीर गोली आदि चलके का या नगाड़ा आदि वजने का कोई खड़ाक न हुआ तो मुगल फौजें अधाधुंध गढ़ी के अन्दर घुस गई। जव उन्होंने अंदर शहीद हुए सिंघ देखे तो भाई संत सिंह को कलगी जिगाह लगी हुई देखकर उनको गुरु गोविंद सिंह ही समझ कर वड़ी खुशियां मनाई। औरंगजेव से इनाम लेने के ख्याल से ख्वाजा मरदूर फूला नहीं समाता था। परन्तु जव खुशियां मनाकर ठडे होकर बैठ गए तो ख्वाजा मरदूर ने सूवा सरहिन्द को कहा इस की अच्छी तरह किसी उस आदमी से शिनाखत कराओ, जिसने गुरु जी को अच्छी तरह देखा हो. सो जव वजीर खां ने इस तरह शिनाखत करवाई तो पता चला कि यह गुरु गोविंद सिंह जी नहीं हैं ।

फिर उन्होंने सारे शहीद सिंघों के शरीर इकट्ठे करके एक-एक को शिनाख़त कराई तथा यह निश्चय करके कि गुरु जी गढ़ी से वचकर निकल गए हैं सारे इलाके में अपने आदमी भेज दिए कि जो कोई गुरु जी को जिन्दा पकड़ कर या शहीद करके उन

का सिर लाएगा उसको वहुत इनाम दिया जाएगा। इस तरह गुरु जी की जगह-जगह खोज शुरु हो गई।

उच्च के पीर का चमत्कार

इस माछीवाड़े गांव के रहने वाले दो भाई नवी खां गनी खां पठान घोड़ों के सौदागर थे, तथा यह अपने घोड़े कई वार गुरु जी के पास वेचने जाया करते थे, उनको जव गुरु जी के माछीवाड़ा पहुंचने का पता चला तो वह दोनों भाई वड़े प्रेम तथा श्रद्धा के साथ गुलावे के वाग में गुरु जी के पास आए। उन्होंने सूवा सरहिंद तथा सारी सेना की तरफ से आपजी के ऊपर की गई ज्यादतियों तथा सव परिवार तथा घर-वाहर वर्वाद हो जाने का अफसोस करके विनती की कि हमारे योग्य कोई सेवा हो तो आदेश दें, हम हाजिर हैं। गुरु जी ने फरमाया, अगर सच्चे दिल से आप हमारी कोई सेवा करनी चाहते हैं तो हमें इस इलाके से मालवा देश पहुंचा दो, इस समय यही आपकी वड़ी सेवा है।

माछीवाड़ा से पिआना

उन पठान भाइयों ने गुरु जी। इस इलाके में चप्पा चप्पा जगह पर शाही दस्ते आपकी खोज में भागे फिर रहे हैं, इनमें से निकल कर मालवा जाने का एक ही तरीका है कि आप जी उच्च के पीर वन जाओ तथा हम आपके मुरीद वन कर आप का पलंग उठाकर शाही फौजों में से निकल जाएं, जव भाई दया सिंह तथा औरों के साथ सलाह करके गुरु जी ऐसा करना मान गए तो नवी खां गनी खां ने गुरु जी तथा तीनों सिंघों के लिए नीला खद्दर रंग कर उसके लंवे चोले सिलवा कर गले डाल दिए। केश पीछे पीठ पर रखकर सिर पर नीली पगड़ीयां वांध

दी। सतिगुरु जी को चारपाई पर विठा कर ऊपर डंडे बांध कर कपड़ा डाल दिया। चारपाई के आगे के पावों को नवी खां गनी खां ने उठा लिया तथा पिछले दो पावों को भाई धर्म सिंह ने तथा मान सिंह ने कंधों पर रख लिया। भाई दया सिंह मोर के पंखों का मुट्ठा पकड़कर पीछे चौर करने लग गए। इस तरह पीरों के पीर गुरु जी आज 11 पोह को उच्च के पीर* के रुप में माछीवाड़ा से मालवा को चल पड़े।

इस भेष तथा ढंग से गुरु जी लल्ल गांव से कानेच तथा यहां हेहर गांव महंत कृपाल दास के पास पहुंचे। महंत के पास एक दिन विश्राम करके गांव लमा तथा जटपुरा के रास्ते गुरु जी गांव रायकोट जो लुधयाना से 27 मील दक्षिण में है, पहुंचे।

---

*उच्च के पीरों के केश खुले गले में पीछे को पीठ पर लटकाए हुए होते थे गले में लम्बा नीला चोला तथा सिर पर नीली पगड़ी होती है। यह भेष सतिगुरु जी ने इस लिए धारण किया था क्योंकि इसके धारण करने से सिखी रहत में कोई अंतर नहीं आता था। इन पीरों को सम्मान के साथ पलंग पर विठा कर एक गांव के मुरीद दूसरे मुरीदों के गांव तक उठा कर ले जाते थे। यह तव का आम रिवाज था। उच्च वहावलपुर रियासत में एक गांव है जो मुस्लमान पीरों की रिहायश का एक प्रसिद्ध स्थान है। मुस्लमान इसको 'उच्च' शरीफ समझते हैं।

0 रायकोट गांव जिला लुधियाना से 27 मील तहसील जगराओं में है। यह गांव राय अहमद ने सन् 1648 में वसाया था। राय अहमद का वड़ा तुलसी राम राजपूत मुस्लमान हो गया था। जिस का नाम सेर चक्कू प्रसिद्ध हुआ। अहमद ने भाई कमाल दीन ने जगराओं नगर वसाया था। इसके पुत्र कल्ला राय

(शेष देखो पृष्ट 410 के नीचे)

राय कल्ले के पास

गुरु साहिब जी नीले बाणें में ही गांव रायकोट से उत्तर पश्चिम एक मील बाहर वृक्षों की ओट में एक पोखर के किनारे एक शीषम के नीचे विराज गए। एक चरवाहे के द्वारा जब राय कल्ला को पता चला तो वह गुरु जी के पास आया, दर्शन करके जब उसको भाई दया सिंह जी से पिछली सारी बात का पता चला तो उसने बहुत अफसोस ज़ाहिर किया तथा प्रार्थना की कि उसके योग्य कोई सेवा हो तो वह तन-मन से हाज़िर है।

राय कल्ला का प्रेम तथा श्रद्धा देखकर सतिगुरु जी ने उसको कहा कि राय कल्ला। अपना कोई विश्वासनीय आदमी भेज कर सरहिंद से छोटे साहिबजादे तथा माता जी का पता जल्दी मंगवा दे, इस समय यही तुम्हारा बड़ी सेवा है।

ने गुरु जी की बड़ी सेवा की तथा अपने चरवाहे माही को सरहिंद भेजकर छोटे साहिबजादे ज़ोरावर सिंह जी तथा फतह सिंह जी तथा माता गुजरी जी की खबर मंगवा कर दी। गुरु जी ने इस की सेवा पर प्रसन्न होकर इसको एक तलवार बख्शी तथा कहा कि इसको जब तक सम्मान से रखोगे, आपका राज्य-भाग्य बढ़ेगा परन्तु जब इस का तिरस्कार करोगे तो तुम्हारा पतन हो जाएगा।

इतिहास में लिखा है कि राय कल्ला तथा उसके पुत्र ने इस को बड़े सम्मान से रखा, परन्तु उसके पौत्र ने एक दिन शिकार पर जाने के समय दशमेश जी की यह तलवार पहन ली। शिकार के समय ही उस दिन वह घोड़े से गिर गया तथा उस तलवार से जख्मी होकर मर गया।

माही ने सरहिंद जाना

माही का असली नाम तो नूरा था, परन्तु राय कल्ला की भैंसों का चरवाहा होने के कारण इसको "माही" कहते थे। राय कल्ला का यह बड़ा विश्वसनीय तथा साधारण आदमी था। राय ने इसको साहिबजादों की खबर लेने के लिए भेज दिया। माही सरहिंद से साहिबजादों तथा माता जी की खबर लेकर दूसरे दिन शाम को आ गया।

पाठकगण यह तो पीछे पढ़ ही आए हैं कि सरसा नदी से माता गुजरी जी दो छोटे साहिबजादों तथा एक नौकर के साथ गुरु जी से बिछुड़ गए थे तथा गंगू ब्राह्मण उनको अपने गांव खेड़ी ले गया था। दूसरे दिन 8 पोह को गंगू ने मुरिंडे के हाकिम को खबर करके उसके द्वारा 9 पोह को इनको सरहिंद सूबा वज़ीर खां के पास भेज दिया था।

माही ने साहिबजादों का शहीदी साका बताना

दूसरे दिन सरहिंद से वापिस आकर माही ने बताया, गुरु जी! सरहिंद पहुंचने पर सूबा वज़ीर खां के हुक्म से साहिबजादों तथा माता जी को एक बुर्ज में कैद कर दिया गया था तथा अगले दिन जब कचहरी लगी तो सूबे ने साहिबजादों को बुलाकर कहा कि मुस्लमान हो जाओ आप का अब कोई वारिस नहीं है, आप के बड़े भाई तथा पिता तथा और सिख सब लड़ाई में मारे गए हैं, परन्तु जब शाहज़ादों ने सूबे की मुस्लमान हो जाने वाली बात न मानी तो उसने उनको नीवों में चिनकर शहीद कर देने

का आदेश दिया। सूबे के आदेशानुसार साहिबजादों को 13 पोह को नींवों में चिन कर कत्ल कर दिया। इनकी शहीदी की खबर सुनकर माता जी भी इस हृदय विदारक बात को न सह सके तथा शरीर त्याग कर *परलोक सिधार गए।

मुगल हकूमत को श्राप

सतिगुरु जी ने माही से यह भयानक हृदय-विदारक साका सुनकर अपने तीर की नोक से एक दाब का पौधा उखाड़ कर कहा कि मुगल राज की जड़ें अब उखड़ गई हैं जिस राज में मासूमों बेगुनाहों को इस तरह शहीद किया जाता है वह अवश्य नाश हो जाएगा।

भाई संतोख सिंह जी गुरु जी की निर्लेप अवस्था का, जो साहिबजादों की शहीदी की वार्ता माही से सुनकर आप जी को हुई, अनुभव करके इस तरह वचन करते हैं:—

सभ कुटंब ते भऐ निरालम शोक न लेश ऊपावा ॥
घरब कला समरथ गुर पूरन चहैं सू लेहि वनावा ॥ 46 ॥
अजर जरन अस गुर विन किस महि छिमा धरम अपगाधू॥
ब्रहम जान अवसथा की गति दिखराई शुभ साधू ॥ 47 ॥
धन्न धन्न सतिगुर की महिमा कौण, भव अस जानै ॥
सरवगयनि की गूढ वारता किम अलपंगय बखानै ॥ 48 ॥

---

*जिस जगह पर साहिबजादा जोरावर सिंह जी आयु 9 वर्ष तथा बाबा फतह सिंह जी उमर 7 वर्ष को शहीद किया गया था वहां गरुद्वारा फतहगढ़ साहिब शोभायमान है। यहां माता जी तथा इन साहिबजादों का संस्कार किया गया था वहां गुरुद्वारा 'जोती सरुप" शोभायमान है। इन पवित्र शरीरों का संस्कार बाबा फूल जी के पुत्र चौधरी त्रिलोक सिंह ने किया, जो उस मनहूस दिन सरकारी मामला देने के लिए सरहिंद आया हुआ था।

इस जगह यहां सतिगुरु जी ने यह साका सुना तथा हकूमत को श्राप दिया एक वड़ा सुन्दर सरोवर तथा गुरुद्वारा विद्यमान है। जिस का नाम गुरुद्वारा टाहलीआणा साहिब है। इस गुरुद्वारे के वड़े दरवाजे के माथे पर यह बैंत लिखा हुआ है:—

सुणिआ साका ते तीर दे नाल ऊबें,
बूटा दब्ब दा पुट्ट फुरमान कीता।
मुगल राज की जड़ अज गई पुट्टी,
मेरे लालां ने जो वलिदान कीता।

भाग ग्यारह का ब्यौरा

चमकौर की गढ़ी में। गढ़ी में युद्ध। गढ़ी में से निकलना। पीछे चमकौर में क्या बीती? उच्चे के पीर का चमत्कार। माछीवाड़ा से पिआना। राय कल्ले के पास। माही ने सरहिद जाना। माही ने साहिबजादों का शहीदी साका वताना। मुगल राज को श्राप।

—0—

† भाग बारहवां †

दीने गाँव

राय कल्ले से विदा होकर गुरु जी रायकोट से चलकर दीने

गांव चले गए। इस गांव चौधरी *जोध राय के पौत्र चौधरी समीरा तथा लखमीरा रहते थे, इन चौधरियों ने गुरु जी को मकान के चौबारे में निवास कराया तथा बड़े श्रद्धा भाव के साथ सेवा की। यह गुरु घर के बड़े श्रद्धालू थे।

जब गुरु साहिब जी को यहां निवास रखे कुछ देर हो गई तो आस पास की सिख संगते आपजी के दर्शनार्थ बड़े प्रेम से आने लग गई। जब इस बात का पता सूबा सरहिंद को लगा तो उस ने चौधरी समीर को लिखा कि गुरु साहिब तेरे पास ठहरे हुए हैं, उनको पकड़ कर मेरे पास हाजिर करो। सूबा की चिट्ठी का चौधरी समीर से लखमीर ने उत्तर दिया कि गुरु जी हमारे पीर हैं, इनकी सेवा करना हमारा फर्ज है हम अपने गुरु जी को आपके हवाले करने को तैयार नहीं हैं।

जफरनामा

अर्थात

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का औरंगजेब को विजय पत्र

श्री विजय पत्र श्री गोबिंद सिंह जी ने फारसी भाषा में

*जोध राय ने गुरु हरिगोविंद जी की शाही सेना के साथ तीसरी लड़ाई में जो संवत् 1688 में गांव महिराज जिला फिरोज पुर में नथार्णे की ढाब के पास हुई थी, अपने पांच सौ सवारों के साथ बड़ी भारी सहायता की थी। जोध राय ने श्री गुरु हरगोबिंद जी से सिखी धारण की थी। जिस जगह ढाब के पास यह युद्ध हुआ था वहां गुरुद्वारा 'गुरु सर' बना हुआ है।

"जफरनामा" के नाम से संवत् 1762 में गांव*दीने कांगड़ से लिखकर अपनी विजय का सूचक औरंगजेब को अहमद नगर दक्षिण में भाई दया सिंह धर्म सिंह जी के हाथ भेजा था। इस स्थान पर अब गुरुद्वारा जफरनामा साहिब विद्यमान है।

इस चिठ्ठी के कुल 115 बैंत हैं। पहले बाहरां बैंतों में परमात्मा की स्तुती करके फिर गुरु जी ने 13 वें बैंत से 111 तक औरंगजेब को संबोधित करके लिखा है कि तुम्हारी कुरान की कसमों पर इतबार करके हमने किला छोड़ा है, परन्तु तुम्हारी सेना ने विश्वासघात करके हमारे ऊपर हमला कर दिया हमें चमकौर की कच्ची गढ़ी में थके हारे चाली आदमीयों के साथ तुम्हारी सेना ने घेरा डाल दिया। ईश्वर ने मेरी सहायता की में दुश्मनों के घेरे से निकल आया। चार साहिबजादे तथा बेअंत सिख सेवक शहीद हो गए तथा धन माल सब तबाह हो गया। परन्तु हमने अपना धर्म ईमान तथा प्रण नहीं छोड़ा।

---

*गांव दीना – थाना निहाल सिंह वाला तहसील मोगा में है रेलवे स्टेशन रामपुरा फूल से 18 मील उत्तर तथा जैतो से 18 मील पूर्व दिशा में है।

राय जोध की राजधानी गांव कांगड़ थी। इस कांगड़ में से निकल कर ही चौधरी समीर तथा लखमीर ने गांव दीना बसाया। कांगड़ से दीना डेढ़ कोस उत्तर दिशा में है। कांगड़ गांव ही श्री गुरु हरगोबिंद जी राय जोध के पास उसका प्रेम देखकर गए थे। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने यहां से जफरनामा लिखा था। जैसा कि आपजी के इस बैंत से सिद्ध होता है कि तशरीफ दर कसबह कांगड़ कनद ॥" (जफरनामा बैंत 58)

*यह गुरुद्वारा गांव दयालपुर की कांगड़पती में है तब गांव दयालपुर आबाद नहीं हुआ था।

तुम सब कुछ दीन ईमान छोड़ कर इखलाकी तौर पर हार गए हो। अब आगे मे हमें तेरी कसमों पर कोई इतबार नहीं रहा। पिछले चार बैंत फिर परमात्मा की स्तुति के हैं।

केवल उन बैंतों का(अर्थात बैंत 13 से 111 तक)जो औरंगजेब के साथ संबध रखते हैं, पाठकों के ज्ञान के लिए अक्षरों का अनुवाद किया गया है। हर एक बैंत के अनवाद की तुक से पहले उस बैंत का नबंर दिया है। इससे मूल जफरनामा पढ़ने वाले पाठकों को हर एक बैंत का अलग अलग भावार्थ समझाने के लिए आसानी हो जाएगी।

जफरनामे का अनुवाद

मंगलाचरण

(बैंत 1 से 12) परमात्मा, सर्व शक्तिमान का मालिक तथा अन्न-दाता दयालु कृपालू है। पातशाहों का पातशाह रंग-रुप रहित है। सर्व में पूर्ण सर्व की पालना करने वाला है। सर्व विलायतों का मालिक, गरीबों को सम्मान देने वाला है। सच्च झूठ का निर्णय करने वाला तथा सच्ची वाणी का प्रकाशक है। संसार के सब नियमों को चलाने वाला उसूलों को जानने वाला है।

झूठी सौगंधों की सूचनाएं

बैंत नं 13 ऐ बादशाह। तेरी कसम पर मुझे भरोसा नही है। इस बात का केवल ईश्वर ही गवाह है।

14. तुम्हारे सारे अहिलकार हाकिम झूठे हैं, मुझे उन पर तुछ मात्र भी भरोसा नहीं।

15-17. जो पुरुप आपकी कुरान की कसमों पर भरोसा करता है वह पुरुप आखिरी दम तक खराब होता है।

18. अगर कहीं छुप कर भी अपने पवित्र ग्रन्थ की कसम

खाई होती तो मैं कभी भी अपने किसी आदमी को उसकी उल्लंघना न करने देता।

* चमकौर के युद्ध का वर्णन

19. उस समय कुल चालीस आदमी थे तथा वह भी भूखे वह क्या कर सकते थे, जिस समय तुम्हारे दस लाख फौजियों ने उनपर अचानक हमला कर दिया।

20 तुम्हारी धोखेवाज फौज सारी कसमों को तोड़ कर हमारे ऊपर एक दम झपट पड़ी।

21. बड़े दुख के साथ हमें भी अनचाहे ही जंग में तीर कमान तथा तलवार के साथ कूदना पड़ा।

22. जब और सभी यत्न सुलह के लिए सफल न हो सके तब हाथ में तलवार पकड़नी ही धर्म होता है।

23. तुम्हारी कुरान की कसम पर भरोसा करके मैंने बहुत तकलीफ उठाई है।

24. मैं नहीं जानता था कि तुम मर्द होकर लोमड़ी की तरह दांव लगाओगे. नहीं तो हम कभी भी अनंदगढ़ का किला छोड़ कर किसी बहाने भी वाहर न आते।

25. जो भी कोई अपने पवित्र ग्रन्थ की कसम खाता है, उसे चाहिए कि वह कभी भी किसी बेगुनाह को कैद न करे तथा न ही किसी बेगुनाह को कत्ल करे।

26 तुम्हारी काली पोशाकों वाली फौज बड़ी जोर से जोशीले तथा गुस्से से नारे मारती हुई हमारे ऊपर मक्खियों की भांति उमड़ पड़ी।

27. परन्तु जो भी कोई (दुश्मन का) आदमी अपनी आड़

---

* साहिवजादा अजीत सिंह जी जुझार सिंह जी की शहीदी का वर्णन वैंत 33 में पढ़ें।

छोड़ कर आगे आया, उसको ही हमने एक तीर के साथ लहू लुहान करके दूसरे जहान पहुंचाया।

28. तथा जो कोई अपनी सीमा से आगे नहीं आया उसने न कोई तीर खाया तथा नही वह जख्मी हुआ।

29. तथा जब मैंने नाहर खा को जंग में आया देखा तो शीघ्र ही मैंने उसको एक तीर मारा (जिससे वह मर गया)

30. नाहर खां के मरने से वहुत से उसके साथी मैदाने जंग में से भाग गए। वह डर गए कि कहीं हमारी भी यही दशा न हो।

31. एक और अफ़गान खां सेनापति वाढ़ के पानी की भांति गोलीयां तीर की भांति तेज दौड़ कर हमारे ऊपर आ पड़ा।

32. उसने वड़ी वहादुरी के साथ (गढ़ी पर) वहुत से हमले किए।

33. उसने हमले करके वहुत से आदमी जख्मी किए तथा स्वयं भी वह सख्त ज़ख्मी हो गया। इस झड़प में दो साहिवज़ादे (अजीत सिह तथा जुझार सिंह) शहीद हो गए तथा वह अफ़गान खां स्वयं भी मुर्दा हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

34. उस वदनाम तथा वदनसीव कायर (मरदूद) ख्वाजा खिज़र ने एक योद्धा तथा वहादुर की भांति आगे रण-क्षेत्र में आने का हौंसला न किया तथा न ही कोई वहादुरों की भांति वार किया।

35. अफसोस, कि अगर मैं उसे देख लेता तो एक तीर उस को भी वख्श (मार) देता।

36 अंत में दोनों तरफ को तीरों तथा बंदूकों से वहुत से ज़ख्म आए तथा अनगिणत जानों का नक्सान हुआ।

37. तीरों तथा गोलियों की वहुत भारी वर्षा हुई जिससे शूरवीरों के खून के साथ धरती पोस्त के फूल की भांति लाल हो गई।

38. युद्ध-क्षेत्र में मरे हुए आदमियों के कितने ही सिरों तथा पैरों के ढेर लग गए। जो गेंद तथा खूंडियों की तरह मैदान में भरे पड़े थे।

39. तीरों तथा कमानों के कड़ाकों के साथ युद्ध में बड़ा शोर पड़ गया।

40. इस शोर के साथ शूरवीरों के होश भी गुम हो गए।

41 हम उस युद्ध में क्या मरदानगी करते जब कि हमारे चालीस आदमियों पर तुम्हारी अनगिणत फौज आ पड़ी।

42. दुनियां की रोशनी (सूर्य) ने रात्रि का बुर्का पहन लिया तथा रात का बादशाह चन्द्रमा शोभायमान हो गया।

43. अगर कोई कुरान (धर्म ग्रन्थ) पर भरोसा रखता है, ईश्वर सदा उसको रास्ता दिखाने वाला प्रदर्शक होता है।

44. ईश्वर पर भरोसे वाले आदमी का न ही कोई बाल बांका कर सकता है तथा न ही कोई शरीर को कष्ट होता है।

45. ईश्वर ने स्वयं ही दुश्मनों को चीर कर उनके घेरे में से हमें बाहर निकाल लिया।

औरंगजेब को प्रताड़ना

46 हे औरंगजेब ! तुम न ईमान पालने वाले हो। न धर्म रखने वाले हो। न ईश्वर को पहचानने वाले हो तथा न तुम मुहम्मद पर भरोसा रखने वाले हो।

47. क्योंकि जो कोई अपने ईमान को पालता है वह पुरुष कभी भी अपने वचन को आगे पीछे नहीं करता।

48. ऐसे मर्द का मुझे तुच्छ मात्र भी भरोसा नहीं है जो कुरान की कसम खाकर मुकर गया है, वाहिगुरु तुम्हारे इस काम को अच्छी तरह जानता है!

49 तुम्हारी एक कसम की क्या बात है, अब तुम कुरान की चाहे सौ कसमें खाओ तो भी मुझे उन पर कोई भरोसा नहीं है।

50. अगर तुम्हें अपनी कुरान की कसम पर निश्चय होता तो तुम जरूर ही कमर कस कर (त्यार हो कर हमारे पास) पहले ही आ जाते (अपनी सच्चाई के सबूत के लिए)।

51. तेरे वचन का, जो तुमने कुरान की कसम खाकर किया था कि मैं आपके साथ सुलह रखूंगा तथा लड़ाई नहीं करूंगा, तेरे सिर पर भार है, तुम उसको पूरा करो।

52. अगर तुम स्वयं उस युद्ध के समय खड़ा होते तो तुम्हें सारी बात का सही पता चल जाता कि किस तरह आपके अधिकारियों ने हमारे साथ धोखा करके जान-माल का हमें नुक्सान पहुंचाया है।

53. तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम जो करने लगो उसको अपनी लिखी हुई चिट्ठी अनुसार सोच कर करो।

54 तुम्हारी लिखी हुई चिट्ठी तथा जबानी संदेशा मुझे मिल गया है। अब चाहिए कि इस लम्बे झगड़े को समाप्त किया जाए।

55. मर्द को चाहिए कि अपने वचनों को पूरा करे, मन में कुछ और तथा मुँह में कुछ और नहीं होना चाहिए।

56. जो तुम्हारे ऐलची ने कहा है मैं उससे बाहर नही हूं, अर्थात मुझे वह मंजूर है। परन्तु अगर तुमने यह सच्चे दिल से कहा है तो तुम स्वयं चलकर मेरे पास आओ।

57. अगर तुम चाहो तो कुरान की कसम वाला तुम्हारा लिखा हुआ इकरार मैं तुम्हे भेज दूं।

58. अगर तुम कांगड़ गांव में आओ तो हमारी दोनों की बातचीत (आमने सामने) हो जाए।

59. इधर कांगड़ (मालवा के इलाके में) तुझे कुछ भी डर

नही है, क्योंकि इस इलाके की बैराड़ जाति सारी मेरी आज्ञा मानती है।

60-62. आप यहां आओ, जबानी बातचीत कर लें। मैं तुम्हारे साथ मेहरबानी करुंगा आदि (अथात तुम्हारा निरादर नहीं करुंगा, तुम्हारी इज्जत वाला व्यवहार करुंगा)।

63. अगर तुम पहले शाही फरमान जारी कर दो कि हमारे तुम्हारे बीच कोई लड़ाई नहीं है तो मैं तेरे पास आकर तुझे सारी बात से अवगत करवाऊंगा।

64 अगर तुम ईश्वर को मानने वाले हो, तो मेरे इस काम में देरी न करना।

65 तुझे ईश्वर की पहचान करनी चाहिए तथा किसी के कहने से जनता को दुःखी नही करना चाहिए।

66. तुम जो तखत पर बैठे हुए हो, तुम्हारा इंसाफ आश्चर्य है तथा तुम्हारी खूबियां भी आश्चर्य जनक हैं।

67. तुम्हारा इंसाफ आश्चर्य जनक है तथा दीन परवरी भी आश्चर्य जनक है, इस पर अफसोस तथा सौ बार अफसोस है।

68. आपके शाही फतवे आश्चर्य जनक हैं। आश्चर्य है। सच्चाई के बिना बात करना घाटा [गुनाह] ही होता है।

69. किसी के खून के साथ बेरहम होकर हाथ मत रंगो, किसी दिन ईश्वर की तलवार से तुम्हारा भी खून होगा।

70 तुम गाफिल मत होवो, ईश्वर से डरो, वह बे-परवाह खुशामद पसन्द नहीं करता।

71. उस बादशाह के बादशाह से डर, वह धरती आकाश का सच्चा बादशाह है।

72. ईश्वर धरती तथा आकाश का मालिक है वह हर एक मकान तथा मकानों में रहने वाले सबको पैदा करने वाला है।

73 वह बच्चे से वृद्ध तथा चींटी से हाथी तक पैदा करने वाला है, वह दीनों को सम्मान देने वाला तथा अहंकारियों का नाश करने वाला है।

74. उसका नाम गरीब निवाज है, क्योंकि वह बे-परवाह तथा बे-जरूरत है।

75. वह रूप रंग तथा रेखा-चिन्ह से बिना है, वही रास्ता बताने वाला तथा वही रास्ते पर डालने वाला है।

76. ऐ बादशाह तुम्हारे सर पर कुरान को कसम का भार है तुम अपने कहे हुए वचनों के अनुसार इस काम को अच्छी तरह सिरे चढ़ाओ। (कि अगर हम अनंदपुर खाली कर दें तो हमारे साथ कोई शरारत नहीं करेगा)।

77. तुझे अक्लमन्दी करनी चाहिए तथा इस काम को अपने हाथ से करना चाहिए।

78 क्या हो गया अगर चार बच्चे (साहिबजादे) मार दिए, अभी पीछे जहरीला सांप स्वयं बैठा है।

79 चिंगारियों को बुझाना कौन सी बहादुरी है, जब कि भबकती आग को तुम हर रोज तेज कर रहे हो।

80-84. मीठी ज़ुबान वाले फिरदौसी ने क्या अच्छी बात कही है, कि जल्दी करनी शैतान का काम है (अर्थात सूबा सरहिंद वजीर खां ने बिना सोचे समझ जल्दी से साहिबजादे शहीद करके शैतानों वाला काम किया है।

85 मैं तुझे ईश्वर की पहचान वाला नहीं मानता, क्योंकि तेरे से बहुत दिल-दुखाने वाले कार्य हो चुके हैं।

86. कृपालु भगवान तुझे नहीं पहचानता तथा तुम्हारी

ज्यादा दौलत को भी नही चाहता।

87. अब तुम चाहे कुरान की सौ कसमें खा लो, मुझे उन पर रत्ती-भर भी विश्वास नहीं है।

88 मैं तुम्हारे दरबार में नहीं आऊंगा तथा न ही उस राह पर पड़ूंगा (चलूंगा) अगर तुम कहोगे तब भी वहां नहीं आऊंगा।

औरंगजेब के गुणों का वर्णन

89. बादशाह औरंगजेब खुशनसीब है. फुर्तीले हाथ (तलवार) चलाने) वाला तथा पक्का घुड़ सवार है।

90 बड़े सुन्दर रूप वाला, तेज बुद्धि वाला, देश का मालिक तथा अमीरों का साहिब है।

91 देश (दौलत) का बरकत वाला मालिक है, तथा तेग का मालिक अर्थात जंगी सामान तथा ताकत का मालिक है।

92. रोशन दिमाग है, बड़े रोब तथा सुन्दर स्वरूप वाला है, प्रजा का स्वामी है तथा [प्रजा को] देश तथा धन देने वाला है।

93 बड़ी बखशिश वाला है. जंग में पहाड़ (अटल) है। देवताओं जैसी बड़ाई वाला है। आकाश तक प्रताप प्रगट है।

94. औरंगजेब देश का बादशाह शाहों का शाह है। पृथ्वी के चक्कर [संसार] को सम्भालने वाला परन्तु धर्म से दूर है।

अपनी बात

95. मैं मूर्ति पूजक पहाड़ियों को मारने वाला हूँ। वह बुत पूजने वाले हैं तथा मैं बुत तोड़ने वाला हूं।

96. बे-वफा जमाने के रंग देखो, जिसके पीछे पड़ता है उस को बरबाद कर देता है।

अपनी हालत की तरफ ईशारा करते हैं।

ईश्वर की वड़ाई

97 परन्तु उस पवित्र ईश्वर की कुदरत की तरफ देखो जो इस अकेले से दस लाख दुश्मनों को मरवाता है।

98. दुश्मन क्या कर सकता है जब सज्जन मेहरबान हो। उस बखशन हार का काम बख्शिश करना है।

99 वह (परमात्मा) सज्जन, रिहाई, छुटकारा) देने वाला है. नेतृत्व करने वाला है। जीभ को स्तुति करने की पहचान (शक्ति) देता है।

100. (परमात्मा) दुश्मन को काम करने के समय अंधा कर देता है, यतीमों (दीनों) को कांटा चुभने के बिना बाहर ही निकाल देता है। (यह चमकौर की गढ़ी में से गुरु जी का अपने निकल जाने की तरफ इशारा है)।

101. हर एक आदमी जो सच्चाई का काम करता है, उस पर दयालु वाहिगुरु रहम की कार करता है।

102 दुश्मन उसके साथ बहाने-बाजी क्या कर सकेगा. अगर नेतृत्व करने वाला परमात्मा उस पर प्रसन्न हो।

103 जो कोई तन मन से उसकी सच्ची सेवा में आता है; भगवान उस पर सुख शान्ति की मेहरबानी करता है।

104. अगर एक अकेले पर एक लाख दुश्मन चढ़ आए तब ईश्वर उसका रखवाला होता है। जिस तरह अनंदपुर तथा चमकौर के युद्धों के समय)।

औरंगजेब को सम्बोधन

105. अगर तुम्हारी नजर अपनी सेना तथा दौलत पर है तो मेरी नजर प्रभु के धन्यवाद करने पर है।

106 जैसे तुम्हें अपनी बादशाही तथा दौलत का मान है, उसी तरह मुझे उस अकाल पुरुष का आसरा है।

107. तुम गाफिल न बनो यह जगत कुछ दिनों की सराय है, समय सबके सिरों से बारी-बारी लांघता जा रहा है।

10८. इस धोखेबाज जमाने की चाल देख, जो हर एक अस्थान तथा अस्थानीय के ऊपर से लांघता जा रहा है।

औरंगजेब को शिक्षा

109, अगर तुम बलवान हो तो गरीबों को दुःखी न करो। कसमों तथा तेसे (भरोसे) के साथ उनको छीलो मत। (अर्थात गरीबों का छिलका उतार कर उनका खून मत पियो)।

110 अगर ईश्वर सज्जन हो तो दुश्मन क्या कर सकता है, चाहे दुश्मनी करने वाला सैकड़ों हजारों आदमियो के साथ मिल कर दुश्मनी करे।

111 अगर दुश्मन हजारों दुश्मनियां लाये (करे) तो भी उस पुरुष का एक बाल भी बांका नहीं कर सकता (जिसका ईश्वर सज्जन है।

ईश्वर की स्तुति

बैंत (112 से 115)

वह प्रभु रूप-रंग रेखा, गिनती मिनती तथा भ्रमों से रहित है। वह राग-द्वेष जन्म-मरण, वर्ण तथा नाश रहित स्वरूप है। वह कर्म भ्रम, छेद भेद तथा दुःख रहित है। वह लेख भेष तथा लेखे से रहित भिन्न-भिन्न प्रकार की बखशिशें करने वाला है।

हिकायतों से शिक्षा

सम्प्रदाई ज्ञानियों का कहना है कि जफरनामे के साथ यह हिकायतें (कहानियां) श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने औरंगजेब को शिक्षा के तौर पर लिख कर भेजी थीं। इस लिए इन कहानियों के पात्रों के नाम तथा शिक्षा जो इनमें मिलती है तथा औरंगजेब को समझाई गई है यहां संक्षेप में दी गई है:—

1 प्रथम हिकायत

राजा मानधाता तथा उसके पुत्र

शिक्षा-योग्य समय अपने योग्य अधिकारी पुरुष को अपना काम सौंप देना बुद्धिमत्ता होती है। परन्तु तुम वृद्धावस्था में भी योग्य पुत्र को राजगद्दी नहीं देते यह तुम्हारी अकलमंदी नहीं है।

2 दूसरी हिकायत

चीन का एक बादशाह

शिक्षा ताज तथा तखत के योग्य वह पुरुष हो सकता है जिस ने अपने आप को झूठ, जोर जुल्म तथा बुरे कार्यों से रोका हो परन्तु तुम्हारे में यह सब अवगुण हैं। इस लिए तुम ताज के योग्य नहीं हो।

3 तीसरी हिकायत

एक पहाड़ी राजा की लड़की

शिक्षा अच्छे नेक पुरुष अपना प्रण करके उसको तोड़ने

को त्यार नहीं होते। परन्तु तुमने अपना प्रण कुरान की सौगन्ध खाकर भी पूरा नहीं किया। तुम दरगाह में जाकर नेकी नहीं ले सकते।

4 चतुर्थ हिकायत

काजी तथा उसकी लड़की

शिक्षा-जो अपना किया हुआ वचन पूरा नहीं करते वह वहुत दुःख पाते हैं। सो तुम अवश्य दुःख पाकर मरोगे क्योंकि तुम ने अपना प्रण जो हमें लिख कर अनंदगढ़ के किले में भेजा था, पूरा नहीं किया।

5 पाँचवीं हिकायत

एक वजीर की लड़की

शिक्षा-अच्छे पुरुषों को चाहे परोपकार के लिए ही झूठ वोलना पड़ जाए परन्तु वह फिर भी परमात्मा से उस झूठ की माफी मांगते हैं। परन्तु तुमने बुरे काम के लिए हमें धोखा देने के लिए झूठ वोला है तथा फिर भी ईश्वर का डर नहीं मानता

6 छटी हिकायत

एक राज पुत्री

शिक्षा-एक नीच आदमी भी अगर नेक चलन तथा इन्साफ पसन्द हो तो राज तखत पर बैठ कर मान सम्मान हासिल करता है। परन्तु तुम वादशाह का वेटा होकर भी जोर जुल्म करके वदनामी लेते हो।

7 सातवीं हिकायत

फारस देश के राजा की स्त्री

शिक्षा-बुरे कर्म करने वाला पुरुष बुराईयों में से निकलने की बजाए और बुराईया करनी मांगता है। इसलिए तुम बुरे से बुरे हो जा निर्दोषों पर भी अत्याचार कर रहे हो।

8 आठवीं हिकायत

एक फिरंगी देश का बादशाह

शिक्षा-अपने दोषों को छुपाने के लिए दूसरे का दोष छुपाना पड़ता है। जैसे तुम अपने सूबे, काजियों तथा अहिलकारों को बेगुनाह बता रहे हो।

9 नवमीं हिकायत

एक राजा का लड़का तथा वजीर की लड़की

शिक्षा-सच्चाई की हमेशा जय होती है। जिस तरह वाहिगुरु ने हमारी की है, क्योंकि हम धर्म तथा न्याय पर थे।

10 दसवीं हिकायत

कालिंजर देश का राजा

शिक्षा-अपने प्रण को पूरा करने के लिए अगर कठिन से कठिन कार्य भी करना पड़े तो करना चाहिए। जिस तरह हर प्रकार के सुख अपना घर-घाट तथा परिवार आदि अपने प्रण को पूरा करने के लिए बरबाद कर दिए हैं।

11 ग्यारहवीं हिकायत

खैबर पर्वत का एक पठान तथा उसकी स्त्री

शिक्षा-हर एक कार्य को झूठ-सच्च का निर्णय करके करना चाहिए। झूठ सच्च का निर्णय करने के विना जल्दी से कार्य करना अयोग्य होता है। जिस तरह तुमने पहाड़ी राजाओं तथा अपने सूबों की झूठी बातों पर भरोसा करके हमारे विरुद्ध अयोग्य कारवाई की है, अगर तुम सच्च-झूठ का निर्णय कर लेते तो फिर यह दु:खदाई घटनायें न घटती।

भाग बारह का व्यौरा

दीने गांव, जफरनामा, औरंगजेब को भेजना। अनुवादित जफरनामा, हिकायतों के भावार्थ तथा उसकी शिक्षा।

(भाग तेरह)

दीने से विदायगी

दीने कांगड़ से औरंगजेब को जफरनामा भेजकर कुछ समय बाद कई नजदीक के गांवों में से सिखों को भर्ती करते हुए तथा अपने बचाव के लिये सुरक्षित ठिकाने की खोज में चौधरी कपूरे के पास कोट कपूरा पहुंच गए। यहां से नजदीक ही दो-अढ़ाई मील दूर पूर्व दक्षिण दिशा गांव ढिलवां कलां में बाबा प्रिथी चन्द के पौत्र सोढी कौल जी के पास गए। सोढी कौल जी ने आप जी का माछीवाड़े वाला नीला बाणा उतरवा कर सुन्दर सफेद पोशाक पहनाई। यह नीला बाणा गुरु जी ने आग में जला दिया

तथा कहा:—

नील वसत्र ले कपरे फारे; तुरक पठाणी अमल गइआ ।

गुरु साहिब जी की याद में गांव मे एक फर्लांग पश्चिम दिशा गुरुद्वारा बना हुआ है, जिसको गुरुसर भी कहते हैं । यहां वैसाखी को मेला भी लगता है। गुरु साहिब जी के नीले बाणे का कुछ भाग सोढी कौल जी के वंशज सोढी मल सिंह जी की सतान के पास है । ढिलवां मे गुरु साहिब जी गांव मलूका, तथा *कोठा गुरु से जैतो जा विराजे ।

सूबा सरहिंद की चढ़ाई

जैतों से जब गुरु जी वापिस ढिलवां आए तो आप जी को सूहोए ने खबर दी कि चौधरी शमीरे का उत्तर पढ़ कर वजीर खां ने आपको पकड़ने के लिए फौजी दस्ते आपकी तरफ भेज दिए हैं। इस समय चौधरी कपूरा भी आपके पास ही था ।

सुरक्षित स्थान की खोज

गुरु साहिब जी ने चौधरी कपूरे को कहा हमें कोई ऐसी जगह बताओ जहां हम सूबे की फौज का मुकाबिला कर सकें । कपूरे ने इस मनोरथ के लिए खिदराणें की ढाब को योग्य स्थान बताया, जिसमें थोड़ा सा पानी है तथा नीचे से गहरी और चारों तरफ से वृक्षों से घिरी हुई है । यह जगह मोर्चे के लिए तथा युद्ध के लिए बहुत अच्छी है । जब गुरु जी ने इस जगह को ठीक समझ लिया

---

*यह गांव बाबा प्रिथी चन्द जी ने सम्वत् 1653 में बसाया था । इस गांव के आवे में सुलही खां सड़ कर मरा था । जैतो रेलवे स्टेशन से यह 14 मील है ।

तो कपूरे ने रास्ता दिखाने के लिए एक अपना घुड़सवार गुरु जी के साथ दे दिया। गुरु जी उसके पीछे सिघों को लेकर चल पड़े।

मझैल सिघों का मेल

गुरु साहिब जी सिघों के जत्थे के साथ चौधरी कपूरे के आदमी के नेतृत्व में ढाब को जा रहे थे कि गांव रामआणे से आगे रास्ते में खिदराणें के नजदीक ही माझे के सिघों का जत्था मिल गया। इस जत्थे में कुछ वह सिघ थे जो अनँदपुर के घेरे के समय परेशान होकर गुरु जी को बेदावा लिख कर दे आये थे। तथा कुछ और वह थे जिन्होंने गुरु साहिब जी पर मुसीबतों का वर्णन सुना था तथा सुना था कि शाही सेना ने अनंदपुर तबाह कर दिया है। चार साहिबजादे तथा माता गुजरी जी बेअन्त शूरवीरों के साथ शहीद हो गये हैं। इन दुःख तकलीफों को सुन कर यह सिघ माझे की पंचायत की तरफ से गुरु जी के पास हाजिर हुये थे कि इस समय जो सहायता हो सके, गुरु साहिब जी की करनी चाहिए।

इन सिघों को जो लगभग दो सौ का जत्था था, माझे की संगत ने चुन कर भेजा था कि गुरु जी के आगे हमारी तरफ से प्रार्थना करो कि औरँगजेब के साथ सुलह कर लेनी चाहिए—यह बात जब जत्थे के सिघों ने गुरु जी को मिल कर कही तो आप जी ने उनको कहा कि जब गुरु का सर्वस्व नाश हो रहा था तब आप लोग सुलह कराने वाले कहां थे? सुलह करने का कोई लाभ नहीं है। सब कुछ तो बरबाद हो चुका है।

गुरु जी का यह उत्तर सुनकर मझैलों ने अपनी पंचायत के अनुसार कि अगर गुरु जी यह बात न माने तो आप उनको लिख कर दे आए, "हम आपके सिख नहीं हैं तथा आप हमारे गुरु नहीं

हो"। गुरु जी के इन्कार करने पर मझैलों ने गुरु जी को बेदावा (न तुम हमारे गुरु तथा न हम तुम्हारे सिख) लिख कर दे दिया।

मुक्तसर का युद्ध

जब यह सिख बेदावा देकर खिदराणे की ढाब के पास पहुंचे तो पीछे से तुर्क सेना भी इनको मिल गई। सिखों ने ढाब में अपना मोर्चा लगा लिया तथा बेअन्त दुश्मनों को मार कर स्वयं शहीद हुए।

इस समय गुरु जी ढाब से आगे तीन फर्लांग दूर एक ऊँची टिब्बी पर खड़े होकर दुश्मनों पर अपने अचूक बाणों की वर्षा करके कईयों को मौत के घाट उतारते रहे।

मेरा पाँच हजारी तथा दस हजारी

इस धर्म युद्ध में सिखों के हाथों शाही सेना के बहुत सैनिक मर चुके थे। ऊपर से वैसाख महीने का पिछला हिस्सा, जंगल देश तथा पानी कहीं से पीने को नहीं मिलता था। जवान तथा घोड़े गर्मी से प्यासे बेहोश होकर गिर रहे थे। यह सभी कुछ देख कर शाही सेना अपने मुर्दे तथा जखमियों को मैदान में ही छोड़ कर कोट-कपूरे को भाग गई।

जब शाही सेना पीछे को मुड़ गई तो गुरु साहिब जी टिब्बे से चलकर अपने शहीदों के पास आ गए। हर एक शहीद के पास जाकर उसका मुंह अपने जामे से पोंछते तथा जितने कदम कोई अपने मोर्चे से आगे होकर जूझते हुए शहीद हुआ था उसको उतने ही हजारी सूरमें का नाम देकर सम्मानते। किसी शहीद को कहते, "यह मेरा पांच हजारी है", जो कुछ कदम आगे होता, उसको

मेरा दस हजारी तथा तीस हजारी के सम्मान देते हुए, भाई महां सिंह के पास पहुंचे, भाई साहिब अभी श्वास ले रहे थे तथा बेहोश पड़े थे ।

टूटी गाँव

भाई महां सिंह का सीस गुरु जी ने अपने घुटने पर रखकर पहले बड़े प्यार से मुँह पोंछा. फिर भाई महां सिंह नें कुछ आंखें खोल कर देखा तो सतिगुरु जी ने बड़े प्यार से कहा, भाई महां सिंह । हम तुम्हारे पर बड़े प्रसन्न हैं, कुछ मांग लो । जब गुरु जी ने तीन बार यही कहा तो महां सिंह ने कहा, सच्चे पातशाह । अगर कुछ मेहरबानी करनी है तो फिर हमने जो माझे कीं संगत ने आज से एक दिन पहले बेदावा लिख कर दिया था वह फाड़ दे तथा अपने चरणों से टूटी संगत का फिर अपने चरणों से जोड़ (गांठ) लें ।

भाई महां सिंह से यह बात सुन कर गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए तथा बेदावे वाला कागज कमर कस में से निकाल कर भाई महां सिंह को दिखाकर पुर्जा-पुर्जा करके फाड़ दिया । गुरु जी ने कहा, भाई महां सिंह ! तुमने माझे की सिखी रख ली है । तुमने गुरु-घर से टूटे हुओं को मिला दिया है । तुम्हारी धन्य सिखी है । तुम स्वयं धन्य हो । इस तरह आशीशें तथा वर लेते हुए भाई महां सिंह जी स्वर्ग सिधार गए ।

माई भागो

भाई महां सिंह से आगे होकर आपजी ने माई भागो को देखा जो जंग में सखत जख्मी हो गई थी । माई भागो भाई लंगाह के

खानदान में से झुवाल गात्र का रहने वाला था। जब माझे के सिंह जत्था लेकर श्री कलगीधर जी के पास चले थे तो यह भी गुरु जी से पुत्र का वर लेने के लिए सिंघों के साथ चल पड़ी थी। सतिगुरु जी ने इसको मरहम-पट्टी करके राजी किया तथा अमृत कर नाम भाग कौर रखा। इसके बाद माई जी गुरु जी के साथ हजूर साहिब चले गए तथा वही पर आपजी के बाद में इसका स्वर्ग वास हुआ। हजूर साहिब माई भागो का बुंगा एक प्रसिद्ध स्थान है।

शहीदों को मुक्ति दान

इस युद्ध में जो चालीस सिंघ शहीद हुए थे गुरु जी ने उनके मृतक शरीरों को इकट्ठा करके एक अंगीठे में रखकर संस्कार कर दिया तथा ढाब के किनारे बैठ कर इन शहीदों को यह वर दिए:-

यह सिंघ धर्म की खातिर लड़ कर शहीद हुए हैं। इन्होंने परम-मुक्ति प्राप्त कर ली है। यह जन्म-मरण रहित हो गए हैं। इस ढाब में जहां इन शहीदों का खून गिरा है—जो प्राणी-मात्र स्नान करेगा, वह मुक्ति को प्राप्त होगा। आज से यह ढाब मुक्ति देना वाला मुक्तसर है! इस तरह के वरदान देकर सतिगुरु जी ने कढ़ाह प्रसाद की देग कराई तथा शहीदों के लिए अरदास करके संगों में वितरित की।

खास स्थान

सिख मिसलों तथा महाराजा रणजीत सिंह जी ने इस ढाब खिदराणा की सेवा करके इसको सरोवर बनवाया तथा आगे लिखे चार यादगारी स्थानों पर गुरुद्वारे बनवाए:—

1. तम्बू साहिब-यहां झाड़ियों पर सिघों ने अपने गीले कछहरे सूखने के लिए डाले थे, जिससे तुर्कों को यह लगता था कि सिघों की फौज के वहां तम्बू लगे हुए हैं यह सिघों का कैंप है। यह दिशा में ही सिघ लड़ कर शहीद हुए थे।

2 शहीद गंज:-यहां* चालीस शहीदों का संस्कार किया गया था।

3 दरवार साहिब:-शहीदों के संस्कार के वाद गुरु जी यहां दरवार लगाकर बैठे थे तथा शहीद सिघों को मुक्त पदवी का वर देकर वाद में कीर्तन सोहिले का पाठ करके शहीदों के लिए अरदास की थी।

4. टिब्बी साहिव:-यहां से गुरु जी युद्ध के समय दुश्मन सेना पर वाण वर्षा करते रहे थे।

पहले तीन स्थान सरोवर मुक्तसर के आस-पास ही हैं, परन्तु यह चौथा स्थान यहां से आध मील दूर है।

यह युद्ध 26 वैसाख सम्वत 1762 को हुआ था। इसकी याद में माघ की पहली को यहां बड़ा भारी मेला लगता है, क्योंकि उस समय गर्मियों में इस इलाके में पानी की वहुत कमी थी, जिस से यह दिन शरद ऋतु में जव कि थोड़े पानी से भी गुजारा हो सकता है. निश्चित किया गया था।

---

* यहां यह वात भी याद रखने वाली है कि जिन चालीस मुक्तिओं का अरदास में जिक्र आता है, वह यही मुक्ते हैं, जिनको सतिगुरु जी ने वर दिया था कि यह सिघ जो धर्म की खातिर शहीद हुए थे, इन्होंने धर्म मुक्ति प्राप्त कर ली है।

मुक्तसर से रवानगी
[जैसा देश वैसा भेष]

शहीदों का संस्कार करके गुरु जी मुक्तसर से गांव सरन से आगे नौथेहा गांव पहुंचे। यहां के निवासियों ने सतिगुरु जी को अपने गांव रात डेरा न करने दिया जिससे गुरु जी आगे टाहलियां फत्तू सम्मू को चले गए। यह गाव मुक्तसर से 15 कोस उत्तर पश्चिम है। यहां के मालिक फत्तू तथा सम्मू डोगरा ने सतिगुरु जी की बड़े प्रेम से सेवा की तथा एक लुंगी और एक खेस भेंट कर के माथा टेका। इनकी सेवा पर प्रसन्न होकर लुंगी कमर में बांध ली, तथा खेस कंधे पर रख कर वचन किया है:-

जेहा देस तेहा भेस।
तेड़ लुंगी ते मोढे खेस॥

डोगरों का तब जंगल देश में यही भेष होता था जिसको सतिगुरु जी ने प्रशंसा की।

गुप्तसर नौकरों को वेतन बाँटना

यहां से गुरु जी चल कर बैराड़ों तथा डोगरों में सिखी प्रचार तथा जवानों की भर्ती करते हुए कई छोटे-छोटे गावों से लांघते हुए छतेआणे गांव आए। यह गांव मुक्तसर से 10 कोष पूर्व दिशा थाना कोट भाई में है। इस गांव से बाहर पूर्व दक्षिण कोण में एक एक मील दूर गुरु जी ने डेरा डाला। यहां से जब गुरु जी चलने लगे तो बैराड़ तथा डोगरे नौकरों ने आप से तनखाहें मांगी। सतिगुरु जी ने कहा अभी माया हमारे पास

नहीं है। आगे जाकर मिल जाएगो। परन्तु उन्होंने गुरु जी के घोड़े की वाग पकड़ ली तथा कहा कि तनखाह लेने के विना हम आपको यहां से जाने हो नहीं देंगे। यह वातें हो ही रही थीं कि अचानक ही एक सिख रुपए तथा मोहरों की खच्चर लाद कर आया। उसने रुपयों तथा मोहरो को गुरु जी के आगे चढ़ा कर माथा टेका। इस समय गुरु जी के पास पांच सौ सवार तथा नौ सौ पआदे थे। आप जी ने आठ आने सवार तथा चार आने पैदल को रोज के हिसाव से गिनकर सवको तनखाहें दे दी।

वाद में इन चोदह सौ वैराड़ों तथा डोगरे जवानों के जत्थे-दार भाई दान सिंह को गुरु जी ने कहा कि दान सिंह तुम भी अपना हिसाव करके तनखाह ले लो, परन्तु दान सिंह ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की-सच्चे पातशाह जी मुझे अपनी सिखी वख्शें और सव कुछ आप जी का दिया हुआ मेरे पास है। इस पर प्रसन्न होकर गुरु जी ने वचन किया-भाई दान सिंह जिस तरह भाई महां सिंह ने माझे की सिखी है, उसी तरह ही तुमने मालवा की सिखी रख ली है। गुरु जो ने तनखाहों से वाकी वचे हुए रुपए तथा मोहरें वहीं गढ़ा खोदकर जमीन में दवा दिए तथा स्वय आगे चले गए। वाद में जव इस धन को वैराड़ गढ़ा खोदकर चोरी से निकालने लगे तो उसमें से कुछ भी न मिला; इस लिए इसका नाम 'गुपतसर' प्रसिद्ध हो गया। यह गिदड़वाहा रेलवे स्टेशन से 9 मील उत्तर दिशा है। यहां गुरुद्वारा वना हुआ है।

ब्रह्म शाह से अजमेर सिंह

इस छतेआणे गांव ही एक इब्राहीम शाह फकीर, जिस को

देखकर इसका नाम लखी जंगल रखा तथा प्रसन्न होकर यह शब्द उच्चारण किया:—

सुणके सद माही दा, मेहों पाणी घाह मुतो ने।
किसे ही नाल न रलीग्रा काई, इह की शौक हइउ ने।
गिग्रा फिराक मिलिग्रा मित माही ताही शुकर कीतो ने।
लखी जँगल खालसा, ग्राइ दीदार कीतो ने। (दसम ग्रन्थ)

ग्रर्थात:—जिस तरह रांझे की ग्रावाज सुनकर चूचक की भैंसे घास पाना छोड़ देती थी तथा किसी के साथ कोई नहीं मिलती थी। रांझे के पास पहले पहुंचने का हर एक को ऐसा ही चाव चढ़ जाता था कि एक दूसरे का इन्तजार करने के विना ही उधर को भाग जाती थी! फिर जव माही (रांझे) को ग्राकर मिल जाती थी तो विछोह दूर होने के कारण शुकर करती थी। इसी तरह ही गुरु जो कहते हैं—हमारा यहां ग्राना सुनकर खालसा ने श्रद्धा तथा प्रेम से ग्राकर लाखों की गिनती में दीदार किया है। तथा प्रसन्नता प्राप्त की है।

साबो की तलवंडी डले के पास

लखी जंगल में कुछ दिन निवास रख कर गुरु साहिव जी गांव साहिव चन्द, कोट भाई तथा वाजक ग्रादि गांवों की संगतों को दर्शन देते हुए चौधरी डले के पास सावो की तलवंडी की ग्रोर चल पड़े। डले ने जव गुरु जी का ग्राना सुना तो वह ग्रागे से पांच सौ जवान, एक घोड़ा तथा इकत्तर सौ रुपए ले कर गुरु जी को लेने के लिए ग्रपने हिन्द की सीमा पर जा मिला। वड़े सम्मान के साथ डले ने गुरु जी को ग्रपने साथ लाकर गांव से वाहर तम्व लगा कर डेरा करवा दिया।

वार दिए सुत चार

गुरु जी का यहां ठहरना सुन कर श्रद्धालु सिख संगतें भी बड़ी गिनती में आने लगीं। सुबह-शाम के दीवानों में चहल-पहल होने लग गई। यह खबर जब दिल्ली में माता ग जी तथा साहिब कौर जी को हुई तो वह भी भाई मनी सिः के साथ आपजी के दर्शन करने के लिए आ गई। लिखा है जब माता जी तलवंडी आई तो आगे गुरु जी का दीवान हुआ था। माता जाओं ने पूछा कि साहिबजादे कहां हैं? अ गुरु जी संगत की तरफ ईशारा करके बोले:—

इन पुत्रन के सीस पर वार दीए सुत चार।
चार मूऐ तो किआ हूआ, जीवत कई हजार।

आपजी के यह वचन सुनकर संगत के हृदय द्रवित हो तथा सभी के नेत्र सजल हो गए। दोनों माताएं अपने पुत्रों माता गुजरी जी के परलोक गमन पर अत्यन्त दुःखी हुई। गु ने सभी को शान्ति प्रदान की।

श्री ग्रन्थ साहिब जी का उतारा

कुछ समय यहां फुर्सत मिलने के कारण गुरु साहिब जी गुरु अर्जन देव जी की त्यार की हुई श्री पोथी (ग्रन्थ) सा की बीड़ भाई मनी सिंह जी से सारी नई सिरे से लिखवाई त गुरु तेग बहादर साहिब जी की वाणी उसमें रागों के उचित स्थान पर दर्ज करवाई।

....

तेहरवें भाग का ब्यौरा

दीने से विदायगी । गुप्त मसीहद की चढ़ाई । सुरक्षित जगह की खोज । सर्भैन्त सिंहों का मेल । युद्ध मुक्तसर । मेरा पांच हजारी तथा दस हजारी, टूटी गाठ, माई भागो, शहीदों को मुक्ति दान, खास स्थान, मुक्तसर से रवानगी नौकरों को तनख्वाहें बांटनी गुप्तसर, अहली शाह से अजमेर सिंह, लक्खी जंगल, साबो की तलवडी डले के पास, वार दिए सुत चार श्री ग्रन्थ साहिब जी की बोझ का उतारा गुरु की काशी दमदमा साहिब ।

(भाग चौदवां)

दक्षिण दिशा को जाना

दमदमा साहिब से चलने से पहले गुरु साहिब जी ने माता सुन्दरी जी तथा माता साहिब कौर जी को भाई मनी सिंह जी के साथ दिल्ली वापिस भेज दिया तथा स्वयं 20 कात्तिक सम्वत् 1763 को चलकर कुछ गांवो के रास्ते ठहरते हुए सरसा पहुंच कर विश्राम किया। यहां आपजी की इस याद में गुरुद्वारा जो नाभापति महाराज हीरा सिह जी ने वड़ा सुन्दर वनवाया था, शोभायमान है ।

वना हुआ है। यहां से चलकर गुरु जी *दादू द्वारे आए। यहां उस समय महन्त दादू का चेला जैत राम महन्त होता था। गुरु साहिव जी ने जैत राम को कहा, महन्त जी ! दादू जी का कोई वचन सुनाओ। जैत राम जी ने सुनाया: —

दादू दावा दूरि कर कलि का लीजै भाइ।
जे को मारे ईंट टीम लीजै सीस चढ़ाइ ॥

इस पर गुरु साहिव जी ने कहा महन्त जी ! अव समय वह नहीं जो दादू ने कहा है, अव तो यह है:-

दादू दावा रखि के कुलि का लीजै भाइ।
जे को मारे ईंट ढीम पथर हने रिसाइ ॥

यहां कुछ दिन विश्राम करके गुरु साहिव जी आगे चलकर गांव लाली तथा धमरोदा के रासते कुलाइत पहुंचे। इस गांव में ही भाई दया सिंह जी धर्म सिंह जी औरंगज़ेव को जफरनामें की चिट्ठी देकर गुरु जी को वापिस आकर मिले। यहां सतिगुरु जी वारह दिन ठहरे। इस वारे सूरज प्रकाश में लिखा है:—

नगर कलाइत सुन्दर थाइ।
दुआदस दिवस वसयो तहि डेरा ॥

औरंगजेब की मौत

कुलाइत से चल कर जव गुरु साहिव जी वघौर गांव पहुंचे तो यहां खवर मिली कि औरंगजेव मर गया है तथा उसके पुत्रों में दिल्ली के तख्त पर वैठने के लिए झगड़ा चल पड़ा है। यह खवर

---

*दादू द्वारा गांव नाराइण जयपुर के राज में है। नारायण फुलेरा रेलवे स्टेशन से तीन मील है तथा फुलेरा जयपुर से 55 मील पश्चिमी रेलवे का स्टेशन है।

सुन कर गुरु जी आगे जाने की बजाए *बघौर ही ठहर गए।

औरंगजेब के पुत्र

औरंगजेब की मृत्यु के समय उसके चार पुत्र थे।

1) सुल्तान मुहम्मद।

2) मुअज्जम शाह (बहादुर शाह) अफगानिस्तान गया हुआ था।

3) आजमशाह (तारा आजम) दक्षिण में था।

4) काम बख्श दक्षिण में था।

बहादुर शाह तथा तारा आजम

जब औरंगजेब 2 मार्च सन् 1707 (फाल्गुण सम्वत् 1763) को दक्षिण में अहमद नगर मर गया तो उसके तीसरे पुत्र तारा आजम ने, जो उस समय औरंगजेब के पास था, अपने बादशाह बनने का ऐलान कर दिया। इसके पास वह सारी सेना भी थी जो औरंगजेब के पास दक्षिण में थी तथा शाही खजाना भी था। बाद में बहादुर शाह के बाहर रहने के कारण इसका दिल्ली के अहल-

---

*बघौर उदयपुर रियासत में एक गांव है जो कोठरी नदी के दाएँ किनारे उदयपुर से 70 मील उत्तर पूर्व है। सूरज प्रकाश में भाई सन्तोख सिंह ने लिखा है कि इस जगह ही भीमसेन ने कीचक को मारा था। कीचक राजा केकै का पुत्र था तथा राजा विराट का साला था। राजा विराट के पास ही पांडवों ने अपना भेष बदल कर अपने बनवास का अंतिम वर्ष नौकरों के रुप में व्यतीत किया था। अलवर तथा जयपुर का इलाका विराट के नाम से प्रसिद्ध है।

कारों के साथ मेल जोल भी ज्यादा था जिससे इसने बाप की मृत्यु के वाद तुरन्त ही दिल्ली के तख्त का वारिस होने का ऐलान कर दिया तथा जल्दी ही वाद दिल्ली पर कब्जा करने के लिए दिल्ली को चल पड़ा।

उधर वहादुर शाह को जव अफगानिस्तान में वाप की मृत्यु का पता चला तो वह भी जैसे का तैसा वापिस मुड़ा तथा आगरा पहुंच कर उसने अपने आप को पिता की जगह दिल्ली के तखत का वादशाह होने का ऐलान कर दिया !

बहादुर शाह की सहायता

जव इसको पता चला कि तारा आजम दिल्ली के तख्त पर कब्जा करने के लिए दक्षिण की तरफ से पूरी त्यारी करके आ रहा है तो उसने अपनी सहायता के लिए भाई नन्द लाल जी को गुरु साहिव जी के पास वधौर भेज कर प्रार्थना की। गुरु जी ने समयानुसार विचार करके प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा भाई दया सिंह धर्म सिंह जी को सिंघों का एक तकड़ा जत्था देकर इस मदद के लिए आगरा भेज दिया, जत्थे को रवाना करके गुरु जी ने कहा हम भी युद्ध के समय पहुंच जायेंगे। तथा वचन किया "तारा आजम को हम मारहि"।

तारा आजम की मौत

तारा आजम को भी वहादुर शाह के आगरा पहुंचने का पता लग गया वह भी जल्दी-जल्दी से आगरा की तरफ चल पड़ा। इधर वहादुर शाह तारा आजम को आगरा से आगे होकर रोकने के लिए चम्बल नदी के किनारे पहुंच गया। यहां आगरा से 16

मील उत्तर पश्चिम जाजू के मुकाम पर दोनों भाईयों का तीन दिन तक घमासान युद्ध हुआ। जिसमें 20 जून सन् 1707 (आषाढ़ सम्वत् 1764) को गुरु साहिब जी ने अपना वायदा पूरा करने के लिए तारा आजम को अपने एक तीर के वार से मार दिया।

इस तरह तारा आजम, उसके कुछ जरनैल तथा बहुत सारे सैनिक युद्ध में मारे गये तथा वहादुर शाह की बड़ी शानदार विजय हुई।

‡गुरु जी आगरा में

वहादुर शाह ने अपनी विजय के कारण गुरु जी का धन्यवाद करने के लिए आपको आगरा आकर दर्शन देने की प्रार्थना की। गुरु साहिब जी वहादुर शाह की प्रार्थना स्वीकार करके सिखों सहित आगरा गए तथा वाहर वाग में डेरा किया। वहादुर शाह ने वड़े सम्मान के साथ सेवा की तथा धन्यवाद के तौर पर वहुत कीमती सुगातें तथा नजराने भेंट किए।

आगरा से सिखी प्रचार

आगरा ठहर कर गुरु साहिव जी ने नजदीक-नजदीक के ईलाकों में दौरा करके सिखी का प्रचार करते रहे तथा आप जी

‡ सूरज प्रकाश में भाई सन्तोख सिंह जी ने लिखा है कि आगरा से गुरु जी वहादर शाह के साथ दिल्ली गए तथा वहां आप जी ने शहीदी स्थान सीस गँज तथा संस्कार स्थान रकाव गंज पर यादगार के तौर पर समाधियां वनवाई तथा फिर वहादुर शाह की विजय की खुशी के उत्सवों में सम्मिलित होने के लिए आगरा वापिस आ गए तथा वाहर वाग में डेरा डाल दिया।

का यहां ठहरना सुनकर पंजाब की तरफ से दर्शन करने के लिए संगतें आती रहीं तथा पीछे के सारे हालात बताती रहीं।

इस तरह पीछे पंजाब के हालात का जायजा लेकर आप जी ने वापिस मुड़ना ठीक न समझा जिससे आपजी धोलपुर, मथुरा वृन्दावन आदि प्रसिद्ध इलाकों में ही छः सात महीने भ्रमण करते रहे। धौलपुर गुरु जी एक महीना ठहरे।

बहादुर शाह ने अपने खुशियों के जश्न करके जब दक्षिण की गड़बड़ दबाने के लिए उधर की त्यारी की तो उसने गुरु साहिब जी को भी साथ जाने के लिए प्रार्थना की। गुरु जी ने उसकी प्रार्थना तो स्वीकार कर ली, परन्तु वचन किया कि हम आप के †पिछे आयेंगे आप आगे चलो इस तरह गुरु जी की मर्जी से बहादर शाह नम्बर सन् 1707 को आगरा से राजपूताने के रास्ते दक्षिण को चल पड़े।

गुरु जी ने दक्षिण को चलना

जब बहादुर शाह का डेरा राजपूताना से लांघ कर दक्षिण को उतर गया तो पीछे से गुरु जी जनवरी सन् 1708 [माह पौष

---

† गुरु साहिब जी राजनीति की चालों को बड़ी अच्छी तरह समझते थे, आपजी मसलमानों का विश्वास नहीं करना चाहते थे, अनजाने में कही दुश्मन वार कर दे। इसी लिए ही आप जी जाजू मुकाम पर बहादुर शाह की सेना के बीच में मिल कर नहीं लड़े बल्कि अलग रह कर तारा आजम को तीर मारा।

अब बहादुर शाह के साथ मिलकर इकट्ठा सफर इसी लिए नहीं करना चाहते थे कि कोई शरारती विश्वासघात न कर दे। आप जी का डेरा बहादुर शाह के पीछे दूर-दूर रहता था।

सम्वत् 1765] में अपने सिखां के जत्थे को साथ लेकर धौलपुर से वहादुर शाह के आगे-पीछे होकर नर्बदा नदी पार करके 17 मई सन् 1708 (ज्येष्ट 1765) को वुरहानपुर पहुंच गए। बुरहानपुर की संगत का प्रेम तथा श्रद्धा देख कर आप जी ने यहां कुछ दिन विश्राम किया। आप जी की इस याद में यहां गुरुद्वारा बना हुआ है। बुरहानपुर से गुरु साहिब जी जुलाई सन् 1708 (माह आषाढ़ सावन सम्वत् 1765) को वहादुर शाह से अलग होकर जगह-जगह ठहरते हुए गोदावरी नदी के किनारे नंदेड़ नगर पहुंच गए, वहादुर शाह यहां वुरहानपुर से हैदरावाद की तरफ भाद्रों सम्वत् 1765 को अपने भाई काम वख्श को कावू करने के लिए चला गया।

माधो दास बैरागी के साथ मेल

माधो दास जम्मू रियासत में पुणछ ईलाके के गांव राजोरी का रहने वाला था। इस का जन्म रामदेव राजपूत के घर कत्तक सुदी 13 सम्वत् 1727 को हुआ। माता-पिता ने इसका नाम लक्षमण दास रखा। इसको शस्त्र-विद्या तथा शिकार खेलने का वड़ा शौक था। एक दिन इससे शिकार में एक गर्भवती हिरणी मर गई उसके पेट में वच्चा देखकर इसको वड़ा बैराग हुआ। वाद में इसने जानकी प्रसाद वैष्णव साधू का चेला वन कर वैष्णव मत धारण कर लिया तथा नाम माधो दास रख लिया। बैरागी हो कर साधना करके यह एक सिद्ध पुरुष वन गया। तीर्थ यात्रा तथा मन्दिर यात्रा करता हुआ जव यह नंदेड़ के पास गोदावरी के किनारे पहुंचा तो इसको यह एकांत तथा रमणीय स्थल वहुत पसंद आया, यहां यह अपना आश्रम वना कर रहने लग गया। भाद्रों सम्वत् 1765 में जव श्री कलगीधर जी नंदेड़ पहुंचे तो आप जी के साथ

माधो दास का मेल हो गया। सतिगुरु जी के दर्शन-उपदेश तथा वीरता के कारनामे सुनकर माधो दास ने वहुत प्रभावित होकर आप जी के चरणों पर सीस रख दिया। सतिगुरु जी ने प्रसन्न होकर इस को शावाशी दो। इस ने हाथ जोड़ कर कहा मैं आप जो का 'वंदा'' हूं। जैसे इच्छा हो वैसा ही रखो।

इस की श्रद्धा तथा प्रेम देखकर सतिगुरु जी ने इस को अमृत छका कर नाम गुरवख्श सिंह' रखा परन्तु खालसा में इसका नाम 'वंदा वहादुर' ही प्रसिद्ध है।

गुरु जी पर छुरे का वार

अव यह वात धीरे-धीरे कुछ समय से सिद्ध हो गई है कि वजीर खां सूवा सरहिंद अपने पापों तथा किए जुल्मों से डर कर गुरु साहिव जी से सदा भयभीत रहता था। फिर वहादुर शाह के साथ गुरु जी का मेल हो जाने के कारण इसको और भी डर पैदा हो गया था कि साहिवजादों का वदला लेने के लिए गुरु जी उस को तथा उसके वाल-वच्चों का कत्ल न करवा दे। इस लिए उस ने अपना डर दूर करने के लिए अपने दो विश्वासनीय आदमी गुरु जी के पीछे आपजी को कत्ल करने के लिए लगा दए। यह पठान जवान आगरा से ही गुरु जी के पीछे लग गए। गुरु जी ने जव नंदेड़ जाकर डेरा डाल दिया तो यहां सिंघों में मिल-जुल गए तथा नीच काम करने के लिए समय का इन्तजार करने लगे। लिखा है कि जव एक दिन रहिरास के दीवान की समाप्ति के वाद गुरु साहिव जी अपने तम्वू में विश्राम कर रहे थे तो इन नीचों में से एक नीच ने समय देखकर आप जी के पेट में छुरे का वार कर दिया।

जिस नीच ने छुरे का वार किया था, उसे तो वहीं सतिगुरु

जी ने तलवार की भेंट कर दिया तथा दूसरा नीच जो तम्बू के बाहर खड़ा था, उसको शोर पड़ने पर सिखों ने मार दिया।

बाद में सिखों ने अच्छे सियाने जराह को शहर से बुलाकर उसी समय आप जी का जख्म सी कर पट्टी कर दी। यह दु:खदायक घटना 18 भाद्रों सम्वत् 1765 को हुई।

बंदा सिंह का पंजाब की तरफ आना

बंदा सिंह ने कुछ दिनों में सिखों पर हुए जुल्म साहिबजादों की शहीदियां, आनंदपुर को उजाड़ देना आदि, सब कुछ सिखों से सुन लिया। इन जालिमों से बदला लेने के लिए उसकी वीर-रस से भुजाएँ फड़कने लगी कि ऊपर से गुरु जी को छुरा मार कर कत्ल करने की यह घटना हो गई। उसकी आंखों में ऐसे नीच जालिमों से बदला लेने के लिए खून उतर आया। उसने हाथ जोड़ कर गुरु साहिब जी से इन जालिमों को ठीक करने के लिए पंजाब जाने की आज्ञा मांगी। गुरु साहिब जी ने बंदा सिंह की शस्त्र-विद्या दृढ़ता तथा नीति निपुणता देखकर उसको पंजाब जाने की आज्ञा दे दी।

पंजाब की तरफ चलने से पहले गुरु जी ने बंदा सिंह को अपने पांच तीर दिये कि जब कभी अति संकट पड़े तब यह चलाना तुम्हारी विजय होगी। पंथ खालसे में जान-पहचान कराने के लिये पांच सिंह (बाबा विनोद सिंह, कान सिंह, बाज सिंह, विजै सिंह तथा राम सिंह) साथ देकर खालसा पंथ की तरफ हुक्मनामे लिख दिए कि बंदा सिंह की आज्ञा में रह कर इसकी हर प्रकार से सहायता करनी।

बाद में बंदा सिंह को निम्नलिखित शिक्षा देकर उसको अस्सू सम्वत् 1765 में पंजाब की तरफ भेजा।

शिक्षाः—(1) जत रखना, (2) खालसे के अनुयाई होकर रहता, (3) स्वयं को गुरु न मानना, (4) बांट कर खाना, (5) अनाथों की सहायता करनी !

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरुआई

गुरु साहिव जी चाहे अभी पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुए थे। परन्तु आपजी के जख्म भरता जा रहा था। इस लिए आप जी को स्वस्थ समझ कर वंदा सिंह पंजाव को चल पड़ा।

परन्तु 'राम गयो रावण गयो के वाक्य के अनुसार आपजी के जख्म थोड़े दिनों के वाद फिर खराव हो गए। आप जी ने अपना चोला त्यागने का समय नजदीक देखकर अपने निकटवर्ती सिंहों को आज्ञा दी। श्री गुरु ग्रन्थ साहिव जी का प्रकाश करके एक नारियल पांच पैसे तथा और गुरुआई के तिलक की सामग्री त्यार करो। फिर कड़ाह प्रसाद की देग त्यार करके हजूरी में रखो तथा सभी सिंह दीवान सजाकर वैठ जाओ।

हुक्म के अनुसार जव सव कुछ त्यार होकर दीवान सज गया तो श्री कलगीधर जी ने संगत को सम्वोधन करके वचन किया—खालसा जी! आपने देखा है कि व्यक्तिगत गुरु गद्दी सदा ही झगड़ों का कारण रही है इस लिए आज से यह प्राप्ति वद की जा रही है तथा इस गुरुवाणी गुरु को जो हमेशा अमर तथा अटल रहने वाली है। गुरुआई दी जाती है। आपने दस गुरु साहिवों की इस आत्मा स्वरुप वाणी को गुरु मानना तथा पूजना। श्री गुरु रामदास साहिव जी का यह वाक्य सदा याद रखनाः-

वाणी गुरु, गुरु है वाणी, विचि वाणी अंमृतु सारे।
गुरुवाणी कहै सेवकु जनु मानै, परतखि गुरु निसतारे।4।
(नट म 4)

यह वचन करके आप जी ने पांच पैसे तथा नारियल श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की हजूरी में रखकर तीन परिक्रमा की तथा माथा टेक कर "वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतहि" बुलाई तथा यह वचन किए;-

आगिआ भई अकाल की तवी चलाइउ पंथ ।
सब सिखन को हुकम है गुरु मानिउ ग्रन्थ ।
गुरु ग्रन्थ जी मानिउ प्रगट गुरां की देह ।
जा का हिरदा सुद है खोज शबद महि लेह ॥

फिर वचन किया कि यह वाणी हमारा हृदय है जिसने हमारे वचन सुनने हों वह इस वाणी का पाठ करे तथा त्यार बर त्यार हमारा शरीर है, जिसने हमारे शारीरिक दर्शन करने हों वह खालसे के दर्शन करे ।

यथा:-खालसा मेरो रूप है खास ।
खालसे में हउं करहु निवास ॥

इस के बाद अरदास करके कड़ाह प्रसाद की देग बांटी गई । कार्तिक सुदी दूज सम्वत् 1765 को यह महान कार्य करके गुरु जी ने वचन किया कि अब हमारी अपने पिता अकाल पुरुष के पास जाने की त्यारी है, हमारा अंगीठा त्यार करो ।

ज्योति जोत समाना

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को खालसा पंथ का गुरु स्थापित करके गुरु साहिब जी "जह ते उपजी तह मिली सकी प्रीति समाहु" अनुसार वीरवार कार्तिक सुदी पंचमी सम्वत् 1765 (7 अक्तूबर सन 1708] को "जोती जोति रली सम्पूर्ण थीआ राम" के महांवाक्य अनुसार चंदन की चिता अंगीठी में बैठ कर इस संसार से लोप हो गए तथा अपनी 'अमर आत्मा' रहती दुनियां तक

खालसे में प्रवेश कर गए।

धंन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज।
धंन कलगीआं वाला।
धन अमृत दाता।
वाहिगुरु जी का खालसा।
वाहिगुरु जी की फतह॥

इस समय गुरु साहिब जी के पास माता साहिब देवां जी, भाई दया सिंह, भाई मनी सिंह तथा भाई धर्म सिंह आदि प्रसिद्ध सिखों के इलावा लगभग तीन सौ घुड़सवार भी थे।

गुरु साहिब जी ने अपने ज्योति जोत समाने की त्यारी करने से पहले ही भाई मान सिंह जी के साथ कुछ सिखों को तथा माता साहिब कौर जी को माता सुन्दरी जी के पास दिल्ली भेज दिया था। कुछ घुड़सवार सिंह बंदा बहादुर के साथ पंजाब को आ गये थे।

पीछे आप जी के पास सेवा-शूषा के लिए थोड़े ही सवार तथा भाई दया सिंह, धर्म सिंह जी आदि सिख रह गये थे जो आप जी का अंतिम संस्कार करके पंजाब को वापिस आये थे।

गुरुद्वारा हजूर साहिब की निष्ठा

इस आप जी के पवित्र अंगीठे स्थान नाम "अविचल नगर गोविंद गुरु का" गुरुवाणी की तुक के आधार पर अविचल नगर प्रसिद्ध हुआ। सिखों के प्रेम तथा श्रद्धा के कारण जो गुरु जी को सदा हाजर-हजूर समझते हैं इसका दूसरा नाम हजूर साहिब प्रसिद्ध है। गुरुद्वारा साहिब नंदेड़ शहर हैदराबाद दक्षिण में गोदावरी नदी के पास शोभायमान है, यह खालसे का चौथा तख्त है।

इस स्थान की सेवा 1832 में महाराजा रणजीत सिंह जी शेरे पंजाब ने कराई तथा उसी समय ही इसके साथ चौथी जगीर निजाम साहिब हैदराबाद से लगाई जो अभी तक चली आ रही है।

गुरू जी की कुल आयु तथा गुरुता का समय

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने 41 वर्ष 9 माह 15 दिन कुल आयु भोगी, जिस में से 32 वर्ष 10 माह तथा 26 दिन गुरुता की।

देश का बादशाह

आप जी के समय दिल्ली का बादशाह औरंगजेब था जो 2 मार्च सन् 1707 (फाल्गुन सम्वत् 1763) को अहमद नगर दक्षिण में मरा तथा उसका पुत्र बहादुर शाह दिल्ली के तख्त पर बैठा।

चौदहवें भाग का ब्यौरा

दक्षिण दिशा को जाना, औरंगजेब की मौत, औरंगजेब के पुत्र बहादुर शाह तथा तारा आजम, बहादुर की सहायता, तारा आजम की मौत गुरु जी आगरा में, आगरा से प्रचार, गुरु जी ने दक्षिण को चलना, माधोदास बैरागी के साथ मेल, गुरु जी पर छुरे का वार बंदा सिंह ने पंजाब की तरफ आना, गुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरुआई, गुरु जी ने ज्योति जोत समाना, गुरुद्वारा हजूर साहिब की निष्ठा। गुरु जी की कुल आयु तथा गुरुता का समय, देश का बादशाह।

भाग पन्द्रहवां

गुरू जी का परिवार माता पिता

पिता—श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी माघ सुदी पांच

सम्वत् 1232 (11 नवम्बर सन् 1775) को चांदनी चौंक दिल्ली में शहीद किए गए।

माता—श्री माता गुजरी जी 13 पोह सम्वत् 1761 को सरहिन्द में दो छोटे साहिबजादों की शहीदी सुनकर शरीर त्याग गए।

महिल

1. *श्री माता जीतो जी लाहौर निवासी हरजस सुभिखी की सपुत्री 23 आषाढ़ सम्वत 1734 को गुरु के लाहौर में विवाह हुआ तथा 13 अस्सू सम्वत 1757 को आनंदपुर समाई। गांव अगमपुरा आनंदपुर के पश्चिम की तरफ जहां माता जी के शरीर का संस्कार हुआ गुरुद्वारा कायम है।

---

*कई विद्वान लेखक लिखते हैं कि माता जीतो का नाम ही सुन्दरी जी था। परन्तु यह बात ठीक नहीं मालूम होती। सिख इतिहास में माता जीतो जी का देहान्त 13 अस्सू सम्वत् 1757 आनंदपुर हुआ लिखा है। माता जी का संस्कार गांव अगमपुर किला होलगढ़ के पास गढ़शंकर वाली सड़क पर हुआ। जहां इस याद में माता जी का दुहेरा बना हुआ है।

परन्तु माता सुन्दरी जी का देहान्त 1804 में दिल्ली, जहां माता जी सम्वत 1761 के बाद निवास रखते रहे, हुआ प्रकट है। माता सुन्दरी जी के इस स्थान पर गुरुद्वारा माता सुन्दरी जी तुर्कमान दरवाजे से आधा मील के लगभग बाहर प्रसिद्ध है। इन दोनों अलग-अलग प्रसिद्ध स्थानों की मौजदगी में इस बात का कोई सन्देह नहीं रह जाता कि जीतो जी तथा माता सुन्दरी जी गुरु साहिब जी के दो अलग-अलग महिलों के नाम नहीं थे।

2. श्री माता सुन्दरी जी लाहौर निवासी रामसरन कुमरा खत्री की सुपुत्री का विवाह 7 बैसाख सम्वत 1741 को आनंदपुर में हुआ तथा माता जी दिल्ली में तुर्कमान दरवाजे में सम्वत 1864 में समाए। यहां आपजी के पवित्र नाम से गुरुद्वारा माता सुन्दरी जी प्रसिद्ध है।

3 श्री माता साहिब देवां (कौर) जी रहतास निवासी राम वस्सी की सुपुत्री 18 वैसाख सम्वत 1757 को आनंदपुर में विवाही तथा दशम गुरु जी के ज्योति-जोत समाने के बाद दिल्ली माता सुन्दरी जी के पास आकर निवास रख कर उनसे बहुत पहले स्वर्ग सिधार गई। माता जी का देहुरा यमुना के किनारे गुरुद्वारा वाला साहिब में माता सुन्दरी जी के देहुरे के पास है।

सन्तान-साहिबजादे

1. साहिब अजीत सिंह जी का जन्म माता सुन्दरी जी की कोख से 23 माघ सम्वत् 1743 को पांऊँटे साहिब हुआ तथा शहीदी 8 पोह सम्वत् 1761 को चमकौर साहिब में हुई, उमर 19 वर्ष।

2. साहिब जुझार सिंह जी-माता जीतो जी की कोख से जन्म 21 चैत्र सम्वत् 1747 को आनंदपुर में हुआ तथा शहीदी चमकौर साहिब में 8 पोह सम्वत 1761 को हुई, उमर 15 वर्ष।

3. साहिब जोरावर सिंह जी माता जीतो के उदर से जन्म 6 माघ एतवार सम्वत 1753 को आनंदपुर में हुआ तथा शहीदी 13 पोह सम्वत 1761 को सरहिंद (फतेहगढ़ साहिब) में हुई, उमर 9 वर्ष।

4. साहिब फतह सिंह जी का जन्म माता जीतो जी के उदर से 2 फाल्गुण बुधवार सम्वत् 1755 को आनंदपुर में हुआ तथा

शहीदी 13 पोह सम्वत् 1761 को सरहिंद में हुई, उमर 7 वर्ष।

5. खालसा-माता साहिब कौर जी के नादी पुत्र की स्थापना 18 वैसाख सम्वत् 1757 को आनंदपुर (केसगढ़ साहिब) हुई। आयु युगों-युगों तक अमर तथा अटल।

गुरु कलगीधर जी के परोपकार

गुरु जी ने साहसहीन मुर्दा हुई हिन्दू कौम को अमृत छकाकर शस्त्रधारी करके वीर रस भर दिया। दुर्बल कौमों में से सिंघ सजा कर जालिम मुगल राज की जड़े हिला दी तथा अंत में जुल्मी राज को समाप्त करके रख दिया। राजा भीम चन्द के पुत्र अजमेर चन्द के साथ वात-चीत करते आपजी ने उसको अमृत की शक्ति बताई:—

चिड़ीआं कोलों बाज तुड़ाऊं।
तबी गोविंद सिंघ नाम कहाऊं॥

2. जात-पात का भेद मिटाया

वह नीची जातियों जिन की परछाई भी कोई नहीं लेता था, उनको अमृत छका कर सिंघ सजाया तथा उच्च श्रेणी के आदमियों के बराबर करके संगत-पंगत में बिठा कर छूत-छात के भ्रम को दूर किया।

3. ग्रन्थों के अनुवाद

अपने दरबार में 52 कवि रखकर पुरातन शूरवीरों की कथा कहानियों के प्रसंगों वाले ग्रन्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद करवाया। जिनके पढ़ने तथा सुनने से साहसहीन तथा डरपोक

कौमों में वीर-रस का संचार हुआ तथा शस्त्र पकड़ कर धर्म तथा कौम के लिए युद्ध करके जुल्म तथा जालिम का मुकाबिला किया।

यथाः—दसम कथा भागोत की भाखा करी बनाइ।
अवर वासना नाहि प्रभ धरम जुध के चाइ॥

अर्थात्-यह अनुवाद केवल धर्म युद्ध करने की त्यारी के लिए किया है। इसका और कोई उद्देश्य नहीं है।

4. बाणी की रचना

समय के अनुकूल गुरु जी ने जोगियों, पंडितों तथा और मतों के सुधार के लिए बेअंत बाणी की रचना की। मन की एकाग्रता के लिए अकाल पुरुष के बेअंत गुणों का वर्णन करके अकाल उस्तत तथा जाप साहिब के रूप में संसार के उद्धार के लिये बाणियां उच्चारण की। परमात्मा कैसा है ? फरमाते हैं:-

प्रभ जात न पात न जोति जुतं।
जिह तात न मात न भ्रात सुतं।
जिह रोग न सोग न भोग भुअं।
जिह जंपहि किंनर जछ जुअं॥9॥149॥ (अकाल स्तुति)

5. सर्वस्व दानी

गुरु जी धर्म, कौम तथा देश की खातिर अपना सब कुछ माता-पिता, पुत्र, प्यारे सिख तथा धन, धाम, सर्वस्व कुर्बान कर दिया।

6. मसंदों से छुटकारा

मसंद, जो कार-भेंट लेने के बहाने सिख संगतों को बहुत तंग किया करते थे उनको कार भेंट लेने से बंद करके सिखों को इन

के जुल्म तथा सखतियों से छुटकारा दिलाया।

7. श्री ग्रन्थ साहिब जी को गुरु स्थापित करना

आप जी ने श्री ग्रन्थ साहिब जी में श्री तेग बहादर साहिब जी की वाणी चढ़ा कर वीड़ को दमदमा साहिब सम्पूर्ण किया तथा हजूर साहिब गुरु ग्रन्थ तथा पंथ को गुरु-गद्दी का तिलक लगा कर गुरु गद्दी के लिए चल रहे जाति लड़ाई झगड़ों को सदा के लिए बंद करके गुरु गद्दी को अटल तथा अचल कर दिया।

गुरु साहिब जी का अद्भुत व्यक्तित्व

"तेरी उपमा तोहि बनिआवै"।

साधू गोविंद सिंह जी लिखते हैं;-

1. इस भारत भूमि में सहस्त्रों धर्म प्रचारक तथा लाखों देश रक्षक राजा महाराजा हुए हैं। परन्तु ऐसा एक भी नहीं हुआ कि जिस ने धर्म-रक्षा के निमित अपना सर्वस्व होम करके शेष में अपने प्राण भी दिए हैं।

2. हिन्दू धर्म पर आती हुई अनेक तरह की आपत्तिओं को दूर करने वाले या मृतप्राय आर्य संतान के पुनः प्राण-सचारक, यदि कोई महांपुरुष हैं, तो सिख समाज के निर्माता तथा शासक धर्म गुरु यही एक श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ही हुए हैं।

3. आप ही के सदुपदेश से चारों वर्ण परस्पर भ्रांति भाव से व्यवहार करने लगे थे, आप ही की सम्पूर्ति महां शक्ति वर्तमान सिख समाज की युद्ध के विषय में सरवत अग्रसर गनणा है, आर

ही केवल वीर्य साहस के प्रभाव से निराश्रित आर्य सन्तान का आर्यव्रत में श्रेष्टत्व दीख पड़ता है।

4. इस भारत भूमि पर अनेकों धर्म प्रचारक गुरु हुए हैं, तथा आगे भी होंगे तथापि श्री गुरु गोविंद सिंह जी जैसे धर्म प्रचारक धर्म गुरु का होना दोबारा इस दुनियां में दुर्लभ है।

5. सर्वउदर पोशी अनेक मनुष्य उत्पन्न हो-हो कर मृत्यु को प्राप्त होते हैं, तथापि अपने निर्मल यश से कलपावधि जीने वाले यह एक श्री गुरु गोविंद सिंह महाराज ही है, जब तक सुबुद्ध आर्य प्रजा रहेगी, तब तक इनके अविस्मरणीय उपकारों को सम्मान पूर्वक माना करेगी।

6. धन्य देश, धन्य भूमि, धन्य काल, धन्य नर धन्य गृह तथा धन्य वह माता जिनके उदर से श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज जैसे महांपुरुषों का जन्म होता है।

(इतिहास गुरु खालसा अध्याय 47)

गुरू दशमेश जी के प्रसिद्ध पूजनीय स्थल

1. पटना साहिब:-[जन्म स्थान] यहां दशमेश गुरु जी ने पोह सुदी सप्तमी सम्वत 1723 को अवतार धारा। यह खालसे का दूसरा तख्त साहिब है।

2. आनंदपुर साहिब:-(गु: केसगढ़) यहां गुरु जी ने लगभग 25 वर्ष निवास किया। अमृत त्यार करके वैसाखी सम्वत 1756 खालसा पंथ सजाया। 'खालसा मेरो रुप है खास'' का खालसे को सम्मान दिया। यह खालसे का तीसरा तख्त है।

3. चमकौर साहिब:-यहां 8 पोह सम्वत 1661 को आप जी के दो साहिबजादे तथा 37 सिंघ धर्म तथा कौम की खातिर शहीद

हुए ।

4. दीना कांगड़:-यहां बैठ कर आपजी ने औरंगजेब को पोह-माघ सम्वत 1761 को जफरनामा लिखा था ।

5. मुक्तसर:-यहां आपजी ने माझे के सिघों की टूटी गांठी । खिदराणे को ढाब को मुक्तसर का वर दिया । शहीद हुए 40 सिघों का सस्कार करके उन को 'परम मुक्ति' को प्राप्त हुए के वचन से सम्मान दिया ।

6. दमदमा साहिव:-(सावो की तलवंडी) यहां आप जी ने गुरु ग्रन्थ साहिव जी की वाड़ सम्पूर्ण की, भाई मनी सिंह जी को गुरु वाणी के अर्थ पढ़ाए तथा गुरु की कांशी का वर दिया । यह स्थान अव खालसे का पांचवां तख्त माना गया है । गुरु साहिव जी ने डेढ़ वर्ष यहां निवास रखा । यह खालसा जी का पांचवां तख्त है ।

7. श्री अविचल नगर:-(हजूर साहिव) यहां आप जी भाद्रों सम्वत् 1765 में पहुंचे । वंदा सिंह को अमृत छकाया तथा उस को पंजाव भेजा । श्री गुरु ग्रन्थ साहिव जी को गुरुता का तिलक दिया तथा स्वय कत्तक सुदो 5 सम्वत् 1765 [7-10-1708] को ज्योति जोत समा गए । यह स्थान खालसे का चौथा तख्त साहिव है ।

इन प्रसिद्ध मुख्य स्थानों के इलावा और भी आप जीं के बेअंत स्थान हैं जो आपजी के चरण स्पर्श के कारण पूजे तथा माने जाते हैं ।

श्री अकाल पुत्र दशमेश जी के महां वाक्य

पूज्य इष्ट:-

भुजंग प्रभात छंद ॥

नमो देव देवं नमो खड़ग धारं ।

सदा एक रूप सदा निरबिकार ।
नमो राजन मानकं नामनेश्रं ।
नमो निरबिकारं नमो निरजुरेश्रं ।।80।।
(विचित्र नाटक अध्याय 1)

|| चौपाई ||

जवन काल सब जगत बनायो ।
देव दैत जछन उपजायो ।
आदि अंति ऐकै अवतारा ।।
सोई गुरु समझियहु हमारा ।।9।।
नमसकार तिस ही को हमारी ।
सकल प्रजा जिन आप सवारी ।।
सिवकल को सवगुन सुख दोउ ।
सत्रन को पल मो वध कोउ ।।10।।

|| चौपाई ||

सरव काल है पिता अपारा । देवि कालका मात हमारा ।
मनूआ गुर मुरि मनसा भाई । जिनि मोको सुख क्रिआ पढ़ाई ।5।
(अध्याय चौदह)

अकाल पुरख की रछा हमनै ।
सरब लोह की रछिआ हमनै ।
सरब काल जी दी रछिआ हमनै ।
सरब लोह जी दी सदा रछिआ हमनै ।।
(अकाल स्तुति-मंगल श्लोक)

हुक्म अकाल पुरख:-
अकाल पुरख वाच ।।चौपाई।।
मैं अपना सुत तोहि निवाजा । पंथ प्रचुर करबे कउ साजा ।
जाति तहां तै धरमु चलाइ । कुबुधि करन ते लोक हटाइ ।।29।।
(विचित्र नाटक अध्याय 6)

॥ कवि वाच ॥

दोहरा:-ठाढ भयो मैं जोरि कर बचन कहा सिर नयाइ ।
पंथ चलै तब जगत मैं जब तुम करहु सहाइ ॥30॥

बिनती:—

कवि उवाच ॥

हमरी करो हाथ दै रछा । पूरन होइ चित्त की इछा ॥
तव चरनन मन रहै हमारा । अपना जान करो प्रतिपारा ॥1॥

जन्म उद्देश्य:—

नराज छंद ॥

1. हम इह काज जगत मो आए ।
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहा तुम धरम बिथारो ।
दुसट दोखियनि पकरि पछारो ॥42॥

2. याही काज धरा हम जनमं ।
समझि लेहु साधू सब मनमं ॥
धरम चलावन संत उबारन ।
दुसट सभन को मूल उपारन ॥43॥

चौपाई ॥

इह कारनि प्रभ मोहि पठायो ।
तब मैं जगत जनमु धरि आयो ॥
जिम तिन कही इनै तिम कहि हौं ।
अउर किसू ते बैर न गहि हौं ॥31॥
(बिचित्र नाटक)

खालसा:—जागत जोति जपै निस बासुर ।
ऐक बिना मन नैक न आनै ।
पूरन प्रेम प्रतीति सजै ।
व्रत गोर मढ़ी मट भूल मानै ।
तीरथ दान दया तप संजम ।
ऐक बिना नहि नेक पछानै ।
पूरन जोति जगै घट मैं ।
तव खालसा ताहि नखालस जानै ॥1॥
(33 सवईऐ)

खालसे को सम्मान:-

सवईया:-

1. जुध जिते इनही के प्रसादि । इनही के प्रसादि सु दान करे ।
अघ उघ टरे इनही के प्रसादि । इनही की क्रिपा पुन धाम भरे ।
इनहि के प्रसादि सु विदआ लई । इनही की क्रिपा सब शत्रु मारे ।
इनहि की क्रिपा से सजे हम हैं । नहीं मोसो गरीब करोर परे ।47।

2. सेव करी इन की भावत । अउर की सेव सुहात न जीको ।
दान दयो इनही को भलो । अरु आन को दान लागत नीको ।
आगै फलै इन ही को दयो । जग मे जसु अउर दयो सब फीको ।
मो गृह मै तन ते मन ते सिर लउ । धन है सबही इन ही को ।3।

शूरवीरता:-

सवईया ॥

देह शिवा वर मोहि इहै । शुभ करमन ते कबहूं न टरों ।
न डरों अरि सौं जब जाइ लरों । निसचै कर आपनी जीत करों ।
अरु सिख हौं आपने ही मनकौ । इह लालच हउ गुण तउ उचरों ।
जब आवकी अउध निदान बनै । अतही रन मै तब जुझ मरों ।131।

(चंडी चरित्र)

धंन जीउ तिहको जग मै । मुख ते हरि चित मै जुधु विचारै ।
देह अनित न नित रहै । जसु नाव चड़ै भवसागर तारै ।
धीरज धाम बनाइ इहै तन बुधि सु दीपक जिउ उजीआरै ।
गिआनहि की बढनी मनहु हाथ लै । कातरता कुतवार बुहारै ॥
(कृष्णावतार)

शास्त्रों को नमस्कार :-

रसावल छंद ॥

नमो चक्र पाणं ॥ अभूतं भयाणं ॥
नमो एग्रदाढ़ं ॥ महां गि्रसट गाड़ं ॥ 88 ॥
नमो तीर तोपं ॥ जिनै संत्र घोपं ॥
नमो घोप पटं ॥ जिनै दुसट दटं ॥ 90 ॥
जिते ससत्र नामं ॥ नमसकार तेयं ॥ 91 ॥
(विचित्र नाटक अध्याय : 1)

तलवार की जय :-

त्रिभंगी छंद ॥

खग खंड विहंडं खल दल खंडंअति रण मंडं भर वंडं ॥
भुज दंड अखंड़ं तेज प्रचंडं जोति अमंड भान प्रभं ॥
सुख संता करणं दुरमति दरणं किलबिख हरणं अस सरणं॥
जै जै जग कारण स्रिसटि उबारण,मम प्रतिपारण जैतेग॥2॥
(अकाल स्तुति अध्या : 1)

तलवार शक्ति :-

काल तुही काली तुही, तुही तेग अरु तीर ॥
तुही निशानी जीत की, आजु तुही जगबीर ॥5॥)
(शस्त्र नाम माला पा: 10

अरदास :-

सवईआ ॥

मेर करे त्रिण ते मुहि जाहि गरीब निवाज न दूसर तोसो ॥
भूल छिमो हमरी प्रभ आपन भूलनहार कहूं कोऊ मोसो ॥
सेव करी तुमरी तिन के सब ही ग्रिह देखीअत द्रब भरोसो ॥
या कल मै सब काल क्रिपान के भारी भुजान को भारी भरोसो ॥92॥
(बचित्र नाटक अध्याः 1)

हाल मस्त :-

खिआल —

मित्र पिआरे नूं हाल मुरीदां दा कहिणा ॥
तुधु बिनु रोगु रजाईआ दा ओढण, नाग निवासां दे रहिणा ॥
सूल सुराही खंजरु पिआला, बिंग कसाईआं दा सहिणा ॥
यारड़े दा सानूं संथरु चंगा, भठ खेड़िआं दा रहिणा ॥1॥
(शब्द हजारे)

इस्त्री व्रत :-

सुधि जब ते हम धरी बचन गुर दए हमारे ॥
पूत इहै प्रण तोहि प्राण' जब लग घट थारे ॥
निज नारी के साथ नेहु तुम नित बढैयहु ॥
पर नारी की सेज भूल सुपने हूं न जैयहु ॥ 51 ॥

काल चक्र :-

भुजंग प्रयात छंद ॥

फिरै चक्र चौदहूं पुरीयं मधिआणं॥इसे कौण बीयं फिरै आइसाणं॥
कहो कुंट कौनै बिखै बाचै॥ सबं सीस के संग स्री काल नाचै॥60॥
फिरै चौदहुं लोकयं काल चक्रं ॥ सबै नाथ नाथै भ्रमं भउह बक्रं ॥

‡ भाग सोलह ‡

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के बाद बंदा सिंह बहादर

श्री गुरु गोविंद सिंह जी के ज्योति जोत समाने के लगभग एक माह पहले अस्सू संवत् 1765 में बंदा सिंह गुरु जी से आज्ञा लेकर जैसे पांच सिंघों के साथ नादेड़ से पंजाब को चले यह सब समाचार पीछे लिखा जा चुका है। पड़ाव-पड़ाव चल कर बंदासिंह ने दिल्ली से बीस पच्चीस कोस दूर परखौदे के मुकाम पर आकर डेरा डाल दिया। यहां ठहर कर आपजी ने पंजाब, बीकानेर. मालवा, पोठोहार तथा शिवालक पहाड़ी इलाके में बिखरे हुए सिंघों के जत्थों को गुरु जी के हुकमनामे के साथ चिठ्ठियां भेजी। इन चिठ्ठियों में सिंघों को लिखा कि गुरु जी ने जालिमों को सुधारने के लिए मुझे पांच सिंघों के साथ पंजाब भेजा है। आप सारे अपने अपने जत्थे लेकर जल्दी से जल्दी मेरे पास परखौदे पहुँच जाओ। इन चिठ्ठियों की सच्चाई का सिंघों को यकीन करवाने के लिए बंदा सिंह ने इनके ऊपर बाबा काहन सिंह विनोद सिंह आदि पांच सिंघों के जो सतिगुरु जी ने बंदा सिंह की जानपहचान करवाने के लिए साथ भेजे थे, हस्ताक्षर कराए तथा गुरु साहिब के नाम की मोहर लगाई।

सिंघों का बाबा बंदे के पास पहुंचना तथा जालिमों को सुधारने के लिए जाना

सिंघों को ज्यों-ज्यों चिठ्ठीयां मिली त्यों त्यों जत्थे बनकर

वंदा सिंह के पास पहुंचने लग गए। अभी वंदा सिंह यहां जत्थे इक्ठे करके संग्राम की तैयारी ही कर रहा था कि उधर नादेड़ गुरु जी ज्योति जोत समा गए।

गुरु साहिव जी के स्वर्गवास की यह खवर सुनकर सिखों को वड़ा जोश चढ़ गया जिससे इस समय तक जितने भी सिघ पहुंचे थे उनके साथ ही वंदा सिंह ने पहला हल्ला समाने के ऊपर करके उन पठानों के खानदानों को कत्ल किया जिन्हों ने श्री गुरु तेग वहादर जी को दिल्ली में शहीद किया था इस के वाद वंदा सिंह ने घुडाम शाहवाद, मुसतफावाद, कपूरी सडौरा छत वनूढ़, चंपा चिड़ी, सरहिंद, कुढाणीं, मलेर कोटला; रायकोट. लोहगढ़ आदि स्थानों के ज़ालिमों को लिया। यहां से दूसरे चक्कर में बंदा सिंह जी ने सहारनपुर करनाल; कुंजपुरा वेहट, अंवेहटा, ननौता, जलालावाद, लोहगढ़. वहिरामपुर, रायपुर कलानौर, वटाला, कनूर, जम्मू. अमृतसर, घणीऐ के तथा गुरदासपुर के ज़ालिमों की खवर ली।

इस तरह जहां जहां भी ज़ालिम की खवर मिली वहीं जाकर उसकी खवर ली। उसका घर वाहर लूट कर यथा योग्य कठोर सज़ाए दी। 1 आपाढ़ सवत् 1767 को सरहिंद के सूवा वज़ीर खां छोटे साहिवज़ादों के कातिल को कत्ल करके सरहिंद की ईंट से ईंट वजाकर गुरु साहिव के वचनों का पालन किया।

बंदा सिंह की शहीदी

वंदा सिंह वहादर की इस तरह ज़ालिमों की तवाही की धूमे पड़ गई। जिससे दिल्ली के वादशाह फरुखसीअर के आदेश में अब्दुला समद खां तरानी सवा लाहौर तथा कई फौजदारों

ने 20 हज़ार सेना इकट्ठी करके बंदा सिंह को सात सो सिखों के साथ गुरदासपुर का गढ़ी में में कई महीनों के जंग के बाद विश्वासघात करके पकड़ कर देहली भेज दिया। दिल्ली में फरुख-सीअर वादशाह के हुक्म से बंदा बहादर को चैत्र सुदी 1 संवत् 1773 (19 जून सन् 1716) में बड़ा बेरहमी के साथ शहीद किया गया तथा उसके साथी सिखों को सौ सौ का जत्था करके कुतुब मीनार के पास सात दिनों में तोपों के साथ उड़ा दिया गया।

बंदा बहादर के बाद

वँदा सिंह की शहीदी के बाद सिंघों के ऊपर हकूमत की तरफ से बहुत जुल्म होने लग गए। शाही कर्मचारी इनका नामो निशान मिटाना चाहते थे। इस लिए जहां भी किसी सिख का पता चलता था वहीं पर उसको पकड़ कर कत्ल किया जाता था तथा घर बाहर लूट कर तबाह कर दिया जाता था। सिंघों के सिरों का अस्सी अस्सी रुपये मूल्य पड़ने का यहीं समय था। लाहौर के सूबा समुंद खां (अब्दुल समद खां) के बाद में उसका पुत्र जकरिआ खां (खान बहादर) सूबा बना। यह भी बडा ज़ालिम था, इसको सिंघ खानू कहते थे। यह संवत् 1796 (सन् 1739) से संवत् 1802 (सन् 1745 तक लाहौर का सूबा रहा। खान बहादर (खानू) के समय में ही भाई तारु सिंह जी भाई मनी सिंह जी तथा और बेअंत सिंघ तथा सिंघनियां शहीद की गईं। भाई सुबेग सिंघ शाहबाज़ सिंघ संवत् 1902 में इसके आदेशानुसार ही चरखड़ीयों पर चढ़ाए गए थे।

इसके बाद मीर मनूं लाहौर का सूबा बना इसने भी सिँघों पर बड़े अत्याचार किए—इस बारे सिंघों में कहावत थी—मंनूं साडी दातरी असीं मंनूं दे सोए। जिऊं जिउं मंन वडदा

तिऊं तिऊं दूणे होऐ।" यह 24 कत्तक संवत् 1810 (सन् 1752) को शिकार खेलता घोड़े से गिर कर मरा। फिर शाह निवाज़ खां आया। यह खान बहादुर का पुत्र था। इसको सिखों ने सम्वत् 1809 में मारा। यह समय सिखों पर बेअंत कष्टों का था। सिख पंजाब को छोड़कर जंगलों पहाड़ों में छिप छिप कर समय व्यतीत कर रहे थे।

सम्वत् 1796 में हिंदुस्तान पर विदेशी हमलावर नादिरशाह ने दिल्ली लूटी तथा कत्ले-आम किया। बाद में उसका सेनापति अहमदशाह अब्दाली (दुर्रानी) कंधार के तख्त पर बैठा। इसने सम्वत् 1804 (सन् 1747) से सम्वत् 1824 (सन् 1767) बीस सालों में हिंदुस्तान पर अठारह हमले करके देश को लूट कर बर्बाद कर दिया। दरबार साहिब अमृतसर की रक्षा के लिए बाबा दीप सिंह जो रामसर के पास धर्म युद्ध करते हुए माघ सम्वत् 1817 में शहीद हुए। बाद में सम्वत् 1818 में इनके आदेश से ही अमृतसर सरोवर की घोर निरादरी की गई तथा हरिमन्दिर साहिब ढेर करके मैदान कर दिया गया।

सिखों की बारह मिसलें

नादिर तथा अब्दाली के लगातार हमलों से दिल्ली की मुगल हकूमत बहुत कमजोर हो गई थी। इसके साथ ही एक तरफ महाराष्ट्र (पूना सतारा आदि) में मराठे तथा दूसरी तरफ पंजाब में सिख जत्थे बन्द हो कर ज़ोर पकड़ते गए।

इसका परिणाम यह हुआ कि मराठों ने महाराष्ट्र में अपना राज्य कायम कर लिया तथा सिखों ने पचास वर्ष लगातार कष्ट झेलकर अपना आप सम्भाल लिया तथा अपने अपने जत्थेदारों के नेतृत्व में पंजाब को बारह इलाकों में बांट कर अपनी रियासतें कायम कर ली। बारह मिसले (जत्थे) तथा उनके सिख

जत्थेदार राजधानीयां यह थी :—

1. मिसल रामगढ़िया—जत्थेदार सरदार जस्सा सिंह रामगढ़ियां इलाका दुआबा जालंधर। राजधानी श्री हरगोबिंद पुरा।

2. मिसल आहलू वालिया—जत्थेदार सरदार जस्सा सिंह आहलू वालिया। इसने सन् 1774 में अपनी राजधानी कपूरथला कायम की।

3. मिसल कन्नईआः—जत्थेदार स: जै सिंह, राजधानी बटाला इस का देहान्त सन् 1789 में हुआ।

4. मिसल डलेवालिआं—जत्थेदार सरदार गुलाब सिंह राजधानी हिसार।

5. मिसल करोड़ा सिंघआ—जत्थेदार सरदार करोडा सिंह राजधानी छलौदी (जिला करनाल)।

6. मिसल नकईआ—जत्थेदार स: हीरा सिंह राजधानी बहिलवान (चूनिआं प्रगणा)।

7. मिसल सिंधपुरीआं—(फैजुलापुरीआं)—जत्थेदार नवाब कपूरा सिंह पंथ का पहला जत्थेदार। राजधानी सिंघ पुरा (जिला अमृतसर) सवत् 1790 में कायम हुई।

8. मिसल निशानचिआं—जत्थेदार शहीद बाबा दीप सिंह जी राजधानी दमदमा साहिब (साबों की तलवंडी) यह गांव पहूविंड जिला अमृतसर के जिमीदार थे। संवत् में शहीद हुए।

10 मिसल भंगिआं—जत्थेदार स: छजू सिंह गांव पंजवड़ का निवासी राजधानी अमृतसर।

11. मिसल शुक्र चकीआ :—जत्थेदार स: चढ़त सिंह, महां सिंह तथा महाराज रणजीत सिंह राजधानी गुजरां वाला। स: चढ़त सिंह ने संवत् 1810 में कायम की।

12. मिसल फूलकीआं जत्थेदार बाबा फूला सिंह राजधानी

पटिआला, नाभा तथा जींद (संगरूर)।

शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंह

इन बारह मिसलों ने लगभग 80 वर्ष पंजाब पर राज्य किया। इसके बाद शुक्र चक्कीयों की मिसल के सरदार रणजीत सिंह सः चढ़त सिंह के पौत्र तथा सः महां सिंह के पुत्र ने सन 1799 (संवत् 1856) में लाहौर पर कब्जा कर लिया तथा संवत् 1858 में एक बड़ा दरबार लगाकर 'महाराजा' की पदवी धारण की। बाद में इसने धीरे धीरे सारी मिसलों को अपने राज्य में मिला कर सिख राज्य कायम किया। चालीस वर्ष राज्य करके महाराजा 27 जून सन् 1839 (15 आषाढ़ संवत् 1886) को अधरंग के रोग से स्वर्गवास हो गया।

बाद में उसके पुत्र खड़ग सिंह शेर सिंह तथा कंवर दिलीप सिंह (महाराणी जिंदा के नेतृत्व में) पंजाब (लाहौर) के तख्त पर बैठे। परन्तु डोगरा शाही की चाल में आकर आपस में ही फूट तथा बँटवारे के कारण अंत में मार्च 1849 में पंजाब का राज्य अंग्रेजों के हवाले हो गया।

भाग सोलह का ब्यौरा

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के बाद बंदा बहादर के बाद, सिंघों की बारह मिसले, शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंह, अंग्रेजी राज।

‡ भाग सत्रह ‡

सिख राज के बाद

सिख धार्मिक तथा राजसी संस्थाएं

सिख धर्म पर आर्य समाज की तरफ से किए जा रहे हमलों को रोकने के लिए सन् 1873 में कुछ सिख धर्म के हमदर्द विद्वानों ने अमृतसर में सिंघ सभा नाम की संस्था कायम की। बाद में सन् 1879 (संवत् 1936 विक्रमी को लाहौर में भी यह स्थापित की गई। इसके बाद सन् 1901 (संवत् 1958 विक्रमी) में कुछ सिख श्रद्धालुओं की तरफ से खालसा दीवान की नींव अमृतसर में रखी गई तथा इस का नाम चीफ खालसा दीवान प्रसिद्ध हुआ। इन दोनों संस्थाओं ने दो बड़े जरुरी काम किए।

1 सिंघ सभा संस्थाओं ने सिखी रहित मर्यादा के प्रचार को घर-घर पहुंचाया तथा आर्य समाज के हमलों का मुँह तोड़ जवाब देकर उसको दबाया। यह संस्था अब तक देश विदेश में चल रही है।

2. चीफ खालसा दीवान ने पजाबी लिपी का तथा सिखी धर्म का बहुत प्रचार किया। इसने बड़े बड़े शहरों तथा नगरों में खालसा स्कूल तथा खालसा कालिज अमृतसर खोल कर अपने मिशन का बहुत शानदार काम किया। सिख

ऐजुकेश्नल कांफ्रैस के मुखिया तथा आज तक इसको चालू रखने वाली संस्था चीफ खालसा दीवान ही है।

इन दो प्रसिद्ध संस्थाओं के उपरांत 1920 - 21 में एक और संस्था अकाली लहर के नाम से शुरु हुई। इसने गुरु द्वारों में से महंतों तथा पुजारियों की कुरीतियों तथा मन मानियों को दूर करने का कार्य संभाला। इन्होंने कुछ वडे वड़े गुरुद्वारों पर कब्जे करके महंतों को निकाल दिया। जिस से बहुत झगड़े शुरु हो गए। उन झगड़ों को कानूनी तोर पर निपटाने के लिए पंजाब सरकार ने सिख गुरुद्वारा कानून नं: 8 बनाकर जुलाई सन 1925 में पास कर दिया।

इस कानून के अनुसार पांच वर्षों के बाद इसके 140 सदस्य सारे पंजाब में से वोटों के द्वारा चुने जाएंगे। पांच तख्त साहिबों के जत्थेदार तथा 15 सदस्य सूबे की सरकार की तरफ से नामजद किए जाते हैं। इस शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन सूबे के सभी बड़े छोटे गुरुद्वारे अपनी अपनी स्थानिक गुरुद्वारा कमेटियों के द्वारा प्रबन्ध चलाते हैं। इन गुरुद्वारों की आमनी से शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबधक कमेटी अमृतसर दसवंद लेती है, जो लगभग एक करोड़ से उपर हो जाता है। इस रकम को गुरुद्वारा कानून के अनुसार शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबधक कमेटी धार्मिक कामों तथा सेवा-दारों की तनखाहों पर ही खर्च कर सकती है।

इस धार्मिक संस्था से ही राजसी कार्यों के सुधार के लिए एक दल क़ायम हुआ जो देश तथा कौम के हर कार्य

में बढ़ चढ़ कर नेतृत्व करता है तथा शिरोमणी अकाली दल के नाम से प्रसिद्ध है। इसके 376 जनरल मेंबर तथा 21 वर्किंग कमेटी के मेंबर हैं जिनका चुनाव दो वर्ष बाद होता है।

अंग्रेजी राज तथा

देश का बंटवारा 1947

अंग्रेज 98 वर्ष पंजाब पर राज्य करके तथा डेढ़ सौ वर्ष भारत में रह कर 15 अगस्त सन् 1947 से हिंदुस्तान को दो टुकड़ों पाकिस्तान मुस्लिम बहु संख्या तथा भारत (हिंदू बहु संख्या) में बांट कर चले गए।

भारत में लोकराज अर्थात लोगों की अपने प्रतिनिधि भेजकर चुनी हुई सरकार कायम है, जो कि श्री गुरु गोविंद सिंह जी के चलाए पंचायती राज के नियमों के अनुकूल है।

उपरंत नम्बर 1966 में शिरोमणी कमेटी तथा, शिरोमणी अकाली दल अमृतसर के अत्यन्त यत्नों से सूबा पंजाब बोली के आधार पर तीन सूबा—1 पंजाबी सूबा 2 हरियाणा प्रांत तथा 3 हिमाचल प्रदेश में बांटा गया है।

॥ इति ॥